

मुणिवरगुणपालविरइयं

लक्षुचारियम्



• नवीनसंस्करणसम्पादिका •
साध्वी चन्दनबालाश्री

• सम्पादनकर्ता •
आचार्य जिनविजयमुनि

• नवीनसंस्करणप्रकाशकः •
भद्रंकर प्रकाशन
अहमदाबाद

मुनिवरगुणपालविरइयं

जंबुचरियम्

[गुणपालमुनिविरचित-प्राकृतभाषानिबद्ध-जम्बूमुनिचरितम्]

नवीनसंस्करणप्रेरकः
परमपूज्याचार्यश्रीमद्विजयपुण्यपालसूरिमहाराजः
परमपूज्यपंन्यासप्रवरश्रीवज्रसेनविजयमहाराजः

नवीनसंस्करणसम्पादिका
साध्वी चन्दनबालाश्री

मुणिवरगुणपालविरइयं
जंबुचरियम्

[प्राकृतभाषानिबद्ध-जम्बूमुनिचरितम्]

• सम्पादनकर्ता •

आचार्य जिनविजयमुनि

• नवीनसंस्करणप्रेरकः •

परमपूज्याचार्यश्रीमद्विजयपुण्यपालसूरिमहाराजः

पूज्यपंन्यासप्रवरश्रीवज्रसेनविजयमहाराजः

• नवीनसंस्करणसम्पादिका •

परमपूज्यव्याख्यानवाचस्पतिआचार्यभगवन्तश्रीमद्विजय-

रामचन्द्रसूरीश्वराणां साम्राज्यवती

परमपूज्याप्रवर्तिनी श्रीरोहिताश्रीजीमहाराजस्य शिष्यरत्ना च

साध्वी चन्दनबालाश्री

• प्रथमावृत्तिप्रकाशनकर्ता •

अधिष्ठाता, सिंघीजैनशास्त्रशिक्षापीठ

भारतीय विद्याभवन, बम्बई

• नवीनसंस्करणप्रकाशकः •

भद्रंकर प्रकाशन

अहमदाबाद

- ग्रन्थनाम : जंबुचरियम्
 ग्रन्थकार : परमपूज्यगुणपालमुनिवरः
 सम्पादक : आचार्य जिनविजयमुनि
 प्रेरक : परमपूज्याचार्यश्रीमद्विजयपुण्यपालसूरिमहाराजः
 परमपूज्यपंन्यासश्रीवज्रसेनविजयमहाराजः
 नवीनसंस्करण
 सम्पादिका : साध्वी चन्दनबालाश्री
 प्रकाशक : सिंधीजैनशास्त्रशिक्षापीठ
 नवीनसंस्करण : भद्रंकर प्रकाशन
 प्रकाशक
 प्रथमसंस्करण : वीर सं. २०१४, इ.स. १९५९
 नवीनसंस्करण : वीर सं. २५३५, वि.सं. २०६५, इ.स. २००९
 मूल्य : रु. २००-००
 पत्र : ३२+२८४
 © : BHADRANKAR PRAKASHAN, 2009

❁ (प्राप्तिस्थान) ❁

- अहमदाबाद : भद्रंकर प्रकाशन
 ४९/१, महालक्ष्मी सोसायटी,
 शाहीबाग, अहमदाबाद-३८०००४
 फोन : ०७९-२२८६०७८५
 अहमदाबाद : सरस्वती पुस्तक भंडार
 हाथीखाना, रतनपोल, अहमदाबाद-३८०००९
 फोन : ०७९-२५३५६६९२
 अक्षरांकन : विरति ग्राफिक्स, अहमदाबाद
 फोन : ०७९-२२६८४०३२
 मुद्रक : तेजस प्रिन्टर्स, अहमदाबाद
 फोन : ०७९-२२१७२२७१
 (मो.) ९८२५३ ४७६२०

શ્રુતભક્તિ-અનુમોદના

લાભાર્થી

પરમપૂજ્ય, પરમોપકારી, વ્યાખ્યાનવાચસ્પતિ, આચાર્યભગવંત-
શ્રીમદ્વિજયરામચંદ્રસૂરીશ્વરજીમહારાજના સામ્રાજ્યવર્તી પરમપૂજ્ય
ધર્મતીર્થપ્રભાવક, આચાર્યભગવંતશ્રીમદ્વિજયમિત્રાનંદસૂરીશ્વરજી-
મહારાજના શિષ્યરત્ન પરમપૂજ્ય, વાત્સલ્યનિધિ, આચાર્યભગવંત-
શ્રીમદ્વિજય મહાબલસૂરીશ્વરજીમહારાજના શિષ્યરત્ન પરમપૂજ્ય,
પ્રવચનપ્રદીપ, આચાર્યભગવંતશ્રીમદ્વિજયપુણ્યપાલસૂરીશ્વરજી-
મહારાજના સદ્ગુપદેશથી

શ્રીજિનાજાઆરાધકશ્વેતામ્બરમૂર્તિપૂજક

તપગચ્છજૈનસંઘ

મુલુંડ-મુંબઈ-૮૦

આ ગ્રંથ પ્રકાશનનો જ્ઞાનદ્રવ્યમાંથી લાભ લીધેલ છે.

આપે કરેલી શ્રુતભક્તિની અમો હાર્દિક અનુમોદના કરીએ
છીએ અને ભવિષ્યમાં પણ આપ ઉત્તરોત્તર ઉત્તમકક્ષાની
શ્રુતભક્તિ કરતાં રહો એવી શુભેચ્છા પાઠવીએ છીએ.

લિ. ભદ્રંકર પ્રકાશન

धम्मकहापडिबद्धं जंबुचरियम्

“पणमियजिणाइचलणो,
संतोसियखलयणो समासेण ।
धम्मकहापडिबद्धं,
वोच्छमहं जंबुणो चरियं ॥”

[जंबुचरिये पढमउद्देशे श्लोक / २१]

“जिनेश्वरभगवंतो वगेरेना यरएने प्रएाम
करीने, दुर्जनजनने संतोषीने संक्षेपथी धर्मकथाभय
जंबुस्वामीना यरित्रने हुं कडीश.”

પ્રકાશકીય

પરમપૂજ્ય ગુણપાલમુનિવરવિરચિત, પ્રાકૃતભાષાનિબદ્ધ આ ‘જંબુચરિયમ્’ રાજસ્થાનરાજ્યાન્તર્ગત જેસલમેરદુર્ગમાં રહેલ પ્રાચીનજૈનગ્રંથભાંડાગારમાં ઉપલબ્ધ એક માત્ર તાડપત્રીય પુસ્તકના આધારે આચાર્ય જિનવિજયમુનિએ આ ગ્રંથની પ્રતિલિપિ કરાવીને આ ગ્રંથનું સંપાદનકાર્ય કરેલ છે. આ ગ્રંથની પ્રથમાવૃત્તિ અધિષ્ઠાતા, સિંઘીજૈનશાસ્ત્રશિક્ષાપીઠ - ભારતીયવિદ્યાભવન - મુંબઈથી વિ.સં. ૨૦૧૪, ઈ. સ. ૧૯૫૯માં ગ્રંથાંક ૪૪ તરીકે પ્રકાશિત થયેલ છે.

જંબૂસ્વામીની જીવનકથા જૈનસાહિત્યમાં અતિપ્રસિદ્ધ છે. જંબૂસ્વામીના જીવન વિષે પ્રાકૃત, સંસ્કૃત, અપભ્રંશ, ગુજરાતી, હિંદી, રાજસ્થાની આદિ અનેક ભાષાઓમાં અનેક ચરિત્રો પ્રકાશિત થયા છે. તેમાં આ ગુણપાલમુનિવરવિરચિત ‘જંબુચરિયમ્’નું આગવું-અનોખું સ્થાન છે.

આ ‘જંબુચરિયમ્’ની સિંઘીજૈનશાસ્ત્રશિક્ષાપીઠથી પ્રકાશિત થયેલ પ્રથમાવૃત્તિ જીર્ણ થઈ ગયેલી હોવાથી આના નવીનસંસ્કરણનું સંપાદનકાર્ય પરમપૂજ્ય, પરમારાધ્યપાદ શ્રીમદ્વિજયરામચંદ્રસૂરીશ્વરજીમહારાજના શિષ્યરત્ન પરમપૂજ્ય અધ્યાત્મયોગી પંન્યાસપ્રવર શ્રીભદ્રંકરવિજયજીમહારાજના શિષ્યરત્ન હાલારના હીરલા પરમપૂજ્ય આચાર્યભગવંત શ્રીકુંદકુંદસૂરીશ્વરજીમહારાજના શિષ્યરત્ન પરમપૂજ્ય પંન્યાસપ્રવર શ્રીવજ્રસેનવિજયજી-મહારાજની પ્રેરણાથી પરમપૂજ્ય વ્યાખ્યાનવાચસ્પતિ આચાર્યભગવંત શ્રીમદ્વિજય-રામચંદ્રસૂરીશ્વરજીમહારાજના સામ્રાજ્યવર્તી તથા પરમપૂજ્ય સરળસ્વભાવી પ્રવર્તિની સાધ્વી શ્રીરોહિતાશ્રીજીમહારાજના શિષ્યરત્ના સાધ્વી શ્રીચંદનબાલાશ્રીજીમહારાજે પોતાની નાદુરસ્ત રહેતી તબીયતમાં પણ શ્રમસાધ્ય કાર્ય કરીને અમારી સંસ્થાને પ્રકાશિત કરવાનો જે લાભ આપ્યો તે બદલ અમારી સંસ્થા તેમની ઋણી છે. તેમના દ્વારા ભવિષ્યમાં

પણ આવા ઉત્તમ ગ્રંથો સંપાદિત થઈને પ્રકાશિત થતાં રહે અને અમારી સંસ્થાને પ્રકાશિત કરવાનો લાભ મળતો રહે એવી અમે અભિલાષા રાખીએ છીએ.

આ નવીનસંસ્કરણના પ્રકાશન માટે પરમપૂજ્ય ધર્મતીર્થપ્રભાવક આચાર્યભગવંત-શ્રીમદ્વિજયમિત્રાનંદસૂરીશ્વરજીમહારાજના શિષ્ય-પ્રશિષ્યરત્ન પરમપૂજ્ય વાત્સલ્યનિધિ આચાર્યભગવંતશ્રીમદ્વિજયમહાબલસૂરીશ્વરજીમહારાજ તથા પરમપૂજ્ય પ્રવચનપ્રદીપ આચાર્યભગવંતશ્રીમદ્વિજયપુણ્યપાલસૂરીશ્વરજીમહારાજની શુભપ્રેરણાથી મુલુંડ-શ્રીજિનાજ્ઞાઆરાધકશ્વેતામ્બરમૂર્તિપૂજક તપગચ્છ જૈનસંઘે આ ગ્રંથપ્રકાશનનો લાભ લીધેલ છે તે બદલ અમારી સંસ્થા તેમનો આભાર માને છે.

આ નવીનસંસ્કરણ પ્રકાશનના સુઅવસરે અમે પૂર્વના સંપાદકશ્રીનો, પ્રકાશકસંસ્થાનો કોબા-કૈલાસસાગરજ્ઞાનભંડારમાંથી મુદ્રિત પુસ્તક અમને પ્રાપ્ત થઈ તેમનો, નવીનસંસ્કરણના પ્રેરકશ્રીનો, નવીનસંસ્કરણપ્રકાશન કાર્ય માટે આર્થિક સહયોગની પ્રેરણા કરનાર આચાર્ય-ભગવંતોનો, આ કાર્યના અક્ષરમુદ્રાંકન માટે વિરતિગ્રાફિક્સવાળા અખિલેશભાઈ મિશ્રાનો અને મુદ્રણકાર્ય માટે તેજસપ્રીન્ટર્સવાળા તેજસભાઈનો ખૂબ ખૂબ આભાર માનીએ છીએ.

આવા ઉત્તમ બ્રહ્મચારી જંબૂસ્વામીના ચરિતનું વાચન કરીને સૌ કોઈ ભવ્યાત્માઓ સંવેગને પ્રાપ્ત કરીને રત્નત્રયીની આરાધના કરીને અષ્ટકર્મનો ક્ષય કરીને મુક્તિસુખને પ્રાપ્ત કરે એ જ શુભભાવના !!

— ભદ્રંકર પ્રકાશન



प्रथमावृत्तिकी प्रस्तावना

गुणपाल मुनि रचित प्राकृत भाषामय इस 'जंबूचरियं' की एकमात्र प्राचीन प्रति हमको जेसलमेर के एक ज्ञानभण्डार में उपलब्ध हुई जो ताडपत्रों पर लिखी हुई है। सन् १९४२ के डीसेंबर मास से १९४३ के अप्रैल तक, हमने जेसलमेर के ज्ञानभण्डारों का निरीक्षण किया और वहाँ पर उपलब्ध सैकड़ों ही ग्रन्थों की प्रतिलिपियाँ आदि करवाई एवं उनमें से अनेक अप्रकाशित और अन्यत्र अप्राप्य ग्रन्थों को प्रकाश में लाने का भी यथाशक्य और यथासाधन प्रयत्न प्रारम्भ किया। इनमें से कुछ ग्रन्थ इसी 'सिंघी जैनग्रन्थमाला' में ग्रथित हो कर प्रकट होने जा रहे हैं और कुछ ग्रन्थ, हमारे निर्देशकत्व में प्रस्थापित और प्रचालित जोधपुरावस्थित 'राजस्थान प्राच्यतत्त्वान्वेषण मन्दिर (राजस्थान ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट)' द्वारा प्रकाशयमान 'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला' में गुम्फित हो कर प्रकट हो रहे हैं।

जिन जम्बू महामुनि के जीवन को उद्दिष्ट कर इस चरित की रचना हुई है उनकी यह जीवन कथा जैनसाहित्य में बहुत प्रसिद्ध है। इस कथा का वर्णन करने वाली सैकड़ों ही ग्रन्थरचनाएँ जैन साहित्य के विपुल भण्डार में उपलब्ध होती हैं। प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, प्राचीन हिन्दी, गुजराती, राजस्थानी आदि भारत की आर्यकुल की कई प्राचीन-अर्वाचीन भाषाओं में इस कथा विषयक छोटी-बड़ी अनेकानेक रचनाएँ मिलती ही हैं पर कन्नड और तामिल जैसी द्राविड भाषाओं की साहित्य निधि में भी जम्बू मुनि की अनेक कथाएँ उपलब्ध होती हैं।

जैन इतिहास के अवलोकन से निश्चित होता है कि ये जम्बू मुनि एक ऐतिहासिक व्यक्ति हो गए हैं और वे श्रमण भगवान् श्रीमहावीर देव के विशिष्ट शिष्य एवं उत्तराधिकारी गणधर सुधर्म के मुख्य शिष्य थे। ज्ञातपुत्र श्रमण तीर्थकर वर्द्धमान महावीर के निर्वाण के बाद, उनके अनुगामी निर्ग्रन्थ श्रमणसमूह के नेता के रूप में, जम्बू मुनि का सर्वप्रधान स्थान रहा है। महावीर देव के हजारों ही श्रमणशिष्यों में, जम्बू मुनि अन्तिम केवली माने जाते हैं और इनके बाद किसी श्रमण को निर्वाणपद की प्राप्ति नहीं हुई ऐसा विधान मिलता है। तीर्थकर महावीर के निर्वाण के बाद, ६४ वर्ष अनन्तर, जम्बू मुनि निर्वाणपद को प्राप्त हुए।

उस समय से लेकर, आज तक जो जैन धर्म प्रवर्तमान रहा वह जम्बू मुनि ही के शिष्यसमुदाय के उपदेश और आदेश का परिणाम है ।

भगवान् महावीर के निर्वाण बाद, बहुत ही अल्प समय में जैनधर्म दो मुख्य सम्प्रदायों में विभक्त हो गया—जिनमें एक श्वेताम्बर सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध हुआ और दूसरा दिगम्बर सम्प्रदाय के नाम से । पर इन दोनों सम्प्रदायों में जम्बू मुनि का स्थान एक सा ही मान्य और वन्द्य है । दोनों ही सम्प्रदायों के पूर्वाचार्यों ने जम्बू मुनि की कथा को नाना रूपों में ग्रथित किया है । श्वेताम्बर सम्प्रदाय के मान्य प्राचीनतम आगम ग्रन्थों में जम्बू मुनि का सर्वत्र निर्देश मिलता है । भगवान् महावीर जब विद्यमान थे तब जम्बू मुनि दीक्षित नहीं हुए थे । महावीर के निर्वाण के बाद उनसे सुधर्म स्वामी के पास श्रमणधर्म की दीक्षा ली थी । गणधर सुधर्म ने भगवान् महावीर के उपदेशों और सिद्धान्तों का सर्वसार, जम्बू मुनि को सुनाया एवं समझाया और इसलिये प्राचीनतम जैन आगमों में सर्वत्र सुधर्म और जम्बू मुनि के नाम निर्देश के साथ ही सब विचार और सिद्धान्त उल्लिखित किये गये हैं ।

भगवान् महावीर के मुख्य ११ शिष्य थे जो गणधर कहलाते थे । इनमें से ९ तो भगवान् के जीवितकाल ही में निर्वाण प्राप्त हो गये थे । सबसे बड़े शिष्य इन्द्रभूति गौतम और ५ वें शिष्य सुधर्म भगवान् के निर्वाण समय में विद्यमान थे । इन्द्रभूति गौतम भगवान् के निर्वाणगमन के बाद तुरन्त कैवल्य दशा में लीन हो गये, अतः सब श्रमण समुदाय की रक्षा, शिक्षा और दीक्षा का समग्र भार सुधर्म गणधर को वहन करना पड़ा । इन्हीं सुधर्म के पास राजगृह के निवासी अत्यन्त समृद्धिशाली ऋषभदत्त सेठ के एकमात्र पुत्र जम्बू कुमारने अपने जीवन के यौवनारम्भ में ही श्रमण धर्म की कठिनतम दीक्षा ले ली । जम्बू कुमार का यह दीक्षाग्रहण बड़े अद्भुत और रोमाञ्चक प्रसंग द्वारा घटित हुआ इसलिए गणधर सुधर्म के आज्ञावर्ती समग्र निर्ग्रन्थ श्रमण समूह का नेतृत्व जम्बू मुनि को प्राप्त हुआ ।

भगवान् महावीर के निर्वाण बाद, १२ वर्ष पर्यन्त, सुधर्म गणधर ने श्रमणसमूह का नेतृत्व किया । इसी बीच में जम्बू दीक्षित हुए और अपने विशिष्ट चारित्र्यबल और ज्ञानबल से थोड़े ही समय में वे सुधर्म गणधर के अनुगामी श्रमणगण के विशिष्ट नायक के रूप में प्रतिष्ठित होने लगे । भगवान् महावीर के निर्वाण के १२ वर्ष बाद, सुधर्म गणधर भी कैवल्य दशा में लीन हो गये और उनसे अपने समग्र श्रमण गण के नेतृत्व का भार जम्बू मुनि को सौंप दिया । ८ वर्ष कैवल्य अवस्था में लीन रह कर सुधर्म स्वामी ने निर्वाणपद प्राप्त किया । निर्वाण के समय सुधर्म स्वामी की आयु पूरे १०० वर्ष की थी ! उनसे अपनी आयु के ५० वें वर्ष में भगवान् महावीर के पास श्रमणधर्म की दीक्षा ली थी । ३० वर्ष तक वे भगवान् महावीर की सेवा उपासना करते रहे । भगवान् के निर्वाण के बाद, ८० वर्ष की आयु में निर्ग्रन्थ श्रमणों के संघ की सम्पूर्ण सुव्यवस्था का भार उनको उठाना पड़ा । १२ वर्ष

बाद, अपनी आयु के ९२ वें वर्ष में, वे कैवल्य दशा में लीन हो गये । और फिर ८ वर्ष उस दशा में व्यतीत कर, १०० वर्ष की पूर्णायु में निर्वाण पद को प्राप्त हुए ।

भगवान् महावीर के निर्वाण के २० वर्ष बाद, सुधर्म गणधर का निर्वाण हुआ और उसके बाद ४४ वर्ष अनन्तर अर्थात् महावीर निर्वाण बाद ६४ पीछे, जम्बूस्वामी का निर्वाण हुआ । इस हिसाब से जम्बूस्वामी ५२ वर्ष तक निर्ग्रन्थ श्रमणसंघ का नेतृत्व करते रहे । उनकी पूर्णायु कितनी थी इसका कोई स्पष्ट उल्लेख देखने में नहीं आया । पर कल्पना से अनुमान किया जाय तो कम से कम ८२-८४ वर्ष जितनी आयु तो उनकी होनी ही चाहिए । भगवान् के निर्वाण बाद, १२ वर्ष अनन्तर, सुधर्म गणधर कैवल्य दशा में लीन हो गये तब उनने अपने श्रमणसंघ का गणभार जम्बू मुनि को सौंप दिया । उस समय कम से कम १० वर्ष जितना दीक्षापर्याय उनका मान लिया जाय तो, दीक्षा लेने के पहले उनकी आयु कम से कम १८-२० वर्ष की तो होनी ही चाहिए । जिस अवस्था में उनने गृहजीवन का त्याग किया और जिन संयोगों का अनुभव किया वह १८-२० वर्ष की कम आयुवाले जीवन में सम्भव नहीं होता । अतः हमारी कल्पना से जम्बू मुनि का आयुष्य कम से कम ८२-८४ वर्ष जितना अवश्य होना चाहिए ।

जम्बू मुनि के कथानक विषयक प्राचीनतम कुछ उल्लेख श्वेताम्बर सम्प्रदाय मान्य 'वसुदेवहिंडी' नामक बृहत् प्राकृत कथाग्रन्थ में उपलब्ध होते हैं । 'जंबूअज्झयणं' 'जंबूपइन्नयं' आदि कुछ स्वतन्त्र प्राकृत रचनाएँ भी मिलती हैं, पर उनके रचना समय आदि के बारे में विशेष निश्चयक प्रमाण अभी तक संगृहीत नहीं हुए । प्रस्तुत 'जंबुचरियं' इस विषय की एक विशिष्ट और विस्तृत रचना है । इसके कर्ता गुणपाल नामक मुनि हैं जो श्वेताम्बर सम्प्रदाय के नाइलगच्छीय वीरभद्रसूरि के शिष्य या प्रशिष्य थे । प्रस्तुत 'चरियं' की रचना कब हुई इसका सूचक कोई उल्लेख इसमें नहीं किया गया है । पर ग्रन्थ की रचना-शैली आदि से अनुमान होता है कि विक्रम की ११ वीं शताब्दी में या उससे कुछ पूर्व में इसकी रचना हुई होगी । जेलसमेर में प्राप्त ताडपत्र की प्रति के देखने से ज्ञात होता है कि वह १४वीं शताब्दी के पूर्व ही लिखी होनी चाहिए ।

चरित की ग्रथनशैली उद्योतनसूरि की प्रसिद्ध 'कुवलयमालाकहा' के साथ बहुत मिलती-जुलती है । वर्णनपद्धति भी प्रायः वैसी ही है । सम्भव है कि गुणपाल मुनि के सम्मुख, प्रस्तुत 'चरियं' की रचना के समय, कुवलयमाला की प्रसिद्धि बहुत कुछ रही हो । उद्योतनसूरि ने सिद्धान्तों का अध्ययन वीरभद्र नाम के आचार्य के पास किया था । इन वीरभद्र आचार्य के लिए उनने 'दिन्नजहिच्छियफलओ अथावरो कप्परुक्खो व्व' ऐसा वाक्य प्रयोग किया है । जम्बुचरियं के कर्ता गुणपाल ने अपने गुरु प्रद्युम्नसूरि को वीरभद्र का शिष्य बतलाया है । इनने इन वीरभद्र के लिए भी 'परिचिंतियदिन्नफलो आसी सो कप्परुक्खो ति'

ऐसा वाक्यप्रयोग किया है जो उद्योतनसूरि के वाक्य प्रयोग के साथ सर्वथा तादात्म्य रखता है । क्या इससे यह अनुमान किया जा सकता है कि उद्योतन सूरि के सिद्धान्तगुरु वीरभद्राचार्य और गुणपाल मुनि के प्रगुरु वीरभद्रसूरि दोनों एक ही व्यक्ति हों ? । यदि ऐसा हो तो 'जंबुचरियं' के कर्ता गुणपाल मुनि का अस्तित्व विक्रम की ९वीं शताब्दी के अन्त में माना जा सकता है । और इस सम्बन्ध से कुवलयमाला कहा का सविशेष परिचय गुणपाल मुनि को होने से उनकी इस रचनाशैली में उक्त कथा का विशेष अनुकरण स्वाभाविक हो सकता है । पर यह विचार कुछ विशेष अनुसन्धान की अपेक्षा रखता है जिसके लिए हमें अभी वैसा अवसर प्राप्त नहीं है ।

ऊपर हमने इन गुणपाल मुनि को नाइलगच्छीय लिखा है और यह गच्छ बहुत प्राचीन गच्छों में से है जिसके उल्लेख पुरातन स्थविरावलियों में मिलते हैं । यद्यपि गुणपाल ने प्रस्तुत चरियं में अपने गच्छ का निर्देश नहीं किया है पर इनकी एक दूसरी रचना हमें प्राप्त हुई है जिसमें इसका उल्लेख किया गया है । चरियं की तरह वह भी प्राकृतभाषा का एक सुन्दर कथाग्रन्थ है ।

पूना के 'भांडारकर प्राच्यविद्या संशोधनमन्दिर' संस्थित राजकीय ग्रन्थ संग्रह में 'रिसिदत्ताचरियं' की ताडपत्रीय पोथी सुरक्षित है जो पाटण या जेसलमेर के किसी जैन भण्डार में से प्राप्त हुई होनी चाहिए । इस कथा की एक त्रुटित पोथी जेसलमेर में भी हमारे देखन में आई । पूना में सुरक्षित ताडपत्रीय पुस्तक पर से 'रिसिदत्ताचरियं' का आद्यतन्त भाग हमने नकल कर लिया था जिसको यहाँ उद्धृत कर देना उपयुक्त होगा । पूनावाली पोथी के कुल मिलाकर १५६-५७ ताडपत्र हैं जिनमें से पिछले ३ पत्र त्रुटित दशा में, अतः उनका अन्तिम भाग खण्डित रूप में मिलता है ।

ग्रन्थ का प्रारम्भ इस प्रकार है -

नमिऊण चलणजुयलं पढमजिणिंदस्स भुवननाहस्स ।
 अवसप्पिणीए धम्मो पयासिओ जेण इह पढमं ॥
 बालत्तणंमि जेणं सुमेरुसिहरे भिसेयकालंमि ।
 वामलचलणंगुलीए लीलाए डोलिया पुहई ॥
 तं वरकमलदलच्छं जिणचंदं मत्तपीलुगइगमणं ।
 नमिऊण महावीरं सुरंगणसयसंथुयं वीरं ॥
 सेसे वि य वावीसे नमिऊणं नट्टरागमयमोहे ।
 सुरमणुयासुरमहिए जीवाइपयत्थओब्भासे ॥

नमिउं अणाइनिहणे सिद्धिगए अट्टकंममलमुक्के ।
 सिद्धे सासयनाणे अच्चाबाहं सुहं [पत्र १, B] पत्तो ॥
 वरकमलसरिसवयणा कमलदलच्छी य चारुकमलकरा ।
 वियसियकमलनिसण्णा सुयमयदेवी नमेऊणं ॥
 आयरिय उवज्झाए साहुजणं गुरुजणं च नमिऊणं ।

.....

जइ वि हु एयं बहुसो अणेयसाहुहिं आगमे भणियं ।
 तहवि य फुडवियडत्थं संखेवेणं अहं भणिमो ॥
 सुयणो सोऊण इमं गुणगहणं कुणइ जइ वि ते नत्थि ।
 गुणभूसिए वि कव्वे दोसे गिणहइ खलो चेव ॥
 सुयणाण किं न नमिहह जे वि य दोसो वि [पत्र २, A] पेच्छहिं गुणोहे ।
 पियजणविरहे जह कोइ पिययणं पेच्छइ वणं पि ॥
 न हु निम्मला वि किरणा रविणो पेच्छेइ कोसिओ तमसे ।
 तह चेव गुणा इह दुज्जणो वि पेच्छेइ विवरीए ॥
 जइ वि हु वीहामि अहं खलाण एमेव तह वि कुवियाण ।
 तहवि महंतं वसणं नो तीरइ छड्डिउं एयं ॥

अह वा-

जो च्चिय एकस्स खलो सो च्चिय अण्णस्स सज्जणो होइ ।
 कह सुयण-दुज्जणाणं पसंस-निंदा अहं करिमो ॥

जेण भणियं-

रत्ता पेच्छंति गुणा दोसा पेच्छंति जे विरच्चंति ।
 मज्झत्था पुण पुरिसा [पत्र २, B] दोसे य गुणे य पेच्छंति ॥
 ता मइज्जत्था तुम्हे दोसे परिहरह तहवि ददूण ।
 गिणहह विरले वि गुणे सुयणसहावं पि मा मुयह ॥
 एत्थ य चारि कहाओ पणत्ताओ जिणेहिं सब्बेहिं ।
 अत्थकहा कामकहा धम्मकहा मीसगकहा य ॥
 अत्थकहाए अत्थो कामो तह चेव कामुयकहाए ।
 भण्णइ धम्मकहाए चउव्विहो होइ जह धम्मो ॥

सो पुण एसो भणिओ जिणेहिं जियराग-दोस [पत्र ३, A]मोहेहिं ।
 तव-सील-दाण-भावणभेएणं होइ चउहाओ ॥
 अणसणमाईय तवो सीलं पुण होइ चरण-करणं तु ।
 जीवदयाई दाणं अधुयाई भावणा हुंति ॥
 धम्मो अत्थो कामो भण्णइ मोक्खो वि मीसगकहाए ।
 एसा सा मीसकहा भणामि हं जिणवरे नमिउं ॥२०॥

.....

ग्रन्थ का अन्त भाग-

इय रिसिदत्ताचरिए पवरक्खरविइ [पत्र १५४, A] ए वरे रंमे ।
 गुणपालविइयमिमं पंचमपव्वं समत्तं ति ॥
 ज सेणिय पुट्टेणं जगगुरुणा साहियं ति वीरेणं ।
 तह किंपि समासेणं मए वि किल साहियं एयं ॥
 सोऊण तुमे एयं पालह जिणवीरभासियं वयणं ।
 पावेह जेण अइरा कंमं डहिऊण मोक्खं ति ॥
 इय कुणमाणेण इमं पत्तं जं किंचि एत्थ मे पुण्णं ।
 पुण्णेण तेण पावह तुम्हे अरामरं ठाणं ॥
 इय वीरभद्दसूरी नाइलवंसं [पत्र १५४, B].....

इस के आगे का क्रमांक १५५ वाला ताडपत्र आधा टूट गया है । वाम भाग का आधा टुकड़ा उपलब्ध है जिसमें [A पार्श्व में] निम्न क्रम से आधी आधी पंक्तियाँ उपलब्ध होती हैं ।

- पंक्ति १.[गुणपा°]लेणं विइयं ति ॥
 संसारि भमंतेणं जिणवयणं पाविऊण एयं नु ।
 दुक्खहुएण रइ.....
- पंक्ति २.°वहीणेण तह य लंकारवज्जिएण मए ।
 किल किं पि मए रइयं जिणपवयणभ.....
- पंक्ति ३.°णेण किं पि विवरीयं ।
 तं खमियव्वं मह सुयहोहिं सुयरयणकलिएहिं ॥
- पंक्ति ४.जिणपवयणं ताव ।
 वरपउमपत्तयणा पड.....

इसी पत्र के B पार्श्व के भाग पर निम्न प्रकार की पंक्तियाँ पढ़ी जाती हैं-

- पंक्ति १.मम नाणं ॥
हाइयउरंमि नयरे वासारत्तंमि विर [इयं एयं ? ।]
- पंक्ति २.तीसाए अहियाइं गाहग्गेणं तु बारस सयाइं ।
एयाइं जो निसुणइ सो पावइ.....॥
.....
- पंक्ति ३. संवत् १२८८ वर्षे अद्येह श्रीमदणहिलपाटके श्रीभीमदेवराज्ये
प्रवर्तमाने....?

१. रिसिदत्ताचरियं की इस ताडपत्रीय पुस्तिका को जिसने अपने द्रव्य से लिखवाया था उस गृहस्थ के कुटुम्ब आदि का परिचय कराने वाली एक १० पद्यों की संस्कृत प्रशस्ति भी इस पोथी के अन्त के ताडपत्र पर लिखी गई है। इस अन्तिम ताडपत्र का भी दक्षिण पार्श्व का आधा हिस्सा तूट गया है जिससे प्रशस्ति का भी खण्डित आधा भाग ही उपलब्ध होता है। जो भाग उपलब्ध है वह इस प्रकार है -

- पंक्ति १ A.....°प्रभोः पान्तु नखेन्दुद्युतयोऽमलाः प्रणमज्जन्तुसंघातं कर्मतापभयाद् भृशम्
॥१॥ प्राग्वाटवंशमाणिक्यं
- पंक्ति २ A.....वणिक् । सीलुका नामतस्तस्य पत्नी शीलगुणावृत्ता ॥२॥ तत्पुत्री
वस्तिणिर्नाम संवणप्रियपत्यभूत् दंप....
- पंक्ति ३ A.....जज्ञेऽपत्ययुगमं मनोहरम् ॥३॥ चाचाभिधः सुतः श्रेयान् विद्यते
विपुलाशयः । देहच्छ्रयेव वशगा प्रिया त...
- पंक्ति ४ A.....लक्ष्मणी ॥४॥ पुत्रिका मोहिणिर्नाम तपोऽनुष्ठानतत्परा ।
दयादाक्षिण्यदानादिगुणरत्नैलंकृता ॥५॥
- पंक्ति १ B अन्येद्युश्चिन्तयामास धीमती साऽप्यनित्यता । संसारे शाश्वतं नास्ति विना धर्मं
जिनोदितम् ॥६॥
- पंक्ति २ B.....समाख्यातः श्रुतचारित्रभेदतः । श्रुतं हि दीपकप्रायो वस्तुतत्त्वावलोकने
॥७॥ बिंबं श्रीपार्श्वनाथस्य स्व....
- पंक्ति ३ B.....विवेकलोचना[द्]ज्ञात्वा जीर्णोद्दारे महत्फलम् ॥८॥ अस्य च लेखयामास
मोहिणिः श्राविकोत्तमा । चरितं रिषिदत्तायाः पुस्तकं सु मनोहरम् ॥९॥
- पंक्ति ४ B.....श्रीनेमिचन्द्रसूरेर्विनेय.....॥१०॥

इस प्रशस्तिका भावार्थ यह है कि किसी नेमिचन्द्रसूरि के शिष्य का उपदेश प्राप्त कर प्राग्वाट जाति के संवणि नामक गृहस्थ की पत्नी वस्तिणि की पुत्री मोहिणि नामक श्राविका ने अपने द्रव्य का सदुपयोग करने की दृष्टि से 'रिषिदत्ताचरित' की यह पुस्तिका लिखवाई। इत्यादि। यह पुस्तिका वि.सं. १२८८ में, जब अणाहिल पुर पाटण में भीमदेव राज्य कर रहा था तब लिखी गई थी।

इस त्रुटित ताडपत्रगत जो खण्डित पंक्तियाँ उद्धृत की गई हैं उनके पाठ से 'रिसिदत्ताचरियं' के कर्ता गुणपाल मुनि का नाम मिल रहा है। इसमें वीरभद्रसूरि का तथा 'नाइलवंश' का भी उल्लेख मिलता है। साथ में 'हाइयपुर' नामक नगर का भी उल्लेख मिलता है जहाँ वर्षावास रहते हुए उनसे इस ग्रन्थ की रचना पूर्ण की।

सम्भव है कि उनसे अपनी रचना के समय का भी इसमें निर्देश किया हो जो खण्डित भाग में रह गया हो। क्योंकि उस काल के कई जैन ग्रन्थकार अपना समयज्ञापक उल्लेख भी प्रायः करते रहे हैं। उद्योतनसूरि ने कुवलयमाला कथा में, सिद्धार्थि ने उपमितिभवप्रपंचा कथा में, जयसिंहसूरि ने धर्मोपदेशमाला कथा संग्रह में ऐसे समयज्ञापक निर्देश स्पष्ट रूप से किये हैं। 'रिसिदत्ताचरियं' की कोई पूर्ण प्रति किसी जैन भण्डार में मिल जाय तो उसका निर्णय हो सकेगा।

इस 'जंबुचरियं' की जो ताडपत्रीय प्रति जेसलमेर के बड़े ज्ञानभण्डार में उपलब्ध है उसका क्रमांक, [मुनिवर श्रीपुण्यविजयजी द्वारा संकलित 'जेसलमेरदुर्गस्थ जैन ताडपत्रीय ग्रन्थभण्डार सूचिपत्र' पुस्तकानुसार] २४५ है। इस पुस्तक के कुछ ३२६ ताडपत्र हैं। ताडपत्र की लम्बाई १३ इंच और चौड़ाई २ इंच है। बीच-बीच में कहीं-कहीं ताडपत्रों की स्याही खराब हो जाने से कुछ पंक्तियाँ अपाठ्यसी भी हो गई हैं। इनका कुछ सूचन हमने तत्तत् स्थान में-जैसे पृष्ठ तथा आदि पर कर दिया है।

इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि हमने जेलमेर के अपने भण्डार-निरीक्षण के समय (सन् १९४३ के प्रारम्भ में) करवा ली थी पर प्रेस कॉपी का मिलान मूल के साथ ठीक ढंग से नहीं किया गया था। इससे कॉपी में कुछ अशुद्धियाँ रह गईं। फिर उसी प्रेस कॉपी को प्रेस में जब छपने दिया तब मूल ताडपत्र के साथ मिलान करने का अवसर नहीं मिला। अतः ग्रन्थ में जो कुछ अशुद्धियाँ रह गई हैं उनका शुद्धिपत्र अन्त में दिया गया है। पाठक गण इस शुद्धिपत्र का उपयोग करें।

इस शुद्धिपत्र के बनाने में प्राकृत भाषा के विशेषज्ञ पण्डित और प्राचीन ग्रन्थों की प्रतिलिपि करने में बहुकुशल प्रतिलेख, पाटण निवासी पण्डित श्री अमृतलाल मोहनलाल ने यथेष्ट श्रम किया है अतः हम उनके प्रति अपना कृतज्ञभाव प्रकट करना चाहते हैं।

ग्रन्थगत कथावर्णन जैन साहित्य में सुप्रसिद्ध और सुपरिचित है। जम्बूचरित विषयक अनेक प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी एवं गुजराती रचनाएँ उपलब्ध होती हैं। इनमें से अनेक रचनाएँ स्वतन्त्र रूप से प्रसिद्ध भी हो चुकी हैं।

सुप्रसिद्ध महान् विद्वान् आचार्य हेमचन्द्रसूरि ने भी अपने त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र नामक पौराणिक पद्धति के विशाल संस्कृत ग्रन्थ के 'परिशिष्ट' पर्व के रूप में 'स्थविरावलि चरित' की सुन्दर रचना की है जिसमें प्रारम्भ के ४ सर्गों में जम्बू मुनि का भी सविस्तर

चरित वर्णन किया है। हेमचन्द्राचार्य का यह चरितवर्णन प्रायः प्रस्तुत 'जंबूचरियं' के समान ही है। जर्मनी के संस्कृत-प्राकृत वाङ्मय के सुप्रसिद्ध महाविद्वान् स्वर्गवासी डॉ. हेर्मान याकोबी ने हेमचन्द्राचार्य के इस 'स्थविरावलिचरित' का सुसम्पादन कर कलकत्ता की एसियाटिक सोसाइटी द्वारा प्रकाशित करवाया था। प्रो० याकोबी ने अपने उक्त सम्पादन में जंबूचरित का इंग्रेजी भाषा में विस्तृत सार भी सम्मिलित कर दिया है। स्थान स्थान में उनसे यह भी बताने का प्रयत्न किया है कि जो कथाएँ जंबूचरित में आई हैं वे अन्यान्य किन ग्रन्थों में और किस रूप में मिलती हैं। इन कथाओं का तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से प्रो० याकोबी का उक्त सम्पादन एक खास अध्ययन की वस्तु है।

प्रो० याकोबी के उक्त सम्पादन के तुलनात्मक अध्ययन की विशेषता को लक्ष्य कर, जर्मनी के एक ऐसे ही अन्य प्रख्यात विद्वान् प्रो० योहन्नेस हेर्टेलने जर्मन भाषा में इन कथाओं का सुन्दर अनुवाद किया और उनके विषय में प्रो० याकोबी से भी अधिक तुलनात्मक उल्लेखों का समवलोकन कर, एक विशिष्ट अध्ययन की उपयुक्त सामग्री उपस्थित की^१।

जम्बूस्वामी के चरित के साथ इन कथाओं का संकलन कब से हुआ है यह एक शोध का विषय है। जम्बूस्वामी की प्राचीनतम कथा कितनी है और उसमें फिर कालान्तर में किन किन कथाओं का समावेश होता गया—इसका ठीक अध्ययन तो तब ही हो सकता है जब जैन साहित्य में उपलब्ध जम्बूस्वामी विषयक सभी कथाओं का तुलनात्मक एवं ऐतिहासिक क्रम से पर्यालोचन किया जाय।

१. हेर्टेल की इस पुस्तक का नाम है -

Ausgewählte Erzählungen
ous
HĒMACANDRAS
Pasiśiṣṭaparvan
mit Einlaltung und Anmerkungen
von
Johnnes Hertel
Leipzig, 1908.

इस पुस्तक के प्रास्ताविक रूप में प्रथम तीन प्रकरण लिखे गये हैं जिनका विषय इस प्रकार है—१. हेमचन्द्र का जीवनचरित, २. हेमचन्द्र का परिशिष्ट पर्व, ३. जैन सम्प्रदाय। इसके बाद परिशिष्ट पर्व का सारा कथाभाग, प्रकरण वार, आलेखित किया है और अन्त में उन उन कथाओं के तुलनात्मक अध्ययन के सूचक अन्यान्य साहित्यिक उल्लेखों का भी संकलन किया है। इन उल्लेखों में, भारत के ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन ग्रन्थों के उल्लेखों के साथ युरोप के भिन्न भिन्न साहित्यगत उल्लेखों का भी समावेश किया गया है।

प्रो० याकोबी ने उक्त 'परिशिष्टपर्व' का सम्पादन किया तब उनको शायद अन्य जम्बूचरितों का परिचय नहीं हुआ था। इस लिए हेमचन्द्राचार्य रचित जम्बूचरित को ही मुख्य मान कर उनने इसकी अवान्तर कथाओं का ऊहापोह किया है। हमारा अनुमान है कि हेमचन्द्राचार्य का जम्बूचरित प्रायः प्रस्तुत गुणपाल मुनि के 'जंबुचरियं' के आधार पर रचित है।

इस चरियं की भाषा बहुत सरल और सुबोध है। ग्रन्थकार की रचना शैली प्रौढ़ होकर भी बहुत ही सुगम भाषा से अलंकृत है। सारा ग्रन्थ गद्य-पद्य मिश्रित है। कथावर्णन प्रवाहबद्ध है। बीच बीच में जहाँ कहीं कथाकार को उपदेशात्मक कथन करने का प्रसंग प्राप्त हो जाता है वहाँ वह विस्तार के साथ उन उन उपदेशों का कथन करता रहता है। इन उपदेशात्मक कथनों में जैनधर्म के आदर्शभूत सिद्धान्तों और विचारों का यथेष्ट समावेश किया गया है। खास करके मनुष्य जीवन की क्षणभंगुरता, संसार की असारता, एवं धार्मिक जीवन की महत्ता का वर्णन सर्वत्र बताने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रकाशनद्वारा जैनकथा साहित्य एवं प्राकृत भाषा की एक विशिष्ट रचना विद्वानों के कर कमलों में उपस्थित हो रही है जो समादरणीय होगी।

हरिभद्र कुटीर

- मुनि जिनविजय

साधन आश्रम, चन्देरिया (चित्तौड़)

वैशाख शुक्ला ३, संवत् २०१५

खिस्त दि. ११-५-५९



૧સંપાદકીય

જંબૂસ્વામી ભગવાન મહાવીરના અંતિમ ગણધર તથા જૈનશાસ્ત્રમાન્ય ૨૪ કામદેવોમાં અંતિમ કામદેવ હતા. આ જંબૂસ્વામીનું ચરિત જૈનકવિઓને એટલું બધું રોચક લાગ્યું કે આ જંબૂચરિત ઉપર તેમણે સંસ્કૃત, પ્રાકૃત, અપભ્રંશ અને દેશીભાષાઓમાં ૧૦૦થી વધુ રચનાઓ કરી છે. અહીં કાળક્રમે સંસ્કૃત, પ્રાકૃતમાં ઉપલબ્ધ સામગ્રી તથા સ્વતન્ત્ર કાવ્યોની સૂચી આ પ્રમાણે છે—

૧. સંઘદાસગણિ—[૫-૬ સદી] વસુદેવહિંદીનું કથોત્પત્તિપ્રકરણ [પ્રાકૃત]
૨. ગુણભદ્રાચાર્ય—[લગભગ સન્ ૮૫૦] ઉત્તરપુરાણનું ૭૬મું પર્વ-૨૧૩ શ્લોક [સંસ્કૃત]
૩. જયસિંહસૂરિ—[સન્ ૮૫૮] ધર્મોપદેશમાલાવિવરણમાં સંક્ષિપ્તરૂપે કેટલીક પંક્તિઓ અને જંબૂચરિત સાથે સંબંધ ધરાવતી ચાર કથાઓ પ્રકીર્ણરૂપમાં [પ્રાકૃત]
૪. ભદ્રદેવસૂરિ—[૧૦-૧૧મી સદી] કહાવલી અંતર્ગત [પ્રાકૃત]
૫. ગુણપાલમુનિ—[વિ. સં. ૧૦૭૬ પૂર્વે] જંબૂચરિય-૧૬ ઉદ્દેશક [પ્રાકૃત]
૬. રત્નપ્રભસૂરિ—[વિ. સં. ૧૨૩૮] ઉપદેશમાલા ઉપર વિશેષવૃત્તિ અંતર્ગત [પ્રાકૃત]
૭. જિનસાગરસૂરિ—પ્રતિષ્ઠાસોમ-કર્પૂરટીકા અંતર્ગત [સંસ્કૃત]
૮. હેમચંદ્રાચાર્ય—[વિ. સં. ૧૨૧૭-૧૨૨૮] પરિશિષ્ટપર્વ-૪ પર્વ [સંસ્કૃત]
[ગુણપાલમુનિકૃત જંબૂચરિય અનુસાર]
૯. શ્રીપ્રભસૂરિ—ઉદયસિંહસૂરિવિવૃત્તિ સહ [વિ. સં. ૧૨૫૩] ધર્મવિધિપ્રકરણ અંતર્ગત-૧૪૧૧ શ્લોક [પ્રાકૃત]
૧૦. ઉદયપ્રભસૂરિ—[વિ. સં. ૧૨૭૯-૮૦] ધર્માભ્યુદયમહાકાવ્ય ૮ સર્ગ [સંસ્કૃત]
૧૧. જયશેખરસૂરિ—[વિ. સં. ૧૪૩૬] જંબૂસ્વામિચરિત્રકાવ્ય ૬ પ્રકરણ [સંસ્કૃત]

૧. આ સંપાદકીય લખાણમાં જૈ.બૃ.સા. ઇતિહાસ ગુજરાતી આવૃત્તિ ભા.૬માંથી કેટલુંક લખાણ સાભાર ઉદ્ધૃત કરીને લીધેલ છે. સંપા.

૧૨. રત્નસિંહશિષ્ય—[વિ. સં. ૧૫૨૦] જંબૂસ્વામિચરિત [સંસ્કૃત]
 ૧૩. બ્રહ્મજિનદાસ—[વિ. સં. ૧૫૨૦] જંબૂસ્વામિચરિત્ર ૧૧ સંધિ [સંસ્કૃત]
 ૧૪. ભુવંનકીર્તિશિષ્યસકલચન્દ્ર—[વિ. સં. ૧૫૨૦] જંબૂચરિય [પ્રાકૃત]
 ૧૫. ઉપા. પદ્મસુંદર નાગૌરી—[વિ. સં. ૧૬૨૬-૨૮] જંબૂચરિય [પ્રાકૃત]
 ૧૬. પં. રાજમલ્લ—[વિ. સં. ૧૬૨૨] જંબૂસ્વામિચરિત્ર [સંસ્કૃત]
 ૧૭. વિદ્યાભૂષણ ભટ્ટારક—[વિ. સં. ૧૬૫૩] જંબૂસ્વામિચરિત્ર [સંસ્કૃત]
 ૧૮. જિનવિજય—[વિ. સં. ૧૭૮૫-૧૮૦૮] જંબૂસ્વામિચરિત્ર [પ્રાકૃત]
 ૧૯. અજ્ઞાતકર્તૃક—જંબૂસ્વામિચરિત્ર [સંસ્કૃતગદ્ય]
 ૨૦. સકલહર્ષ—જંબૂસ્વામિચરિત્ર [૧૧ પત્ર, સંસ્કૃત]
 ૨૧. માનસિંહ—જંબૂસ્વામિચરિત્ર ગ્રન્થાગ્ર ૧૩૦૦ [સંસ્કૃત]
 ૨૨. અજ્ઞાત—જંબૂસ્વામિચરિત્ર [૧૪ પત્ર, સંસ્કૃત]
 ૨૩. અજ્ઞાત—જંબૂસ્વામિચરિત્ર ગ્રન્થાગ્ર ૮૧૭ [સંસ્કૃતગદ્ય]
 ૨૪. અજ્ઞાત—જંબૂસ્વામિચરિત્ર ગ્રન્થાગ્ર ૧૬૪૪ [સંસ્કૃત]
 ૨૫. અજ્ઞાત—જંબૂસ્વામિચરિય

જંબૂસ્વામીનું સંક્ષિપ્ત કથાનક :-

શ્રમણ ભગવાન મહાવીરપરમાત્માના સમયમાં જંબૂ રાજગૃહના એક શ્રેષ્ઠિના પુત્રરૂપે જન્મ્યા તેઓ અતિશય રૂપવંત હતા અને અનેક કળાઓમાં પ્રવીણ હતા. એકવાર સુધર્માસ્વામીનો ઉપદેશ સાંભળ્યા પછી તેમણે બ્રહ્મચર્યવ્રત ગ્રહણ કર્યું અને વૈરાગ્યવૃત્તિ ભણી આગળ વધ્યા. તેમને સંસારમાં રોકવા માટે માતા-પિતાએ તેમના લગ્ન આઠ સુંદર કન્યાઓ સાથે કર્યા, પરંતુ તે કન્યાઓ પણ તેમના મનને સાંસારિક સુખોમાં વાળી ન શકી. દીક્ષાની આગલી રાતે તેમના ઘરમાં પ્રભવ નામનો ચોર ચોરી કરવા આવ્યો પરંતુ જંબૂકુમાર તો આખી રાત પોતાની પત્નીઓને સંસારના દુઃખોનું જ્ઞાન કરાવવા દષ્ટાતરૂપે અનેક કથાઓ એક પછી એક કહેતા રહ્યા અને પત્નીઓની દલીલોને તોડતા રહ્યા. પેલો પ્રભવ ચોર પણ જંબૂકુમારના ઉપદેશો સાંભળી સંસારથી વિરક્ત બન્યો. પરિણામે જંબૂ તેમની પત્નીઓ, પ્રભવ ચોર પોતાના સાથીઓ સાથે, જંબૂકુમારના માતા-પિતા અને આઠ પત્નીઓના માતા-પિતાઓ સુધર્માસ્વામી પાસે દીક્ષિત બન્યા. જંબૂસ્વામી તપસ્યા કરી સુધર્માસ્વામી પછી શ્રમણસંઘના નેતા-ગણધર બન્યા. તેઓ ચરમકેવલી હતા અને વીરનિર્વાણ સંવત-૬૪માં તેઓ નિર્વાણપદને પામ્યા.

જંબૂચરિયમ્ :-

મહારાષ્ટ્રી પ્રાકૃતભાષામાં રચાયેલું આ કાવ્ય ૧૬ ઉદ્દેશામાં વિભક્ત છે. પ્રથમ બે ઉદ્દેશામાં 'સમરાર્થચક્રહા'ની જેમ કથાઓના ચાર ભેદ-અર્થકથા, કામકથા, ધર્મકથા અને સંકીર્ણકથા-બતાવી ધર્મકથાને જ કાવ્યનો પ્રતિપાદ્ય વિષય કહ્યો છે અને ત્રીજા ઉદ્દેશાથી કથાનો પ્રારંભ કરવામાં આવ્યો છે. ચોથા અને પાંચમાં ઉદ્દેશામાં જંબૂસ્વામીના પૂર્વભવોનું આલેખન કરવામાં આવ્યું છે. છઠ્ઠા ઉદ્દેશામાં જંબૂકુમારના જન્મ, શિક્ષા, યૌવન વગેરેનું વર્ણન છે. સાતમા ઉદ્દેશામાં જંબૂકુમારની વૈરાગ્યતરફ ગતિનું તેમ જ માતાપિતાએ તેને સંસારમાં બાંધી રાખવા માટે આઠ કન્યાઓ સાથે કરાવેલા લગ્નનું વર્ણન છે. આગળના ઉદ્દેશામાં તેમણે તેમની પત્નીઓને સંભળાવેલા આખ્યાનો, દષ્ટાંતો અને કથાઓ, પ્રભવચોરે પણ તે ઉપદેશોનું સાંભળવું, તે સૌએ સાથે દીક્ષા લેવી, જંબૂકુમારને કેવળજ્ઞાનપ્રાપ્તિ અને તેમનું મોક્ષગમન આ બધી બાબતોનું આલેખન છે.

આ કાવ્યમાં કર્તાએ કથાક્રમને એવો તો વ્યવસ્થિત બનાવ્યો છે કે વાચકની જિજ્ઞાસા તથા કુતૂહલ આદિથી અંત સુધી જળવાઈ રહે છે. આ ચરિત્રમાં વર્ણનોનું વૈવિધ્ય છે. આ કાવ્ય પ્રાકૃત ગદ્ય અને પદ્યના સુંદર નમૂના રજૂ કરે છે. કાવ્ય ધાર્મિક કથાનું આદર્શરૂપ રજૂ કરે છે. નાયકને પોતાની વીરતા પ્રગટ કરવાની કોઈ તક જ આવતી નથી. આ કૃતિ પરવર્તી કવિઓનો આદર્શ રહી છે.

'જંબૂચરિયમ્' વિષયદિગ્દર્શન :-

૧. કથાપીઠ નામના પ્રથમ ઉદ્દેશોમાં મંગલ, સજ્જન અને દુર્જનની પ્રકૃતિનું વર્ણન, ચારપ્રકારની કથાનું વર્ણન અને છ પ્રકારના જીવોનું વર્ણન કરવામાં આવેલ છે.
૨. કથાનિબંધનનામના બીજા ઉદ્દેશામાં મનુષ્યભવ અને સમ્યક્ત્વની દુર્લભતાનો નિર્દેશ, મનુષ્યભવની સાર્થકતાનો ઉપદેશ અને ત્રણ પ્રકારની પર્યાદાનું નિરૂપણ કરવામાં આવેલ છે.
૩. ત્રીજા ઉદ્દેશામાં મહાવીરપરમાત્માનો રાજગૃહીનગરીમાં ધર્મોપદેશ, શ્રેણિકરાજનું પરમાત્મામહાવીરપ્રભુને વંદનાર્થે આગમન, શ્રેણિકરાજકૃત પ્રસન્નચંદ્રરાજર્ષિસંબંધી પૃચ્છા અને પરમાત્માએ તેનો આપેલો ઉત્તર તેનું વર્ણન કરવામાં આવેલ છે.
૪. ચોથા ઉદ્દેશામાં જંબૂસ્વામીના પ્રથમભવ દેવભવનું વર્ણન, ભવદત્ત અને ભવદેવની પ્રવ્રજ્યા, ભવદત્તસાધુના સ્વર્ગગમન પછી પોતાની પત્ની નાગિલામાં અનુરક્ત ભવદેવસાધુનું પોતાના ગામમાં આગમન, ભવદેવને નાગિલાએ આપેલ વિસ્તારથી ધર્મની હિતશિક્ષા, નાગિલાએ કહેલ રેવાદિત્યબ્રાહ્મણ અને તેના પુત્રનું ઉદાહરણ, ભવદેવમુનિનું સ્વર્ગગમન વગેરે પ્રસંગોનું વર્ણન કરવામાં આવેલ છે.

- પ. પાંચમા ઉદ્દેશામાં ભવદત્તના જીવનો દેવભવ પછી મહાવિદેમાં વજ્રદત્તચક્રવર્તીના સાગરદત્તનામના પુત્રરૂપે જન્મ, પ્રથમવર્ષાગમનનું વર્ણન, સાગરદત્તની અનિત્ય-ભાવના, અભયસાગર આચાર્યની ધર્મદેશના, પત્ની સાથે સાગરદત્તની પ્રવ્રજ્યા, ભવદેવના જીવનો દેવભવ પછી મહાવિદેમાં પદ્મરથરાજના શિવકુમારનામના પુત્રરૂપે જન્મ, શિવકુમાર અને કનકવતીના પ્રથમદર્શનનું વર્ણન, લગ્ન, સાગરદત્ત-આચાર્યની ધર્મદેશના, માતા-પિતાએ દીક્ષાની સંમતિ નહિ આપતાં શિવકુમારનું ભાવશ્રમણપણું, અનશન, સ્વર્ગગમન, ભવદેવના જીવનો બીજી વાર સ્વર્ગગમન પછી ઋષભદત્તશ્રેષ્ઠિના પુત્રપણારૂપે અંતિમકેવલી થવાના છે તે જાણીને ભગવાનની આગળ અનાદતયક્ષનું નૃત્ય, તદ્વિષયક શ્રેણિકરાજની પૃચ્છા અને ભગવાનનો ઉત્તર, વિદ્યુન્માલીદેવ-દેવી દ્વારા પૂછાયેલ પ્રસન્નચંદ્રકેવલીએ તેઓનું જંબૂકુમારની ભાર્યા થવારૂપે કથન વગેરે પ્રસંગોનું વર્ણન કરવામાં આવેલ છે.
- દ. છઠ્ઠા ઉદ્દેશામાં રાજગૃહનગરનું વર્ણન યાવત્ સ્વપ્નવગેરે નિરૂપણપૂર્વક જંબૂકુમારનો જન્મ અને યૌવનનું વર્ણન, સુધર્મસ્વામીનું રાજગૃહમાં આગમન, સુધર્મસ્વામીવડે અપાયેલ ધર્મદેશના, જંબૂકુમારે કરેલ શ્રાવકપ્રતનું ગ્રહણ, જંબૂકુમારે કરેલ આજન્મ બ્રહ્મચર્યનો સ્વીકાર, સર્વવિરતિ માટે વિલંબ કરવાનું કહેનાર માતા-પિતાની સમક્ષ જંબૂકુમારે કહેલ લાવાણ્યવતીગણિકામાં અનુરાગી પુરુષનું દષ્ટાંત, સર્વવિરતિની અનુજ્ઞા નહિ આપનાર માતાપિતાની આગળ જંબૂકુમારે કહેલ કંચનપુરવાસી પાંચમિત્રોનું ઉદાહરણ, તેમાં વચ્ચે કુંથુજિનના સમવસરણનું વર્ણન, કુંથુજિનની ધર્મદેશના અને વિસ્તારથી કાળના સ્વરૂપનું નિરૂપણ, ફરીથી જંબૂકુમારે કરેલ સંસારની અસારતાનું પ્રતિપાદન વગેરે પ્રસંગોનું નિરૂપણ કરેલ છે.
૭. સાતમા વિવાહપરિમંગલ નામના ઉદ્દેશામાં સર્વત્યાગને અભિમુખ જંબૂકુમારનો માતા-પિતાના મનના સંતોષની ખાતર લગ્ન કરવાનો સ્વીકાર, પૂર્વે જણાવીને જંબૂકુમારનો બ્રહ્મચર્યપાલનપૂર્વક કન્યા આઠની સાથે વિવાહ, પ્રભવરાજકુમારનું વર્ણન, જંબૂકુમારના આવાસમાં પ્રભવનો પ્રવેશ, જંબૂકુમારના પ્રભાવનું નિરૂપણ વગેરે પ્રસંગોનું વર્ણન કરેલ છે.
૮. આઠમા પ્રભવદત્ત-ઉત્તરઅભિધાન નામના ઉદ્દેશામાં સાંસારિકસુખના ભોગનો ઉપદેશ આપનાર પ્રભવ સમક્ષ જંબૂકુમારે કહેલ મધુબિંદુ દષ્ટાંત, પ્રભવ સમક્ષ સંસારની અસારતાનું વર્ણન કરતા જંબૂકુમારે કમથી કહેલ કુબેરદત્તાદષ્ટાંત, પ્રભવે કહેલ પિતૃપિંડકર્મનું નિરાકરણ કરતા જંબૂકુમારે કહેલ સમુદ્રસાર્થવાહના પુત્ર મહેશ્વરદત્તનું દષ્ટાંત વગેરે પ્રસંગોનું નિરૂપણ કરેલ છે.

૯. નવમા સિંધુમતીદત્ત-ઉત્તરઅભિધાન નામના ઉદ્દેશામાં અસત્ વસ્તુની પ્રાપ્તિ માટે સત્ વસ્તુને છોડવાની ઈચ્છાવાળા કર્ષકકૌટુંબિકના દષ્ટાંતને કહેનાર સિંધુમતી નામની પ્રથમ પત્નીને જંબૂકુમારે હાથી અને કાગડાનું દષ્ટાંત કહેલ તેનું નિરૂપણ કરવામાં આવેલ છે.
૧૦. દસમા દત્તશ્રીદત્ત-ઉત્તરઅભિધાન નામના ઉદ્દેશામાં ભાગીરથીના જલમાં પડવાથી મનુષ્યપણું પામ્યા પછી દેવપણાની ઈચ્છાથી ફરી ભાગીરથીના જલમાં પડવાથી વાનરથવારૂપ ઉદાહરણ કહેનાર દત્તશ્રી નામની બીજી પત્નીને જંબૂકુમારે અંગારદાહકનું દષ્ટાંત કહેલ તેનું નિરૂપણ કરવામાં આવેલ છે.
૧૧. અગ્યારમાં પદ્મશ્રીદત્ત-ઉત્તરઅભિધાન નામના ઉદ્દેશામાં શ્રેષ્ઠિની પત્ની વિલાસવતી-નૂપુરપંડિતાના વર્ણનયુક્ત અપ્રાપ્ત વસ્તુની ઈચ્છા અને પ્રાપ્ત વસ્તુનો ત્યાગ કરનાર શિયાળની કથાને કહેનાર પદ્મશ્રી નામની ત્રીજી પત્નીને જંબૂકુમારે ચાંડાલકન્યામાં આસક્ત વિદ્યાધરનું દષ્ટાંત કહેલ તેનું નિરૂપણ કરવામાં આવેલ છે.
૧૨. બારમા પદ્મસેનાદત્ત-ઉત્તરઅભિધાન નામના ઉદ્દેશામાં શંખનો ધ્વનિ સાંભળીને ભયભીત થઈને ચોરથી ત્યાગ કરાયેલ દ્રવ્યગ્રહણના લોભથી ફરી તે જ પ્રમાણે શંખનો ધ્વનિ સાંભળીને ચોર વડે હણાયેલ શંખધમક દષ્ટાંતને કહેનાર પદ્મસેના નામની ચોથી પત્નીને જંબૂકુમારે શિલાંજતુમાં ખૂંચી ગયેલ વાનરનું દષ્ટાંત કહેલ તેનું નિરૂપણ કરવામાં આવેલ છે.
૧૩. તેરમા નાગસેનાદત્ત-ઉત્તરઅભિધાન નામના ઉદ્દેશામાં માકંદીનગરીમાં રહેનાર વૈભવપ્રાર્થનામાં લોભી વૃદ્ધાદ્વિકના દષ્ટાંતને કહેનાર નાગસેના નામની પાંચમી પત્નીને જંબૂકુમારે કહેલ જાત્ય અશ્વના દષ્ટાંતનું નિરૂપણ કરવામાં આવેલ છે.
૧૪. ચૌદમા કનકશ્રીદત્ત-ઉત્તરઅભિધાન નામના ઉદ્દેશામાં ગધેડાના પૂંછડાના ગ્રાહક ગામડીયા યુવાનની કથાને કહેનાર છઠ્ઠી કનકશ્રી નામની પત્નીને જંબૂકુમારે કહેલ વડવાપાલક સોલકના દષ્ટાંતનું નિરૂપણ કરવામાં આવેલ છે.
૧૫. પંદરમા કમલવતીદત્ત-ઉત્તરઅભિધાન નામના ઉદ્દેશામાં સુતેલાસિંહના મુખમાં રહેલ માંસઆસ્વાદક-‘મા સાહસ’પક્ષિના દષ્ટાંતને કહેનાર સાતમી કમલવતી નામની પત્નીને જંબૂકુમારે કહેલ ત્રણ મિત્રમંત્રી ઉદાહરણનું નિરૂપણ કરવામાં આવેલ છે.
૧૬. સોળમા ઉદ્દેશામાં કલ્પિત કથાને કહેનાર બ્રાહ્મણની કન્યાના દષ્ટાંતને કહેનાર આઠમી વિજયશ્રી નામની પત્નીને જંબૂકુમારે કહેલ લલિતાંગદષ્ટાંત, જંબૂકુમાર દ્વારા વિસ્તૃત ધર્મોપદેશથી બોધ પામેલ આઠ પત્નીઓ અને પ્રભવરાજકુમાર વગેરેને દીક્ષાનો

અમિલાષ, જંબૂકુમારે કરેલ જિનવરેન્દ્રવર્ધમાન સ્વામીની સ્તુતિ, અનાદતદેવે કરેલ જંબૂકુમારની સ્નાનવિધિનું વર્ણન, ગુણશિલનામના ચૈત્યમાં જંબૂકુમારના ગમનનું વર્ણન, જંબૂસ્વામીની દીક્ષાનું વર્ણન સુધર્મગણધરની હિતશિક્ષા, આર્યસુધર્માસ્વામીનું નિર્વાણ, જંબૂસ્વામીને કેવલજ્ઞાનપ્રાપ્તિનું વર્ણન, જંબૂસ્વામીએ આપેલ ધર્મદેશના, જંબૂસ્વામીનું નિર્વાણ, ચરિત્રસમાપ્તિ, ગ્રંથકારની પ્રશસ્તિ, ગ્રંથકારે કરેલ વંદનીય-પુરુષોને વંદના, આશીર્વાદ વગેરેનું નિરૂપણ કરવામાં આવેલ છે.

કર્તા અને રચનાકાળ :-

આ ‘જંબુચરિયમ્’ના કર્તા નાઈલગચ્છના ગુણપાલમુનિ છે. તેઓ પરમપૂજ્ય વીરભદ્રસૂરિમહારાજના પ્રશિષ્ય અને પરમપૂજ્ય પ્રદ્યુમ્નસૂરિમહારાજના શિષ્ય છે. સંભવતઃ કુવલયમાલાના કર્તા પરમપૂજ્ય ઉદ્યોતનસૂરિમહારાજના સિદ્ધાંતગુરુ વીરભદ્રાચાર્ય અને ગુણપાલમુનિના દાદાગુરુ વીરભદ્રસૂરિમહારાજ બંને એક છે. કૃતિની શૈલિઉપર પરમપૂજ્ય હરિભદ્રસૂરિમહારાજની સમરાઈવ્યકહા અને પરમપૂજ્ય ઉદ્યોતનસૂરિમહારાજની કુવલય-માલાનો પ્રભાવ દેખાય છે. ઉક્ત કથાઓની જેમ જ આ કૃતિ પણ ગદ્યપદ્યમિશ્રિત છે.

કર્તાના તેમ જ કૃતિના કાળના સંબંધમાં ક્યાંય કોઈ ઉલ્લેખ નથી મળતો પરંતુ રચનાશૈલી વગેરે ઉપરથી અનુમાન થાય છે કે ૧૦-૧૧મી સદી આસપાસની આ રચના હોવી જોઈએ. આની એક તાડપત્રીય હસ્તપ્રત જેસલમેર જૈન ભંડારમાંથી મળે છે, તે ૧૪મી સદી પહેલાંની છે.

કર્તાની અન્યકૃતિ :-

પરમપૂજ્ય ગુણપાલમુનિની અન્ય કૃતિ ઈસિદતાચરિય (ઋષિદતાચરિત્ર) છે. આ અંગે જૈ.બૃ.સા.ઈતિહાસ ગુજરાતી આવૃત્તિ પેજ નં. ૩૪૬ ઉપર જણાવેલ છે કે આ કથા ઉપર સૌથી પ્રાચીન રચના પ્રાકૃતમાં છે, તેનું પરિમાણ ૧૫૫૦ ગ્રન્થાગ્ર છે. ૨તેની રચના નાઈલકુલના ગુણપાલમુનિએ ઈસિદતાચરિય (ઋષિદતાચરિત્ર)ની પ્રાચીન પ્રતિ સં. ૧૨૬૪ યા ૧૨૮૮ની મળે છે. તે ઉપરથી નિશ્ચિત થાય છે કે કૃતિ તે પહેલાંની રચના છે. ગુણપાલમુનિનો સમય પણ ૯-૧૦મી સદીની વચ્ચેનો અનુમાનથી નિશ્ચિત કરવામાં આવ્યો છે.

૨. ‘ઋષિદતાચરિય’ના અંતભાગમાં ઇય વીરભદ્રસૂરી નાઇલવંસં.....[પત્ર ૧૫૪, B].....ઉપર આ પ્રમાણે નાઈલવંશનો સ્પષ્ટ ઉલ્લેખ કરેલ છે.

૩. સં. ૧૨૬૪ (૧૨૮૮)માં ગુણપાલકૃત પ્રાકૃત ઋષિદતાચરિત્રની પ્રત અણહિલવાટકે ભીમદેવના રાજ્યમાં (કી. ૨, ૯) લખાઈ. [જૈ.સા.સં.ઈ. નવી આવૃત્તિ પેજ નં. ૨૩૦ / પેરા ૫૦૦]

પૂર્વપ્રકાશન અંગે :-

મુનિવર ગુણપાલવિરચિત પ્રાકૃતભાષાનિબંધ આ ‘જંબુચરિયમ્’ રાજસ્થાન રાજ્ય અંતર્ગત જેસલમેરદુર્ગમાં રહેલ પ્રાચીનજૈનગ્રંથભાંડાગારમાંથી પ્રાપ્ત થયેલ એકમાત્ર તાડપત્રીય પુસ્તકના આધારથી આની પ્રતિલિપિ કરાવીને આચાર્ય જિનવિજયમુનિએ સંપાદન-સંશોધન કરીને તૈયાર કરેલ આ ‘જંબુચરિયમ્’ અધિષ્ઠાતા-સિંઘીજૈન-શાસ્ત્રવિદ્યાપીઠ-ભારતીયવિદ્યાભવન-મુંબઈથી વિ. સં. ૨૦૧૪, ઈ. સ. ૧૯૫૯માં આની પ્રથમાવૃત્તિ ગ્રન્થાંક-૪૪ તરીકે પ્રકાશિત કરવામાં આવેલ છે.

મુનિ જિનવિજય પોતાની પ્રસ્તાવનામાં જણાવે છે કે આ ગ્રંથની પ્રતિલિપિ અમે જેસલમેરના પોતાના ભંડાર નિરીક્ષણનો સમય [સન્ ૧૯૪૩ના પ્રારભમાં] કરાવેલી પરંતુ પ્રેસકોપીનું મૂળની સાથે સારી રીતે મેળવવાનું થઈ શકેલ નહિ, તેથી આ ગ્રંથની કોપીમાં કોઈ કોઈ અશુદ્ધિઓ રહી ગયેલ, ફરી આ પ્રેસકોપીને પ્રેસમાં છપાવવા આપી ત્યારે મૂળ તાડપત્રની સાથે મેળવવાનો અવસર મળ્યો નહિ, તેથી ગ્રંથમાં જે અશુદ્ધિઓ રહી ગઈ તેનું શુદ્ધિપત્ર અંતમાં આપેલું છે. પાઠકગણ આ શુદ્ધિપત્રનો ઉપયોગ કરે.

આ શુદ્ધિપત્રને બનાવવામાં પ્રાકૃતભાષાના વિશેષજ્ઞ પંડિત અને પ્રાચીન ગ્રંથોની પ્રતિલિપિ કરવામાં બહુકુશળ પ્રતિલેખક પાટણનિવાસી પંડિતશ્રીઅમૃતલાલ મોહનલાલે યથેષ્ટ શ્રમ કરેલ છે, તેથી અમે તેમના પ્રત્યે અમારો કૃતજ્ઞભાવ વ્યક્ત કરીએ છીએ.

નવીનસંસ્કરણ અંગે :-

આ નવીનસંસ્કરણના સંપાદનકાર્યમાં હું તો માત્ર નિમિત્તરૂપ છું ખાસ તો મુનિ જિનવિજયે એક માત્ર તાડપત્રીય ઉપરથી અથાક પરિશ્રમ કરી આ ગ્રંથ સંપાદિત કરેલ છે અને સિંઘીજૈનશાસ્ત્રવિદ્યાપીઠે આ ગ્રંથ પ્રકાશિત કરેલ છે તેઓ શતશઃ સાધુવાદને પાત્ર છે. આ ‘જંબુચરિયમ્’ની પ્રથમાવૃત્તિ અત્યંત જીર્ણ થયેલી હોવાથી પરમપૂજ્ય પંન્યાસપ્રવર શ્રીવજ્રસેનવિજયમહારાજની શુભપ્રેરણાથી આના નવીનસંસ્કરણનું કાર્ય કરવાનું હાથમાં લીધું. આ નવીનસંસ્કરણમાં અમે પ્રથમાવૃત્તિમાં પંડિતઅમૃતલાલ મોહનલાલે તૈયાર કરેલ શુદ્ધિપત્રક પૃષ્ઠ નંબર ૨૦૧થી ૨૧૪ના પાઠોની શુદ્ધિ મૂળગ્રંથમાં કરીને શુદ્ધપાઠ લીધેલ છે તેમજ ૧થી ૭ નવા પરિશિષ્ટો તૈયાર કરેલ છે. તેમ જ યથાશક્ય શુદ્ધિકરણ પૂર્વકનું કાર્ય કરવા માટે પરિશ્રમ કરેલ છે, આમ છતાં પણ મુદ્રણાદિદોષથી કે દષ્ટિદોષથી કે અનાભોગથી જે કોઈ ક્ષતિઓ રહી ગયેલ હોય તેનું મિચ્છા મિ દુક્કડં આપવા પૂર્વક વાચકવર્ગ તેનું પરિમાર્જન કરીને વાંચે એવી ખાસ ભલામણ કરું છું.

ઉપકારસ્મરણ :-

પ્રસ્તુત નવીન સંસ્કરણ તૈયાર કરવાની પ્રેરણા કરનાર પરમપૂજ્ય પંન્યાસશ્રીવજ્રસેન-વિજયમહારાજનો તથા પ્રસ્તુત નવીનસંસ્કરણના પ્રકાશન અંગે શ્રુતભક્તિથી પ્રભાવિત થઈને શ્રુતોપાસક પરમપૂજ્ય પ્રવચનપ્રદીપ આચાર્યભગવંત શ્રીપુણ્યપાલસૂરિમહારાજે મુલુંડ-જિનાજાઆરાધકશ્વેતામ્બરમૂર્તિપૂજક તપગચ્છ જૈનસંઘને આ ગ્રંથપ્રકાશનમાં લાભ લેવા માટે પ્રેરણા કરી અને તેઓશ્રીની શુભપ્રેરણાથી મુલુંડ જિનાજા આરાધકસંઘે પોતાના જ્ઞાનદ્રવ્યમાંથી આ ગ્રંથ પ્રકાશનનો લાભ લીધેલ છે તે બદલ પૂજ્યઆચાર્યભગવંતશ્રીનો તથા મારી શ્રુતોપાસનાના કાર્યમાં અનેક પૂજ્ય મહાપુરુષોના શુભાશીર્વાદ પ્રાપ્ત થયા છે તે પરમોપકારી ગુરુભગવંતોનો, મારી સંયમસાધનામાં અને શ્રુતોપાસનામાં સહાયક બનનાર સૌ કોઈનો આ ગ્રંથપ્રકાશનના સુઅવસરે કૃતજ્ઞભાવે સ્મરણ કરીને કૃતજ્ઞતા વ્યક્ત કરું છું.

પ્રાંતે અંતરની એક જ શુભભાવના વ્યક્ત કરું છું કે ‘જંબુચરિયમ્’ ગ્રંથનું વાંચન કરતાં કરતાં મારા હૈયામાં સંવેગગર્ભિત વૈરાગ્યના ભાવો ઉલ્લસિત થયા છે અને સંવેગના માધુર્યની અનુભૂતિ થઈ છે. એ રીતે સૌ કોઈ મુમુક્ષુ ભવ્યજનોને આ ગ્રંથનું વાંચન કરતાં કરતાં સંવેગગર્ભિત વૈરાગ્યના ભાવો ઉલ્લસિત થાય અને સંવેગના માધુર્યની અનુભૂતિ થાય અને ભવનિર્વેદ પ્રગટ થાય અને સંવેગ-નિર્વેદ દ્વારા અસાર-અસ્થિર સુખોનો ત્યાગ કરીને શાશ્વત-સ્થિર સુખનો આસ્વાદ કરનારા બનીએ અને સાદિ અનંતભાગે જંબુસ્વામીની જેમ સિદ્ધિસ્થાનમાં વાસ કરીએ એ જ શુભભાવના !!

એફ-૨ જેઠાભાઈ પાર્ક,
નારાયણનગર રોડ,
પાલડી, અમદાવાદ-૭
શ્રાવણ સુદ-૫, વિ.સં. ૨૦૬૫,
રવિવાર, તા. ૨૬-૭-૨૦૦૮.

— સાધ્વી ચંદનબાલાશ્રી



विषयानुक्रमणिका

विषयः	पत्रक्रमाङ्कः
प्रकाशकीय	७-८
प्रस्तावना	९-१८
संपादकीय	१९-२६
१. मङ्गलम् ।	३
२. सज्जन-दुर्जनप्रकृतिवर्णनम् ।	४-५
३. चतुःप्रकारा कथा ।	५
४. कथापीठनामप्रथमोद्देशसमाप्तिः ।	७
५. मनुष्यभव-सम्यक्त्वदौर्लभ्यनिर्देशः ।	८
६. मनुष्यभवसार्थक्योपदेशः ।	९
७. त्रिप्रकारपर्षन्निरूपणम् ।	१०
८. कथानिबन्धनामद्वितीयोद्देशसमाप्तिः ।	
९. महावीरस्वामिनो राजगृहे धर्मोपदेशः, श्रेणिकराजकृता प्रसन्नचन्द्र- राजर्षिसम्बन्धिनी पृच्छा तस्या उत्तरञ्च ।	११-२२
१०. तृतीयोद्देशसमाप्तिः ।	२२
११. जम्बूस्वामिनः प्रथमभवदेवभववर्णना ।	२३-२४
१२. भवदत्त-भवदेवयोः प्रव्रज्या ।	२५-२६
१३. भवदत्तसाधुस्वर्गमनादनन्तरं स्वपत्नीनागिलानुरक्तस्य भवदेवसाधोः स्वग्रामागमनम् ।	२७-२८

१४. भवदेवं प्रति नागिलाकृता विस्तरतो धर्मानुशास्तिः । २९-३२
१५. नागिलयोदाहृतं रेवादित्यविप्र-तत्पुत्रोदाहरणम् । ३२-३६
१६. भवदेवस्य स्वर्गगमनम्, चतुर्थोद्देशसमाप्तिश्च । ४०
१७. भवदत्तजीवस्य देवभवानन्तरं विदेहे वज्रदत्तचक्रवर्तिनः
सागरदत्तनामधेयपुत्रत्वेन जन्म । ४१-४२
१८. प्रथमघनागमदर्शनवर्णनम् । ४२-४४
१९. सागरदत्तस्य अनित्यभावना । ४४-४८
२०. अभयसागराचार्यस्य धर्मदेशना,
सकलत्रस्य सागरदत्तस्य प्रव्रज्याग्रहणम् । ४९-५०
२१. भवदेवजीवस्य देवभवानन्तरं विदेहे पद्मस्थराज्ञः शिवकुमारा-
भिधपुत्रत्वेन जन्म । ५१-५२
२२. शिवकुमार-कनकवत्योः प्रथमदर्शनवर्णना, उद्धाहश्च । ५३-६०
२३. सागरदत्ताचार्यस्य धर्मदेशना, पित्रननुज्ञातस्य शिवकुमारस्य
भावश्रामण्यम्, अनशनम्, स्वर्गगमनं च । ६१-७३
२४. भवदेवजीवस्य द्वितीयवारस्वर्गगमनानन्तरं ऋषभदत्तश्रेष्ठिपुत्र-
त्वेनान्तिमकेवलित्वमधिगम्य भगवतः पुरतोऽनादृतयक्षनर्तनम्,
तद्विषया श्रेणिकपृच्छा, भगवदुत्तरं च । ७४-७५
२५. विद्युन्मालिदेव-देवीपृष्ठप्रसन्नचन्द्रर्षिकेवलिनस्तासां जम्बूकुमार-
भार्याभवनख्यापनम् । ७६
२६. पञ्चमोद्देशसमाप्तिः । ७७
२७. राजगृहनगरवर्णनं यावत् स्वप्नादिनिरूपणपूर्वकं जम्बूकुमारस्य
जन्म, यौवनवर्णनं च । ७८-८१
२८. सुधर्मस्वामिनो राजगृहागमनं तत्कृता धर्मदेशना च । ८१-८८
२९. जम्बूकुमारस्य गृहिव्रतग्रहणम् । ८९
३०. जम्बूकुमारस्य आजन्मब्रह्मचर्यस्वीकरणम् । ८९

३१. सर्वविरतिविलम्बकारिणोर्मातापित्रोः पुरो जम्बूकुमारेणाख्यातो
लावण्यवतीगणिकानुरागिपुरुषदृष्टान्तः । १०-१२
३२. सर्वविरत्यनुमतिमददतोर्मातापित्रोः पुरो जम्बूकुमारेणाख्यातं
कञ्चनपुरवास्तव्यपञ्चसुहृदुदाहरणम् । अन्तरा कुन्थुजिनसमवसरणवर्णना,
धर्मदेशना, विस्तरतः कालस्वरूपनिरूपणं च । १२-१०
३३. पुनरपि जम्बूकुमारस्य संसारासारताप्रतिपादनम् । ११-१०१
३४. षष्ठोद्देशसमाप्तिः । १०१
३५. सर्वत्यागाभिमुखस्य जम्बूकुमारस्य मातृमनस्तोषार्थं परिणयन-
स्वीकरणम्, पूर्वनिवेदिततद्ब्रह्मचर्यपालनपूर्वकं कन्याष्टकेन
सार्धमुद्ग्रहनं च । १०२-१०६
३६. प्रभवराजकुमारवर्णनम् जम्बूकुमारावासे प्रभवस्य प्रवेशः,
जम्बूकुमारस्य प्रभावनिरूपणं च । १०६-११०
३७. विवाहपरिमङ्गलनामसप्तमोद्देशसमाप्तिः । ११०
३८. सांसारिकसुखभोगोपदेष्टारं प्रभवं प्रति जम्बूकुमारेणोदाहृतो
मधुबिन्दुदृष्टान्तः । १११-११६
३९. प्रभवं प्रति संसारासारतां समालपता जम्बूकुमारेण क्रमेणाख्यातः
कुबेरदत्तादृष्टान्तः । ११६-१२२
४०. प्रभवप्रतिपादिता पितृतर्पणकर्मनिराकुर्वता जम्बूकुमारेणोपाख्यातः
समुद्रसार्धवाहपुत्रमहेश्वरदत्तदृष्टान्तः । १२२-१२६
४१. प्रभवोत्तराभिधानाष्टमोद्देशसमाप्तिः । १२७
४२. अविद्यमानवस्तुप्राप्त्यर्थं विद्यमानविजहितुकामकर्षककौटुम्बिकोदा-
हरणप्रतिपादिकां सिन्धुमतीं प्रति जम्बूकुमारेणोक्तो
वारण-वायसदृष्टान्तः । १२८-१३१
४३. [प्रथमपत्नी] सिन्धुमतीदत्तोत्तराभिधाननवमोद्देशसमाप्तिः । १३१
४४. भागीरथीजलपतनजातमानुष्य-देवत्वप्राप्तुकामवानरा-
हरणोपदेष्ट्रीं दत्तश्रियं प्रति जम्बूकुमारेण समुपदिष्ट
इङ्गलदाहकदृष्टान्तः । १३२-१३६

४५. [द्वितीयपत्नी] दत्तश्रीदत्तोत्तराभिधानदशमोद्देशसमाप्तिः । १३६
४६. इभ्यस्त्रुषाविलासवती (नूपुरपण्डिता)वर्णनयुक्ताऽप्राप्तेच्छुप्राप्त-
परिहारकशृगालकथां कथितवतीं पद्मश्रियं प्रति जम्बूकुमारे-
णोक्तश्राण्डालकन्यासक्तमेघरथविद्याधरदृष्टान्तः । १३७-१५६
४७. [तृतीयपत्नी] पद्मश्रीदत्तोत्तराभिधानैकादशोद्देशसमाप्तिः । १५७
४८. शङ्खस्वनाकर्णनभीतचौरत्यक्तद्रव्यग्रहणलोभात् पुनस्तथैवाकर्णित-
शङ्खस्वरचौरहतशङ्खधमकदृष्टान्तमुपदिशन्तीं पद्मसेनां प्रति
जम्बूकुमारेण समुपदिष्टः शिलाजतुक्षुप्तवानरदृष्टान्तः । १५८-१६३
४९. [चतुर्थपत्नी] पद्मसेनादत्तोत्तराभिधानद्वादशोद्देशसमाप्तिः । १६३
५०. माकन्दीनगरीवास्तव्यातिवैभवप्रार्थनालुब्धवृद्धाद्विकदृष्टान्त-
वक्त्रीं नागसेनां प्रति जम्बूकुमारेणोक्तो जात्यश्वदृष्टान्तः । १६४-१७१
५१. [पञ्चमपत्नी] नागसेनादत्तोत्तराभिधानत्रयोदशोद्देशसमाप्तिः । १७१
५२. खरपुच्छग्राहकग्रामीणतरुणोदाहरणमुद्गिरन्तीं कनकश्रियं
प्रत्युत्तरयता जम्बूकुमारेणोदाहतो वडवापालकसोलकदृष्टान्तः । १७२-१७७
५३. [षष्ठपत्नी] कनकश्रीदत्तोत्तराभिधानचतुर्दशोद्देशसमाप्तिः । १७७
५४. प्रसुप्तसिंहवक्त्रान्तर्गतमांसास्वादकपक्षिदृष्टान्तं कथयन्तीं
कमलवतीं प्रति जम्बूकुमारेणोदाहतं त्रिमित्रमन्युदाहरणम् । १७८-१८४
५५. [सप्तमपत्नी] कमलवतीदत्तोत्तराभिधानपञ्चदशोद्देशसमाप्तिः । १८४
५६. कल्पितकथाप्रतिपादिताद्विजकन्यादृष्टान्तं प्रतिपादयन्तीं
[अष्टमपत्नी] विजयश्रियं प्रति जम्बूकुमारेणोक्तो वासनाविडम्बित-
ललिताङ्गदृष्टान्तः । १८५-१९६
५७. जम्बूकुमारोपदिष्टविस्तृतधर्मोपदेशेन प्रबुद्धानां भार्याष्टक-
प्रभवादीनां प्रव्रज्याभिलाषः । १९६-२२१
५८. जम्बूकुमारकृता जिनवरेन्द्रवीरवर्द्धमानस्तवना अनाहतदेवकारित-
जम्बूकुमारमज्जनविधिवर्णना । २२२-२२७

५९. गुणशिलकचैत्यगमनवर्णना ।	२२८-२३३
६०. सुधर्मगणधरेन्द्रस्य अनुशास्तिः ।	२३५-२३९
६१. आर्यसुधर्मस्वामिनो निर्वाणम् । जम्बूस्वामिनः केवलज्ञानप्राप्तिवर्णना ।	२४०-२४२
६२. जम्बूस्वाम्युपदिष्टा धर्मदेशना ।	२४३-२५५
६३. जम्बूस्वामिनो निर्वाणम्, चरित्रसमाप्तिः, ग्रन्थकारप्रशस्तिश्च ।	२५६-२५८
६४. ग्रन्थकारस्य वन्द्यवन्दना, आशीर्वादश्च ।	२५८-२६०
[१] परिशिष्टम्-जंबुचरिये उद्धरणानामकाराद्यनुक्रमः	२६३-२६८
[२] परिशिष्टम्-जंबुचरिये विशेषनाम्नामकाराद्यनुक्रमः	२६९-२७३
[३] परिशिष्टम्-जंबुचरिये अपभ्रंशश्लोकानामकाराद्यनुक्रमः	२७४
[४] परिशिष्टम्-जंबुचरिये सुक्तीनामकाराद्यनुक्रमः	२७५-२७६
[५] परिशिष्टम्-जंबुचरिये प्रशस्तीनामकाराद्यनुक्रमः	२७७
[६] परिशिष्टम्-जंबुचरिये कथानामकाराद्यनुक्रमः	२७८-२७९
[७] परिशिष्टम्-जंबुचरिये देशनादिविषयानामकाराद्यनुक्रमः	२८०-२८३



जंबुचरिये
उद्धरणस्थानसङ्केतसूचिः

आ०नि०	आवश्यकनिर्युक्ति
आव०नि०	
आ०सं०	आवश्यकसङ्ग्रहणी
उत्तरा०	उत्तराध्ययन
उ०नि०	उत्तराध्ययननिर्युक्ति
उत्त०नि०	
उ०मा०	उपदेशमाला
उप०मा०	
नव०	नवतत्त्वप्रकरण
प्र०सा०	प्रवचनसारोद्धार
श्रा०प्र०	श्रावकप्रज्ञप्ति
वि०भा०	विशेषावश्यकभाष्य
वैरा०श०	वैराग्यशतक
सं०प्र०	सम्बोधप्रकरण

सिरिमुणिवइगुणपालविरइयं

जंबुचरियम्

सिरिमुणिवइगुणवालविरइयं

॥ जंबुचरियम् ॥

॥ कहावीढो नाम पढमुद्देसो ॥

॥ ॐ नमो वीतरागाय ॥

नमिउं दुक्खत्तसमत्थसत्तभवजलहितारणसमत्थे ।
पाए चक्कंकुसकुलिसलंछिए जिणवरिंदाणं ॥१॥
नमिउं पणयामरमउडकोडिसंघट्ठकमकमलं ।
मिच्छत्तविसविणासं, भत्तीए जुयाइतित्थयरं ॥२॥
संगमयामरबहुज(रपज?)णियबहुविहउवसग्गकरणअक्खुहियं ।
नमिउं भवभयमहणं, जएक्कबंधू(धुं) महावीरं ॥३॥
मिच्छत्तामयसंघत्थजंतुसिवदाणअगयदुल्ललिए ।
सेसे बियजिणवज्जे(?), बावीसं भावओ नमिउं ॥४॥
जरमरणरोगरयमलकिलेसजंवालसोगभयरहिए ।
नमिऊणऽक्खयकेवलनाणसमिद्धे सया सिद्धे ॥५॥
अन्नाणमोहसम्मोहियाण जा देइ उत्तमं नाणं ।
भव्वाणं जंतूणं, तं सुयदेविं नमेऊणं ॥६॥
खन्ताइधम्मजुत्ते पंचिंदियसंवुडे तिगुत्ते य ।
पंचसमिए पसत्ते साहू सव्वे नमेऊणं ॥७॥

दोजीहं वक्कगइं परछिद्दालोयणम्मि तल्लिच्छं ।
बहुकोहं भयजणणं पिसुणभुयंगं व संठविउं ॥८॥

जेण - संते नासेइ गुणे, आरोवइ अवगुणे असंते वि ।
विहिविलसियस्स व खलस्स पुणो किल को न बीहेइ ॥९॥

तम्हा - खणरत्त-खणविरत्तं खणेण मम्माणि तह य मगंतं ।
दुडुकलत्तं व खलं विवज्जणीयं सयाकालं ॥१०॥

अन्नं च - सुग्गेज्झा मत्तगया भुयगा सीहा य तह य वग्घा य ।
मम्मानेसणपउणं दुग्गेज्झं चेव खलहिययं ॥११॥

जेण - सायरजलपरिमाणं सुरगिरिमाणं च भुयणसब्भावं ।
जाणंति बुद्धिमंता खलस्स हिययं न याणंति ॥१२॥

तह य - पुरओ जंपइ अन्नं अन्नं पट्टीए हिययए अन्नं ।
वेसायणो व पिसुणो न सव्वहा जाइ सब्भावं ॥१३॥

अओ - पाणाणंतकराणं जमपुरिसाणं वऽकज्जकुवियाणं ।
पिसुणाणुप्पित्थमणो पारेमि न किंचि काऊणं ॥१४॥
तह वि अइधिट्टयाए भव्वाण हियट्टमिच्छमाणेण ।
अवहीरिऊण पिसुणे किल किं पि मए वि आरडियं ॥१५॥

अहवा जइ मम दोसे गहिऊणं निव्वुइं लहइ कोइ ।
ता किं न कव्वकरणे एत्थ मया जं न पज्जत्तं ॥१६॥

अहवा किं मम तेणं सुणएण व भसणकज्जनिरएणं ।
कीरउ जं कायव्वं पसंसयिस्संति तं सुयणा ॥१७॥

चइउं दोससमूहं विरलं पि य गुणलवं पि गिण्हंति ।
सुयणा सहावउ च्चिय परदोसपरम्मुहा जेण ॥१८॥

भणियं च- “सुयणो न रूसइ च्चिय, अह रूसइ मंगुलं न चिंतेइ ।

अह चिंतेइ न जंपइ, अह जंपइ लज्जिओ होइ” ॥१९॥ []

१. ‘हिययडु’ प्रतौ ।

अलमेत्थ वित्थरेणं पज्जत्तं सज्जणेहिं सव्वं पि ।
 जेण गुणगिण्हणरया वेरीण वि नियसहावाउ ॥२०॥
 पणमियजिणाइचलणो संतोसियखलयणो समासेण ।
 धम्मकहापडिबद्धं वोच्छमहं जंबुणो चरियं ॥२१॥
 तत्थ य सामन्नेणं कहाउ मन्नति ताव चत्तारि ।
 अत्थकहा, कामकहा, धम्मकहा तह य संकिन्ना ॥२२॥
 अत्थो अत्थकहाए, भन्नइ, कामो वि कामुयकहाए ।
 धम्मो धम्मकहाए, पुरिसत्था चारि चरिमाए ॥२३॥
 धम्माए एत्थ पगयं अहवा मीसाए होइ नायव्वं ।
 उवयारो पुरिसाणं जेण य एयाहिं कायव्वो ॥२४॥
 ते पुण पंचविहा इह पुरिसा तित्थयर-गणहरिंदेहिं ।
 संखेवेणं भणिया जिणसहिया छव्विहा होंति ॥२५॥
 अहमऽहमा तह अहमा विमज्झिमा मज्झिमुत्तमा चेव ।
 उत्तमगा पंचमगा छट्ठा पुण उत्तमोत्तमया ॥२६॥
 “धम्मत्थ-कामरहिया कूडज्जवसायवट्टिणो पावा ।
 महुमज्जमंसनिरया भिल्लई हुंति अहमहमा ॥२७॥
 इहलोयमेत्तुट्ठा धम्मियजणमोक्खनिंदणपसत्ता ।
 जूयकरनडाईया एए अहमा वियाणाहि ॥२८॥
 धम्मं अत्थं कामं सेवंति विमज्झिमा अबाहाए ।
 ते पुण उज्जयभावा बंभण-कोडुंबियाईया ॥२९॥
 धम्माईसु पसत्ता जहसत्तीए विचित्तवयजुत्ता ।
 घरपुत्तदारनिरया सुसावगा मज्झिमुत्तमया ॥३०॥
 मोक्खेगदिन्नचित्ता उम्मूलियमोहवल्लिणो असढा ।
 घरपुत्तदारविरया उत्तमगा साहुणो हुंति ॥३१॥

चउतीसअइसयनिही सुरनरमहिया अणंतनाणी य ।
घरपाडिहेरजुत्ता तित्थयरा उत्तमोत्तमया” ॥३२॥

एएसिं पुण मज्झे उवयारो होइ तिण्ह पुरिसाणं ।
कायव्वो नऽन्नेसिं असंभवाओ जिणाईणं ॥३३॥

जेण जिणा कयकिच्चा, भिल्ल-नडाई य न उ भवे जोग्गा ।
अत्थापत्तीए भवे, जोग्गा इह तिन्नि धम्मस्स ॥३४॥

उवयाराण वि परमो उवयारो धम्मबोहणं होइ ।
साहूहिं जेण भणियं फुडवियडत्थं निसामेह ॥३५॥

“सम्मत्तदायगाणं, दुप्पडियारं भवेसु बहुएसु ।
सव्वगुणमेलियाहि वि उवयारसहस्सकोडीहिं” ॥३६॥ [उप.मा./गा.२६९]

“सम्मत्तम्मि उ लद्धे ठइयाइं नरय-तिरियदाराइं ।
दिव्वाणि माणुसाणि य मोक्खसुहाइं सहीणाइं” ॥३७॥ [उप.मा./गा.२७०]

एसो वि य नियमेणं कायव्वो होइ जिणमयं लहिउं ।
धम्मुवयारो जेणं जिणवयणमिमं निसामेह ॥३८॥

“सयलम्मि वि जीवलोएँ, तेण इहं घोसिओ अमाघाओ ।
एक्कं पि जो दुहत्तं सत्तं बोहेइ जिणवयणे” ॥३९॥ [उप.मा./गा.२६८]

ता एसो परमगुणो दिट्ठो परमत्थनिट्ठियट्ठेहिं ।
तेण ससत्तीए सया परोवयारम्मि जइयव्वं ॥४०॥

एयं पि सवित्थरओ अणेयसाहूहिं पुव्वमक्खायं ।
तेसिं तु मगगलगो अहं पि संखेवओ नवरं ॥४१॥

अहवा वि हु कह तीरइ तेसिं मगगं तु गंतुमहेहिं ।
तह वि किल किं पि भणिमो तेसिं कमकमलभत्तीए ॥४२॥

अन्नं च- जाणामि न उण अन्नं तेसिं कव्वाण मज्झिमं भणियं ।
तह वि अइवसणघत्थत्तणेण मूणं न पारेमि ॥४३॥

अन्नं च- वियरंति जत्थ गुणिणो पसरं न लहंति निग्गुणा तत्थ ।

सूरंसूणं पुरओ खज्जोओ कुणउ किं वरओ ॥४४॥

अहवा गुणवंताणं मग्गच्चारेण होइ गुणनियरो ।

रविसंगेण पजायइ कसिणं पि हु निम्मलं गयणं ॥४५॥

अह वा - कुडिलसहावे लोए कह व गुणा होंति तं न याणामो ।

चंदस्स अमयसरिसे किरणे नलिणी न इच्छेइ ॥४६॥

कायव्वो ववसाओ परोवयारम्मि तह वि सुयणेण ।

हवउ गुणो दोसो वा जाणइ किं को वि परचित्तं ॥४७॥

सो वि य परोवयारो सत्थपबंधेण होइ विक्खाओ ।

ता तं चिय पारंभइ निसुणंतु जणा पयत्तेणं ॥४८॥

विमल'गुण'गणाणं 'पाल'णे भत्तिजुत्ता,

तवचरणसमग्गा जे भवंतीह भव्वा ।

हरिसवसभरा ते 'पीढबंधं' मुणित्ता,

धुयमरणकिलेसा सिद्धिसोक्खं लहंति ॥४९॥

इय जंबुणामचरिए, पवयन्नपसत्थविविहनिम्मविए ।

नामेण कहावीढो, पढमुद्देसो समत्तो त्ति ॥५०॥



॥ कहानिबंधो नाम बिड़ओ उद्देशो ॥

इह हि जंतुणा सुरमणुयतिरियनारयगईसु भममाणेणं कह कह वि भवियव्व-
यानिओएण किंचूणाए सत्तहं कम्माणं कोडाकोडीए सागरोवमाणं संचिदुंतीए, सुरतरु-
सुरहिकुसुमपवरमंजरिपरिमिलाणत्तऽणुकंपाणाकरणारइविमणपरिचवणविलवणदीणपरिमलण-
परपेसणपररिद्धिपलोयणाइअभिदुयसुरा, जरमरणरोगरयमलकिलेसजंवालजरखाससासदा-
हाऽइसारभगंदरइद्विवियोगाणिद्वसंपओगादिपीडियनरा, नेल्लंछणडहणंकणंकुसारकसना-
सिगवेहणभारोवणबंधणादिउवद्वोवदुयतिरिएसु, तारणफाडणमोडणुक्कतणाभेयणच्छेयणमु-
सुमूरणतवियतउयतंबायपेच्छनारएसु, चउगईदुक्खं(क्ख)पाणादिवि(वी)ईतरंगभममाणसयसंकुले
तहा कोहमयमाणलोहमोहमायाइविसायगारवाइमयरमच्छकच्छनक्कतंतुयसुंसुमारादिपुच्छ-
च्छडोच्छलियदुग्गमदुरंतदुहसयाउलकरालेजलहिं वाणोरपारे महासंसारे लहिऊणं पवर-
तरंडयं व सम्मत्तं, अचित्तचित्तामणि व्व अणघेयमहारयणं जिणगणहरसिद्धसाहुगुण-
कित्तणकहासु आयरो कायव्वो अप्पमादो य त्ति । अन्नं च -

जाव परदोसगहणं कीरइ बंधस्स कारणं परमं ।

ताव वरं विमलगुणं सुपुरिसचरियं ति सोयव्वं ॥१॥

कम्माण खओ पुन्नाण संभवो पाववज्जणं तह य ।

होइ पमायाण जओ, सवणे तह धम्मपडिवत्ती ॥२॥

जओ भणियं -

“न य नाणदीवरहिओ कज्जाकज्जाइं जाणई पुरिसो ।

तो तस्स जाणणत्थं पढमं नाणं वियाणेज्जा” ॥३॥ []

नाणं च चरणसहियं, दंसणसहियं च साहणं भणियं ।

एत्थ य पंगं-उंथाणं, दिदुंतो होइ नायव्वो” ॥४॥ []

जओ भणियमागमे-

नाणं पगासगं सोहओ तवो संजमो य गुत्तिकरो ।

तिणहं पि समाओगे मोक्खो जिणसासणे भणिओ ॥५॥ [वि.भा.गा.११६१]

“सव्वेण य सत्तेणं संसारत्थेण चउगइनिबंधे ।

जरमरणरोगसोगाउलेण सययं भमंतेण ॥६॥

नारयतिरियनरामरसंसारनिबंधणाइं दुक्खाइं ।

सारीरमाणसाइं बहुप्पयाराइं दट्टूण ॥७॥

तहा य - छिंदणभिंदणताडणसोसणमोडणभयाइणा गसिए ।

नरए तमंधयारे नेरइए दुक्खसंसत्ते ॥८॥

सीउणहवासपहए मारणसूडणवहाइणा घत्थे ।

आरंकुंससंतत्ते तिरिए बहुदुक्खपरिकलिए ॥९॥

जाइजरामरणभवोहुवहुए सोगरोगपरिघत्थे ।

इट्ठाणिट्ठविओगा जुंजणजुत्ते तहा मणुए ॥१०॥

सारीरमाणसोवद्दवाइंणा उवदुए तहा देवे ।

ईसाविसायगसिए चवणाईदुक्खसंतत्ते” ॥११॥

घेत्तव्वं पच्छयणं नाऊण(णं) दुक्खसंजुए एए ।

भव्वेणं जंतूणं असेसदुक्खाण निव्वहणं ॥१२॥

सव्वो य जणो नेच्छइ दुहाइं इच्छइ य परमसोक्खाइं ।

न य जाणइ मुद्धमणो कह सोक्खाइं समुवयंति ॥१३॥

जेण - विसयासामूढमणो सदफ(फ्फ)रिसेहिं रूवगंधेहिं ।

एगंतवासियमणो कज्जाकज्जं न याणाइ ॥१४॥

पायं च एस जीवो विभाविओऽणोगसो कुभावणया ।

न चएइ विसयसंगं परिचइउं भवसमुद्धम्मि ॥१५॥

न य जाणए वराओ जहावसाणे असुंदरविवागा ।

सुहरसियमेत्तसारा किंपागफलोवमा विसया ॥१६॥

१. ‘वोहउवहुए’ प्रती । २. ‘इणो उ’ प्रती ।

ता एयं नाऊणं गुरुणो पासम्मि विगहरहिएहिं ।
उवएसो घेतव्वो असेसदुक्खक्खयनिमित्तं ॥१७॥

भणियं च- “निद्दाविगहापरिवज्जिएहिं गुत्तेहिं पंजलिउडेहिं ।
भत्तिबहुमाणपुव्वं, उवउत्तेहिं मुणेयव्वं” ॥१८॥ [पञ्चव./गा.१००६]

अभिकंखंतेहिं सुहासियाइं वयणाइं अत्थसाराइं ।
विम्हियमुहेहिं हरिसागएहिं हरिसं जणंतेहिं ॥१९॥

गुरुपरिओसगएणं गुरुभत्तीए तहेव विणएणं ।
इच्छियसुत्तथाणं, खिप्पं पारं समुवएंति ॥२०॥

सो वि गुरू सुविसुद्धो धम्माधम्मेसु गहियपरमत्थो ।
जिणवयणामयकुसलो नायव्वो होइ निउणेहिं ॥२१॥

भणियं च- “गुणसुद्धियस्स वयणं महुघयसित्तो व्व पाप(य)सो भाइ ।
गुणहीणस्स न सोहइ नेहविहूणो जह पईवो” ॥२२॥ []

तेण य सुहासुहाइं गम्मागम्माइं जाणिउं तरइ ।
वच्चावच्चाइं चिय पेयापेयाइं अबुहो वि ॥२३॥

तेहिं चिय नाएहिं परिहरियव्वाइं परिहरइ पुरिसो ।
गिणहइ गहियव्वाइं उवेक्खणीए उवेक्खेइ ॥२४॥

परिसा य होइ तिविहा अयाणिया तह य जाणिया बीया ।
तइया य दुव्वियड्ढा अहवा पन्नाइया बहुहा ॥२५॥

संविग्गा य कयन्नु थिरा य गुणगाहिणी य तह परिसा ।
कज्जाकज्जविवेयणसमाउला होइ धन्ना उ ॥२६॥

ता एसा एयगुणोववेइया जेण जिणमयपवन्ना ।
एत्थ य होइ पयासो सहलो गुरुणो भणंतस्स ॥२७॥

गुणपालणखंतिपरा य नरा, निसुणंति इमं विगहारहिया ।
तवसंजमनाणससीसुरया, अह हुंति य ते अपवग्गया ॥२८॥

इय जंबुणामचरिए, पयवन्नपसत्थविविहनिम्मविए ।
नामेण कहनिबंधो, बीओहेसो समत्तो त्ति ॥२९॥



॥ तइयो उद्देसो ॥

सुरसेलकंदनालं पुहईधरपवरकेसरभिरामं ।
भरहाइदलं विउलं दिव्वोसहिसुरहिमयरंदं ॥१॥
लवणोव(द)हिपरिखित्तं जणमहुयरसेवियं सयाकालं ।
कुमुयं व जंबुदीवं, मज्जे लोयस्स अत्थत्थि वरं ॥२॥
तस्स य दाहिणभाए अवसप्पिणि-इयरपयडदोपक्खं ।
उदुवइदलं व भरहं, वेयड्डुससंकियं अत्थि ॥३॥
तस्सत्थि दाहिणद्धे मज्झिमखंडम्मि जणवओ मगहा ।
सुरलोयसमो रम्मो जो उववणदेवभवणेहिं ॥४॥

जहिं च- गामा सरेहिं नलिणीहिं सरवरा पउमिणीउ पउमेहिं ।
भमरेहिं पउमसंडा अली विरुइएण रेहंति ॥५॥
तियमेहलसुविहत्तं चउक्कवत्तादिवरसिलसमेयं ।
तुंगट्टालयसिहरं परिखित्तं नंदणवणेण ॥६॥
वरकणयमयं तुंगं अणेयसुरभवणचूलियसमेयं ।
तत्थऽत्थि पुरं पयडं, रायगिहं मेरुबिंबं व ॥७॥

तं च केरिसं ?- आरामवाविदीहियगोउरपायारतोरणसणाहं ।
बहुवण्णजाइसिप्पियजणनिवहुद्दामरमणिज्जं ॥८॥
वेला इव जलनिहिणो मुत्ताहलरयणसंखसिप्पीहिं ।
रेहंति विदुमेहि य आवणमग्गा जहिं नयरे ॥९॥

तंबोलकुसुमकुंकुंमसन्निहियविडंगदीहनेत्ताओ ।
 जत्थ य पयडनहाओ विवणीओ वेसिणीउ व्व॥१०॥
 तत्थ य राया दरियारिमत्तमायंगकुंभनिद्द[ल]णो ।
 सीहो इव पच्चक्खो नामेणं सेणिओ अत्थि ॥११॥
 घणथणनियंबपिहुला मंथरगइसरलकोमलसरीरा ।
 अवरोहणप्पहाणा अह देवी चेळ्ळणा तस्स ॥१२॥
 तीए संमं पंचविहे भोए सग्गे व्व देवरायस्स ।
 भुंजंतस्स सुहेणं वच्चइ कालो नरिंदस्स ॥१३॥
 अहमन्नया कयाई केवलवरनाणदंसणपईवो ।
 सुरमणुयासुरमहिओ भयवं वीरो समोसरिओ ॥१४॥
 देवेहिं तओ रइयं चेइयदुमच्छत्तचामरसणाहं ।
 धयतोरणसीहासपायारजुयं समोसरणं ॥१५॥
 नमिऊण तओ तित्थं काऊण पयाहिणं सुहनिसन्नो ।
 पुव्वाभिमुहो भयवं धम्मं कहिउं अह पवत्तो ॥१६॥

कह - “नारयतिरियनरामरगईसु परिभमइ कम्मसंतत्तो ।
 जीवो धम्मविहीणो पुणो पुणो भवसमुद्दम्मि ॥१७॥
 मिच्छत्तमोहियमणो निंदियअहमाइं पावकम्माइं ।
 काऊण नरयकूवे पडइ य जीवो तमंधम्मि ॥१८॥
 तत्थ य छिंदणभिंदणफाडणउक्कत्तणाइं बहुयाइं ।
 पावेइ णेगकालं दुक्खाइं पावजणियाइं ॥१९॥
 वहणंकणनत्थणताडणाइं तिरियत्तणे वि पावेइ ।
 मणुयत्तणे वि पत्ते, दुक्खाइं अणेगरूवाइं ॥२०॥
 देवत्तणे वि जाए किव्विसिओ होइ मंदरिद्धिल्लो ।
 रिद्धिं पत्तो वि पुणो, चवणाईयं लहइ दुक्खं ॥२१॥

धम्मणेणं पुण एसो सुदेवमणुयत्तणं लहइ जीवो ।
तम्हा करेह धम्मं संसारविमोयणसमत्थं ॥२२॥

रुद्धिंदखंदगोविंद भासिओ सो वि णेगहा धम्मो ।
चिंतामणि व्व रेहइ तेसिं मज्झे जिणक्खाओ ॥२३॥

सो य - विरई पाणवहालियअदत्तमेहुणपरिगहाणं तु ।
एसो भणिओ धम्मो होइ अहम्मो य विवरीओ ॥२४॥

अहवा खमाइगो-

“खंती य महवज्जवमुत्ती तवसंजमे य बोधव्वे ।
सच्चं सोयं आकिंचणं च बंभं च जइधम्मो” ॥२५॥ [आ. सं./गा.३]

तत्थ - खंती य इमा भणिया सम्मं नाणेण जाणित्तं वत्थुं ।
कोहस्स अणुदओ जं उदयस्स व विफ(प्फ)लीकरणं ॥२६॥

महवयाईणेवं मुत्तीपज्जंतगाइ जाणाहि ।
माणाईण अणुदओ उदयस्स व विफ(प्फ)लीकरणं ॥२७॥

तवो उण दुविहो -

“अणसणमूणोयरिया, वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ ।
कायकिलेसो संलीनया य बज्झो तवो होइ” ॥२८॥ [सं.प्र./गा.१२६९]

“पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ ।
झाणं उस्सग्गो वि य, अब्भितरओ तवो होइ” ॥२९॥ [सं.प्र./गा.१२७०]

संजमो उण सत्तरसविहो । भणियं च -

“पंचासवा विरमणं, पचिंदियनिग्गहो कसायजओ ।
दंड[ग]तिगविरई संजमो उ इइ सत्तरसभेओ” ॥३०॥ [प्र.सा./गा.५५५]

सच्चमणवज्जवयणं, सोउं जं संजमे निरवलेवो ।
आकिंचणं अमुच्छ, नव गुत्तीओ भवे बंभं ॥३१॥

भणियं च- “वसहिकहनिसेजिं(जिंज)दियकुडुंतरपुव्वकीलियपणीए ।
अइमायाहारविहूसणा य नव बंभगुत्तीओ” ॥३२॥ [प्र.सा./गा.५५८]

एसो संखेवेणं जइधम्मो वन्निओ दसविहो वि ।
वित्थरओ पोगविहो नायव्वो आगमन्नूहिं' ॥३३॥

एवं च भुयणमंदिरएक्कल्लपईवलोयनाहस्स ।
धम्मं साहेमाणस्स सेणिओ वंदओ चलिओ ॥३४॥

तओ - हयगयरहजोहेहि य बहुजाणसहस्सवाहणाइन्नं ।
चलियं सयलं पि बलं तुरमाणं अह समं तेण ॥३५॥

तं च केरिसं दीसिउं पयत्तं ? । अवि य -

उदंडपुंडरीयं चलचामररायहंससोहिल्लं ।
माणससरं व चलियं हयथट्टचलंतकल्लोलं ॥३६॥

तओ पयट्टे नरिंदे लोए वि किं जायं ?-

इह आगओ जिणिंदो जो जत्तो सुणइ केवलं वयणं ।
सो तत्तो य पयट्टइ, वंदगभत्तीए नयरिजणो ॥३७॥
अइनिब्भरभत्तिभरंतहिययरोमंचकंचुओ तुरियं ।
अह चलइ वंदणमणो नायरकुलबालियासत्थो ॥३८॥

तओ सो ऊ(उ)ण समूहो नीहरमाणो केरिसो दीसिउं पयत्तो ? । अवि य -

जणसयसहस्सपसरंतपूरपडिपुन्नसयलदिसियक्को ।
मत्तो इव रयणनिही मुत्ताहलरयणचिचइओ ॥३९॥

तओ महासमुद्वेलाजलेण विय जणसमूहेण पडिपुन्नासु रच्छानईसु किं सोच्चिउं
पयत्तं ?-

अवि य - जा जाहि देहि मग्गं खामो पंथो त्ति रे करी पत्तो ।
पुरओ वि तुरयथट्टं न पेच्छसे किं तुमं एयं ॥४०॥

तओ एयं च सयलजणसमूहेण संप(व)तं रायसेन्नं केरिसं पयत्तं ? । अवि य-

मयगलझरन्तमेहं निसियासिफुरन्तपयडविज्जुलयं ।
गयघडरवगज्जंतं वासारत्तो व्व विहियदिसं ॥४१॥

नीहरमाणेण तओ दिट्ठो ज्ञाणन्तरम्मि वट्टंतो ।
नयरस्स बाहिरीए, पसन्नचंदो नरिंदेण ॥४२॥

सो य केरिसो दिट्ठो ? । अवि य-

बीयाससि व्व तणुओ तवसंजमचरणकरणनियमेहिं ।
उवसंतसोममुत्ती पडिमत्थो किं पि ज्ञायंतो ॥४३॥
गंतूण तं मुणिंदं काऊण पयाहिणं च तिक्खुत्तो ।
भत्तिभरनिब्भरंगो एवं थोउं समाढत्तो ॥४४॥

“जय ! नेहनियलमूरण, जय ! तवखग्गग्गनिहयकम्मरिऊ ।
जय ! नीसंग महाजस, जय ! लोइयमुक्कवावार !” ॥४५॥

थोऊणेवं राया नमिऊणं पायपंकयं सिरसा ।
मुणिणा अदिन्नवयणो, चित्तेउं एवमाढत्तो ॥४६॥
एसो महाणुभावो महइमहन्तम्मि वट्टए ज्ञाणे ।
मोक्खेक्कदिन्नचित्तो तडट्ठिओ लोयजत्ताए ॥४७॥
एसोऽवस्सं साहइ मोक्खं अचिरेण नत्थि संदेहो ।
अहवेस पढमपुच्छा अज्जं मम जिणसयासम्मि ॥४८॥
जं एसो परममुणी वट्टंतो दुक्करम्मि ज्ञाणम्मि ।
एत्थ समयम्मि वीरो किल साहइ कं गइं अमलो ॥४९॥
एवं विचिंतिऊणं नरनाहं(हो) तं मुणिं पसंसंतो ।
पत्तो य समोसरणं बहुदेवसहस्सपडिपुन्नं ॥५०॥
दुंदुहिरवगज्जंतं सुरमउडफुरंतपयडविज्जुलयं ।
जणमणपूरियआसं बहुजंतुसहस्सपडिपुन्नं ॥५१॥
पायाररयणविप्फुरियकिरणआबद्धपयडसुरचावं ।
पाउससमउ व्व सुहं गंधोदयसुरहिपवणिल्लं ॥५२॥
अह तम्मि पविसिऊणं काऊण पयाहिणं जिणिंदस्स ।
भत्तिभरनिब्भरंगो एवं थुणिउं समाढत्तो ॥५३॥

“पणयसुरीसरसुंदरिनिहमणिसंकंतविमलमुहयंद ।
 जयगुरु ! तुह पयकमलं, नमामि हं पावनिट्टवणं ॥५४॥
 संसारकूवनिवडंतजंतुआलंबलद्धमाहप्यं ।
 भुयणेसर ! पयकमलं, नमामि हं लक्खणपसत्थं ॥५५॥
 सुरविइयकणयसहस्सपत्तमिउय[य]रफंसदुल्ललियं ।
 भवभयमहणं जिणवर !, नमामि तुह पायवरकमलं ॥५६॥
 असुरनरीसरकिन्नरसुरिंदनायंदवंदियं तुम्ह ।
 कम्मट्टगंठिनिट्टवणपच्चलं जयउ पयकमलं” ॥५७॥
 इय भणमाणो राया हरिसवसुब्भिन्नबहलरोमंचो ।
 तिहुयणगुरुणो य तओ पणिवइओ चरणजुवलम्मि ॥५८॥
 निव्वज्जि[त्ति]यकरणज्जो इंदाईणं च विहियसम्माणो ।
 अवणमियउत्तमंगो उवविट्ठो निययठाणम्मि ॥५९॥
 पत्थावं लहिऊणं करयलआबद्धमउलपणएणं ।
 अह पुच्छिओ जिणिंदो नरनाहेणं इमं तत्थ ॥६०॥
 तवरवितेयविणिग्गयसोसियकम्मट्टगंठिजलनियरो ।
 भयवं पसन्नचंदो किं जोगे वट्टए ज्ञाणे ॥६१॥
 भुवणगुरुणा वि भणियं, जलहरगंभीरमहुरसदेण ।
 एसो नरिंद ! वट्टइ सत्तमपुढवीए जोगम्मि ॥६२॥

तओ नरिंदो चित्तिउं पयत्तो; कह ?-

तवजलणदड्ढुक्कम्मिधणस्स समसत्तुमित्तबंधुस्स ।
 कह सत्तमपुढवीए जोगं ज्ञाणं मुणिंदस्स ॥६३॥
 किं वा मे विवरीयं निसुयं सम्मं पि भासियं गुरुणा ।
 अह वा न चलइ एयं सच्चं भणियं जिणिंदेण ॥६४॥
 एवं च बहुविहं चिय जाव वियप्पेइ नवर नरनाहो ।
 ताव य गयणं जायं बहुजाणविमाणपडिपुन्नं ॥६५॥

एत्थंतरम्मि सुरसंघमउडकिरणुच्छलंततेएणं ।
 जायं गयणं सहसा संझारुणकुंकुमच्छायं ॥६६॥
 जत्थ य पसन्नचंदो गच्छंति सुरा तर्हि सपरितोसा ।
 उक्कुट्टिजयजयरवं कुणमाणा गयणमग्गम्मि ॥६७॥
 वज्जंतसंखकाहलवप्पीसयवंसवीणमुरवेहिं ।
 फुट्टइ व अंबरतलं, सुरहिट्टपणच्चिरसएहिं ॥६८॥
 सोऊण नरिंदेणं सुरगणउक्कुठि(ट्टि)कलयलनिनायं ।
 अह पुच्छिओ जिणिंदो-भयवं ! किं एत्थ संजायं ॥६९॥
 भणियं तिहुयणगुरुणा-पसन्नचंदस्स केवलं नाणं ।
 उप्पन्नं तत्थ सुरा केवलमहिमं अह करिंति ॥७०॥
 भणियं च नरिंदेणं-सत्तमपुढवीए जोग्गए झाणे ।
 वट्टइ किल एस मुणी मिच्छानिसुयं मए एयं ? ॥७१॥
 भणियं पुणो वि गुरुणा-नरवइ ! मिच्छ न होइ एयं तु ।
 तम्मि समयम्मि रुद्दे वट्टंतो एस झाणम्मि ॥७२॥
 भणियं नराहिवेणं-भयवं ! कहसु त्ति कोउयं मज्झ ।
 कह उप्पन्नं नाणं, कह वा तं तारिसं झाणं ? ॥७३॥
 भणियं च जिणिंदेणं-तम्मि मुहुत्तम्मि सुमुह-दुमुहेहिं ।
 दट्टुं पसन्नचंदं, भणियं ता सुम्मुहेणेवं ॥७४॥
 जह निक्कंटं रज्जं आसि पुरा पालियं नरिंदत्ते ।
 संपइ पसन्नचंदो तह उगं कुणइ तवचरणं ॥७५॥
 ता एसो कयउन्नो सहलं एयस्स जीवियं लोए ।
 गंतूणं पणमेमो जा भणियं सुम्मुहेणेवं ॥७६॥
 मा मा गिण्हह नामं इमस्सु पुरिसाहमस्स दुमुहेणं ।
 भणियं, अह पुण पणमइ को एयं कम्मचंडालं ? ॥७७॥

जो नियपुत्तं बालं चइऊणं वेरियाण मज्झम्मि ।
 अचयंतो पव्वइओ रज्जभरं उयरपुरपरो ॥७८॥
 संपइ सो पुण बालो रज्जं गहिऊण तोहिं निच्छूढो ।
 एवं पजंपमाणा वोलीणा तप्पएसाओ ॥७९॥
 सोउं दुम्मह वयणं पसन्नचंदेण चितियं एयं ।
 को मम सुयस्स रज्जं गिण्हइ मम जीवमाणस्स ? ॥८०॥
 उच्छलिओ कोहग्गी पम्हुट्टो तस्स तक्खणेणऽप्पा ।
 मोत्तूण धम्मज्ञाणं रुद्धज्ञाणम्मि संकंतो ॥८१॥

जेण - धम्माधम्मं न याणइ कज्जाकज्जं च सुकयदुकयं वा ।
 कोहघ(गघ)थो पुरिसो, भक्खाभक्खं च कुसलो वि ॥८२॥

अवि य - कुविओ पुरिसे(सो) न गणेइ अत्थं, नाणत्थं, न धम्मं नाधम्मं, न कामं नाकामं, न जसं नाजसं, न कित्ती नाकित्ती, न कज्जं नाकज्जं, न भक्खं नाभक्खं, न गम्मं नागम्मं, न वच्चं नावच्चं, न पेयं नापेयं, न बलं नाबलं, न दोगई न सोगई, न सुंदरं नासुंदरं, न पंथं नापंथं ति ।

अवि य- पयईए अकज्जसमुज्जयस्स पर(रि)निंदियस्स सुयणेहिं ।

कोहस्स तेण भणियं परिहरणं जिणवरिंदेहिं ॥८३॥

कोहाइकसायाणं नरिंद ! भणियं च एत्थ सामत्थं ।

सत्थंतरम्मि जह तह एक्कमणो तह निसामेह ॥८४॥

“कोहानलपज्जलिओ खणेण चरणिधणं डहइ जीवो ।

कालेण सुबहुएण वि जमज्जियं संजमगुणेहिं ॥८५॥

माणं समुव्वहंता नाणं नासेंति विणयपरिहीणा ।

हिंडंति नाणरहिया उट्टुमुहाऽरन्नपसव व्व ॥८६॥

जइ वि न वंचेइ परं मायाविजणम्मि तह वऽविस्सासो ।

सप्पो जइ वि न खायइ तहा वि दिट्ठो भयं कुणइ ॥८७॥

न मुणइ कज्जाकज्जं लोभाओ मुक्कनिययमज्जाओ ।
 जीयं तणं व मन्नइ न गणेइ समं व विसमं वा ॥८८॥
 कोहाइकलुसियमई पुणो पुणो तासु तासु जोणीसु ।
 उप्पज्जं(ज्ज)ति [तह] सारीरमाणुसे पावए दुक्खं ॥८९॥
 कम्मतरुमूलभूया, चउगइसंसारहेयवो हुंति ।
 कोहो माणो माया लोभो य पवड्डमाणो उ ॥९०॥
 उवसामिया वि एए पुणो वि वड्डंति जइ पमाणं ।
 ता मोक्खत्थं सव्वायरेण चरणे पयइयव्वं” ॥९१॥
 कज्जाकज्जहियाहियधम्माधम्माणं(ण) [चित्त] विमुहेणेव ।
 पारद्धं निययमणे जइजणपर(रि)निदियं तेण ॥९२॥
 अवियारिऊण अप्पा सत्तुसमूहेण अह समं जुज्झं ।
 रुद्धज्जाणगएणं विउव्वियं नियमणेणेवं ॥९३॥
 “सुहडा सुहडेहिं समं, संभिट्टा रहवरा सह रहेहिं ।
 तुरया तुरंगमेहिं, मत्तगया सह गइंदेहिं ॥९४॥
 तओ एवं च संपलगे किल जुज्झे एवं चित्तुं पयत्तो; अवि य-
 करवालपहरनिद्वयविणिहयनररुंडमुंडसंकंता ।
 वसुहा रुहिरचिलविल(ला) नच्चंतकबंधबीभत्था ॥९५॥
 खग्गसंगसंगसंभग्गमत्तमायंगकुंभभिडिएहिं ।
 मुत्ताहलतारेहिं नज्जइ रयणि व्व रणभूमी ॥९६॥
 वेकंसुधरियबहुभडकरिनिहियकरंकसिरकवालेहिं ।
 जाया दुस्संचारा किल वसुहा तक्खणेणेव ॥९७॥
 हण हणह छिंद भिदह, मारे मारेह सुहडसंघायं ।
 एवं सो हियएणं संगामं दारुणं कुणइ” ॥९८॥
 एवं च जुज्झमाणे आभिट्टं नायगाण किल जुज्झं ।
 तत्थाउहक्खएणं सिरताडणवाहिओ हत्थो ॥९९॥

जा सो मुंडे लग्गो नाओ अह तेण तक्खणेणऽप्पा ।
वलिओ पडिवहहुत्तं, मिच्छामिह दुक्कडं भणियं ॥१००॥

तओ एवं च चिंतिउं पयत्तो; अवि य-

“हा रे जीव अलज्जिर ! जिणवयणं पाविऊण भवमहणं ।
तत्थ वि जिणमयदिक्खं, तह वि तुमं कह पमाइल्लो ॥१०१॥
हा पापजीव ! भमिहिसि, अज्ज वि रोद्धम्मि भवसमुद्धम्मि ।
लहिऊण विरइरयणं जं मूढ ! तुमं पमाइल्लो ॥१०२॥
हा हा लहिऊण इमं जिणवयणं मूढ रज्जसे तह वि ।
संसारसायरे भमणकारए कह णु रज्जम्मि ॥१०३॥
चइऊण इमं मूढय ! तह वि य जुज्झम्मि वट्टसे कह णु ।
ण्हायहसि घडसएणं छिप्पिहसि न बिंदुणा तह वि ॥१०४॥
इच्छिहसि तुमं सोक्खं, रमिहसि पावम्मि निग्घणो होउं ।
दुन्नि न हुंति हु मुद्धय !, इंदियसोक्खं च मोक्खं च ॥१०५॥

अन्नं च- को कस्स एत्थ पुत्तो, को व पिया को व सत्तु मित्तो वा ।
नारयतिरियनरामरगईसु अह हिंडमाणस्स ॥१०६॥

जेण - सव्वे जीवा पुत्ता, सव्वाण वि पुत्तओ अहं जाओ ।
सव्वे वि आसि वेरी सव्वे वि य बंधवा आसि ॥१०७॥

जेण - पुत्तो वि होइ वेरी, सत्तू वि य पुत्तओ पुणो होइ ।
माया वि होइ जाया, जाया वि य से भवे माया ॥१०८॥
भइणी वि होइ जाया, सा वि य मरिऊण अह भवे माया ।
धूया वि पुणो जायइ, जणयत्तं सा वि पावेइ ॥१०९॥
मरिऊण पुणो भायत्तणं पि पावेइ तह य पुत्तत्तं ।
तम्हा न को वि सत्तू, पुत्तो वा एत्थ संसारे ॥११०॥

अन्नं च- सव्वं इमं अणिच्चं धणधणियापुत्तबंधवं सयणं ।
देहो वि निओ एसो, मोत्तूणं सिद्धिसोक्खं तु ॥१११॥
अन्नं पि आउमाई सव्वं पि अणिच्छयं समक्खायं ।
जयजीवबंधुजिणवरमयाणुसारेण, भणियं च- ॥११२॥

“जलनिबहुल्लसंतडंडीरयविज्जुलयासरिच्छयं,
तरुसिहरगलपवणाहयपरिणयफलसमाणयं ।
सरलतणुद्धभायपरिसंठियसिणहासलिलचंचलं,
आउयं जणस्स न विज्जइ कम्म खणम्मि वच्चए ॥

जं पि य जियंति लोयया दुसहदारिद्रोयसोएहिं ।
परिमिएए जियलोए सुहरहियं तं पि बहुकिलेसेहिं ॥११३॥ []

जोव्वणयं पि रूवलायन्नसमुब्भडजणियसोहयं,
बहुविहरइविलाससंभोयसहं धम्मत्थजोग्गयं ।
तरुणिसमूहस्स मणमोहणयं जणलोयणूसवं,
तं पि दिणावसा(ण)संझारुणरायसमाणभंगुरं ॥

जोव्वणसमयाणंतरं कुणइ जरा सुंदरं पि पुरिसाण ।
रूवं ववगयसोहयं वलिपलियसमाउलं चलंतदिट्ठीयं ॥११४॥ []

महरिहभवणरयणचामीयरसहस्ससंजुया,
सुरवेसिणिसरिच्छमुद्धायणअंतेउरसणाहिया ।
पवरतुरंगवगिरोवगिगरवरकुंजरसमग्गया,
हत्थच्छाहिय व्व पल्लट्टइ एरिसया वररिद्धिया ॥

करिकन्नकलहचवलिया न देइ तं मणसुहं पभुंजमाणिया वि ।
जं देइ दुहं घोरयं खलरिद्धी थिरा मए मणुययाणं ॥११५॥ []

गुरुसिणेहबद्धबंधुयणजणणिकलत्तसत्थओ,
एक्कोयरनिउत्थभाइयणपरियणजणसमूहओ ।
समसुहदुक्खसोक्खवसणूसवओ तह मित्तवग्गओ,
सो वि तरुट्टिउ व्व पक्खिगणओ गोसे पलायओ ॥

इय नाउणं सारयसंसारमणिच्चयासमोत्थयं ।
जे न कुणंति तवोहयं गुरुविणया ते लहंति दुक्खाइं” ॥११६॥ []

एवं चिंतंतस्स अपुव्वकरणेण केवलं नाणं ।
जायं सुक्कज्झाणे सहसा अहं वट्टमाणस्स ॥११७॥

नरनाह ! तेण भणियं आसि मया सत्तमीए पुढवीए ।

जोगे वट्टइ झाणे जेणेयं चितियं तइया ॥११८॥

खवंति कम्माइं पुरेकडाइं, इहेव पत्ताइं सुदारुणाइं ।

नराण जेसिं जिणसासणम्मी, सुभावियं भावणा(णया)ए चित्तं ॥११९॥

इय जंबुणामचरिए तइउद्देसो इमो समत्तो त्ति ।

पालियगुणाणुराया भविया निसुणंतु सेसं पि ॥१२०॥



॥ चउत्थो उद्देसो ॥

भणियं च पत्थिवेणं पुणो वि-अह कम्मि केवलं नाणं ।
वोच्छिज्जिही महप्पं, एयं भयवं ! जगुज्जोयं ॥१॥

तम्मि समयम्मि देवो चउर्हि देवीर्हि संजुओ पत्तो ।
नामेण विज्जुमाली, वंदणभत्तीए जयगुरुणो ॥२॥

जो य सो केरिसो ? । अवि य-

मयरद्धउ व्व रूवी इंदो इव सयलसंपयाकलिओ ।
चंदाइरेयसोमो कंतिल्लो दिवसनाहो व्व ॥३॥

तओ तेण आगंतूण भणियं; अवि य-

“जय ! जय ! जीवाइपयत्थपयडजिप्पंतकेवलपईव ! ।

जह (य) मोहतिमिरनासण !, उज्जोइयसयलजयभवण !” ॥४॥

भणिरुण इमं अहं सो पडिओ गुरुपायपंकए विमले ।

भणियं च तत्थ गुरुणा-एएणं किज्जिही एयं ॥५॥

भणियं च नरिंदेणं-भयवं ! मणुयम्मि साहियं एयं ।

तुम्हेर्हि आसि पुव्वि कह देवो केवली होइ ॥६॥

भणियं च तओ गुरुणा-सत्तमदिवसम्मि एस चविरुण ।

पावेही मणुयत्तं, तेणेसो केवली चरिमो ॥७॥

भणियं च नरिंदेणं-भयवं ! किर हुंति चवणसमयम्मि ।

परिहीणजुई देवो एसो उण तेयरासि व्व ॥८॥

१. 'लयरजय' प्रतौ ।

भणियं च लोयगुरुणा-संपइ जाओ य हीणतेयस्सी ।
एसो देविंदसमो आसि पुराऽणेयगुणतेओ ॥१॥

अह भणियं नरवइणा-किं पुण एएण अन्नजम्मम्मि ।
वयमणुचिन्नं भयवं ! जेणेसो एरिसो जाओ ? ॥१०॥

तओ जयजीवबंधुणा भणियं भगवया वद्धमाणसामिणा जिणवरिंदेण-अत्थि इहेव
मगहाविसए सुगामो नाम एक्को गामो जो य सो केरिसो ?-

अवि य- उद्दामवसहगोमहिसिसंकुलो पवरजुवइरमणिज्जो ।
धणधन्नहिरन्नजुओ अत्थि सुगामो इहं गामो ॥११॥

तत्थ य आसि अज्जवरड्डुडो नाम एक्को कुलपुत्तगो । तस्स य रेवइनाम
भारिया अहेसि । तीए य दुवे पुत्ता आसि पढमो भवदत्तनामो, बीओ भवदेवा-
भिहाणो । ते य पत्ता जोव्वणं । वच्चए कालो । अन्नया य कयाई तत्थ विहरमाणो
भयवं सुद्धिओ नाम आयरिओ समागओ, वंदणनिमित्तं च गओ सुगामजणो
आयरियाणं सयासे, ते य भवदत्त-भवदेवा वि देव वि भायरो । वंदिओ णेहिं गुरू ।
आणंदिया य गुरुणा असेसकम्मक्खयकारिणा धम्मलाहेणं ति । उवविट्ठा य सव्वे
गुरुचलणंतिए । कहिओ य तेण भगवया जिणयंदपणीओ जीवदयाईओ धम्मो ।

“सो य इमं नायव्वो, जीवदयाई जिणेहिं पन्नत्तो ।
धम्मो संखेवेणं, भणियं च जओ निसामेह ॥१२॥
जीवाणमहिंसाए, अलियनियत्तीए परधणे विरई ।
परदारवज्जणं पि य, तह अप्पपरिग्गहो चेव ॥१३॥
राईभोयणविरई महुमज्जविवज्जणं अमंसं च ।
एसो भणिओ धम्मो, होइ अहम्मो य विवरीओ ॥१४॥

अन्नं च- तो धम्मो जइ य दया, जइ य तवो जइ य होइ संतोसो ।
जइ सच्चं जइ बंधं, जइ मद्दवया अमाइत्तं ॥१५॥
जइ खंती जइ मुत्ती, जइ मणगुत्ती जई य वयगुत्ती ।
जइ रागाउ नियत्ती, जइ मेत्ती सव्वभूएसु ॥१६॥

जइ परदव्वनियत्ती, न य परतत्ती सरीरगुत्ती य ।
जइ सुद्धभिक्खवित्ती, न पवित्ती संचए जइ य ॥१७॥
जइ सद्देषु न रज्जइ, रसेसु गंधेषु तह य फासेसु ।
विसएसु न वि य रज्जइ, न वि मज्जइ कुलबलाईसु ॥१८॥
जइ उवसमो जइ दमो, जइ नियमो जइ य होइ वेरगं ।
जइ साहुपूयणरओ, जइ निरओ होइ सज्जाए ॥१९॥
एमाई धम्मगुणा, जस्सत्थि जयम्मि तस्स धम्मो हि ।
एयगुणविप्पहीणो न होइ धम्मो अहम्मो सो” ॥२०॥

एवं च गुरुणा कहिए तओ धम्मं सोऊण पडिबुद्धो भवदत्तो पव्वइओ य ।
विहरिओ य गुरुणा सद्धि । अन्नया य कयाई आयरिया विन्नत्ता एक्केण साहुणा,
जहा-‘इच्छामि तुब्भेहिं अणुन्नाओ सयणाणं सयासं गंतुं । तत्थ य ममं दट्टूण कणिट्ठो
भाया अईवसिणेहसंबद्धो सो य कइया पव्वि[व्व]यइ त्ति । तओ विसज्जिओ
बहुसुयसाहुसमेओ सो गुरुणा । तओ दट्टूण य नायए समागओ थोवदियहेहिं । तओ
तेण गुरूणं समालोइयं, जहा तस्स अम्मपियरेहिं वरिया दारिया अओ सो न
पव्व[इ]उ त्ति । एयं च सोऊण [भणियं-] भवदत्तसाहुणा-‘एसो वि नाम किल
सिणेहो जं तुमं पि भाउयं धम्मसारहिं चिरस्स दट्टूणं पि न सो पव्वइओ’ त्ति । इमं
च सोऊण भणियं तेण साहुणा-‘तुम्ह वि अत्थि कणिट्ठो भाया, तुमं पि तत्थ गए
पेच्छिस्सामो तं पव्वइयं’ त्ति । तओ भणियं भवदत्तेण-‘जइ भयवओ आयरिया
तमुद्देसं गमिस्संति, तओ सो ममं दट्टूण कयाइ जइ पव्वइय’ त्ति । गुरुणा य सद्धि
विहरमाणस्स भवदत्तसाहुस्स वच्चइ कालो । अण्णया य कयाई विहरमाणा आयरिया
गया मगहाजणवयं । तत्थ वि सुगामासन्नगामं । तओ विन्नविया आयरिया भवदत्त-
साहुणा, जहा- ‘भयवं ! तुब्भेहिं अणुण्णाओ इच्छामि दट्टूं सयणे’ त्ति । तओ गुरुणा
वि सुसाहुसमेओ विसज्जिओ सो, पत्तो य सुगामं । इओ य तम्मि समए सो
भवदेवो तस्स भाया नागदत्तस्स कुलउत्तस्स लच्छिमईए भारियाए धूया नाम
नाइला, तीए सह विवाहमंगलनिमित्तं आरूढो वेईमंडवे पगहियकरो करेण भमइ
मंडलाई त्ति । एयम्मि य समए पविट्ठो भवदत्तसाहू तेसिं गेहे । तओ तं दट्टूण
परितुट्ठा सव्वे सयणबंधवा । तओ कयमुचियकरणीयं, वंदिया य भगवंतो साहवो तेहिं,

निसुयं च एवं भवदेवेणं जहा-समागओ भवदत्तसाहू मे जेट्टसहोयरभाया । तओ मोत्तूण विवाहमंगलसेसकरणीयं, निवारिज्जमाणो वि ससुरकुलेहिं, धरिज्जमाणो वि समवयवयंसएहिं, वारिज्जमाणो वि लडहतरुणीयणविलयासमूहेण 'आगउ'त्ति भणिउं भत्तिनेहाणुक्कंठियमाणसो गओ भाउणो सयासं । वंदिया य णेण साहुणो । कया धम्मदेसणा साहूहिं । भणियं च णेहिं जहा-'तुब्भेत्थ वावडमणा ता वच्चिमो अम्हे, पुणो वि आगमिस्सामो' त्ति भणिरुण पयट्टा साहवो । तओ निब्बंधेणावि जाहे न ठिया तओ पडिलाहिया विउलेणं आहारपयाणेणं, समप्पियं च भक्खभायणं भवदेवस्स करे साहूहिं, पयट्टा । सव्वो तओ वंदिरुण थेवभूमिभाओ नियत्तो सेसबंधुयणो, न पुण भवदेवो । चिंतइ य अविशज्जिओ कहमहं नियत्तेमि । तओ नियत्तणनिमित्तं च दंसेइ वप्पपुक्खरणिवणसंडउज्जाणे, जत्थ कीलिया हिंडिया पमज्जिया य । सो य सुन्नहुंकारो 'सुमरामि' त्ति-भणमाणो वच्चए भवदत्तसाहू । गच्छमाणा य पत्ता गुरुणो समीवं । तओ तं दट्टूण भवदेवजुवाणं अहिणवुव्वाहियवरनेवच्छं चवलत्तणेण भणियं चेल्लएहिं जहा-'भणियमासि जेट्टज्जेहिं जहा 'गम भाया अद्धविवाहिओ वि जइ अहं भणामि तो पव्वयइ' त्ति ता सच्चमिणं कयमिमिणा । तओवदंसिओ आयरियाणं । भणियं गुरुणा-'किं निमित्तं एस समागओ सावगो ? ।' भवदत्तसाहुणा भणियं-'पव्वज्जागहणनिमित्तं ।' पुच्छिओ गुरुणा जहा-'एवं ते अभिप्पाओ ?' तओ भवदेवो चिंतिउं पयत्तो । कह ?

अवि य- एक्कत्तो पाणपिया, दइया नवजोव्वणम्मि वट्टंती ।

अन्नत्तो य सहोयरवायाभंगो कओ होइ ॥२१॥

एक्कत्तो अहिणवपरिणियाए मुद्धाए सह गुरुविओओ ।

अन्नत्तो उण भाया, किं सेयं जं पव्वज्जामि ॥२२॥

तहा वि पत्तयालं ताव इमं चेवेत्थ जं एसो मम भाया भणइ त्ति । 'मा भाउणो साहूणं पुरओ अन्नहावाइत्तणं भविस्सइ' त्ति चिंतिरुण भणियं एवं' त्ति । तओ तेणेव मुहुत्तेण पव्वाविओ सो गुरुणा । विहरिओ य सह गुरूहिं, जाणाविओ य सयलं सामायारिं । भाउणोवरोहेण य कुणइ पव्वज्जं, न उण परमत्थबुद्धीए । वहइ य हियएण तं अत्तणो जायं अहिणवपरिणीयं । एवं च वच्चए कालो, गच्छंति दियहा ।

पढमाणस्स य समागयं इमं सुत्तं-‘न सा महं नो वि अहं पि तीसे ।’ तओ विचिन्तियमणेण-‘न एयं सुंदरं ।’ अवि य ‘सा महं अहं पि तीसे’ एवं पयं घोसिउं पयत्तो । तओ वारिज्जमाणो वि साहूहिं न ठाइ । सो वि बहुणा कालेण कयसंलेहणो आउक्खएण मरिऊण भवदत्तसाहू तस्स भाया उववन्नो सोहम्मो कप्पे देवो देवत्ताए त्ति । इयरो वि भवदेवो तम्मि समए तमुव्वहमाणो हियएण निययभज्जं केरिसो जाओ-

अवि य- मुक्कगुरुसाहुविणओ, अवहत्थियनिययजोग्गवावारो ।

दइयाए दंसणमणो, विबाहिओ कामबाणेहिं ॥२३॥

तओ एवं च तस्स सव्वहा वीसरिओ धम्मोवएसो, परिमुसियं विवेगरयणं, गलिओ गुरुजणविणओ, अवहरियं विन्नाणं, अवहत्थियं कुलाहिमाणं, उक्खडिया लज्जा, अवगयं दक्खिन्नं, पणट्टं सीलं, ववगयं पोरुसं, वीसरिया दया, गलिओ वय-धारणाहिप्पाओ, सव्वहा अणेयनरिंदसुरिंदसुंदरीपिहुपीणनियंबिंबियडनिवाससुहदुल्लिओ भयवं कुसुमाउहो विबाहिउं पयत्तो । तेण य बाहिज्जमाणो कह चिंतिउं पयत्तो ?-

अवि य- रोगजरभरणरयमलकिलेससंतावियाण संसारे ।

कत्तो अन्नं सोक्खं, मोत्तुं पियसंगमं एक्कं ॥२४॥

एवं ति(वि)चिंतियंतो सो केरिसो जाओ ?

अवि य- ता खलइ वलइ झूरइ, सूसइ अह पुलयपरिगओ होइ ।

जं किंपि नवर पेच्छइ, दइयं दइयं ति वाहरइ ॥२५॥

ता हसइ रुयइ झिज्झइ, ज्ञायइ दइयं पढेइ गाहद्धं ।

उम्मत्तउ व्व नज्जइ, हुं हुं महुरक्खरं भणइ ॥२६॥

तओ एयावत्थस्स गओ सो दियहो, समागया य रयणी । कयमावस्सयं साहूहिं भावओ, तेण उण दव्वओ । कयसज्झाया ठिया सयणीए साहवो । सो वि देहेण न उण चित्तेण त्ति ठिओ य तं मुणंतो दइयं हियएण । पच्छिमजामे जामिणीए केणइ पहिएण इमं दूहयं गीयं-

सा मुद्धा तहिं देसडइ, दुक्खे दियह गमेइ ।

जइ न पहुप्पह सुयण तुहुं, अवसिं पाण चएइ ॥२७॥

एवं च सुणिऊण सुमरिया इमा कस्स वि पुव्वकविओ गाहुल्लिया पुव्वपढिया तेण-

दूरयरदेसपरिसंठियस्स पियसंगमं महंतस्स ।

आसाबंधो च्चिय माणुसस्स परिरक्खए जीयं ॥२८॥

तओ एयं च सुमरिऊण परिचिंतियमणेण-

अवि य- दइएण विप्पमुक्का, मुद्धा जइ कहवि धरइ सा जीयं ।

आसासेमो गंतूण तत्थ ता थेवदियहेहिं ॥२९॥

तओ केवलं तीए नाइलाए उवरिं बद्धाणुरायचित्तो मयगहिओ इव गयवरो पयट्टो उप्पहं । तओ वारिज्जमाणो वि गुरुजणेणं, पन्नविज्जमाणो वि उवज्झाएणं, अणुसासि-ज्जमाणो वि थविरेहिं, सिक्खीविज्जमाणो वि साहूहिं, धरिज्जमाणो वि चेल्लएहिं; केवलं अगणिऊण कज्जाकज्जं, अयाणिऊण हियाहियं, अबुज्झिऊण करणीयं, अमुणिऊण परमत्थत्तं सव्वहा जं होउ तं होउ त्ति चिंतियऊण संचलिओ नियगामाहुत्तं । तहा वि केइ मंदसत्ता एवंविहा भवन्तेव ।

अवि य- इहलोयमेत्ततुट्ठा, धणधणिया पुत्तसयणसंबद्धा ।

अमयसरिसं पि नूणं, जिणवयणं ते पमायंति ॥३०॥

ते य अपरमत्थावलोइणो एवं असंतगुणारोयणेण विनडिज्जंति ।

अवि य- इंदीवरचंदसुवन्नकलससुरसरिपुलीणसरिसाइं ।

मयणमुहथणयजहणत्थलाइं दइयाए मन्नंता ॥३१॥

न उण एवं परमत्थावलोयणेण पेच्छंति-

जओ य- जलबुब्बुयलालाविलपिसियासुइअन्तमुत्तठाणाणि ।

फसफोफसहडुकरंकचम्मरुहिराचिलमिलाइं ॥३२॥

तओ सो भवदेवो थोवदियहेहिं पत्तो सुगामं । ठिओ उज्जाणजिणाययणे । इओ य सा तस्स जाया नाइला तम्मि समए तस्स तत्थ द्वियस्स समागया धूयगंधकुसुमे गहाय तम्मि उज्जाणजिणाययणे । तीए य समं एगा माहणी सह दारणेण समागया । तओ ताहिं 'साहु'त्ति भणिऊण वंदिओ भवदेवो । भणियमणेण-'तुब्भे जाणह एत्थ माणुसामाणुसं ?' नाइलाए भणियमामं । तेण भणियं-'कुसलं अज्जवरट्टुउडगेहे ?'

तीए भणियं-‘तस्स दुवे पुत्ता आसि, ते य पव्वइया । सेसाणं मायाविताणं बहुकालं कालगयाणं ।’ इमं च सोऊण मणायं विमणो जाओ सो । तओ तीए भणियं-‘किं पओयणं भयवओ तेहिं ?’ तेण भणियं-‘ताणि मम जणणिजणयाणि, अहं तेसिं पुत्तो भवदेवो नाम, भाउणो उवरोहेण आसि पव्वइओ । संपयं सो मम भाया उवरओ, अहं पि मायावित्ता(ता)णं जायाए य संभरिऊण सिणेहसारयाए समागओ ।’ एयं च निसामिऊण चिंतियं नाइलाए-‘एस सो मम भत्ता, एसो य पव्वज्जाभारं विमोत्तुकामो इव नज्जइ । ता किमेत्थ करणीयं ? मए पुरिसस्स निवित्ती गहिया, पव्वइउकामा चिट्ठामि’त्ति चितयंतीए भणियं-‘कस्स पुण गेहे तए परिणीयं ?’ तेण भणियं-‘नागदत्तस्स धुया नाइला नाम सा भए परिणीया । ता ताण पुण गेहे किं कुसलं ?’ तीए भणियमामं । तेण भणियं-‘किं पडुसरीरा नाइला ?’ तीए भणियं-‘पडुसरीरा ।’ तेण भणियं-‘किं सा मम समागमसमुच्छुगा पुच्छइ कयाइ पउत्ति ति ? ।’ नाइलाए भणियं-‘जओ चेव तुमं पव्वइओ तओ चेव तीए साहुणीणं सयासे धम्मो निसुओ, साविगा य जाया, कुलवहु त्ति काऊण पुरिसस्स निवित्ती गहिया । संपय पि पव्वइउकामा चिट्ठइ त्ति । ता तुमे वि बहुकालं तवो चिन्तो पव्वज्जा य पालिया, संपयं पि इमस्स असारस्स एगंताधुयस्स जीवलोयस्स कारणेणं इमाणं च मुहरसियकिं पागफलरसविवायाणं इयरजणबहुमयाणं बुहयणपरिनिंदियाणं पामा-कंडुयणमेत्तसुहरसाणं विडंबणामेत्तदिन्नपरमत्थदुक्खसंघायाणं जिणमयपरिनिंदियाणं सिवपहपरम्मुहाणं एगंतओ असारसंसारकारयाणं विसयाणं कारणेणं, इमं च भवसय-सहस्सदुल्लहं एगंतेणेव सययसुहदाययं संसारसमुद्दुत्तरणपच्चलं जिणवयणमहारयण-मणग्घेयमवमन्निऊण मोहतरुनियरसयलदिसिवहपिहियसमुद्विवेयनयणचक्खुपसरे दालिदुदोगच्चतुच्छासारविविहामणोजावलोयणामेत्तजणियदुक्खकडुयफले जरमरण-रोगरयमलकिलेसाययणे दप्पियकूरसावयपउरे कोहमयमाणमायासगतसयसंकुले दुस्संचारे खलपिसुणसत्तुसमूहनाणाविहतिक्खकंटयाउले भवसयसहस्सगुविलसंचारे संसार-महाकंतारे मा अप्पाणं पाडेसु त्ति’ ।

अवि य- सयलसुहनिहाणं, जिणवयणं दुल्लहं पमोत्तूणं ।

मा भमसु भवं भीमं, तुच्छण कएण विसयाणं ॥३३॥

पत्ता य इमे बहुसो, परिभममाणेण एत्थ संसारे ।
 कंतारबंभणो वि य, तह वि न तित्तिं तुमं पत्तो ॥३४॥
 जह सरिसमुद्दगाणं, कोविह सुविणम्मि घोद्धिओ नीरं ।
 कुसकोडिबिंदुगेहिं, पियइ अतित्तो जलं अयडे ॥३५॥
 तह जो तियसविलासिणिसुरालए विविहजणियभोएहिं ।
 पत्तो तुमं न तित्तिं, संपइ कह निव्वुओ होसि ॥३६॥

अन्नं च- तिरियमणुयाण एए, सामन्ना नवर एत्थ लोयम्मि ।
 इयरो व्व अओ तम्हा, मा रज्जसु मूढ विसएसु ॥३७॥
 पावन्ति नरयवडणं, विसयामिसमूढमोहिया जीवा ।
 चित्तियमेत्तेहिं चिय, तम्हा विरएसु पाएणं ॥३८॥
 इय एवं नाऊणं, विवायकडुयत्तणं ति विसयाणं ।
 गंतूण गुरूणंते, कुणसु पुणो संजमं तत्थ ॥३९॥
 सत्थंतरम्मि जम्हा, भणियं केणावि साहुणा एयं ।
 तं सुण जेणुप्पज्जइ, वेरगं तुज्झ हिययम्मि ॥४०॥
 जा एसा उप्पज्जइ, हियए जीवाण भोगतण्ह त्ति ।
 सा भवसहस्सजणणी, संसारनिबंधणकरी य ॥४१॥
 गयकन्नतालसरिसं, विज्जुलयाचंचलं हवइ जीयं ।
 सुविणसमा रिद्धीओ, बंधवभोगा घनेभा य ॥४२॥
 खणभंगुरे सरीरे, का एत्थ रयी सभावदुगंधे ।
 नरयसरिच्छे घोरे, दुगंछिए किमिकुलावासे ॥४३॥
 वसकललसिंभसोणियमुत्तासुइरुहिरकद्दमसहावे ।
 वसिऊण गब्भवासे, पुणरवि तं चेव अहिलससि ॥४४॥
 एवंविहम्मि देहे, जे पुरिसा विसयरागमणुरत्ता ।
 ते दुहसहस्सपउरे, घोरे हिंडंति संसारे ॥४५॥
 एयं चिय मणहत्थी, वच्चंतं विसयसंकडपहेसु ।
 वेरगमगलगो, धरेह नाणंकुसेण तुमं ॥४६॥

पणमसु जिणिंदयंदे, भत्ति काऊण वज्जिय कुदिट्ठी ।
संसारसलिलनाहं, जेण अविग्घेण तं तरसि ॥४७॥
मोहारिमहासिन्नं, हंतूणं संजमासिणा सिग्घं ।
अद्धासिय सिद्धिपुरिं, करेह रज्जं भयविमुक्कं ॥४८॥
अन्नं च इमं सव्वं, भोगाईयं जमिच्छसे किंचि ।
तं सव्वं चिय पावसि, धम्माओ जेण भणियं च ॥४९॥
दीसंति मणहिरामा, जे नयणाणंदणा य नरवइणो ।
आहरणालंकिय विविहवत्थ तं धम्मलाहेण ॥५०॥ []
पडुपडहवीणमद्दल नच्चिज्जइ सुंदरीहिं सयकालं ।
सूसरकन्नुवलगं, तं सव्वं धम्मलाहेण ॥५१॥ []
धवलहरतुंगतोरण गयणवलगं (गं) [च] बहुसुहावासं ।
चित्तंमकम्मकलियं, तं सव्वं धम्मलाहेण ॥५२॥ []
जं गयवरकंठं (वरघडगल) गज्जियाइं हिंसंति तुरयथट्ठाइं ।
दीसंति सीहवारे, तं सव्वं धम्मलाहेण ॥५३॥ []
जं नेउरसणखलन्तहारवेल्लहलमत्तदइयाइं ।
जोइज्जइ मत्तविलासिणीहिं तं सव्वं धम्मलाहेण ॥५४॥ []
कामिणिखंधविलगो, विंझिज्जइ चामरेहिं सयकालं ।
पियइ जलं सुसुयंधं, तं सव्वं धम्मलाहेण ॥५५॥ []
जइ इच्छसि नेव्वाणं, तियसिदनरिंदसंतियं सिद्धिं ।
ता पडिवज्जसु धम्मं, गंतु गुरूणंतिए तुरियं ॥५६॥

तओ इमं च निसामिऊण चित्तियं भवदेवेण-

अवि य- एक्कस्स ताव चुक्को, कहवि तुलग्गेण गुरुजणगहाओ ।
अन्नं कह आवडियं, अदिट्ठकंडं व मम एयं ॥५७॥

ता किं पुण मए एत्थ कायव्वं ? अहवा किमेत्थ चित्तियव्वं ? सव्वहा गंतूण
निययगेहं तीए पियपणइणीए विसयसुहं अणुहवियव्वं, जणयपयं पालणीयं ति । एयं
च चित्तिऊण मणिया सा तेण नाइला- 'जइ एवं तो वि ताव पासेमि तं नाइलं

निययदइयं, पुणो जहाजोगमणुचिद्विस्सामो त्ति । अन्नं च मम ताव विहेसु तीए सहं दंसणं; पुणो जहा सा भणिही तहा करी(रि)हामो' त्ति एयं च निसामिऊण चितियं नाइलाए-

अवि य- मूढो एस वराओ, गहिओ पेम्मग्गहेण दुट्टेण ।

न याणइ हियमहियं वा, एयं पि हु भन्नमाणो वि ॥५८॥

ता किं पुण मए एत्थ करणीयं ? किं उज्झिऊण वच्चामि ? अहवा न हीनेहि. एयं, मा एसो एवं संसारं पडिही वराओ । 'विसीयमाणो य पाणी सव्वहा थिरीकरणीयो' इह जिणवयणं, ता अत्ताणं पयडिऊण सव्वहा संबोहेमि ताव एयं, पुणो गुरूणं सयासे वयगहणं कारिस्सामि ति । इमं च चित्तिऊण भणियमणाए-'जइ किं पि तुह तीए दंसणेण पओयणं तओ अहं सा नाइला, जा तुह भज्जा आसि, संपयं पुण ममं तुमं गुरू वंदणीउ' त्ति । इमं च सहसा निसामिऊण लज्जाससज्जसो इव मणागं आसंकिओ जाओ, मूणं च अवलंबिऊण ठिओ भवदेवो । भणियं च तीए-'संपयं जइ मह दंसणेण सिद्धपओयणो जाओ ता वच्च तुमं गुरूणंतिए । बहुकालं तए तवो अणुचिन्नो ता मा तं निरत्थयं थोवदियहकारणेण नेहि त्ति ।

अन्नं च- भीमभवे मा दुक्खं, पावसु जह पावियं पुरा तेण ।

सामन्नं चइऊण(णं), तिरियत्ते माहणसुएण ॥५९॥

इमं च निसामिऊण भवदेवेण भणियं-'कह तेण सामन्नं परिचइयं ? कहं वा दुक्खं पावियं ? कहसु' त्ति । तओ तीए भणियं-

अवि य- अत्थि इह भरहवासे, वेल्लहलुल्लावमणहरो निच्चं ।

लडहविलासिणिमुइओ, विक्खाओ लाडदेसो त्ति ॥६०॥

तत्थ पुरं भरुयच्छं, दइया इव नम्मयाइ संजुत्तं ।

अहवा नम्मयजुत्तं, दइयाओ कह विमुच्चंति ॥६१॥

वेलाछलेण जस्स य, रयणनिही संपयं पलोएइ ।

किं मम गुणेहिं अहियं, सासंको नियमणेणेवं ॥६२॥

एलालवंगपिप्पलिमि(मी)रियखज्जूरनालिऐरेहिं ।

जलनिहिवेलावणराइय व्व जत्थ य विवणिमग्गो ॥६३॥

रुक्खो पंडरदेहो, पिंगलनयणो जलंतरोमचओ ।
 तम्मि य रेवाइच्चो, नामेणं माहणो आसि ॥६४॥
 तम्मि धणकणयजुत्ते, नियविहवोहसियधणयरिद्धिजणे ।
 दालिदकंदली जम्मदुक्खिओ सो परं एक्को ॥६५॥

तस्स य आवया नाम गुरुबंधणविदिन्ना जन्नपत्ती भट्टिणी अहेसि । सा य केरिस्सा ?

अवि य- उट्टुविणिग्गयदसणा, पिंगलनयणा लडंतगुरुथणया ।
 लंबोयरवंकमुहा, मडहा किण्हा य वन्नेण ॥६६॥

सा य तस्स अईव दुवि(व्वि)णीया भसणसीला वंचणपरा कलहपिया झंखणसहावा उव्वेवजगया अवन्नवायपरायण त्ति । एवंविहाए य तीए भट्टिणीए तेण माहणेण जायाओ पनरसदारियाओ, ताणं च एक्को कणिट्ठो दारओ । तओ सो तेण कुडुंबेण राइं दियहं च भक्खणपरेणं ओभूरभविस्समेत्तविज्जो जायणामेत्तलद्धेण अनित्थारयंतो अत्ताणयं सह तीए माहणीए विक्कणेइ दारयं हारए, वहेइ उदयं, कुणइ खंडणं, समायरइ पीसणं, छड्डेइ छाणगं, भमेइ भिक्खं ति । भणियं च-

“वंसि चडंति धुणंति कर, धूलीधोया हुंति ।

पोट्टह कारणि कापुरिस, कं कं जं न कुणंति” ॥६७॥ []

एवं च सह तीए एरिसं विसयसुहमणुभवंतस्स वच्चए कालो, गच्छंति दियहा । अन्नया य मरणंतयाए जीवलोगस्स उवरया सा आवया भिहाणा तस्स भट्टिणी घरिणी । तीए य मयाए सो सुन्नो इव चुन्नो इव हयहिययो इव गहगहिओ इव परायत्तचित्तो इव मूढो इव सव्वहा किंकायव्वदिन्नवावारहियओ जाओ । तओ चित्तुं पयत्तो ।

अवि य- “अत्थो कामो धम्मो, पुरिसत्था तिन्नि हुंति लोयम्मि ।

एएहिं विरहियस्स य, होइ निरत्थो नवर जम्मो ॥६८॥

एयाणं पुण मज्जे, नत्थि अउन्नस्स मज्झ एक्को वि ।

ता पयपूरणमेत्तेण किं मम एएण जम्मेण ॥६९॥

ता सव्वजंतुपरिनिदियस्स मम संपयं अउन्नस्स ।

पियपणइणिरहियस्स य, मरणं सेयं परं एक्कं ॥७०॥

अहवा न हि न हि एवं, मयस्स गुरुपावपुंजमलिणस्स ।
 होही पुणो वि जम्मो, एयाओ चेव पावयरो ॥७१॥
 ता देवं देवेणं, तित्थं तित्थेण ण्हायमाणो हं ।
 पक्खालितो पावं, भमामि दइयाए परिहीणो ॥७२॥
 धणमाणविप्पमुक्का, धणियपहीणा जणम्मि जे पुरिस्सा ।
 ताण सरणं वि एसो, वणं व लोए न संदेहो' ॥७३॥

तओ एवं च चिंतिऊणं ताओ धूयाओ दाऊण माहणदारगाणं किल गहियकन्नाहलो संचलिओ सुएण सह तेण तित्थयत्ताए त्ति । तओ एवं च सह तेण डहरगदारएणं परिभममाणेण तित्थं तित्थेण रेवाइच्चमाहणेणं लहुयत्तणेण कम्मस्स, थोयत्तणेणं संसारस्स, भव्वत्तणेण तस्स जीवस्स, अणुदएण मिच्छत्तस्स, भवियव्वाए सम्मत्तस्स पत्ता साहवो, निसुओ धम्मो, गहियं सम्मत्तं, उवसामिया कसाया, गहियं वयं सह तेण दारणेणं ति । एवं च कुणइ तवं पालेइ संजमं, चरइ चारित्तं, वच्चंति दियहा, गच्छति कालो । सो वि दारगो संपत्तजोव्वणो वाहिज्जमाणो इंदिएहिं, अचयंतो सोदुं परीसहे, संतो महव्वयगुरुभरभारजावजीववहणेणं, वाहिज्जमाणो नियय-संकप्पसमुब्भवेणं कामदेवेणं, अचयंतो वोदुं संजमतवनियमकिरियाकलावं संजमं पइसिउं पयत्तो त्ति । पत्थइ य जइयणविरुद्धाइं, कुणइ य उम्मगं । तओ पालिज्जंतो वि पयत्तनयणाए साहूहिं विसए पत्थिउं पयत्तो, भणइ य-‘खंत ! अविइयाए विणा न पारेमि अच्छिउं । तओ निद्धम्मो त्ति काउं ‘अजोग्गो एस जिणपवयणपव्वज्जा-किरियाए’ त्ति परिचत्तो साहूहिं । तओ पच्चलयाए अजसोदयस्स, बाहुल्लेणं अविइए, उदएणं रागदोसाणं, पभूययाए असायोययस्स परिचत्तं विरइरयणं ति । पत्तो गिहत्थकरणीए । तओ विसयनिमित्तं किं काउमाढत्तो ? अवि य-

उदयं कटुं च तिणं, वहेइ सीसेण भोयतण्हालू ।

अजगोवसहमहीसीण पालणं तह समायरइ ॥७४॥

एवं सियवायधुओ, गिम्हायवताविओ छुहाकंतो ।

जं जं कुणइ वराओ, तं तं चिय निप्फलं तस्स ॥७५॥

भणियं च- “वच्चइ जत्थ अउन्नो, अडविं व दरिं गुहं समुद्धं वा ।
पावइ तर्हि तर्हि, सो, पुन्नेहिं विणा परिकिलेसं” ॥७६॥ []

अन्नेहिं वि भणियं-

“पुव्वभवकम्मकंदुल्लएण जं तस्स किं पि निम्मवियं ।
निययनिडाले दुक्खं, सुहं व तं को समुप्फुसइ” ॥७७॥ []

एवं च भोयतण्हालुयस्स परपेसणं कुणंतस्स ।
अट्टज्झाणोवगयस्स तस्स जम्मो दुहं जाइ ॥७८॥
अच्छउ ताव विलासो, भोगाईओ उ तस्स दूरेण ।
पूरिज्जइ उयरं पि हु, दुक्खेणं मंदभायस्स ॥७९॥
उयरभरणे असमत्थो, इच्छइ एसो विलासिणीसंगं ।
तं एयं संजायं, जं भणियं केहिं वि कवीहिं ॥८०॥

अवि य- “जइ जाणउं रइसुहं माणउं रोहणहो माणिव्कइं आणउं ।
भवणु करावइं सुंदरउं अंतेउर परिणउं लट्टउं ।
अंगु न पेच्छइ अप्पणउं विणु खट्टए भूमिहि घट्टउं” ॥८१॥ []
एवं अट्टवसट्टो, राइं दियहं च पेसणपसत्तो ।
दुक्खसयभरियदेहो, अच्छइ लोए विचिंततो ॥८२॥

तओ एवं च भाराइयं वहंतो, परपेसणं कुणंतो, भोगाहिलासी अट्टज्झाणोवगओ
गमेइ दियहे । तओ कइवयदियहेहिं तहाविहभवियव्वयानिओएण य दट्टो सो अहिणा ।
तओ थोवयाए आउयस्स, उक्कडयाए विसदंसस्स, अणाहत्तणयाए तस्स,
पंचत्तमुवगओ सो । मरिऊण य अट्टज्झाणोवगओ उववन्नो तिरिएसु महिसत्ताए त्ति ।
तओ वड्ढिओ देहोवचएणं, वहेइ पुणो वि वोज्झाइं पट्टीए खंधेण य । अवि य-

महिसत्तणेण जाओ, वहइ य वोज्झाइं खंधपट्टीए ।
तोत्तयपहरपरद्धो, गिम्हतो दुब्बलसरीरो ॥८३॥

इओ य सो तस्स जणओ कारुण तवं, पालिऊण संजमं, विहरिऊण सामन्न-
परियाएण अंतयाले अणसणविहिणा पंचनमोक्कारपरायणो य कालं कारुण उववन्नो
देवलोए देवत्ताए त्ति । तओ ओहिनाणेणं तु परिन्नाओ तेण पुव्वभवो, दिट्टो य सो

सुओ महिसत्तणेण उववन्नो भारं वहमाणो । तओ करुणाए सुयसिणेहेण य पडिबोहत्थं समागओ सो देवो । कओ तेण दिसावाणियगवेसो, विउव्विओ सयडसत्थो । अत्थं दाऊण तस्स सामिणो गहिओ सो तेण महिसो, जुत्तो य गुरुभारसयडे । देवसत्तीए विउव्विओ महाभारो । तओ जाहे न सक्केइ परिवोदुं ताहे सो तोत्तयलउडप्पहारं दाऊण अन्नत्तो जणगरूवं विउव्वित्ता एवं भणइ, जहा-‘खंत ! न सक्केमि पढमालियाए विणा विरसं उवभुंजिउं, जाव अगारीए विणा न तरामि अच्छिउं’ ति एवं भणमाणो य पुव्ववुत्तंतं साहिउं पयत्तो सो देवो । एयं च सुणमाणस्स तं च जणयरूवं देवं पलोएमाणे समुप्पन्नो तस्स महिसगस्स चित्ते वियप्पो ‘कत्थ मन्नेइ एवं (मन्ने एयं?) दिट्ठपुव्वं मया, अणुहूयं च इमं जं एसो साहेइ’ । एवं च ईहापोहमग्गणगवेसणं कुणंतस्स तस्स तयावरणिज्जकम्मखओवसमेण जायं जाइस्सरणं । तेण जाणिओ पुव्वभवो, नाओ वुत्तंतो, संविग्गो चित्तेण विरत्तो संसारस्स, अवगओ तिव्वमोहो । तओ एवं चित्तिउ पयत्तो-‘अहो दुरन्तो एस संसारो, चलाइं चित्ताइं, चंचला इंदियतुरंगमा, विसमा कम्मगइ, न सुंदरं मए अणुट्ठियं, अहमा तिरियजोणी, दुल्लहो जिणवरमग्गो; ता सव्वहा जं एस जणगो भणइ तं मए कायव्वं’ ति । एवं चित्तिऊण भणियं तेण हियएण निययभासाए जहा-‘भयवं ! किं मए संपयं समायरियव्वं ?’ । तओ देवेण जाणिऊण तस्स भावं जहा-‘एस संपयं पडिवज्जइ जिणवरमग्गं’ ति तओ पयडियं अत्ताणं देवेण कया य धम्मदेसणा, कहियं च जहा-‘गओ अहं देवलोयं’ महिसगस्स । तओ सो महिसो गहियअणुव्वओ कयभत्तपच्चक्खाणे सुहज्जाणोवगओ य अणसणनमोक्कारेण य तइयदियहे मरिऊण उववन्नो सोहम्मे कप्पे देवत्ताए त्ति । देवो वि गओ नियट्ठाणं ति ।

ता एवंविहा इमे दुरन्तलक्खणा विसया विसज्जणीया जिणमयकुसलेण जंतुणा ।

अवि य- ता मा तुमं पि जह सो, तिरियत्ते पाविओ महादुक्खं ।

भोगपिवासानडिओ, पाविहिसि अणेयसो दुक्खं ॥८४॥

विसयासत्ता य नरा, पडंति बीभत्स(च्छ)भीसणे नरे ।

साहूहि जेण भणियं, फुडवियडत्थं निसामेह ॥८५॥

“अच्छडियविसयसुहो, पडइ अविज्जायसिहिसिहानिवहे ।

संसारोवहिवलयासुहम्मि दुक्खागरे घोरे ॥८६॥

पय[कर]कन्नोरत्थलमुहकुहरुच्छलियरुहिरगंडूसे ।
करवत्तूकत्तदुहाविरिक्कवीवन्नदेहब्दे ॥८७॥

जन्तन्तरभिज्जंतुच्छलंतगुरुसद्भरियदिसिविवरे ।
डज्जंतुफि(प्फि)डियसमुच्छलन्तसीसट्टिसंघाए ॥८८॥

मुक्कक्कंदकराहु(?)कयंतदुक्कयकयंतकम्मोहिं ।
सूलविभिंदुक्खित्तुद्धदोह णिंन(णिंन्ने?)त्तपब्भारे ॥८९॥

बद्धंधयारदुग्गंधबंधणायारदुद्धरकिलेसे ।
छिन्नकरचरणसंकररुहिरवसादुग्गमपव(वा)हे ॥९०॥

गंधमुहणिंदगुक्खित्तवद्धणोमुद्धकंदिरकबंधे ।
दढगहियतत्तसंडासयग्गविसमुक्खुडियजीहे ॥९१॥

तिक्खंकुसग्गकट्टियकंटयरुक्खग्गज्जरसरीरे ।
निवसन्तरं पि दुल्लहसोक्खे वक्खेवदुक्खम्मि ॥९२॥

अच्छिनिमीलियमेत्तं, नत्थि सुहं दुक्खमेव पडिबद्धं ।
नरए नेइयाणं, अहोनिर्सिं पच्चमाणाणं ॥९३॥

इय भीसणम्मि नरए, पडंति जे विविहसत्तवहनिरया ।
सच्चव्भट्ठा य नरा, जयम्मि कयपावसंघाया” ॥९४॥

अन्नं च- “लब्भंति गुरुपयोहरनियंबपब्भारवहणसुद्धियाओ ।
आयंवदीहपम्हललोयणजुयलाओ विलयाओ ॥९५॥

न उण जरमरणरमलकिलेसजंबालवाहिनिट्टवणा ।
संसारसायरुच्छंगभमणखिन्नेहिं जिणचलणा ॥९६॥

सियचमरपवरबहुयणतोरणधवलायवत्तपरिकलियं ।
लब्भइ हयगयदंसणनरवइसयसंकुलं रज्जं ॥९७॥

नारयतिरियनरामरभवसयपरिभव(म)णखेयविज्झवणा ।
न उणं भवसयदुलहा, जयगुरुणो पायसंपत्ती ॥९८॥

उन्नयगरुयपओहरसुरसुंदरिफंसजणियगुरुतोसं ।
 लब्भइ सग्गम्मि धुयं, सुरसंघपहुत्तणं तह य ॥१९॥
 पणमन्तसुरीसरमउडकोडिसंघट्टेयविच्छुरियं ।
 संसारसमुद्दुत्तरणकारणं न जिणपयकमलं” ॥१००॥

ता सव्वहा दुल्लहं रुद्धिदखंदनायंदवंदियजिणयंदपायकमलं ति । विसमो य एस संसारो, बहुदुक्खाओ नरयवेयणाओ, दुल्लहो जिणवरमग्गो, बंधणयारो घरवासो, नियलाइं दाराइं, महाभयमत्ताणं, दुक्खिया जीवा, सुंदरो धम्मोवएसो, न सुलहा धम्मायरिया, तुलग्गलग्गं माणुसत्तणं ति । अवि य-

भणियं च एत्थ पयडं, कविणा केणावि तं निसामेह ।
 जेणुप्पज्जइ निययं, वेरगं तुज्ज हिययम्मि ॥१०१॥

“रमसु जहिच्छं सुपुरिस !, को नेच्छइ तुज्ज भोगसंपत्ती ।
 किंतु विवत्ती वि धुवं, चिन्तिज्जउ सा पयत्तेण ॥१०२॥ []

को नेच्छइ संजोगो, गरुयनियंबाहिं सुयणुविलयाहिं ।
 किंतु विओगोऽवस्सं, होही एयाहिं चित्तसु ॥१०३॥ []

सच्चं हीरइ हिययं, जुयईयणनयणबाणपहरेहिं ।
 किंतु अणंतो कामो, पावारंभेसु उज्जमई ॥१०४॥ []

सच्चं हो हरइ मणं, लीलावसमंथरं गईपवरं ।
 किंतु न नज्जइ एसो, अप्पा अह कत्थ वच्चिहिइ ॥१०५॥ []

सच्चं हरंति हिययं, महिलाणं पेमरायवयणाइं ।
 किंतु दुरंतं पेम्मं, किंपागफलं व कडुयं ति” ॥१०६॥ []

इय जाणिरुण एयं, मा मुज्जसु एत्थ भोगगहणम्मि ।
 संबुज्जसु धीर ! तुमं, विरइं ता कुणसु हिययम्मि ॥१०७॥

ता इमं च जाणिरुण तुमं पि कुणसु समभावं, विरज्जसु विसयाणं, विरमसु संसारस्स, पालेसु वयं, कुणसु संजमं, धरसु वयं, कुणसु तवचरणं, गच्छसु गुरुसयासं’ ति । एवं च निसामिरुण भवदेवसाहू मणायं भीओ संसाराओ, उव्विग्गो

गिहासमाओ, बीहिओ दुरंतविसयाणं । चिंतितुं च पयत्तो 'धिरत्थु संसारवासस्स । कुच्छिओ एस जीवो जं महादुक्खपरंपरेण कहकह वि पाविऊण दुल्लहं जिणवयणं पमाओ कीरइ' त्ति । एयम्मि अवसरे भणिया तेण माहणीसुएण नाइलाए सह समागएण सा माहणी, जहा- 'अम्मो ! आणेह मल्लयं, मम छड्डी भविउ कामा, जेण जं पायसं भुत्तं तं तत्थ वमिऊण पुणो अइमिट्ठं भुंजीहामो' त्ति । तीए माहणीए भणियं- 'पुत्त ! अइमिट्ठं पि जं वन्तं तं न परिभुंजीयइ, जओ असुइकप्पं तं' । इमं च निसामिऊण भवदेवेण चिंतियं सुट्ठु भणियं माहणीए, वंतं से दुगुंछणीयं असुइसमाणं भाइ । वंता य मए इमे विसया, ता दुट्ठु मए समायरियं इमे पत्थमाणेण, निवाडिओ अप्पा भवसमुद्दे, पवंचिओ उत्तमसोक्खाणं, संजणिओ वयणिज्जभायणं; तहा वि इमं एत्थ पत्तकालं, वच्छामि गुरुसयासं, गिण्हामि भाववयं, करेमि तवं, पालेमि संजमं, उद्धरामि पायच्छित्तं ति ।

अवि भणियं चिय पयडं, तं चिंतिसु जीव तं पयत्तेण ।

जेणुप्पज्जइ हियए, वेरगं तुज्झ रे मूढ ! ॥१०८॥

संसारम्मि असारे, नत्थि सुहं वाहिवेयणापउरे ।

जाणंतो वि हु जीवो, तह वि य धम्मं न य करेइ ॥१०९॥ []

अथिरं जीयं रिद्धी य चंचला जोय(व्व)णं छणसरिच्छं ।

पेक्खंतो पच्चक्खं, तहवि य वंचिज्जए जीवो ॥११०॥ []

घरवासे वामूढो, अच्छइ आसासयाइं चिंतंतो ।

न कुणइ पारत्तहियं, जा निहओ मच्चुसीहेण ॥१११॥ []

वाही इट्ठुविओगं, दारिदं तह जरा महादुक्खं ।

एएहिं परिग्गहिओ, तह वि य धम्मं न य करेइ ॥११२॥ []

लहिऊण दुल्लहं चिय, एयं मणुयत्तणं तुमं जीव ! ।

लग्गसु जिणवरधम्मो, अचित्तचित्तमणिसमाणे ॥११३॥ []

जं वुत्थो नवमासे, असुईभरियम्मि गब्भवासम्मि ।

संकोडियंगमंगो, विसहंतो नारयं दुक्खं ॥११४॥ []

रे जीव ! संपयं चिय, वीसरियं तुज्झ तं महादुक्खं ।

थेवं पि जेण न कुणसि, जिणिंदवरभासियं धम्मं ॥११५॥ []

जं मारेसि रसंते, जीवे निद्वय ! निरावराहे वि ।
 उवभुंजसु तं दुक्खं, पत्तो अइदारुणे नरए ॥११६॥ []
 जं हरसि परधणाइं, विरयासे जं चं परकलत्ताइं ।
 तं जिय ! पावेसि तुमं, नरए अइघोरदुक्खाइं ॥११७॥ []
 अथिराण चंचलाण य, खणमेत्तसुहंकराण पावाण ।
 दुग्गाइनिबंधणाइं, विरमसु एयाण भोयाणं ॥११८॥ []
 कोहो माणो माया, लोभो तह चेव पंचमो मोहो ।
 निज्जिणिऊण य एए, वच्चसु अयरामरं ठाणं ॥११९॥ []
 इय नाऊण असारं, एयं अइदारुणं पि संसारं ।
 तह कुण जिणवरधम्मं, जह सिद्धिं पावसे विरलं ॥१२०॥

इमं चिंतिऊण भणिया तेण नाइला-‘इच्छामो अणुसद्धिं, सुट्टु पडिबोहिओ अहं ते
 जिणवरमग्गे, संजणियं भावओ विरइमणं । ता वच्चामि गुरुसयासं, गिण्हामि
 पायच्छित्तं, करेमि तवं, चरिऊण बहुकालं, अणसणनमोक्कारेण य कालं काऊण
 सोहम्मे देवलोए सक्कस्स सामाणिओ देवो देवत्ताए उव्वन्नो त्ति । देसूणदोसागरोव-
 माऊ तत्थ य अच्छइ भोए भुंजंतो त्ति ।’

सहंति जे घोरपरीसहाइं, धरंति नाणं चरणं च संजमं ।
 गुणा य पालिंति इमं सुणित्ता, हवंति देवा सुमहिद्धिया ते ॥१२१॥
 इय जंबुणामचरिए, पयरूवयगाहविरइए रम्मे ।
 एस चउत्थोद्देसो, पढमो य भवो समत्तो त्ति ॥१२२॥



॥ पंचमो उद्देशो ॥

इओ य सो तस्स भाया भवदत्तजीवदेवो ठिइक्खणं चुओ समाणो, इहेव जंबुदीवे
पुक्खलावइविजए अत्थि पुंडरिगिणी नयरी । जा य सा केरिसा ? अवि य-

जणनिवहपूरपसरियजलोहदिप्पन्तरयणविच्छड्डा ।

मयरहरो व्व विसाला, पुहई इव सासया निच्चं ॥१॥

जत्थ य नयरीए-

पच्च[य]लोवो जइ लक्खणम्मि सूएसु पंजरनिरोहो ।

कुसुमेसु बंधणं जइ, कंटो जइ कमलनालेसु ॥२॥

सिसिरविरम्मि महुमाससेवणं पीलणं जइ तिलेसु ।

जीवेसु विग्गहो जइ, कलहो जइ मंडलगोसु ॥३॥

तत्थऽत्थि निययखग्गप्पहारनिज्जियपयंडरिउनिवहो ।

पणमियनरीसरकमो, चक्कहरो वइरदत्तो त्ति ॥४॥

तस्सासि सीलजोव्वणमणहरलायन्नरूवगुणकलिया ।

नियपाणाण वि दइया, नामेण जसोहरा देवी ॥५॥

सा य अपुत्ता, तओ विन्नत्तो सुयनिमित्तं तीए राया, जहा-‘मम तणयणिमित्तं
कुणसु देवयाईणं समाराहणं’ ति । अन्नं च नत्थि देवस्स किं पि असज्जं । जओ
भणियं च-

“जाव य न दिति हिययं, गरुया विहडंति ताव कज्जाइं ।

अव(वि)दिन्नं चिय हिययं, गुरुं पि कज्जं परिसमत्तं” ॥६॥ []

“तिणमेत्तं पि हु कज्जं, गिरिवरसरिसं असत्तिमंताणं ।

होइ गिरी वि तिणसमो, अहिओगसक्कसे पुरिसे” ॥७॥ []

तओ राइणा चिंतियं 'एवमेयं, सोहणं देवीए भणियं' । जेण भणियं च-

“जस्स किर नत्थि पुत्तो विज्जाविक्कमधणस्स पुरिसस्स ।

सो तह कुसुमसमिद्धो फलरहिओ पायवो चेव” ॥८॥ []

तओ 'सव्वं सोहणं भविस्सइ'त्ति भणिरुण विसज्जिया देवी । तओ तं दियहं पभिइ सुयनिमित्तं कीरंति देवयाराहणाइं । विहिज्जंति मंतंतवाइयपूयाओ । निव्वत्तिज्जंति उवाइसयाइं, कीरंति बलीओ, बज्जंति रक्खाइं, पिज्जंति ओसहाइं, दिज्जंति मूलियाओ, उवणिज्जंति तंताइं, एवं च कीरमाणेसु बहुएसु तंतमंतोवाइएसु, उवन्नो सो (से) तस्स उयेरे । तओ गच्छंतेसु दियहेसु पवड्डिए गब्भे, जाओ सो जणणीए दोहलो 'जाणामि जइ समुद्दे मज्जामि' । इमं च नाऊण वइयरं वइरदत्तो राया समुद्दभूय(यं) सीयं नाम महानइं गओ । तत्थ य जसोहरादेवी मज्जिया । अवगओ य दोहलो, निव्वुया य जाया । पसूयाय निययसमयेणं सुकुमालपाणिपायं दारगं । निवेइयं च राइणो वद्धावणेणं, दिन्नं च अंगच्छित्तं निवेयगस्स रन्ना, तयणंतरं च आणत्तं वद्धावणयं, वित्तं च महावद्धावणयं । पडिपुन्ने मासे, कयं तस्स दोहलगुणसंसूइयं नामं सायरदत्तो त्ति । तओ पंचधाईपरियरिओ पवड्डिओ देहोवचएणं कलाकलावेण य, संपत्तो य जोव्वणं । जणणिजणयकुसलत्तणेण जिणमयधम्मस्स पुव्वभवब्भासेण य जाओ सो जिणसासणभावियमई । तओ परिणाविओ पिउणा महासामंताणं रूवजोव्वणविन्नाणकलाकलावकलियाओ दारियाओ । तओ ताहिं समं अभिरममाणस्स सुहंसुहेणं गच्छइ कालो, वच्चंति दियहा । कयाइ जिणवंदणगीय-वीणावायणेणं, कयाइ साहुपज्जुवासणेणं, कयाइ पहेलियाहिं, कयाइ अंतिमक्खराहिं, कयाइ वुड्ढाहिं, कयाइ वि दुवईहिं, कयाइ पन्होत्तरेहिं, कयाइ अक्खरमत्ताबिंदुचुएहिं, कयाइ गूढचउत्थपाएहिं; एवं च सायरदत्तस्स विसयसुहमणुहवंतस्स वोलीणा अणेय-दिवसकोडिलक्खा । अण्णया सव्वसत्तआणंदयारओ समागओ पढमघणसमओ । जो य केरिसो ? अवि य-

धारावडणनिरंतसमंतओ भरियसलिलनिवहेण ।

निन्नुनया महीए, नज्जति नो जत्थ पहिएहिं ॥९॥

अलिगवल[व]कुलअंजणतमालदलनीलिसरिसमेहेहिं ।

उच्छइयं गयणयलं, समंतओ गहिरसदेहिं ॥१०॥

विज्जुलयाओ खणमेत्तउव्वओ (?) दिट्ठनट्टरायाओ ।
 न तथा थिरं पयासं, जणंति जह चेव उव्वेवं ॥११॥
 सिहलाकेयाररवो, नवघणसञ्छन्नए गयणमग्गे ।
 सुव्वन्तो संतावइ, पउत्थवइयाण हिययाइं ॥१२॥
 पहियाण बरहिणरवो, पियाइ सह जंपियाइ सारेइ ।
 विहडियसंकेयदिणा, जाया हिययं उहन्तीओ ॥१३॥
 अवमन्नियतणतण्हं, निब्भरसीएण वेविरसरीरं ।
 वंछइ वासापहयं, निलयं कहकह वि मयजूहं ॥१४॥
 गिम्हायवसंतत्तं, कहवि हु संपाविऊण नवजलयं ।
 निच्चमवमन्नियच्छुहं, सेवइ नीरं महिसवंद्रं ॥१५॥
 छज्जंति धरा घेप्पंति इंधणा अंकुरा वि लूहंति ।
 पयरिज्जंति य सासा, घणसमए अह कुडुंबीहिं ॥१६॥
 इय घणसमए जणमणहरम्मि मेहाउलम्मि व्वालीणे ।
 वियसंतकमलसंडो, संपत्तो तक्खणं सरओ ॥१७॥
 उप्फुल्लकुवलयच्छी, वियसियसयवत्तपहसिरी सहइ ।
 दट्ठूण सरयदइयं, पुहइवहू गरुयराएण ॥१८॥
 पंडुरपओहराओ, वियसियसियकासकुसुमवत्थाओ ।
 घणसमयदइयविरहे, जायाओ दिसाओ तणुयाओ ॥१९॥
 सियकासकुसुमदसणुच्छलन्तकिरणाए सरयलच्छीए ।
 सरयागमे पहसियं, तह जह जायं नहं विमलं ॥२०॥
 इय एरिसम्मि सरए, पियपणइणिवंद्रपरिगओ ललइ ।
 सायरदत्तो पवरम्मि मंदिरे अह समारूढो ॥२१॥
 नाणाविहकीलाहिं, तस्स ललन्तस्स उवरिमतलम्मि ।
 सरए जायं सहसा, दसद्धवन्नं जलयवंद्रं ॥२२॥

विदुमसिहिकंठपहाकणयजणरयणिनाहसमयाभा ।
 मेहगणा गयणयले, पियार्हिं सह तेण ते दिद्धा ॥२३॥
 दट्टूण मेहवंद्रं, सायरदत्तेण चितियं एयं ।
 मेरुतडा इव रम्मा, मेहा कह सोहणे गयणे ॥२४॥
 साहूर्हिं जहा भणिया, मेरुतडा पंचवन्निया समए ।
 गयणम्मि तहा एए, मेहा छज्जंति पंचविहा ॥२५॥
 एवं चिन्तंतस्स य, ते मेहा तक्खणेण पवणहया ।
 जलबुब्बुउ व्व सहसा, निज्जंति तरु व्व अल्लीणा ॥२६॥
 दट्टूण अभावं से, गयणे मेहाण राहुणा घत्थो ।
 कमलंको वि य नज्जइ चिंताभरदूमिओ जाओ ॥२७॥

एवं च चितियं पयत्तो ।

अवि य- “सरयघणा इव चवला, सव्वे वि य अत्थसयणसंजोया ।
 पेमं सुमिणसमाणं, तडि व्व खणभंगुरं रूवं ॥२८॥
 गिरिनइवेयसरिच्छं च जोव्वणं चंचला इमा लच्छी ।
 सुरवइचावसमाणं, चवलं मणुयत्तणं एयं ॥२९॥
 किंपागफलसरिच्छं, मुहरसिया कडुविवागिणो भोगा ।
 गोत्तीओ इव दारा, नियला इव पुत्तभंडाइं ॥३०॥
 दृढबंधणं व सयणा, चोरा इव होंति तह य मित्ताइं ।
 होंति जमो व नरिंदा, भिच्चा पेय व्व गसणपरा ॥३१॥
 सल्लं व होइ वइरं, न मुएइ भवंतरे वि संकंते ।
 सुणय व्व होंति पिसुणा, पट्टीमंसंसिणो निच्चं ॥३२॥
 देहं रोगावासं, जीयं मरणाउयं सयाकालं ।
 दुलहा माणुसजाई, नरए दुक्खं महाभीमं ॥३३॥
 वित्थिन्नो संसारो, दुरुत्तरो होइ सायरो व्व सया ।
 जिणसासणम्मि बोही, लब्भइ विउलेहिं पुन्नेहिं ॥३४॥
 विरइरयणं चिंतामणि व्व न हु होइ थोवपुन्नाणं ।
 तीएँ फलं नेव्वाणं, तस्स य सोक्खं अणाबाहं ॥३५॥

ता एयं नाऊणं, मा मुज्झसु जीव ! रे तुमं मूढ ! ।
नरयवडियस्स सरणं, होहिंति न इट्ठदइयाओ” ॥३६॥

अन्नं च- “पीमाइभाइभइणीण पुत्तदाराण बंधुमित्ताण ।
नरए निवडंताणं, ताणं नेक्कं पि एयाणं ॥३७॥
गयसंदणतुरयाणं, नरिंदसंघा य तह य सुहडाणं ।
नरए निवडंताणं, ताणं नेक्कं पि एयाणं ॥३८॥
धणकणयरयणमणिमोत्तियाण तह पवरकोसपुहईण ।
नरए निवडंताणं, ताणं नेक्कं पि एयाणं ॥३९॥
वत्थालंकारविभूसणाण तह ण्हाणपाणभक्खाणं ।
नरए निवडंताणं, ताणं नेक्कं पि एयाणं ॥४०॥
इय नरयकूवनिवडन्तयाण नेक्कं पि होइ एयाणं ।
ताणं इह सत्ताणं, मोत्तूणाणं जिणिंदाणं” ॥४१॥
ता जीव ! किं न चिन्तसि, जेण इहं अत्थि किं पि अन्नं पि ।
सरणं जयम्मि पयडं, भणियं च जओ सुसाहूहिं ॥४२॥
“हा हा जीव ! अलज्जिर !, निंदाविरमे वि किं न चिंतेसि ।
अन्नं पि किं पि मरणं, जह होही एत्थ संसारे” ॥४३॥ []
अन्नाणंधेण तए, नारयनरतिरिदेवगइगहणे ।
भमियं पुणो वि मा भम, भवकन्तारे दुरुत्तारे ॥४४॥
मा मूढ ! मोहमइरामयविंभलविसमविसविवाएसु ।
जाणंतो विं भवगई, विसयसुहेसुं मणं कुणसु ॥४५॥
पियजणविरहे अप्पियसमागमे किं न तिब्बदुक्खाइं ।
न य लक्खेसि अलक्खण !, जेण न चिंतेसि अप्पहियं ॥४६॥
किं मायापणइणिसु य, परियणधणनेहलोहनियलेहिं ।
दढबंधणेहिं बंधसि, बंधवबुद्धीए अत्ताणं ॥४७॥
अव्वो अलज्ज ! निच्चेयणो सि जं गब्भवसहिदुक्खा ।
भमिऊण अप्पमाणं, जं न चरसि निच्छिओ धम्मं ॥४८॥

तो पाविऊण दुलहं, मणुयभवं पाव ! परिहर ममत्तं ।
दुग्गइगममल्लंघं, सिग्घमविग्घेण लंघेसि ॥४९॥

इय नाऊणमणत्थं, विसयसुहं कुणसु जीव ! जिणवयणं ।
वेरगमभ्भुवगओ, होऊण अणुब्भवो धणियं ॥५०॥

तहा- “हा जीव ! जाणसि च्चिय, जह तुरियं जीवियं अइक्कमइ ।
तह वि तुह खद्धलज्जय !, न होइ तणुओ वि संवेगो ॥५१॥
किं तुज्झ ते लहुं चिय, पम्हुद्धा दुक्खनिब्भरा निरया ।
जेणेवं नीसंकं, करेसि भोएसु अहिलासं ॥५२॥
जीव ! मणंतं कालं, भुत्तेसुं देवमणुयभोएसु ।
कंतारबंभणस्स व, पुणो वि तुह भुंजिउं सद्धा ॥५३॥
न य पावसि भोगसुहं, न य धम्मं भोगकंखओ कुणसि ।
पत्तिय रे निब्बुद्धिय !, दुण्ह वि लोयाण चुक्किहिसि ॥५४॥
पुव्वकयपावकम्मय ! दुल्लहलंभाइं सुद्धु पत्थितो ।
हा जीव ! मरिहसि तुमं, अप(प्य)त्तमणोरहो चेव ॥५५॥
दट्टूण परसिरीओ, विलयासत्थं तहेव धणकणयं ।
पत्थंतेण अयाणुय !, अइरा कालेण किं पत्तं ॥५६॥
इय जाणिऊण निउणं, जिणधम्मं जे कुणंति सइ निरया ।
जम्मंतरेसु वि [हु] ते, दुहस्स नामं पि न सुणित्ति ॥५७॥
ता जा मच्चुमइंदो, जंतुगइंदाण दप्पनिहलणो ।
निवडइ न मज्झ तुरियं, आर्यकललन्तजीहालो ॥५८॥
ताव सुरीसरकिन्नररिंदमहियाण जिणवरिंदाणं ।
चलणनिसेवपउणो, करेमि उरगं तवच्चरणं” ॥५९॥

तओ एवं च संसारनिव्वहणचिंताभरेण सिंसिरसमागमतुसारावडणनिदड्ढकमलिणी-
संडं पिव विच्छायं तस्स मुहकमलं दट्टूण भणियं सप्पणयं पियपणइणीहिं-‘पिययम !
कीस तुमं मुहुत्तमेत्तेणेव उव्विग्गो इव चित्तेण, पराइत्तो इव देहेण, विसन्नो इव
हियएण, विरत्तो इव नयणेहिं, निव्विन्नो इव संपयाए, मुणी इव मूणव्वएणं,
चित्तपुत्तलयं पिव निच्चलत्तणेणं, दारिद्वकुडुंबं इव चिंतासयसंकुलत्तणेणं, जई इव

मज्झत्थयाए, वीयरारगो इव गयरारगदोसो, समतिणलेट्टुकंचणो सव्वजंतुहिओ जओ लक्खिज्जसि त्ति । सव्वहा न पढसि गाहं, न भिंदसि पण्होत्तरं, न जंपसि सललियं, न कुणसि परिहासं, न पियसि पाणं, न समाणेसि त्ति तंबोलं ।’

अवि य- जाओ सि कहणु पिययम ! मुहुत्तमेत्तेण विगलियप्पणओ ।

.सीसउ अम्हाणेयं, असीसणिज्जं जइ न होइ ॥६०॥

तओ ईसि वियसंतवयणकमलेण भणियं सायरदत्तेण । अवि य-

तं नत्थि नूण किंपि वि, जयम्मि जं तुम्ह साहिमो नेय ।

जं पुण विचिंतियं मे, तं निसुणह एत्थ मुद्धाओ ! ॥६१॥

तओ ताहि भणियं-‘महापसाओ, कहसु’ त्ति । तओ भणियं सायरदत्तेण ।

अवि य- जाणामि जइ इमेणं, कहवि हु चवलेण नूण देहेण ।

जिणदिक्खदिक्खिणं, कीरइ तुंगं तवच्चरणं ॥६२॥

तओ ताहि ईसिवियसिय[मुह]पंकयाहिं भणियं । अवि य-

जावेवं चिंतिज्जइ, पिययम ! ता कीस कीरइ न तुरियं ।

लोए वि जेण सुव्वइ, ‘तुरिया धम्मस्स होइ गई’ ॥६३॥

अन्नं च देव !-ववसाउ च्चिय धन्नाण होइ एसो न चेवऽहव्वाणं ।

ता धीर ! उज्जमिज्जउ, इमेण चवलेण देहेणं ॥६४॥

सुम्मइ य इमं पयडं, धीर च्चिर(य) केइ विरइवररणं ।

गिण्हंति जेण भणियं, साहूहिं इमं निसामेह ॥६५॥

“पवणाहयजलकल्लोलसच्छंहं विहवसंपयं ददुं ।

धीर च्चिय केइ कुणंति पच्छा(एत्थ?)पुन्नज्जणं पुरिसा ॥६६॥ []

खरपवणविहयतामरसचंचलं जीवियं कलेऊण ।

धीर च्चिय सुहविमुहं, करेति तवसंजमुज्जोयं ॥६७॥ []

पवणुद्धयजलहितरंगभंगुरं जोव्वणं पि नाऊणं ।

न हु धीरयरहिया उच्छंहंति तवभरथुरुव्वहणे ॥६८॥ []

घणविवरंतरखणदिट्टुनट्टुविज्जूसमम्मि सयणम्मि ।
 रज्जंति न सप्पुरिसा, परलोयकएण जे धीरा ॥६९॥ []
 कुसकोडिबिंदुसंठियसुचंचलं रूवसंपयं नाउं ।
 धीरा गिण्हंति जए, विरईरयणं अणग्घेयं ॥७०॥ []
 इय जीवियधणजोव्वणसयणसमागमकयाइं सोक्खाइं ।
 मन्नंति असायाइं, धीर च्चिय संजमाभिमुहा” ॥७१॥ []
 एकं पुण विन्नमिमो, देवं इह एत्थ पायवडियाओ ।
 संसारसायरं भो ! अम्हे वि हु तरिउमिच्छामो ॥७२॥

तओ भणियं सायरदत्तेण-

जुज्जइ भवियाणेयं, जिण्णिदवयणम्मि निच्छियमईण ।
 जरमरणरोगपउरं, संसारमहोयही तरिउं ॥७३॥
 सव्वेण वि सत्तेणं, संसारत्थेण जिणमयं लहिउं ।
 उज्जमिउं इह जुज्जइ, सपच्चवायम्मि जियलोए ॥७४॥

अन्नं च- एयस्स इमं सारं, माणुसजम्मस्स नवर लोयम्मि ।
 काऊण जेण धम्मं, साहिज्जइ जेण अपवग्गो ॥७५॥

इमं च अइदुल्लहं माणुसत्तणं । जओ-

“जह रयणं पब्भट्टं, समुद्धमज्झम्मि दुल्लहं होइ ।
 तह पब्भट्टं इह माणुसं पि कह कहवि जइ लहइ” ॥७६॥
 ता एयं नाऊणं, इमेण चवलेण मणुयजम्मेणं ।
 जिणदिक्खागहणेणं, घेप्पउ परलोयपच्छयणं ॥७७॥

तओ ताहिं भणियमेवमेयं न अन्नहा भवइ त्ति । एवं च चरणकयववसायस्स
 जिणसिट्ठसाहुकहाकरणुज्जुयस्स पियपणइणीवंद्रमज्झगयस्स, तहाविहगुरुआगमणं
 पलोयमाणस्स जिणसाहुपूयापणामकरणुज्जयस्स सुहंसुहेण वच्चइ कालो । अन्नया य
 विहरमाणो समागओ तीए पुंडरिगिणीए नयरीए अभयसागरायरिओ नाम आयरिओ
 सगच्छपरिवारिउ त्ति । समोसढो य नयरीए बाहिरुज्जाणे । तं च समोसरियं नाऊण

सपरियणो विनिग्गओ वंदणवत्तियाए वइरदत्तचक्कवट्ठी, सायरदत्तकुमारो वयंसय-
परिवारिओ सह महिलावंद्रेण । पत्ता य सव्वे गुरुसमीवं । वंदिओ भयवं अणेहिं ।
धम्मलाहिया गुरुणा, पुच्छिया य सरीरपउत्ती । विणयपणयोत्तमंगेहिं 'भयवं ! अज्ज
कुसलं तुम्ह चलणदंसणेणं' ति भणमाणा उवविट्ठा गुरुचलणंतिए । पत्थुया भगवया
धम्मदेसणा-

“एत्थ नरनाह ! नवरं, चउगइसंसारसागरे घोरे ।

धम्मो जइ वरसरणं, जिणभणिओ होइ जंतूणं ॥७८॥

सो य धम्मो इमेण कम्मे(मे)ण अइदुल्लहो हवइ । जओ भणियमागमे भगवया-

“माणुस्सखेत्तजाईकुलरूवारोग्गमाउयं बुद्धी ।

समणोग्गहसद्धा संजमो य लोगम्मि दुलहाइं” ॥७९॥ [उक्त.नि./गा.१५९]

किमिकीडकुंथुकीलियअणेयभेएसु तिरियनरएसु ।

उप्पज्जंति मरंति य, जंतू न य जंति मणुयत्तं ॥८०॥

अह कहवि होइ तं पि हु, नवरं मेच्छेसु पुन्नरहियाणं ।

धम्मरहियाण जम्मो, तिरियाण व जत्थ अहमयरो ॥८१॥

पावइ जइ वि हु खेत्तं, निंदियअहमासु तिरियजाईसु ।

उप्पज्जइ कयपावो, मरिउं नरए जहिं जाइ ॥८२॥

जाइविसुद्धो वि पुणो, उप्पज्जइ तुच्छपक्कणकुलेसु ।

अहमाण वि अहमयरो, पावपसत्तो सयाकालं ॥८३॥

पत्ते वि कुले जायइ, अंधो बहिरो य पंगुलो लल्लो ।

कुंटो मंटो मडहो, धम्मस्स न होइ जह जोग्गो ॥८४॥

रूवकलिओ वि जायइ, रोगावासं पुणो वि अह नवरं ।

वाहिसयदुक्खतविओ, वीरियहीणो सयाकालं ॥८५॥

आमयरहिओ वि पुणो, जायइ बत्तीसलक्खणो जइ वि ।

आउक्खएण नवरं, विहडइ बालो कुमारो वा ॥८६॥

उक्किट्ठआउयस्स य, नरस्स मिच्छत्तमोहियमइस्स ।

जइ जंतु वच्छलम्मी, जिणधम्मो जायइ न बुद्धी ॥८७॥

कम्मोवसमेण जई, नायइ बुद्धी जिणिंदवयणम्मि ।
 धम्माधम्मविहन्नु, होइ गुरू दुल्लहो तह वि ॥८८॥
 पत्ते वि पुणो तम्मि वि, साहंते जिणमयं वरं धम्मं ।
 नाणंतरायनिरहओ, धम्मम्मि न उग्गहं कुणइ ॥८९॥
 पत्ते वि पुणो धम्मे, दंसणमोहेण मोहिओ नवरं ।
 जाणंतो वि न जाणइ, सद्धारहिओ सया होइ ॥९०॥
 सद्धा वि जइ वि जायइ, संजमजोएण निच्छिओ होइ ।
 अह कुणइ संजमं जइ, अइरा मोक्खं पि साहेइ ॥९१॥
 इय पत्तं सव्वं मे, संपइ पावेह संजमं तुब्भे ।
 पावेह जेण अइरा, मोक्खे सोक्खं अणाबाहं" ॥९२॥

इमम्मि भणिये गुरुणा, वइरदत्तरायपमुहेहिं सव्वेहिं पि नरीसरनायरएहिं भणियं-
 'भयवं ! एवं इमं न अन्नहा भवइ' ति । तओ सायरदत्तकुमारेण चितियं-अहो भयवया
 साहियं दुल्लहत्तणं माणुसजाईए, दुल्लहत्तणं खेत्तजाइकुलरूवारोग्गाउयबुद्धिपभिईणं अंते य
 संजमस्स, तस्स फलं नेव्वाणं ति, ता करेमि इमं संजमं, एयं तं जं मए परिचितियं सव्वं
 संपत्तं ति-चितिरुण विन्नत्तं भगवओ पायवडणुट्टिएण सायरदत्तकुमारेण-'भयवं ! न
 कज्जं मह इमिआ भवसायरऽरहट्टघडिसरिसेणं जम्मजरामरणनिरन्तरेण संसारवासेणं ति । ता
 देसु मे सिवसुहसुहयं सव्वदुल्लहाणमवि दुल्लहं इमं संजमरयणं' ति । इमम्मि य भणिए,
 भणियं गुरुणा-'अविग्घं देवाणुप्पिया, मा पडिबंधं कुणसु' ति । तओ सायरदत्तकुमारेण
 पायवडणुट्टिएणं विन्नत्तो जणओ जणणी य । अवि य-

तम्हायत्तो य अहं, जाण पसाएण पाविओ एसो ।
 नरवर ! जिणवरधम्मो, माणुसजम्मे विबोहो य ॥९३॥
 संपइ पावेमि जई, तुम्ह पसाएण संजमं कह वि ।
 ता सहलं मह एयं, जम्मं जाई य गोत्तं च ॥९४॥

इमं च निसामिरुण राइणा वज्जप्पहारदलियउत्तमंगेणेव अच्छिरुण मुहुत्तमेक्कं
 चिंताभराउलेणं जंपियं । अवि य-

अच्छिन्नथोरमुत्ताहलाबलीबाहर्बिंदुपसरेण ।
 कहव सगगरकंठं, अह भणियं नरवरिंदेणं ॥९५॥

तुह विरहानलतविया, जइ इह [ते] सफरिय व्व सुसिऊण ।
न मरइ जणणि रुयंती, ता कुण एयं अविग्घेण ॥१६॥

तओ तेण अवलोइयं जणणीए मुहकमलं । तीए भणियं सगगयक्खरं । अवि य-

तुह विरहासणिजालोलिजलियदेहस्स वच्च ! कह कहवि ।
पु(फु)ट्टइ न तक्खणं जइ, हिययं तुह चेव जणयस्स ॥१७॥

तओ भणिए सायरदत्तेण जणणि-जणए । अवि य-

न मरइ कोइ विओए, न य कस्स वि फुट्टए फुडं हिययं ।
जइ पुण एवं होंतं, न को वि लोए जणो हुंतो ॥१८॥
सव्वेहिं सह विओओ, सव्वे वि मरंति जंतुओ णिययं ।
न य कस्स वि अणुमरणं, दीसइ अह एत्थ लोयम्मि ॥१९॥

अन्नं च- जायंति ते वि सत्तू, हवंति ते चेव बंधवा जंतू ।

कस्स कए अणुमरणं, कीरइ इह बुद्धिमंतेहिं ॥१००॥
एवं बहुप्पयारं, भणिए कहकह वि तेहिं सो मुक्को ।
पवयणविहिणा सह पणइणीहिं पव्वाविओ गुरुणा ॥१०१॥
गहियकिरियाकलावो, पत्तो य सुओयहिस्स सो पारं ।
सुविसुद्धचरणकरणो, जाओ अह ओहिनाणी य ॥१०२॥
ठविओ य पुणो गुरुणा, पयम्मि निययम्मि सो महासत्तो ।
विहरइ गणपरियरिओ, बोहेंतो भवियकुमुयाइं ॥१०३॥

इओ य सो भवदेवसाहुजीवदेवो भुंजिऊण सोहम्मे कप्पे नियमाउयं ठिइक्खएण
चुओ समाणो तत्थेव पुक्खलावइविजए अत्थि वीयसोया नाम महानयरी, जा य सा
केरिसा ?, अवि य-

अच्चुन्नयाइं जत्थ जिणभवणाइं न उण गुरुपणामाइं ।
दीहरवच्चइं पेमइं न चेव परिसंगइ खलेहिं ॥१०४॥
कुटिलाइं केसटमराइं जत्थ जुवईण न उण चरियाइं ।
पीइपसाओ य थिरो, न माणबंधो जहिं अत्थि ॥१०५॥

निज्जियपयंडरिवुदंडचंडकोदंडलद्धमाहप्पो ।
 परिभुंजइ तं राया, पउमरहो नाम नामेणं ॥१०६॥
 वणमालानामेणं, गुणगणमालाए निच्चसन्निहिया ।
 तस्सत्थि अग्गमहिंसी, तीए गब्भे समुप्पन्नो ॥१०७॥
 अह देवी तं दियहं, घेतुं लायन्नजलपविट्ठ व्व ।
 सरयम्मि पउमिणी विय, अहिययरं रेहिरा जाया ॥१०८॥

तओ केरिसा य सा जाया ? अवि य-

दाणपरा सत्ताणं, सुपसाया परियणे गुरुविणीया ।
 अणुकूला साहूणं, अणुकंपपरा य जीवाणं ॥१०९॥

तओ एवं च नवण्हं मासाणं अद्धट्टुमाणं च राइंदियाणं पडिपुन्नाणं सुहंसुहेण
 पसूया देवी सोहणतिहिकरणमुहुत्ते सुकुमालपाणि[पायं] दारयं ति । निवेइयं च राइणो
 वद्धावियाए । तओ परितोसवसरोमंचकंचुउव्वहणगाढइए वि समोयारिऊण कडयकंठ-
 नेउराईए आहरणविसेसे पणामिए तीए । तयणंतरं च समाइट्टुं वद्धावणयं । समागओ य
 पुरजणो, हरिसनिब्भरो विलासिणीयणो, णच्चंति विलयाओ, गिज्जंति मंगलाइं,
 दिज्जंति दाणाइं, विखिप्पंति थोरमुत्ताहले, पसाहिज्जंति कडयकुंडनिहाए(?),
 पणामिज्जंति मायंगमंडलीओ महासामंताणं, उवणिज्जंति तुरयवंदुरमालाओ सेवयाणं ।
 अवि य-

उद्दामताललयगीयमणहरं तूरघोसपडिपुन्नं ।
 पहरिसनच्चियविलयं, वद्धावणयं अह य जायं ॥११०॥

एवं च विविहखज्जपेज्जदाणविन्नाणपरियणालावहासतोसनिब्भरस्स राइणो
 अइक्कंतो सो दियहो । एण य कमेणं सेसदिणा वि ताव, जाव समागओ बारसमो
 दिणो । कयं बालगस्स नामं गब्भट्टिएण सिवं जायं तओ सिवकुमारो त्ति । एवं च
 कयनामो पंचधावीपरिवुडो बद्धिउं पयत्तो । अवि य-

जुवईयणलोवणकुमुयसंडनवसरयबालचंदो व्व ।
 संवट्टिउं पयत्तो, कलंकहीणो सह कलाहिं ॥१११॥

तओ एवं च संपत्तो सो थोवदियहेहिं जोव्वणं । केरिसो य जाओ ? अवि य-
वंकत्तणदोसकलंकवज्जिओ जडपसंगपरिहीणो ।

निच्चं चिय कलपुन्नो, अउव्वचंदो व्व निम्माओ ॥११२॥

तओ सो एवं जोव्वणभरं संपत्तो । सह वयंसएहिं अभिरममाणो नियपुरवरे अच्छइ
सुहंसुहेणं ति ।

ताव य सयलसुरासुरकिन्नरगंधव्वजणमणाणंदो ।

पत्तो वसंतसमओ, उग्गिज्जंतो महुरेहिं ॥११३॥

सहयारमंजरीकुसुमरेणुसंचलियसयलदिसियक्का ।

जणमणनयणाणंदा, वसंतलच्छी समोत्थरिया ॥११४॥

तओ किं जायं ?-

नवकुसुमरेणुमयरंदबहलनीसंदबिदुसंदोहे ।

पत्ते वसंतसमए, को न वि मयणग्गिणा कविओ ॥११५॥

तओ एवं च पयत्ते वसंतसमए महुमासकीलणनिमित्तं **चंदकिरणं** नाम उज्जाणं,
तत्थ कीलणनिमित्तं विणिग्गओ बहुओ नायरजणो, कीलिउं च पयत्तो नाणा-
विहकीलाहिं । सो **सिवकुमारो** वयंसयसत्थपरिगओ [गओ] तमुज्जाणं । तत्थ य
अवयत्तयकयलीहरनायवल्लीचंदणलयागुमं(म्मं) तरेसु परिभमिउं पयत्तो, वियरंतो य
संपत्तो अणेयनायवल्लीलयासंछन्नं एक्कं गुम्मवणगहणं । जाव तस्स बहुमज्झपएसे
माहवीलयामंडवपरिगया **कणयकेउणो** राइणो **पियंगुसामाए** महादेवीए धूया **कणयवई**
नाम नियवयंसियवद्रपरिगया कलहंसीण व रायहंसिया, कुमुइणीण व नलिणिया,
वणलयाण व कप्पतरुलया, तारयाण व रोहिणी, मंजरीण व पारियायमंजरी, अच्छराण
व तिलोत्तिमा, जुवईण व मयरद्धयहिययदइया रेहइ ति ।

अवि य- दिट्ठा य जलहरोयरविवरविणिक्खन्तचंदरेह व्व ।

सहितारयमज्झगया, कवोलकिरणाउला सुयणु ॥११६॥

तओ विसेसओ निज्झाउं पयत्तो जाव मिउसण्हकसिणकुडिलेणं केसकलावेणं,
अट्टमीचंदपमाणेणं भालवट्टेणं, दिव्वालंकारविहूसिएहिं पमाणजुत्तेहिं कन्नएहिं, बंधूग-
कुसुमदलसच्छभेणं अहरएणं, समसियमियंककरसमतेयाए दसणकंतीए, रिउउन्नयाए
नासिगाए, मिउकसिणसण्हरोमसंगयाहिं सुरिंदचाववकाहिं च भमुहाहिं, णीलुप्पलदल-

सरिसेहिं पेरंततणुयतंवएहिं कसिणएहिं [नयणेहिं], संपुन्नमियंकसरिसेणं वयण-
कमलेणं, कंबुग्गीवसच्छभाए तिमेहलासंकिए निययचउरंगुलपमाणाए गीवाए, असोय-
पल्लवसरिसेहिं सुपसत्थरेहालंकिएहिं व करेहिं, तिणिसलयासच्छभाहिं सुपइट्टियाहिं
वट्टसुजायकोमलतणुयंताहिं बाहूलयाहिं, आवट्टपीणुन्नयकलहोयकलससमाणेणं निरंतरेणं
पओहरजुयलेणं, वित्थिन्नेणं वच्छत्थलेणं, लायन्नारुहणसोवाणभूयतिवलीसणाहेणं
तणुयमज्जेणं, सण्हमिउकसिणरोमाए जहणपेसियाए व्व पओहरभारं, पवद्धणणि-
वारणगयाए विहूसिया रोमराईए, सयलतेलोककलाइन्नाइसयनिम्माणेणं नाहिमंडलेणं,
वित्थिन्नएणं नियंबएणं, कयलीगब्भसुकुमालेणं निरंतरेणं च उरुजुयलेणं, पसंतसु-
कुमालाहिं अकयकुंकुमरायपिंजराहिं जंघाहिं, जलहरद्धत्थमियदिणयरबिंबसन्निभसणाहेहिं
कुम्मुन्नएहिं चलणेहिं, रत्तुप्पलसन्निहेहिं पायतलेहिं ति । किं बहुणा ?-

अंगोवंगपइट्टियलक्खणपडिपुन्नसुंदरसरीरा ।

अंडो(दो)लाइ व हिययं, दिट्ठा नूणं मुणीणं पि ॥११७॥

तओ चित्तिउं पयत्तो । अवि य-

किं एसा वणलच्छी, किं वा रइ मयणविरहिया होज्जा ।

जुवईनिम्मवणकए, पडिछंदो होज्ज किं विहिणो ॥११८॥

किं देवलोयभट्टा, सावेण इमा तिलोत्तिमा होज्जा ।

किं वा भुयणस्स सिरी, किं वा लच्छी वसंतस्स ॥११९॥

अहवा जा होउ सा होउ । अहं पुण ताव, अवि य-

दंसणमेत्तेणं चिय, विद्धो मयबाणतिक्खसल्लेहिं ।

जाव न वच्चइ जीयं, तावुप्पायं विचिंतेमो ॥१२०॥

ता पुण को एत्थ उवाओ ? अहवा जाणियं । अवि य-

समुहं चिय गंतूणं, उभयकरालिं गियं इमं काउं ।

देहं मयणविदडुं, विज्झमिमो फंससलिलेणं ॥१२१॥

अहवा न एवं । जओ-

नियमित्ताणं पुरओ, इमीए सहियाण पायडं तह य ।

आलिं गणं कुणंतो, कह नाम न लज्जिओ होज्जा ॥१२२॥

ता किं पुण करणीयं ? अहवा जाणियं-

पुरेओ च्चिय वच्चेमो, जइ कह वि इमा पलोयए बाला ।
ता नयणामयसित्तं, मयणविसं निच्चिसं होज्ज ॥१२४॥

अहवा न हि न हि एवं । जओ-

भमुहाचावविणिग्गयलोयणबाणेहिं कह णु परिविद्धं ।
धरिमो इमीए पुरओ, नियदेहं मयणज्जरियं ॥१२५॥

ता किं पुण संपयं मए करणीयं ? अहवा हुं नायं-

घोट्टेमि ताव एयं, नियनयणानालकट्टियं नाउं ।
एत्थेव ठिओ दूरं, ठियं पि जा निच्चुओ जाओ ॥१२६॥

अहवा एयं पि न सुंदरं । जओ-

जह जह निज्झाइज्जइ, तह तह हिययम्मि विसइ मह मुद्धा ।
जह जह पविसइ हियए, तह तह अंगं डहइ णंगो ॥१२७॥

ता किं अन्नत्थ वच्चामि ? तं पि न । जओ-

जा डहइ दंसणे वि हु, अंगोवंगाइ निरवसेसाइं ।
तीएँ विओओ नूणं, सहसा पंचत्तणमुवेइ ॥१२८॥
ता एयं नो सेयं, इमीए नियभावदंसणं कह वि ।
मम उवरिं अणुराओ, किं चावि न विज्जए जेण ॥१२९॥
अणुराओ बालाए, ममोवरिं अत्थि कह व जइ सच्चं ।
ता सच्चमिणं सेयं, विवरीए किमिह सोसेण ॥१३०॥

भणियं च-“अणुरायनेहभरिए, रत्ते रच्चिज्जइ त्ति रमणीयं ।

अन्नहिए उण हिययं, जं दिज्जइ तं जणो हसइ ॥१३१॥ []

जावेत्तियं च इमं चित्तेइ ताव सा सहियणसमेया उज्जाणन्तदंसणमणा महुमासूस-
वहियहियया तं रायसुयं गुविललयासमन्तरियं अपेच्छंती अन्नं पएसंतरं संकंता ।

अवि य- अणुरायअप्पियं गिण्हऊण अह तक्खणं समुच्चमि(लि)या ।

हिययं नज्जइ बाला, पुणरुत्तं गिण्हणरुएण ॥१३२॥

तओ सो तिस्से अदंसणेण सव्वंगोवंगपहारपरद्धो कुसुमकेउणा निययबाणेहिं । न

सा का वि अवत्था संपावइ जीए अच्छिउं तीरइ त्ति । लक्खिओ य इमो सयलो भावो तस्स बीयहिययभूएणं पहाकराभिहाणेणं वयंसएणं । चिंतियं च णेण-अइगरुओ वयंसयस्स उव्वेवओ य तीए अदंसणेणं; ता विणोएण चिद्धावेम्ह । कयाइ तेणेव अन्नं पि किं पि संपज्जिही पियपओयणं वयंसस्स । इइ विचिंतिऊण भणियं(ओ) सिवकुमारो-वयंस ! एत्थ ताव वीणाविणोएणं गमेमो कं पि वेलं ति । तओ तस्सावरोहेण हियहियएणावि पडिवन्नं सिवकुमारेण । तओ निसन्ना सव्वे असोगपायवधवलदलघणसीयलच्छयालंकिए कुट्टिमतलसणाहे सुपसत्थे भूमिभाए, सज्जिया य वीणा, पवत्तो वाइउं । अइकुसलत्तणेण वावडियहियओ न चुक्कए लयाईणं । चिंतियं च पहाकरेणं-अहो कुसलत्तणं कुमारस्स जेणऽन्नगयचित्तो न चुक्कइ ठाणस्स । इओ य तीए वियरमाणाए उज्जाणंतराईं निसुओ अव्वत्तो वीणासद्धो । तओ विसेसओ दिन्नो कन्नो जाव अउव्वो तंतीरवो त्ति । तओ चिंतियं पवत्ता कस्स पुण एरिसो विन्नाणाइसओ भविस्सइ ? हुं , पच्छन्नवेसधारी मयरकेऊ कहिं पि एत्थ कलं अणुसीलंतो चिद्धिस्सइ, जओ न अन्नस्स एवंविहो एत्थ विन्नाणाइसओ त्ति । तओ वीणारवाणुसारेण पयट्टा सहियणसमेया । पत्ता य आसन्नमुद्देसं दिट्ठो य चंदणलयाहरअंतरियाए कुमारो । अवि य-

अंगोवंगपइट्टियलक्खणसुपसत्थसुंदरसरीरो ।

दिट्ठो अणंगमुत्ती, विंधंतो मयणबाणेहिं ॥१३३॥

तओ अणाइयाइक्खणा अवलोयणासुहाणंतरमेव दिट्ठा(विद्धा?) कुसुमकेउणा निययबाणेहिं हियाए । तओ किं जायं ? अवि य-

गाढपहाराणंतरमुच्छवसनीसहा निमीलच्छी ।

झाणगया इव एक्कं ठिया मुगुत्तं तु निच्चेट्ठा ॥१३४॥

तओ कह कह वि अन्नाओ सेसवयंसियाहिं संठविओ तीए अप्पा । तओ मणायं सत्थावत्था चिंतियं पयत्ता । अवि य-

एसो भगवं होज्जा, सिलीमुहो तत्थ आगओ नूणं ।

नं सो रइसंजुत्तो, एसो उण विरहिओ तीए ॥१३५॥

ता होज्ज सुरवरिंदो, नं सो वि सहस्सलोयणो जेण ।
 एयस्स दोन्नि नयणा, लक्खेमो ते वि अन्नमणा ॥१३६॥
 हुं, महुमहणो किं एसो, नं सो वि तमालपत्तसंकासो ।
 एसो वि लच्छिनिलओ, विहडइ कणगप्पओ जेण ॥१३७॥

ता केण पुण होयव्वं इमिणा ? हुं-

पयवइणा भवियव्वं, न हु न हु सो तिव्ववावडो जेण ।
 उप्पायविहडणेहिं, विहडइ सुन्नत्तणेणोसो ॥१३८॥

तओ एवं च नाणाविहवियप्पंतरे वियप्पमाणीए लक्खिओ भावो बीयहिययभूयाए मयणमंजूसाभिहाणाए तीए वयंसियाए; भणियं च-‘ता सहि ! किमेइणा अमाणुसेणं?’ तओ लज्जोणयवयणाए भ(स)णियं मंदपयासं महुररवं च भणियं कणगवईए-‘न एस अमाणुओ, जओ विमले कुट्टिमतले निरन्तरं निसन्नो, मेइणीसंबंधं च गया पउमदलकोमलतला इमस्स चलणा, उम्मेसनिमेसजुते य अच्छवत्ते ।’ एत्थंतरम्मि जंपियं सिवकुमारेण । भणियं च कणगवईए-‘दे ! निहुया चिट्ठम्ह, निसुणेमो एस किं पि समुल्लवइ’ ठियाओ य । जाव मग्गिया चित्तफल-हियावत्तियाओ य कुमारेण । समप्पिया य से पहाकरेण । तओ तेण कहां कहां पि सेउल्लवेविरकरयलेण [आलिहिया?] वसंतलच्छी । तओ पहाकरेण पलोएमाणो य अच्छउं पयत्तो । दिट्ठा य पहाकरेण सा, जाव पुच्छिओ-‘का एस ?’ त्ति । भणियं सिवकुमारेण ‘वसंतलच्छी ।’ तओ पहाकरेण चित्तियं अक्खित्तं हिययं कुमारस्स तीए कुलबालियाए । तओ घेत्तूण पट्टियं लिहिओ सिवकुमारो इमा य गाहुल्लिया पहाकरेण । अवि य-

जुण्हापहावनिव्ववियतिहुयणो सयलजणमणाणंदो ।

अवमन्निज्जइ तह वि हु, नलिणीए पेच्छ कह चंदो ॥१३९॥

दिट्ठं च इमं सिवकुमारेण । वाइया य गाहुल्लिया । जाणियं च जहनाओ अहमणेणं । तओ भणियं-‘वयंस ! को एस तए लिहिओ ?’ ईसि पहसियवयणेण भणियमियरेण-‘वसंतो’ । कुमारेण भणियं-‘ता किं पुण एसा गाहुल्लिया?’ । भणियं इयरेण-‘कुमार ! जहा उ एसा अणुरत्ते वि वसंते कुसुमाडोयदंसणपरा न उण फलबंधं

पयंसइ । अओ एसा गाहुल्लिय'त्ति । तओ **सिवकुमारेण** भणियं-‘वयंस ! जइ एवं ता जहा कुसुमाडोवो सफलो हवइ तहा अभिउत्तेण होयव्वं । नासो हरो य संपयं सयलो तुज्झ एसो’ त्ति । इयरेण भणियं-‘वीसत्थो चिट्ठ अवस्स वसंतस्स लच्छीए दंसणं सफलं करेमि । अहवा देवो चेव एत्थ अभिउत्तो’-‘भवियव्वेसु घडइ नियमेण अन्नदीवगयं पि पाणियं’ । ता एत्थ तुम्हेहि खेओ न कायव्वो त्ति । अन्नं च वच्च तुमं ताव सभवणं । अहं तीए पउत्तिं गवेसामि’त्ति । इमम्मि य भणिए चलिओ कुमारो सह सेसवयंसएहिं । पत्तो य **पहाकरो** लयाहरेसु गवेसिउं तं रायदुहियं । निसुयं च इमं सव्वं **कणगवई-मयणमंजूसाहिं** लयाहरंतरियाहिं । तओ भणियं **कणगवईए**-‘हला मयणमंजूसे ! का पुण धन्ना इमेण कुमारेण लिहिया चित्तफलहियाए ?, अहवा न सा धन्ना जा कमलिनि व्व चंदे इमम्मि न अभिरमेइ’ । भणियमियरीए-‘एवमहं लक्खेमि, जहा तुमं एत्थ महुमासूसवे अभिरममाणा दिट्ठा कहिं पि कुमारेण । ता तुमं चेवेत्थ लिहिय’त्ति । तीए भणियं-‘कओ एत्तियाणि अम्ह भायधेयाणि?, तहावि जाव एयाओ सेसवयंसियाओ महुमासूसवआखित्तमाणसाओ अन्नत्थ चिट्ठंति ताव तुमं गंतूण तीए नलिणीए व्व नियरूयमयणमरट्टियाए विवरीय-इत्थियाए गवेसणत्थवलियं कुमारवयंसयं **पहाकरं** निरूविऊण, तीए धन्नाए कुमारलिहियविलयाए उहं(दं)तं च लहिरूण सिग्घमागच्छसु त्ति । ममं पुण परायत्ता देहजट्ठी, थरहरइ हिययं, वेवन्ति ऊरुयाणि, उक्कंपणपरं नियंबयडं, परायत्ता य गमणया, अहिओ उवरिहुत्तो सीसो । अवि य-

अइ दहइ चंदणरसो, हारो पज्जलइ अनिलउण्हाइ(ए) ।

दीवेइ कामजलणो, धूमाइ कुसुमरउक्केरो ॥१४०॥

ता सव्वहा न समत्था अहं गंतुं, इमं च निसामिऊण पयट्ठा तुरियपयनिक्खेवं **मयणमंजूसिया** । समागया य थोव्वेलाए, पहट्ठवयणपंकया । वयणवियारेण य लक्खियं **कणगवई[ए]** जहा लद्धा तीए धन्नाए जुवईए भविस्सइ पउत्ती इमीए । भणियं च तीए-‘पियवयंसिए ! परिच(च्च)य विसायं, अंगीकरेसु पमोयं, संपत्तं ते समीहियं सव्वं तं तहा, जहा मए भणियमासि’ त्ति । इयरीए भणियं-‘सच्चं सव्वं ?’ तीए भणियं-‘आमं’ । **कणगवईए** भणियं-‘कहं चिय ?’ तीए भणियं-‘गया अहमिओ ठाणाओ, दिट्ठो य सो मए, परियाणिया य अहं तेण तहा ‘तीए

कुमारहिययावहारिणीए एसा वयंसिय' त्ति । तओ समागयवयणेणमाणंदिया अहं तेण । भणिया य-‘सुंदरि ! उवविससु’ त्ति । उवविट्ठा य अहं । पवत्तो आलावसंलावो ताव जाव तेण भणियं-‘कहसु, किं पुण ते निययचलणफंसेण एत्तियं दूरं पवित्तीकया वसुह ?’ त्ति । तओ मए चित्तियं-‘सोहणं जायं, पायसे चेव घयं पलोट्टं’ ति, जमम्ह मणट्टियं इमिणा तं चेव निम्मवियं, ता साहेमि एयस्स निरवसेसं पयोयणं । साहियं च सव्वं दंसणभयणवियाराइ य ताव जाव पियवयंसियाए अहं पेसिया कुमारपउत्तिनिमित्तं तुह सयासे त्ति । अन्नं च कन्नगा एसा दव्वओ, भावओ उण अज्ज ते वयंसओ णयणेहिं परिणीउ त्ति । तओ विहसिरुण भणियं **पभाकरेण**-‘धन्ना सा जीए कुमारे वरो त्ति, किंतु तु(त)ह उज्जमसु जहा दव्वओ परिणेइ’त्ति । साहियं च तेण सव्वं-जहा कुमारेण दिट्ठा तुह वयंसिया, जहा जायअहिलासो, जह इ अहं एत्थट्टिओ पउत्तिनिमित्तं तुह वयंसियाए त्ति । समप्पिया य मम सा तेण चित्तफलहिया, जीए कुमारेण लिहिया सविलया सा विलया । ईइ भणिरुण समप्पिया **मयणमंजूसाए**, **कणगवईए** वत्थब्भंतरं गोविया ‘एसा सा चित्तफलहिय’ त्ति भणिरुण । तओ तं आलेक्खलिहियं कुमारं अप्पाणं च चित्तफलहियाए दट्टूण **कणगवई** लज्जिया इव भीया इव कंपिया इव विलक्खा इव जीविया इव सव्वहा अणाचिक्खणीयं किं पि अवत्थंतरं पाव(वि)य त्ति । तओ हरिसवसुप्फुल्लोयणाए लज्जावणयवयणकमलाए भणियं **कणगवईए**-‘पियसहि ! सोहणं तए उवलक्खियं जहा-कुमारेण दिट्ठा तुमं वसंतूसवे अभिरममाणी तुमं चेव विलिहिय त्ति । पेच्छसु दोण्ह वि अइसोहणो संजोओ । अह वा जत्थ तुमं अभिउत्ता तत्थ सव्वं चेय सोहणं भवइ’ त्ति भणिरुण सयं चेव आइट्टं कडयकमढयकंठाइयं सयलं आहरणमविसेसं **मयणमंजूसाए** त्ति । तओ भणियं **मयणमंजूसाए**-‘पियसहि ! तओ सो मए भणिओ-कहं पुण कुमारे पियसहीए दव्वओ परिणेयव्वो ?’ तेण भणियं-‘‘एयं ताव एत्थ पत्तयालं, कहेह तुमं पियसहीए जहा जाओ तुम्हाणं दोण्ह वि भावओ संजोगो । अभिमया य तुमं कुमारस्स । दव्वओ वुण एस एत्थुवाओ, अच्छउ तुह वयंसिया सयलवावाररहिया सयणीयगया । तुमं पुण ओसरेज्जसु तीए सयासाओ । आवस्सयनिमित्तं च जणणीए समागयाए न तीए दुक्खवियारो कहणीओ । किंतु न किंचि न किंचि बाहइ त्ति भाणियव्वं । तओ तुमं समाहुइज्जसि । पुच्छिया य विवित्तमाइसिय सव्वं साहेज्जसु

त्ति । दंसेज्जसु य तीए इमं पयत्तगोवियं पि चित्तफलहियं । ताहे सा तं पेच्छिय सोहणो अणुराओ संजोयणपरा य भविस्सइ त्ति । ता गच्छ तुमं साहसु नियसहीए इमं सव्वं त्ति । अहं पि गंतूण तुह पियवयंसियाहिलासनिवेयणसलिलेण कुमारं मयणगिगणा डज्जमाणं निव्ववेमि” त्ति भणिरुण सो गओ । अहं पि एत्थ समागया । संपयं तुमं पमाणं’ त्ति । तओ कणगवईए भणियं-‘जइ एवं ता समाइससु सहीओ जहा भवणं वच्चाओ’ त्ति । समाइट्ठाओ य तीए । तओ सहीयणसमेया समागया निययमंदिरम्मि । ‘मम सीसं बाहइ’ त्ति भणिरुण विसज्जियाओ वयंसियाओ कणगवईए । कय च तं सव्वं तहा जहा समाइट्ठं पहाकरेण । इओ य तेण साहियं सव्वं सिवकुमारस्स ताव जाव समप्पिया चित्तफलहिया मया तीए सहीए त्ति । इमो इमो य समाइट्ठो उवाओ दव्वओ परिणयणनिमित्तं त्ति । तओ हसिओ कुमारो, समप्पियं देहच्छित्तं कुमारेण तस्स त्ति । तं च हियए उव्वहमाणो अच्छिउं पयत्तो कुमारो । इओ य जाणियं कणगवईए जणणीए जहा अपडुसरीरावत्था । गया उवरिमतलं, दिट्ठा य तत्थ सयणीयपसुत्ता, पुच्छिया य सरीरपउत्ति, न जंपियमिमीए । तओ परामुसिया करयलेण, न लक्खिओ वियारो । पुणो पुच्छिया य । तओ भणियमवत्तव्वं ‘न किंचि’ । तओ नीइकुसलाए जणणीए गहिओ भावोमाणसं से दुक्खं, इमीए आरुहइ य जोव्वणं, अंगेसु ता कयाइ तज्जणिओ वियारो हविज्ज त्ति । ता किं इमाए खेइपाए, पुच्छामि से बीयहिययं मयणमंजूसं त्ति । तओ समाहूया मयणमंजूसा विवित्तमाइसिय पुच्छिया य-‘हला ! जाणसि, किं वच्छाए बाहइ ?’ त्ति । तीए भणियं-‘न सुट्ठु जाणामि, दिट्ठो य मए उज्जाणकीलणगयाए ईइसो वुत्तंतो, साहिओ य सयलो ताव जाव दंसियं तं चित्तफलहियालिहियं जुवलयं’ त्ति । परितुट्ठा य हियएण । उचिए चेवाणुराओ वच्छाए । अहवा-

माणससरदुल्ललिए, हंसे मोत्तूण सरलगइगमणे ।

जम्मंतरे वि बंधइ, पयम्मि किं हंसिया रायं ॥१४१॥

ता सोहणो से अणुबंधो, संपाडेमि समीहियं इमीए । तओ समासासिया सा, भणिया य-‘वच्छे ! उचिओ सो तुज्ज, ता मा विसायं करेह । अवस्स संपज्जंति मणोरहा वच्छाए’ । एवं भणिरुण गया जणणी । तीए वि य कयमावस्सयं । भणिओ पियंगुसामाए कणगकेऊ राया जहा-कणगवईए वरस्स कालो वट्टइ, ता गवेसह

उचियवरं ति । साहिओ य इमो सयलो वुत्ततो । तओ कणयकेउणा गंतूण महाराइणो
पउमरहस्स गेहं दिन्ना कणगवई सिवकुमारस्स । तओ दुण्ह वि गरुयाणुरायहिययाणं
अवरोप्परदंसणमणुच्छुयाणं निरंतरपीईनिब्भरमाणु(ण)साणं सुपसत्थे तिहि-करण-लग्ग-
मुहुत्ते वित्तं वीवाहमंगलं ति । तप्पभिइं च वीवाहियाओ अन्नाओ वि कुमारेण
महासामंताणं धूयाओ । जाओ य केरिसाओ ? अवि य-

मुहयंदकंतिपसरियपहसियसंपुन्नचंदसोहाओ ।

पम्हलतारसमुज्जललोलविरायंतनयणाओ ॥१४२॥

पीणुन्नयकलपीवरथणकलसविरायमाणवलयाओ ।

वेल्लहलभुयलयाओ, ललणविरायंतमज्झाओ ॥१४३॥

पिहुलनियंबयडट्टियरसणाकलघोसमुहलियदिसाओ ।

करिकरसरिसोरग(सरिसोरूरुग?)नेउररायंतचलणाओ ॥१४४॥ ति

इमार्हि एरिसरूवकलियाहिं सह पियपणइणीहिं गच्छइ विसयसुहमणुभवंतस्स
देवराइणो इव देवलोए सुहंसुहेण वच्चइ कालो ति ।

अह अन्नया कयाई, विहरंतो समणसंघपरियरिओ ।

सायरदत्तायरिओ, समागओ तत्थ नयरीए ॥१४५॥

आवासिओ अ अह सो, उज्जाणे लच्छिनंदणे भयवं ।

मासस्स य पारणए, गोयरचरियं अह पविट्ठो ॥१४६॥

विहरंतो संपत्तो, कामसमिद्धस्स सेट्टिगेहम्मि ।

दिट्ठो य तेण भयवं, दट्ठूण य चित्तियं एवं ॥१४७॥

धम्मो हं जस्स घरे, समागओ एस कह वि विहरंतो ।

भयवं तवसुसियतणू, पारणकए मुणिवरिंदो ॥१४८॥

किं तेण सुबहुएण वि, अत्थेण म्ह व्व किवणपत्तेणं ।

जो न मुणीणं जायइ, उवओगं तवकिलंताणं ॥१४९॥

अत्थावज्जणलुद्धाण जाइ जम्मं पि मूढहिययाणं ।

उप्पज्जइ न कयाइ वि, बुद्धी अम्हाण दाणम्मि ॥१५०॥

दाणं बुद्धी पत्तं, तिन्नि वि एयाइं होंति धन्नाणं ।
ता सकयत्थो अहयं, तिन्नि वि जायाइं एयाइं ॥१५१॥

भणियं च- “एयाइं ताइं चिरचितियाइं तिन्नि वि कमेण पत्ताइं ।
साहूण य आगमणं, संतं च मणप्पसाओ य” ॥१५२॥ []

एवं च चिंतिऊणं, हरिसवसुप्फुल्लरोमनिचएणं ।
पडिलाहिओ महप्पा, विउलेणं भत्तपाणेणं ॥१५३॥
दव्वाइविसुद्धाण य, गाहग-दायाण अह पभावेण ।
पडिया फुरंतरयणा, वसुहारा तस्स गेहम्मि ॥१५४॥
सुरही पवणो मेहेहिं गज्जियं दिव्वकुसुमवरिसणयं ।
गयणंगणम्मि घुट्टं, दाणं दाणं ति देवेहिं ॥१५५॥
अह एयं वुत्तंतं, लोयाओ जाणिउं सिवकुमारो ।
विम्हियहियओ चलिओ, सायरदत्तस्स गुरुमूले ॥१५६॥
गंतूण तस्स मूले, तिउणं च पयाहिणं पकाऊण ।
भत्तिभरनिब्भरंगो, पण(णि)वइओ पायकमलम्मि ॥१५७॥
उवविट्ठो गुरुमूले, गुरुणा वि य सजलजलहरखेण ।
पारद्धा धम्मकहा, कुमारपमुहाण सव्वेसिं ॥१५८॥

“जीवा पंचपयारा, पन्नत्ता जिणवरेहिं सव्वेहिं ।
एगिंदियमाईया, नेया पंचिदिया जाव ॥१५९॥
पुढविजलानलमारुयवणस्सई चेव हुंति एगिंदी ।
पज्जत्तापज्जत्ता बायर-सुहुमाइभेएण ॥१६०॥
किमिकीडगभमराई, कमसो बेइंदियाइणो नेया ।
पज्जत्ताई तिरिया, सव्वे विगलिंदिया एए ॥१६१॥
पंचिदियाण भेया, चउरो इह हुंति जिणसमुद्धिद्धा ।
नारयतिरियनरामराईसु पुण सुणह अह कमसो ॥१६२॥

सत्तपयारा नेया, नेरइया नवर एत्थ नरएसु ।
 रयणपहाइसु कमसो, बहुबहुदुक्खाउरा नवरं ॥१६३॥
 मूसाईया तिरिया, सव्वे वि हवंति तिरियल्लोयम्मि ।
 जलथलखहयरभेया, दीवसमुद्देसु णोगविहा ॥१६४॥
 मणुया वि बहुपयारा, अट्टाइज्जेसु नवर दीवेषु ।
 के वि अवट्ठियआऊ, अन्ने अणवट्ठिणो नेया ॥१६५॥
 देवा वि चउवियप्पा, वंतर तह भवणवासिणो हुंति ।
 जोइसिया वेमाणिय, एत्तो निसुणेह जह कमसो ॥१६६॥
 भूय-पिसाया जक्खा, य रक्खसा किन्नरा य किंपुरिसा ।
 गंधव्वा य महोरग, अट्ट अहो वंतरनिकाया ॥१६७॥
 असुरा नागा विज्जू, सुवन्न अग्गी य वायु-थणिया य ।
 उयही दीव दिसा वि य, दसहा अहो(ज्हो) भवणवासीया ॥१६८॥
 चंदा रविणो य गहा, नक्खत्ता तारया मुणेयव्वा ।
 जोइसिया पंचविहा, नायव्वा तिरियल्लोयम्मि ॥१६९॥
 वेमाणिया य दुविहा, कप्पाईया य कप्पजाया य ।
 दुविहा कप्पाईया, वारसहा कप्पसंभूया ॥१७०॥
 एए पंचपयारा, जीवा अह इंदियाणि आसज्ज ।
 संखेवेणं भणिया, अन्नहुं (ह) उण हुंति णोगविहा” ॥१७१॥

यत उक्तम्-‘द्विविधाः सुरावराख्या’ इत्याद्यार्यात्रयेणेति । एवं गुरुणा भणिए, भणियं पणिवइयउत्तमंगेणं सिवकुमारेणं-‘ भयवं ! जीवा किं नत्थि केवन्ने(?)’ । तओ गुरुणा भणियं-

एएसिं वइरित्ता, इंदिय-नोइंदिएहिं परिमुक्का ।
 सिद्धा हवंति मोक्खे, निच्चं चिय सासया नवरं ॥१७२॥

तओ सिवकुमारेण भणियं-भयवं !

किं जे पंचपयारा भणिया तुम्हेहिं तत्थ ते जंति ? ।
 किं वा ते तत्थेव[य] उववन्नाऽणाइकालेण ? ॥१७३॥

तओ गुरुणा भणियं-

जे ते पंचपयारा, सिद्धा तुह कुमर ! आसि मे पुव्वं ।
ते मणुयगईपत्ता, केविह वच्चंति कयपुन्ना ॥१७४॥

तओ सिवकुमारेण भणियं-अवि य-

कह ते वच्चंति तर्हि, भणियं गुरुणा वि चरण-करणेहिं ।
सिवकुमारेणं भणियं-भयवं ! ता कहसु ताणेवं ॥१७५॥

तओ गुरुणा भणियं-'सुणसु कुमार ! चरणकरणाणि जाइं मोक्खगमणकारणाणि
भणियाणि जयगुरूहिं जिणयंदेहिं'-

“वयसमणधम्मसंजमवेयावच्चं च बंभगुत्तीओ ।
नाणाइतियं तव कोहनिग्गहो इइ चरणभेयं” ॥१७६॥ [सं.प्र./गा.७४०]

“पिंडविसोही समिई, भावण पडिमा य इंदियनिरोहो ।
पडिलेहण गुत्तीओ, अभिग्गहा चेव करणं तु” ॥१७७॥ [सं.प्र./गा.७४१]

एएसिं पुण गाहाणं इमो अवयवभावत्थो । तत्थ ताव 'वयं'-

“पाणाइवायविरमण, मण-वइ-काएहिं पढमवयमेयं ।
इंदिय-बल ऊसासा, आउं च इमे य ते पाणा ॥१७८॥
अलियस्स य जा विरई, मण-वइ-काएहिं अह भवे वीयं ।
अलियं असच्चवयणं, सव्वं चिय सत्तपीडयरं ॥१७९॥
अ[वि]दिन्स्स य विरई, मण-वय-काएहि तइयवयमेयं ।
अ[वि]दिन्म[णु]णुन्ना(ना)यं, तु सामिणा जं भवे दव्वं ॥१८०॥

एवं मेहुणविरई, मण-वइ-काएहिं वयमिह चउत्थं ।
मेहुणबंभच(च्च)रियं, इत्थीउवसेवणं तं तु ॥१८१॥
एवं परिग्गहस्स य, विरई मण-वयण-कायजोएहिं ।
अजोगदव्वच(च्च)रणं, मुच्छओगे य सा एसा ॥१८२॥
वयमिह भन्नइ नियमो, पंचविहं तं पि वणिणयं एत्थ ।
मूलपभेएणेवं, अणेगहा होइ वित्थरओ ॥१८३॥

संपयं 'समणधम्मो'-

खंती गुत्ती (?) य महवज्जव, मुत्ती तवसंजमे तहा ।
 सच्चं सोयं आर्किचणं च बंभं च जइधम्मो ॥१८४॥ [नव./गा.२३]
 पंचासवाणि(ण) विरई, पंचिदियनिग्गहो कसायजओ ।
 दंडतिगस्स य विरई, अह एसो संजमो भणिओ ॥१८५॥ [प्र.सा.गा.५५५]
 पंचासवाण विरई, आसवदाराइं जेहिं आसवइ ।
 कम्मं अट्टपयारं, पाणाईवाय.....माईणि ॥१८६॥
 पंचणहमिंदियाणमिह सहरसरूयगंधफासेसु ।
 विसएसु पवत्ताणं, निरुंभणा निग्गहो भणिओ ॥१८७॥
 कोहस्स य माणस्स य, माया-लोभस्स भेयभिन्नस्स ।
 सम्मं विफलीकरणं, एसो विजओ कसायाणं ॥१८८॥
 मण-वाया-काएहिं, परस्स पीडा उ अह इमे दंडा ।
 एएसिं जमकरणं, विरई एसा उ दंडाणं ॥१८९॥
 जं संजमिओ अप्पा, एएहिं कीरइ सयाकालं ।
 तेणेस संजमो इह, अप्पागुत्तत्तणं सो य ॥१९०॥
 आयरियाईणं जं, कीरइ आहारपाणमाईयं ।
 अक्खूणं अह एयं, वेयावच्चं जिणाभिहियं ॥१९१॥
 बंभस्स य गुत्तीओ, नव हुंति इमाओ ताओ निसुणेह ।
 इत्थिपसुपंडरहिया, वसही पढमा इमा गुत्ती ॥१९२॥
 नेवच्छरूवउल्लावत्थी(त्थि)कहपवज्जणं भवे बीया ।
 थीआसणपरिहरणं, जाव मुहुत्तं भवे तइया ॥१९३॥
 इत्थीथणनयणाइएसु, दिट्ठी न य बंधए अह चउत्थी ।
 पंचमिया कुडुंतरमेहुणसंसत्तपरिहरणं ॥१९४॥
 जं पुव्विं अभिरमियं, इत्थीहिं समं न सुमए छट्ठा ।
 सत्तमिया अइपणियं, विवज्जए जमिह आहारं ॥१९५॥

अइमायाहारविवज्जणा य अह अट्टमा इमा भणिया ।
 नवमा य जं विहूसा, न कीरए निच्चकालं पि ॥१९६॥
 एवं होइ चरित्तं, गुत्तीओ तस्स रक्खणवईओ ।
 भणियाओ अह इमाओ, एत्तो नाणाइयं वोच्छं ॥१९७॥
 नाणं पंचपयारं, पन्नत्तं जिणवरेहिं सव्वेहिं ।
 मइ-सुय-ओही-मणपज्जवं च तह केवलं होइ ॥१९८॥
 उगह ईह अवाओ, य धारणा होइ एत्थ मइनाणं ।
 सुयनाणं अंगाइं, जिणपन्नत्तं मुणेयव्वं ॥१९९॥
 खयउवसमियं भवपच्चयं च अह होइ ओहिनाणं तु ।
 जणमणचिंतियमुणणं, नाणं मणपज्जवं होइ ॥२००॥
 जं सव्वदव्वपरिणामभावविन्नत्तिकारणं परमं ।
 तं सासयं अबाहं, केवलनाणं जिणाभिहियं ॥२०१॥
 नाणं वत्थुअवगमो, दिट्ठीए जहपवत्तदव्वाणं ।
 अवबोहो इह हियए, जायइ केसिं चि वत्थूणं ॥२०२॥
 नाणुवलद्धपयत्थाण होइ वत्था(तत्ता)ण जा रुई परमा ।
 तं दंसणं ति भणियं, सम्मत्तं तस्स पज्जाओ ॥२०३॥
 चारित्तमणुट्ठाणं, विहि-पडिसेहो य तं जिणक्खाओ ।
 पंचपयारं तं पि हु, साहिप्पंतं निसामेह ॥२०४॥
 सामाइछेउवट्ठावणं च परिहारसुद्धियं तइयं ।
 तह सुहुमसंपरायं, अहखायं पंचमं चरणं ॥२०५॥
 होइ तवो वि य दुविहो, बाहिर अब्भितरो जिणक्खाओ ।
 अणसणमाई पढमो, प्रच्छित्ताई भवे बीओ ॥२०६॥

सो य-अणसणमूणोयरिया, वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ ।

कायकिलेसो संलीणया य बज्झो तवो होइ ॥२०७॥

पायच्छित्तं विणओ, वेयावच्चं तहेव सज्झाओ ।
 झाणं उस्सग्गो वि य, अर्ब्भितरओ तवो होइ ॥२०८॥
 संतप्पइ अट्ठविहं, इमेण जं पुव्वसज्जियं कम्मं ।
 तेणेस तवो भन्नइ, भणिओ य इमो सुणसु सेसं ॥२०९॥
 कोहग्गहणं चेत्थ य, जाण कसायाण सूयगं एयं ।
 निग्गहणं पुण तेसिं, विफलीकरणं सयाकालं ॥२१०॥
 कोहो होइ चउद्धा, माणो माया य तह य लोहो य ।
 अणअप्पच्चक्खाणा, पच्चक्खाणो य संजलणो ॥२११॥
 पव्वयपुढवी-रेणू-जलरेहाए समो भवे कोहो ।
 माणो सेल-ट्टिय-कट्ट-वेत्तमयथंभसारिच्छे ॥२१२॥
 मयसिंसमा माया, कीलग-मूलावलेह-खप्पडिया ।
 लोहो किमिरायसमो, कद्दम खंजण-हलिहो य ॥२१३॥
 जावज्जीवं वच्छ-चउमासय-पक्खगामिणो कमसो ।
 नारय-तिरिय-नरामग्गइसाहग्गहेयवो भणिया ॥२१४॥
 चारित्तं इह भन्नइ, विहि-पडिसेहो य जो अणुट्ठाणे ।
 सो गाहाए भणिओ, वयमाईए समासेण ॥२१५॥
 संखेवेणं भणियं, चरणं करणं तु अह निसामेह ।
 पिंडविसोहाईए, गाहाए संज(जं स)मुद्धिडुं ॥२१६॥
 पिंडो इह आहारो, तस्स विसोही उ दोसपरिहरणं ।
 बायावीसं ते वि हु, उग्गम-उप्पायणाईया ॥२१७॥
 इरियाभासेसणया, निक्खेवायाण तह परिट्ठवणा ।
 सम्ममियं अप्पाणं, जं कीरइ तेण समिई उ ॥२१८॥
 जुग्गमेत्तनिमि(हि)यदिट्ठी, पयं पयं जं विसोहिउं ठवइ ।
 साहू इह उवउत्तो, इरियासमिइ त्ति सा भणिया ॥२१९॥

भासासमिई भन्नइ, अणवज्जं कारणे जमिह भणइ ।
 थी-भत्त-राय-जणवयविगहारहिओ य जं साहू ॥२२०॥
 बायालीसं एसण भोयणदोसा य पंच परिहरइ ।
 जं साहू उवउत्तो, एसणसमिय त्ति सा भणिया ॥२२१॥
 मुंचइ वा गिणहइ वा, पडिलेह पमज्जिऊण जं साहू ।
 आयाणभंडमत्तयनिक्खेवणसमित्ति(ति) सा भणिया ॥२२२॥
 उच्चाराई जुज्जइ, पडिलेह पमज्जिउं परिट्ठवइ ।
 उच्चारपासवणखेलसिंघणजल्ल(सिंघजलमल्ल)समिई सा ॥२२३॥
 अधुयत्तमसरणत्तं, एगत्तं तह य होइ अन्नत्तं ।
 असुइत्तं च सरिरे, भावेयव्वो य संसारो ॥२२४॥
 कम्मासवसंवरनिज्जरं च लोगस्स तह य वित्थारो ।
 धम्मस्स य प्पभावो, दुलहत्तं तह य बोहीए ॥२२५॥
 धणधणियबंधुपरियणअवच्चजीयं च जोव्वणं देहं ।
 सव्वं इमं अणिच्चं, तम्हा मा कुणसु पडिबंधं ॥२२६॥
 जम्मजरामरणभवोहवद्दुए वाहिवेयणाघत्थे ।
 नत्थि सरणं जयम्मि वि, मोत्तूणं नवर जिणवयणं ॥२२७॥
 एगो छिंदणभिंदणजम्मणमरणाइं लहइ दुक्खाइं ।
 गइओ य भवावत्ते, तम्हाऽप्पहियम्मि वट्टेज्जा ॥२२८॥
 अन्नो हं सयणाओ, देहाओ विहवपरियणाओ य ।
 एवं विभावयंतो, लंघसि संसारकंतारं ॥२२९॥
 असुई देहुप्पत्ती, असुई देहो वि देहलग्गं च ।
 असुइम्मि अओ देहे, मा पडिबंधं करेज्जासु ॥२३०॥
 संसरमाणो जीवो, मोहंधो भमइ एत्थ संसारे ।
 पावइ किमिकीडत्तं, तम्हा मा रज्जसु इमम्मि ॥२३१॥

रागद्वोसपरत्तो, आसवदारोहिं कम्ममासवइ ।
 जीवो भवकंतारे, तम्हा तं निग्गहं कुणह ॥२३२॥
 सुसमाहियअप्पाणो, आसवदाराइं तह निरुंभेउं ।
 संवरजुत्तो अप्पा, ठावेयव्वो सयाकालं ॥२३३॥
 निज्जरणं कम्माणं, पुव्वुप(प्प)न्नाण संजम-तवेहिं ।
 कायव्वं जइ इच्छसि, विउलाइं सिद्धिसोक्खाइं ॥२३४॥
 उड्डमहतिरियलोए, सव्वत्थ वि अत्थि जम्ममरणाइं ।
 एवं विचिन्तयंतो, भववेरग्गम्मि वट्टेज्जा ॥२३५॥
 एसो जगजीवहिओ, धम्मो जिणयंदभासिओ विमलो ।
 धन्ना जयम्मि सत्ता, भावेज्जा जे इमं पत्ता ॥२३६॥
 भवसायरम्मि अइ दुत्तरम्मि मिच्छत्तमोहपउरम्मि ।
 सायरनट्टो चिंतामणि व्व इह दुल्लहा बोही ॥२३७॥
 भावेइ अणिच्चाई, अप्पाणं वा वि चरण-करणेहिं ।
 ई भावणाउ अहवा वयवइकप्पा उ पणुवीसं ॥२३८॥
 भिक्खुपडिमाउ बारस, साहिप्पंताउ ताउ निसुणेह ।
 मासाई सत्तंता, सत्तेयाओ वियाणाहि ॥२३९॥
 सेसाओ सत्त दिणा, पडिमाओ तिन्नि हुंति अह कमसो ।
 तह होइ अहोराई, पडिमा तह एक्कराईया ॥२४०॥

भणियं च- “मासाई सत्तंता, पढमा बिति [या य] सत्त राइदिणा ।
 अहवा इ एगराई, भिक्खुपडिमाण बारसगं” ॥२४१॥ [सं.प्र./गा.७४२]

पंचणहमिंदियाणमिह सदरसरूवगंधफासेसु ।
 विसएसु पवन्नाणं, निरुंभणा इंदियनिरोहो ॥२४२॥
 पडिलेहणा वि भन्नइ, दिट्ठीए पलोयणं जमुवगरणे ।
 त(द)दूण तत्थ जंतू, पमजणा तस्स अवणयणं ॥२४३॥

मणवययकाएहिं, गुत्तत्तं जमिह हुंति गुत्तीओ ।
 जिणयंदभासियाओ, एयाओ कुमर ! जाणाहि ॥२४४॥
 नाणाविहा य समए, अभिग्गहा जिणवरेहिं पन्नत्ता ।
 भेसज्जवत्थवीसामणाइया साहुविसयम्मि ॥२४५॥
 करणं भन्नइ किरिया, सा भणिया पिंडमाइगाहाए ।
 चरण-करणेण एसो, संखेवत्थो मए भणिओ ॥२४६॥
 एयाइं ताइं दोन्नि वि, कुमार ! भणियाइं चरण करणाइं ।
 मोक्खस्स साहणाइं, कहियाइं तुज्झमेयाइं” ॥२४७॥

तओ एयं च सोऊणं सव्वेहिं सिवकुमारपमुहेहिं भणियं नायरेहिं-‘अहो भयवया साहिया एगिंदियाइणो जीवा, सिद्धा य बहुदुक्खा नरएसु नारया, नाणापयारा कहिया तिरिया, उववि(दि)ट्ठा बहुविहा मणुया, अणेयभेया पयंसिया देवा, सासयसोक्खो मोक्खो तस्स य चरण-करणाणि पसाहणाणि पसाहियाणि’ त्ति । तओ एवं च कहंतरं जाणिरुण भणियं सिवकुमारेण-‘भयवं ! चिरकालविउत्तसहोयरं पिव दट्टूण तुमं पवड्डंतनेहामएण सिंचमाणं पिव मज्झ हिययं अउव्वं सुहमणुहवइ त्ति, अवियण्हो य तुम्ह दंसणस्स । ता कहसु किं पुण एत्थ कारणं ?’ तओ भयवया ओहिनाणेण आभोइऊण भणियं-‘कुमार ! अत्थि एत्थ कारणं । जओ, इओ य तइयभवे जंबुद्दीवे भारहे वासे मगहाजणवए सुगामे गामे तुमं मे भाया कणिट्ठो आसि पाणेहिं पि पिय[य]रो । सव्वं च सिट्ठं जहा पव्वाविओ ताव जाव देवलोयाओ चविऊण एत्थ दो वि उववन्ना । ता कुमार ! एएण कारणेण तुज्झ ममोवरि पीई, मम उण वीयरगाए(गयाए) न तह’ त्ति । इमं च निसामिरुण सिवकुमारस्स जायं जाईसरणं, आहोइओ पुव्वभवो, भणियं च णेण-‘भयवं ! जहा तुब्भे आणवेह तहा इमं सव्वं न अन्नहा । अ(आ)होइयं मए जाइसरणेणं’ त्ति । अन्नं च-

केवलपईवपयडिव(य)परमत्थासेसभुयणभावानं ।

रोयइ जिणाण वयणं, मज्झं जगजीवबंधूणं ॥२४८॥

ता भयवं !-नारयतिरियनरामरभवसयपरिभमणखेयखिन्नो हं ।

अम्मापियरं आपुच्छिरुण गिण्हामि पव्वज्जं ॥२४९॥

तओ भणियं चोद्दसपुव्विणा सायरदत्तगुरुणा-‘अविग्घं देवाणुप्पिया मा पडिबंघं कुणसु’ त्ति । तओ वंदिऊण गुरुं पविट्ठो नयरिं सिवकुमारो । भणिया य तेण जणणिज्जणया जहा-‘निसामिओ मए अज्ज वड्ढरदत्तचक्कवट्टिणो पुत्तस्स सायरदत्त-गुरुसमीवे जिणयंदपहासिओ धम्मोवएसो । विरत्तो य विडंबणामेत्तसाराणं किंपाग-फलोवमाणं मुहरसियकडुयविवायाणं संसारदुक्खकारयाणं विसयाणं ति । ता विसज्जेह ममं जेण सायरदत्तगुरुसमीवे संसारभयपणासणं गिण्हामि पव्वज्जारयणं’ ति । तओ न विसज्जिओ तेहिं, निरुद्धो य तस्स परिभमणपसरो । सो वि परिचत्तसयवावारे सव्वसावज्जजोगविरओ अभिसंधिऊण मणसा-अहं सायरदत्तगुरुणो सीसो ठिओ मूणव्वएणं, परिचत्तं च सव्वं आवस्सयाइयं करणीयं ति । तओ आयत्ताणि जणणि-जणयाणि, सद्दाविओ य पउमरहराइणा दढधम्मो नाम सावगो इब्भपुत्तो तन्नयर-निवासी । भणिओ य राइणा-‘वच्छ ! पव्वज्जागहणनिरुद्धेणं सिवकुमारेणं मोणं पडिवन्नं, परिचत्ता सव्वे आवस्सयाइया वावारा, बहुसो वि भणिओ न कुणइ आहारगहणं, ता तहा वच्छ ! कुणसु जहा सो परिभुंजइ, जइ परं सावगस्स तुह वयणं न लंघइ’ त्ति । तओ भणियं तेण दढधम्माभिहाणेण सावगेण-‘एवं करेमि सव्वं तस्स पयत्तं’ ति भणिऊण गओ सिवकुमारस्स समीवं । पविट्ठो य निसीहियं काऊणं, पडिक्कंतो य इरियावहियं पमज्जिऊण ‘अणुजाणेह’त्ति भणिउं कयकिइकम्मो अणुजाण (?) सिवकुमारस्स चलणंतिए । तओ इमं दट्टूण सिवकुमारेण भणियं-‘कुमार ! न विरुज्झइ, जओ तुमं सव्वसावज्जजोगविरओ जइकिरियाए वट्टमाणो दीससि, अओ एस मए पउंजिओ, अहं च सावगो, अओ पउंजियव्वो एस सावगेहिं’ । कुमारेण भणियं-‘ता कहसु किं निमित्तं तुमं समागओ ?’ तेण भणियं-‘कुमार ! किं पुण तुमं आहारं पि भोत्तुं नेच्छसि ?’ कुमारेण भणियं-‘सुणसु, सोहणं तए पुच्छियं । जओ न विसज्जंति ममं अम्मापियरो । पव्वज्जाकएण मया वि परिचत्तो जावज्जीवं पि घरनिवासो, पडिवन्ना य भावओ पव्वज्जा । एवं च ठिए कहमेत्थं भुंजामि ?’ त्ति । भणियं च दढधम्मेण सोहणं कयं तए जं भावओ पडिवन्ना पव्वज्जा । किंतु न जुत्तं इमं निराहारत्तणं । जओ-

“आहारो तणुमूलं, तणू वि धम्मस्स होइ तह मूलं ।

धम्मो मोक्खसुहस्स य, मूलं भणिओ जिणिंदेहिं” ॥२५०॥ []

“आहारविरहियस्स य, होइ सरीरस्स नूण परिवडणं ।

अणवज्जो आहारो, न निसिद्धो जिणवरिदिहिं” ॥२५१॥ []

जओ सो कप्पइ जईणं पि । ता तुमं पि एत्थ ठिओ चेव अणवज्जाहारेण सरीर-
संधारणामेत्तं परिभुंजमाणो रागदोसविरहिओ अविराहओ चेव जिणाणणाए, नेव्वाण-
फलसाहगो य । ता कुणसु एयं’ ति । कुमारेण भणियं-‘कुओ मम एयं
फासुयमेसणिज्जं संपज्जइ इह द्वियस्स ?’ भणियं च तेण-‘कुमार ! मा विसायं वच्च,
अहं साहुकिरियाकुसलो अज्जप्पभिई तुमं(म्हं) साहुभूयाणं सीसो अणवज्जेणं
भत्तपाणेणं सव्वं जहाजोगं पयत्तं करिस्सं, ता पडिवज्जसु इमं आहारगहणं’ ति ।
कुमारेण भणियं-‘सोम ! तुमं तावेत्थ कप्पाकप्पविहिकुसलो, जाणसि जहद्वियं सव्वं;
ता जइ मया अवस्स भोत्तव्वं ता छट्ठभत्तस्स आयंबिलेण पारणगं एसो मम जावज्जीवं
पि अभिग्गहविसेसो’ । पडिवन्नं च इमं दढधम्मणेण, निवेइयं च राइणो जहापडिवन्नं
कुमारेण भोयणं । तओ हरिसिओ राया, कयं महाविभूईए वद्धावणयं कुमारस्स य
उग्गतवनिरयस्स पइन्नामंदिरमहासिहरसमारूढस्स जहापडिवन्नविहीए पारणयं कुणंतस्स
जिणवयणं भावेमाणस्स जीवाजीवासवसंवराइणो पयत्थे दढधम्मोवएसिए पइदिणं
निसामेमाणस्स अंतेउरमज्झगयस्स । तओ सो निययजायाहिं उवलोहिऊण पारद्धो
विसयनिमित्तं । केरिसाहिं य ताहिं-

अवि य- सविलासहसियजंपियविब्भममयचित्तजणियतोसाहिं ।

उन्नयपीणनिरंतरथणहरगुरुभारसुढियाहिं ॥२५२॥

कप्पूरपउरकुंकुमकुरंगमयवहलरंजियतणूहिं ।

वेल्लहलसरलकोमलकनयप्पहदेहलइयाहिं ॥२५३॥

घोलन्तकन्नकुंडलरयणपहापडय(ल)रंजियदिसाहिं ।

रसणाकलावनेउरकलरववरहंसिगमणाहिं ॥२५४॥

अणवरयविसज्जियघोलमाणसकडक्खनयणबाणाहिं ।

बहुसो वि पासपरिसंठियाहिं न वि खोहिओ ताहिं ॥२५५॥

इय सो लडहविलासिणिनिब्भरराएण लोहविज्जंतो ।

बारसवासाइं ठिओ, ग[य]णं व मलेण न विल(लि)त्तो ॥२५६॥

भणियं च- “सा सामग्गी कत्थ व, कर्हि पिता होइ कस्स व नरस्स ।
दुव्विसहमयणसरपहरधोरणी जा पडिक्खलइ” ॥२५७॥ []
भीओ संसाराओ, अप्परिवडिओ य तस्स ठाणस्स ।
धम्मम्मि निच्छियमई, समतणमणिकंचणो सययं ॥२५८॥
भावेतो जिणवयणं, अणुगुणमाणो य भावणाजालं ।
इच्छंतो सिद्धिसुहं, काऊण य अणसणं धीरो ॥२५९॥
देहं चइऊण तओ, मुहुत्तमेत्तेण सो महासत्तो ।
इंदसमो उववन्नो, कप्पे अह बंभलोयम्मि ॥२६०॥
कप्पतरुसुरहिमंदारकुसुमपरिमलसुगंधपल्लंके ।
उववज्जिउं विउद्धो, उवविट्ठो ता इमं सुणइ ॥२६१॥
वीणामउंदमद्वलवप्पीसयवेणुसद्वसंवलयं ।
देवविलासिणिसहरिसकलमंगलसद्वहलबोलं ॥२६२॥
तओ सो दससागरोवमाउओ सुरवरो चित्तुं पयत्तो । कह ?
किं एसो सुरलोओ, किं वा सुमिणंतरं इमं होज्जा ? ।
किं वा वि इंदयालं, किं वा अच्चब्भुयं किं पि ॥२६३॥
ताव सहस त्ति जायं, वित्थिन्नं तस्स ओहिवरणाणं ।
नायं च तेण सव्वं, जह उववन्नो तवं काउं ॥२६४॥
तो पणमिओ जिणाणं, भणिओ य सुरेहिं हिट्ठवयणेहिं ।
देव ! निसामसु वयणं, साहिप्पंतं तुमं ताव ॥२६५॥
तं विज्जुमालिनामो, उववन्नो इह पहाकरविमाणे ।
एयाओ देवीओ, चत्तारि वि तुज्झ जायाओ ॥२६६॥
अह सहिओ देवीहिं, मज्जणवावीए सो समोइन्नो ।
मज्जेऊण जहिच्छं, उवागओ चेइयहरम्मि ॥२६७॥
वंदेउं तत्थ जिणे, सासयरूवे पियाहि सहिएण ।
रयणमयपीढठइयं, पवाइओ पोत्थयं ताहे ॥२६८॥

काऊण एवमाई, सव्वं जं चेव तत्थे करणीयं ।
 उवभुंजिउमाढत्तो, भोए सो तत्थ पंचविहे ॥२६९॥
 केरिसाहिं य सह दइयाहिं ?, अवि य-
 पीणुन्नयचक्कलथणहरगुरुभारकि(क्कि)लंतमज्झाहिं ।
 ससहरमऊहसन्निभदसणविरायंतजुणहाहिं ॥२७०॥
 दीहरपम्हलनिम्मलधवलविरायंतनयणजुयलाहिं ।
 अइसुरहिपवरनीसासपरिमलुग्गारवयणाहिं ॥२७१॥
 पिहुलनियंबयडट्टियरसणावरपुन्नदसदिसिमुहाहिं ।
 गंभीरनाहिकुंडलतिवलि विरायंतमज्झाहिं ॥२७२॥
 इय एरिसमणहरकामिणीहिं वड्डन्तगरुयरायाहिं ।
 सह भुंजंतो भोए, गयं पि कालं न याणाइ ॥२७३॥
 एएण कमेण तओ, कमेण पत्ताइं दस वि अयराइं ।
 तेणेस अहियतेओ, **सेणिय !** इंदस्समो जेण ॥२७४॥
 तो नरवरिंद **सेणिय !**, एसो चविऊण सत्तमदिणम्मि ।
 उसहदत्तस्स होही, धारणिजायाए वरपुत्तो ॥२७५॥
 एसो चरमसरीरो, तवबलसम्मत्तगुणसयाइन्नो ।
 उप्पन्नकेवलवरो, सिद्धिपुरिं पाविही अमलो ॥२७६॥
 अवसप्पिणीइमाए, भरहे वासम्मि केवली चरिमो ।
 एसो होही **सेणिय !**, तेणेणं छिज्जिही नाणं ॥२७७॥
 जंबुद्दीवाहिवई, सोऊण इमं **अणाढिओ** जक्खो ।
 कयबाहुगरुयसद्धो, अहुट्टिओ सुरवरो सहसा ॥२७८॥
 काऊण तत्थ तिवालं, अहो कुलं मज्झ उत्तमं भणिउं ।
 पयपहरकंपियधरो, सहसा नट्टं समाढत्तो ॥२७९॥
 तओ सो केरिसो दीसिउं पयत्तो नच्चमाणो ?, अवि य-
 घोलन्तकन्नकुंडलमरगयमणिकिरणमासलकवोलो ।
 रहसवसभारविगलियमुत्ताहलदिन्नखी(नरवि)पयरो ॥२८०॥

वच्छत्थलपिहुलविरायमाणवरहारधवलियदिसोहो ।
 पहरिसवसवियसियरुइरमाणदिप्पंतमुहकमलो ॥२८१॥
 अच्चंतरुइरअंगयमणिकिरणाबद्धगयणसुरचावो ।
 ईसिवियसन्तउट्टउडदसणजुइपयडियमयूहो ॥२८२॥
 इय नच्चिउं पयत्तो, तह जह देवा वि विम्हयं नीया ।
 जिणवद्धमाणपुरओ, सहरिसउब्भिन्नरोमंचो ॥२८३॥
 किंकरदेवेहि तओ, पारद्धं वाइउं महातूरं ।
 सयलदिसिपूरियरवं, सुरलोयाउज्जमहघोसं ॥२८४॥

काणि पुण तत्थ आतोज्जाणि पवायाइं ?, अवि य-

भंभामउंदमदलझल्लरिवरपवणसंखजयघंटा ।
 कंसालभेरिकाहलडक्कावप्पीसवंसा य ॥२८५॥
 कंसियकरडहुडुक्का, तिलिमा वीणा य मुखददुरडा ।
 दुंदुहिमाई सव्वे, पवाइया देवआउज्जा ॥२८६॥
 एवं च नच्चमाणं, पुणो पुणो नियकुलं पसंसंतं ।
 दट्टूण सुरं नरनाहसेणिओ पुच्छइ जिणिंदं ॥२८७॥
 भयवं ! किमेस जक्खो, नच्चइ नियकुलपसंसणं काउं ।
 भणियं च जिणिंदेणं, सेणिय ! एत्थेव आसि पुरे ॥२८८॥
 गुत्तमइनाम मित्तो(इब्भो?), तस्स सुया उसभदत्त-जिणयत्ता ।
 जिणयत्तो अइवसणी, सेट्ठो उण उसहदत्तो त्ति ॥२८९॥
 पउरजणस्स य पउरं, जिणयत्तो बाहिरो कओ तेण ।
 जूयाईसु पसत्तो, अह अच्छइ जूयटिंटाए ॥२९०॥
 अह अन्नया कयाई, जूएणं कह वि सो रमेमाणो ।
 आयविसंवायम्मी, पहओ मम्मम्मि अन्नेण ॥२९१॥
 अह भणिओ सयणेणं, पडिवज्जसु उसहदत्त ता एयं ।
 दारुणवसणावडियं, जसभाई जेण तं होसि ॥२९२॥

भणियं च- “वसणविओओ इयरो वि उज्झिउं नेय तीरइ भडाण ।

किं पुण सहोयरो वच्छलो य जेद्धो पियातुल्लो” ॥२९३॥ []

अन्नेहिं वि भणियं-

“सुयणस्स विहलियस्स वि, पुणो वि सुयणेण हो[इ] उद्धरणं ।

पंकपु(प)डियं गइंदं, को कड्डइ वरगयं मोत्तुं” ॥२९४॥ []

तेण य गंतूणं सो, भणिओ वच्चमह तं घरं तेण ।

अलमेयावत्थस्स य, घरगमणे तेण पडिभणियं ॥२९५॥

अन्नं च- आसन्नीभूयं चिय, मम मरणं नत्थि एत्थ संदेहो ।

परभवपच्छयणणं, ता परमो बंधवो होही ॥२९६॥

नाउं जहा न जीवइ, दिन्नं अह तस्स अणसणं तेण ।

मरिऊण एस जाओ, जंबूदीवाहिवो जक्खो ॥२९७॥

मम भाउणो य एसो, पुत्तो किर चरिमकेवली होही ।

एएण कारणेणं, पणच्चिओ एस जक्खवरो ॥२९८॥

भणियं च सेणिएणं, भयवं ! एयस्स सो पुणो भाया ।

सायरदत्तायरिओ, कत्थुववन्नो तवं काउं ॥२९९॥

अह भगवया वि भणियं, उप्पाडेऊण केवलं नाणं ।

पडिबोहियभव्वजणो, सिद्धिपुरिं सो गओ अमलो ॥३००॥

एयम्मि अवसरम्मी, सव्वे वि समुट्टिया जिणं नमिउं ।

भयवं पि तिहुयणगुरू, जिणयंदो विहरिओ वसुहं ॥३०१॥

अह ताओ देवीओ, चत्तारि वि विज्जुमालिपत्तीओ ।

नमिऊण चलणकमलं, पसन्नचंदस्स पुच्छंति ॥३०२॥

इह जम्मविउत्तीणं, भयवं ! ऽमहं विज्जुमालिदेवेण ।

सह संबंधो होही, किं वा वि न अन्नजम्मम्मि ॥३०३॥

केवलिणा वि य भणियं, तुम्हे चविऊण देवलोगाओ ।

एत्थेव य नयरम्मी, होहिह अह वणियधूयाओ ॥३०४॥

तत्थ य इमस्स तुम्हे, जायाओ वरजसस्स होऊण ।
 पडिबोहियाउ तेण य, पव्वइउं तह तवं काउं ॥३०५॥
 होहिहह सुरवरिंदा गेवेज्जेसुं पुणो वि सव्वाओ ।
 एवं केवलिकहिए, नमिऊण गयाउ नियठाणं ॥३०६॥
 हवंति जे जत्थ दढव्वया नरा, गुणा वि पालिंति दमे रया पुणो ।
 खवंति ते कम्मरयं सुचिक्कणं, हवंति देवाण महिड्डिया सुरा ॥३०७॥
 इय जंबुणामचरिए, पयरूवयगाहविरइए विमले ।
 उद्देशो पंचमओ, होइ समत्तो सुणसु सेसं ॥३०८॥



॥ छट्ठो उद्देसओ ॥

जम्मो वि होइ केसिं, तिहुयणनेव्ववणकारणसमत्थो ।
उइयंमि चंदबिंबे, भण कस्स न होइ आणंदो ॥१॥

अविरयपवत्तपेच्छणयसोहियं देवलोयसारिच्छं ।
निच्चछणपमुइयजणं, रायगिहं अत्थि वरनयरं ॥२॥

जत्थ सरूवो सरलो विन्नाणकलावियक्खणो वसइ ।
महिलायणो विणीओ सुरसुंदरितुलियमाहप्पो ॥३॥

जत्थ परदारविमुहो परछिद्दपलोयणंमि जच्चंधो ।
परधणगहणविरत्तो गुणन्नुओ वसइ पुरिसगणो ॥४॥

अवि य- निन्नेहो जइ खलो जि तहिं जासु नेहु पीलेवि फेडिउ ।
खारत्तणु जइ लूणि पर तं पि तत्थु आयरहो आणिउं ॥५॥
कइइल्लु जइ पउमनालु तं पि जेण जलमज्झि वड्डिउ ।
लंछणु जइ पर चंदि तहिं सो वि निच्चु जइ तेयझिज्जिउ ॥६॥

अवि य- डहणसीलु जइ तत्थ पर जलणु पवसणपरु जइ पर पवणु ।
भसइ जइ एक्क सुणहो करकरइ जइ कह व वायसु ॥७॥

अवि य- एक्को च्चिय नवर तहिं दोसो नयरंमि गुणसमिद्धंमि ।
जं विहलिओ न दीसइ, उवयरियइ जस्स सुयणेहिं ॥८॥

खग्गगपहररिवुहत्थिमत्थउच्छलियबहलरुहिरोहो ।
जिणवयणभावियमई नरनाहो सेणिओ तत्थ ॥९॥

नरनाहस्स बहुमओ दीणाणाहाण वच्छली णिच्चं ।
 जिणवयणामयकुसलो तत्थत्थिब्भो **उसहदत्तो** ॥१०॥
 णिम्मलसीलाहरणा जिणवरवर(व?)यणकन्नलंकरणा ।
 रूयगुणनिज्जियरई, दइया अह **धारिणी** तस्स ॥११॥

सा य विउत्ता इत्थीसहावत्तणेण य अवच्चत्थं परिङ्गिज्जिउं पयत्ता । तओ **उसहदत्तो** नायपरमत्थो तीए विणोयणत्थं **वेभारगिरिवरे** जिणभवणचेइयवंदणेणं रंमुज्जाणकिला-विणोएण य महया विभूईए पवरजाणवाहणसमारूढो पइदिणं गच्छमाणो तं विणोएइ । अन्नया य **वेभारगिरिवरउज्जाणसमीवे** दिट्ठो **उसहदत्त-धारिणीहिं जसमित्तो** नाम सावगो, पुच्छियो य-‘कहिं तुमं पत्थिओ ? ।’ तेण भणियं-‘इहेव उज्जाणे भगवओ **महावीरवद्धमाणसामिणो** जिणवरस्स पंचमसीसो भगवं **सुहंमसामी** गणहरो समो-सरिओ । ता तस्स वंदणणिमित्तं पत्थिओ’त्ति । इमं च निसामिऊण **उसहदत्तो** वि सह **धारिणीए** चलिओ **सुहंमसामिणो** वंदणणिमित्तं । गंतूण य वंदिओ भगवं सव्वेहिं । भगवया वि पारद्धा अहिंसाइया धंमएसणा । तस्स विरामे पुच्छिओ भगवं **जसमित्त-**सावगेणं-‘भगवं जीसे **जंबूए** नामेण इमं **जंबुद्दीवं** पसिद्धं तीसे किं परिणामरूवं सरूवं ?’ भगवया वि सवित्थरं साहियं जहा, **जंबुद्दीववन्नत्तिए** । एत्थंतरंमि पुत्तजंमाहिकंखिणीए पुच्छियं **धारिणीए**-‘भगवं ! किं मम पुत्तो होही नव’ त्ति ? इमं च निसामिऊण सिद्धपुत्तेण भणियं **जसमित्तसावगेण**-‘अहो **धारिणि**साविगे ! सावज्जं जाणंता वि न साहंति साहुणो । ता अहं तुम्हाणं जिणोवएसेण साहेमो । जहा य तुमे पुच्छियं तहा अवस्सं ते पुत्तो भविस्सइ । जओ अरिहंत-सिद्ध-आयरिय-उवज्जाय-साहु-चक्कवट्टि-बलदेव-वासुदेवनामुक्कित्तणाणंतरं, तहा जंबु- महासमुद्द-पव्वय-जिणभवणादिपसत्थनामाणंतरं च जा कीरइ पसत्था पण्हा, तीए अत्थि संपत्ती । ता साहूणं पुरओ **जंबुदुमनामवन्नणनामगहणाणंतरं** च पसत्थसउणेहि य तए पुच्छियं तहा अवस्सं भविस्सइ ते पुत्तो । अन्नं च-एस ते पच्चओ, जंबूफलाइ तुम(मं) सुमिणंतरे दट्टूण विउज्जिहिसि’ । एयं च निसामिऊण भणियं **धारिणीए**-‘भयवं ! जइ इमं एवं, ता अहं **जंबूदेवयाए** नामेण अट्टुत्तरसयं अंबिलाणं काहामि । तहा सव्वरयणकंचणमयं **जंबुदुमं** जिणहरं जिणपडिमाओ य कराविस्सं । तओ वंदिऊण भगवंतं पविट्ठाणि नयरं । एवं च हरिसनिब्भराए **धारिणीए** पुत्तजंमसूयगसुमिणदंसणमणाए य गच्छइ कालो’ ।

अवि य- सा अन्नया कयाई पच्छिमजामंमि पेच्छए सुमिणे ।

सीहं सरं समुहं दामं जलणं च जंबुफले ॥१२॥

इमे य दट्टूण पाहाइयतूरजयजयासदेण विउद्धा 'नमो जिणाणं' ति भणिउं विणएण निवेइए उसहदत्तस्स सुमिणे । तेण भणियं-

अवि य- धवलच्छि ! तुज्झ होही एसो सो कित्तिनिम्मलो पुत्तो ।

जो जसमित्तेण पुरा सुमिणयसंसूइओ सिद्धो ॥१३॥

इमंमि य भणिए हरिसवसफुल्ललयणाए पडिवन्नं तीए जहा- 'तुमं आणवेसि तह नत्थि संदेहो' ति । तओ-

अवि य- चविऊण सो वि देवो कप्पाओ चेव बंभलोगाओ ।

तंमि दिणे उववन्नो तीए कुच्छीए कयपुन्नो ॥१४॥

तओ तं च दियहं घेतूण पवड्डिउं पवत्तो तीए गब्भो । जाओ य डोहलो जिणसाहुपूयासंपायणपरो । विहवाओ(पु?)रूयं च पूरिओ । तओ संपत्तडोहला नवणं मासाणं अद्धट्टुमाणं च राइंदियाणं [वइक्कंताणं] सुहंसुहेण सुकुमालपाणिपायं उत्तत्तकणयप्पहं सयललक्खणालंकियं सरयसमयपडिबुद्धनीलुप्पलदललयणजुयलं जंबुद्दीवाहिवइअणाढियजकखकयसंनिज्झा पसूया उज्जोइयवासभ[व]णोयरं दिणय-रसमप्पहं दारयं ति ।

निवेइयं च वद्धावगचेडियाए उसहदत्तस्स । तेण य विदिन्नं तीए पारिओसियं महादाणं कयं च वद्धावणयं । समागओ नयरजणवओ । कयाओ य आययणे सुमणभरविसेसपूयाओ । पयत्ताइं च पइभवणेसु वज्जंतेणं परमपमोयतूरेणं, निज्जंतेणं जंममंगलगीएणं, नच्चंतीहिं तरुणरामाहिं, पेच्छंतीहिं सहरिसं वुड्ढाहिं, वट्टमाण-हल्लुफलायाइं, समागच्छंति अच्चु(?)हारविच्छड्डाइं महापमोयपिसुणयाइं वद्धावणयाइं ति । इमेणं य कमेण समागओ बारसमो दिणो । तओ जंबुद्दीवाहिवइकयसंनिज्जत्तेण जंबुफलसुमिणसंदंसणेण य कयं दारगस्स णामं जंबुणामो ति । पंचधाईपरियरिओ य सुहंसुहेण वड्डिउं पयत्तो ।

अवि य- जह जह वित्थरइ तणू तह तह पुन्नो कलाकलावेण ।

सियपक्खंते व ससी संपुन्नो सव्वहा जाओ ॥१५॥

तओ एवं च विसिद्धं पुन्नफलमणुभवंतो पुव्वभवसुकयवासणागुणेण बालभावे वि
 अबालभावचरिओ सयलसत्थकलासंपत्तिसुंदरं कुमारभावं अणुभवंतो, पुव्वभवब्भासेण
 य अणुरतो सत्थेसु, बहुमन्नइ य गुणसमिद्धे, पुलइज्जए सुहासिएसु, न बहुमन्नइ
 विसयासत्ते, भावेइ संसारसहावं, वड्डए सद्धाए निययसहावेण य, करुणापहाणहियओ
 पियजंपिरो य, ईसिविहसियपुव्वप्पहासणसीलो, सुसाहुजणसेवानिरओ, महापयाण-
 पूरियपणइयणहिययपरितोसो य । तओ सो मित्तबंधुपरिगओ नाणाविहकीलाहिं
 अभिरममाणो अच्छइ । एवं कयाइ, वीणावेणुमणहरगीयायन्नणेण, कयाइ नाणा-
 विहदुमलयाकिण्णपवरउववणविहारेण, कयाइ तित्थयर-सिद्ध-साहु-चक्कवट्टि-
 बलदेव-वासुदेव-चरियायन्नणेण, कयाइ भवणवाविमज्जणकीलाविणोएण, कयाइ
 सुसाहुपूयोवयारकरणेणं । किं बहुणा मगहपुरसयलकामिणीयणकुवलदलसामलाहिं
 नयणमालंजलीहिं अणुपिज्जमाणो, अवहरंतो य मणहररामायणमणाइं, वियरंतो य
 रायगिहपुरवरे गमेइ कालं ति । वरियाओ य जणणिजणएहिं तस्स अट्ट इब्भ-
 दुहियाओ । तओ एयंसि अवसरे किं जायं ? अवि य-

कोहग्गिसमणमेहो माणवराचलपभेयअसणी य ।

मायामोत्थवराहो लोहग्गहसिद्धवरमंतो ॥१६॥

निज्जियसयलसुरासुरमयरद्धयमाणमूरणपयंडो ।

भव्वकुमुयाण चंदो मोहतमविणासणेक्करवी ॥१७॥

सिद्धिवहुनेहनिब्भरसुसाहुगणनिच्चनमियपयकमलो ।

संपत्तो रायगिहं सुहंमसामी गणहरिंदो ॥१८॥

रायगिहतिलयभूए गुणसिलए चेइए समोसरिओ ।

नीहरिओ नयरजणो वंदणभत्तीए अह गुरुणो ॥१९॥

नवजलहरगंभीरस्सरेण अह वियसिओ सिंहंडि व्व ।

गुरुणो आगमणेणं जंबुकुमारो नियमणेणं ॥२०॥

पवररहसमारूढो नीहरिओ पुरवराओ अह कुमरो ।

दूराओ मुक्करहो गुरुणो आसन्नमल्लीणो ॥२१॥

काउं पयाहिणं तो नमिऊणं पायपंकयं सिरसा ।
उवविट्ठो गुरुपुरओ वंदेउं सेससाहू य ॥२२॥

अह भगवया वि [तइया] जलहरगंभीरमहुरसद्देण ।
भणियं भो भव्वजणा ! मोक्खं पइ उज्जमेयव्वं ॥२३॥

भणियं च- “सइ सासयंमि थामे तस्सोवाए य [प]वरमुणिभणिए ।
एगंतसाहए सुवुरिसाण जत्तो तहिं जुत्तो” ॥२४॥ []

तओ जंबुणामेण भणियं-‘भयवं किं पुण तं सासयं थामं, को वा तस्सो-
वाओ’त्ति । तओ गुरुणा भणियं, सोम ! निसुण-

“अ[ङ]विहकम्ममुक्का गंतुं चिद्धंति पाणिणो जत्थ ।
लोयस्स तिलयभूयं सासयठाणं तमुद्धिद्धं ॥२५॥

तस्सोवाओ संमत्तचरणतहनाणलक्खणो भणिओ ।
अप्पडिवाइ य ववत्थिओ य गिहि-साहुधम्मोहिं ॥२६॥

पंच य अणुव्वयाइं गुणव्वयाइं च हुंति तिन्नेव ।
सिक्खावयाइं चउरो गिहिधम्मो तत्थ बारसहा ॥२७॥

खंती य महवज्जव मुत्ती तवसंजमे य तह सच्चं ।
सोयं आकिंचणं च बंभं तह [होइ] जइधम्मो ॥२८॥

एयस्स मूलवत्थुं दुविहस्स वि होइ नूण संमत्तं ।
तं पुण कम्मायत्तस्स जंतुणो दुल्लहं होइ ॥२९॥

तं नाम दंसणस्स य आवरणं वेयणीय-मोहणियं ।
आउ य नामं गोयं तहंतरायं च पयडीओ ॥३०॥

एयस्स पुण निमित्तं मिच्छत्तं अविर्इं य अन्नाणं ।
जोगा तहा कसाया हुंति पमाया य नायव्वा ॥३१॥

एगपरिणामउववज्जियस्स एयस्स ठी भवे दुविहा ।
उक्कोसिया जहन्ना तत्थुक्कोसिं पवक्खामि ॥३२॥

अइअसुहभावजणिया अयराणं तीसकोडकोडीओ ।
 तिव्वठिई पढमाणं तिणहं तह अंतिमस्सावि ॥३३॥
 सयरिं च मोहणीयस्स नामगोत्ताण होंति तह वीसं ।
 तेत्तीसं अयराइं परमठिई आउयस्सावि ॥३४॥
 एयं अट्टपयारं कंमं अह बंधई उ एएहिं ।
 जीवो उ कारणोहिं पवंनियं पुव्वसाहूहिं ॥३५॥
 पडणीयमंतराइय उवघाए तप्पओस निणहवणे ।
 आवरणदुगं भूयो बंधइ अच्चासणाए य ॥३६॥
 भूयाणुकंप वय-जोगउज्जओ खंतिदाणगुरुभत्तो ।
 बंधइ भूओ सायं विवरीए बंधई इयरं ॥३७॥
 अरहंत-सिद्ध-चेइय-तव-सुय-गुरु-साहु-संघपडणीओ ।
 बंधइ दंसणमोहं अणंतसंसारिओ जेण ॥३८॥
 तिव्वकसाय(या) बहुमोहपरिणओ राग-दोससंजुत्तो ।
 बंधइ चरित्तमोहं दुविहं पि चरित्तगुणघाई ॥३९॥
 मिच्छद्दिट्ठि महारंभपरिग्गह-तिव्वलोहनिस्सीलो ।
 निरयाउयं निबंधइ पावमई रोद्धपरिणामो ॥४०॥
 उमग्गदेसओ मग्गनासओ गूढहिययमाइल्लो ।
 सढसीलो य ससल्लो तिरियाउं बंधए जीवो ॥४१॥
 पगईय तण(णु)कसाओ दाणरओ सीलसंजमविहूणो ।
 मज्झिमगुणेहिं जुत्तो मणुयाउं बंधए जीवो ॥४२॥
 अणुव्व(व)य-महव्वएहिं बालतवाकामनिज्जराए य ।
 देवाउयं निबंधइ संमद्दिट्ठी य जो जीवो ॥४३॥
 मण-वयण-कायवंको माइल्लो गारवेहिं पडिबद्धो ।
 असुहं बंधइ नामं तप्पडिवक्खेहिं सुहनामं ॥४४॥

अरहंताइसुभत्तो सुत्तरुई पयणुमाणगुणपेही ।
 बंधइ उच्चागोयं विवरीए बंधई इयरं ॥४५॥
 पाणवहाईहिं रओ जिणपूया मोक्खमग्गविग्घयरो ।
 अज्जेइ अंतरायं न लहइ जेणिच्छियं लाभं ॥४६॥
 इय भेयवत्ति(न्नि?)या मे परमठिई कंमबंधगा जे य ।
 संपइ सुणसु जहन्ना एयमणो तं वरकुमार ! ॥४७॥
 इयरा बारस तह [अट्ट] अट्ट वेयणिय-नामगोत्ताणं ।
 जहसंखेण मुहुत्ता भिन्नमुहुत्तं तु सेसाणं ॥४८॥
 एवं ठी यस्स जया अहापवत्तेण कह वि करणेण ।
 कोडाकोर्डिं मुत्तुं अयराणं नाउखवियाओ ॥४९॥
 तीसे वि थेवमेत्ते खविए घणारागदोसपरिणामो ।
 मोहणियकंमजणिओ हवइ य गंठी सुदुब्भेओ ॥५०॥

भणियं च- “गंठि त्ति सुदुब्भेओ कक्खडघणरूढगूढगंठि व्व ।
 जीवस्स कम्मजणिओ घणारागदोसपरिणामो” ॥५१॥ [सं.प्र./गा.८६८]
 तं पत्ते य समाणे अत्थेगे भिंदई उ जे जीवे ।
 अत्थेगे नो भिंदइ जे भिंदइ से अउव्वेण ॥५२॥

भणियं च-तं च पत्ते य समाणे अत्थि एगे जीवे जे तं भिंदइ । एत्थि एगो जे नो
 भिंदइ । तत्थ णं जे से भिंदइ, से अपुव्वकरणेण भिंदेइ । तओ-

अनियट्ठीकरणेणं भिन्ने गंठम्मि नो पुरायत्तं ।
 आयपरिणाणरूवं खयउवसमियं लहइ सम्मं ॥५३॥
 तस्समकालं पावइ मइनाणं चेव तह य सुयनाणं ।
 अह तंमि [य] संपत्ते जीवे बहुकम्ममलमुक्के ॥५४॥
 आसन्ननियसरूवो होइ [य] पसमाइलिंगसंजुत्तो ।
 मिच्छत्तस्स य विमुहो जिणवयणरुई य सो होइ ॥५५॥

- भणियं च- “संमत्तं उवसममाइएहिं लक्खिज्जइ उवाएहिं ।
आयपरिणामरूवं बज्जेहिं पसत्थलिंगेहिं” ॥५६॥ [श्रा.प्र./गा.५३]
- “एत्थ उ परिणामो खलु जीवस्स सुहो उ होइ विन्नेओ ।
किं मलकलंकमुक्कं कुणगं भुवि झामलं होइ” ॥५७॥ [श्रा.प्र./गा.५४]
- “पयईय व कंमाणं वियाणिउं वा विवागमसुहं ति ।
अवरद्धे वि न कुप्पइ उवसमओ सव्वकालं पि” ॥५८॥ [श्रा.प्र./गा.५५]
- “नरविबुहेसरसोक्खं दुक्खं चिय भावओ उ मन्नंतो ।
संवेगओ न मोक्खं मोत्तूणं किं पि पत्थेइ” ॥५९॥ [श्रा.प्र./गा.५६]
- “नारय-तिरिय-नरामरभवेसु निव्वेयओ वसइ दुक्खं ।
अकयपरलोयमग्गो ममत्तविसवेगरहिओ वि” ॥६०॥ [श्रा.प्र./गा.५७]
- “दडूण पाणनिवहं भीमे भवसागरंमि दुक्खत्तं ।
अविसेसओऽणुकंपं दुहावि सामत्थओ कुणइ” ॥६१॥ [श्रा.प्र./गा.५८]
- “मन्नइ तमेव सच्चं निस्संकं जं जिणेहिं पन्नत्तं ।
सुहपरिणामो सच्चं कंखाइविसोत्तियारहिओ” ॥६२॥ [श्रा.प्र./गा.५८]
- एवंविहपरिणामो संमद्दिट्ठी जिणेहिं पन्नत्तो ।
एसो य भवसमुहो लंघइ थेवेण कालेण ॥६३॥
तीसे वि य ठीईए खीणे पलिओवमाण पुहत्तेण ।
सुहपरिणामपगब्भं पडिवज्जइ देसविइं सो ॥६४॥
- सा य- पाणवहालियपरधणथूलाणेयाण विरमणं कुणसु ।
परदारस्स य विइं परिमाणं वा परिग्ग(ग)हस्स ॥६५॥
परिमाणस्सावडिए पडिवन्नाणुव्वए य से एवं ।
देसपरिणामजुत्ते अइयारे नो इमे कुणइ ॥६६॥
- तं जहा- बंधवहछविच्छेए अइभारे भत्तपाणवोच्छेए ।
रागेण व दोसेण व न कुणइ एए उ अइयारे ॥६७॥
- तहा- सहसा अब्भक्खाणं रहसा य सदारमंतभेयं वा ।
मोसोवएसकरणं कूडं लेहं च वज्जेइ ॥६८॥

- तहा- कूडतुल-कूडमाणं तप्पडिरूयं विरुद्धगमणं च ।
तक्करयाणपओगं तेनाहडयं च वज्जेइ ॥६९॥
- तहा- अपरिग्गहिया इत्तर अणंगकीडा उ परविवाहं वा ।
तिव्वो तहाहिलासो वज्जेई कामभोएसु ॥७०॥
- तहा- खेत्तं वत्थु हिरन्नं तहा सुवन्नं धणं धन्नं च ।
दुपयं चउप्पयं वा कुवियपमाणं न अक्कमई ॥७१॥
एवंमाई.....जे अन्ने संसारहिंडणनिमित्ते ।
सुहपरिणामो सययं भावेणं ते विवज्जेइ ॥७२॥
- तहा- दिसिवयभोगुवभोगे अणत्थदंडे गुणव्वया सिक्खा ।
सामाइयदेसवगासियं च पोसहउतिहिविभागो ॥७३॥
उड्ढाहतिरिदिसुगुणव्वयस्स गहियस्स नो अइक्कमइ ।
उड्ढदिसाइपमाणं वुड्ढिं सइ अंतरद्धं वा ॥७४॥
भोगुवभोगु गुणवयं दुविहं इह जिणवरोहिं पन्नत्तं ।
भोयणओ कम्मयओ एक्केक्के सुणसु अइयारे ॥७५॥
सच्चित्तमीसप्पउलियदुप्पउलियओसही तहा तुच्छ ।
भोयणओ अइयारा भोगुवभोगंमि नायव्वा ॥७६॥
इंगाली वण साडी भाडी फोडी विवज्जए कंमे ।
लक्ख रस केस दंते विसविसए तह य वाणिज्जे ॥७७॥
पीलणकंमं निल्लंछणं च सर-दह-तलायसोसं च ।
असईपोसं च तहा वज्जेइ[य] कंमओ यावि ॥७८॥
अज्झवसाणायरिए पमायचरिए य हिंसदाणे य ।
पावुवएसे य तहा अणडुडंडे य चउभेए ॥७९॥
कंदप्पं कुक्कुइयं मोहरियं तह य जुत्तअहिगरणं ।
उवभोगपरीभोगाहियं च डंडंमि अइयारा ॥८०॥

सावज्जजोगपरिवज्जणं तु निरवज्जसेवणं तह य ।
समभावो सामइयं पन्नत्तं जिणवरिंदेहिं ॥८१॥

दुप्पणिहाणं मणमाइयाण अणवड्डियस्स करणं वा ।
सइ सामइयाकरणं सामइए हुंति अइयारा ॥८२॥

आणवणं पेसवणं सहं रूवं च पोग्गलक्खेवं ।
देसावगासियंमी पंचेए वज्जए दोसे ॥८३॥

आहारे सक्कारे बंधे य तहा भवे अवावारे ।
अह पोसहोववासे चउहा य इमे य अइयारा ॥८४॥

सेज्जुच्चाराईणं पडिलेह-पमज्जणाण अक्करणं ।
दुक्करणं वा तेसिं संमं च न पालए गहियं ॥८५॥

आयाणुग्गहट्टाए जईण नायागयं च कप्पं च ।
कमजुत्तं भत्तीए अतिहिविभागो य जं दाणं ॥८६॥

सच्चित्ते निक्खेवं पिहणं वा वज्जए सच्चित्तेण ।
कालाइक्कमदाणं परववएसं च मच्छरियं ॥८७॥

से एवं गहियवए तीसे कंमट्टिईइ खविऊण ।
संखेज्जसागराई तम्मि भवे अह व बहुएसु ॥८८॥

सावज्जजोगअहविरइलक्खणं पावई उ जइधम्मं ।
उवसमसेट्ठिं च पुणो पावइ अह खवगसेट्ठिं पि ॥८९॥

भणियं च- “सम्मत्तंमि उ लद्धे पलियपुहुत्तेण सावओ होइ ।
चरणोवसमखयाणं सागरसंखं तओ होज्ज” ॥९०॥ [वि.भा.गा.१२२२]

“एवं अपरि(प्पडि)वडिए संमत्ते देवमणुयजंमेसु ।
अन्नयरसेट्ठिवज्जं एगभवेणं व सव्वाइं” ॥९१॥ [वि.भा.गा.१२२३]

अह खवगसेट्ठिअंते केवलवरनाणदंसणं लहिउं ।
भवगाहिखवियकंमे विगयमले से लहे सिद्धिं ॥९२॥

एत्थंतरंमि गुरुवयणायन्नणजणियसुहपरिणामानलनिदुवहुकंमिधणेण भावओ

पडिवन्नसंमत्तसावगधम्मेण भणियं जंबुणामेण-‘भयवं ! धंनो हं जेण मए पावमल-
पक्खालणं रागाइविधायणं पसमाइगुणंकरं भवचारयविमोयणक्खमं सुयं तुम्ह
वयणामयपवित्थरं ति । तो आइसंतु गुरवो, जं मए कायव्वं । अहवा समाइद्वं चेव
भगवया; ता देहि मे ताव गिहिधम्मसारभूए अणुव्वयाइए गुणद्वाने, जाव आउच्छिऊण
अम्मापियरं भगवया उवइद्वउवसमसेद्विखवगसेद्विकेवलवरनाणदंसणसव्वकम्म-
विगमाणंतरं सिद्धिसुहकारयं च गिण्हामि तुम्हंतिए खमामद्वज्जवमुत्तितवसंजम-
सच्चसोयार्गिचणबंभचेरूवं जइधम्मं’ ति । गुरुणा भणियं-‘किच्चमेयं तएजा(तवा?)-
रिसाणं भव्वसत्ताणं’ति । विहिपुव्वयं च दिन्नाणि से अणुव्वयाणि । अणुसासिओ य
बहुविहं । तओ वंदिऊण परमभत्तीए य सपरिवारं गुरुं, पयट्टो रहवरसमारूढो
नयराभिमुहं । पत्तो य नयरदुवारं । तं च पडिनियत्तगुरुसमीवनरनाहजाणवाहणसमाउलं
नायरजणगुरुवंदणत्थपवेसनिग्गमपडिरुद्धपहं च पेच्छिऊण चिंतियं जंबुणामेण जाव
पडिवालेमि एत्थ परिवार्डिं ताव अइमहंतो मे कालक्खेवो हवइ, ता वच्चामि अन्नेण
दुवारेण-त्ति चिंतिऊण अन्नदारे पवत्ताविओ रहवरो सारहिं भणिऊणं ति । सारहिणा वि
पवत्तिओ चोइउं तुरंगमे । पत्तो य अभिसेयदुवाणं(रं) च । जाव तं पि परचक्कभएण
रिउबलहणणनिमित्तं सिलाजंतपहरणलंबमालाउलं ददूण चिंतिउं पयत्तो ।

अवि य- एयं जइ निवडेज्ज ममोवरिं कह व सीलरहियस्स ।

अकयपुन्नस्स तो मे दोगइगमणं धुवं होज्जा ॥९३॥

जओ- “अत्थो होइ अणत्थो सयणो वि य परजणो हियं अहियं ।

मित्तं पि हवइ सत्तू आसन्ने वसणकालंमि” ॥९४॥ []

भणियं च- “अन्नह परिचिंतिज्जइ सहरिसकंदुज्जुएण हियएणं ।

परिणमइ अन्नह च्चिय कज्जारंभो विहिवसेण” ॥९५॥ []

तओ एवं च परमसंवेगभावियमइस्स से इंदजालसरिसं जीवलोयं मंनमाणस्स
धम्मज्झाणजलपक्खालियपावलेवस्स समुपन्ना चिंता-अहो णु खलु एवंगयस्स मे
नत्थि पओयणं । जओ नरय-तिरिय-नरामरगईमूलं एवंविहं मरणं न सेयाय भवइ । तो
ते धन्ना जे तेलोक्कबंधुभूए चिंतामणिकप्पे परमरिसिसव्वन्नुदेसिए धम्मे कयाणुराआ
अगारवासाओ अणगारियं दिक्खं पवन्न ति । तओ य, पाणवह-मुसावाय-अदत्तादाण-

मेहुणपरिगहविरया बायालीसेसणादोसपरिसुद्धर्पिडगाहिणो संजोयणाइपंचदोसरहिय-
कालभोइणो पंचसमिया तिगुत्ता निरइयारवयपरिपालणत्थमेव इरियासमियाइपणुवीस-
भावणोववेया, अणसणामोणोयरियाइपायच्छित्तविणयबाहिरब्भंतरतवोगुणप्पहाणा
मासाइयाइअणेगपडिमाधारिणो विचित्तदव्वाइअभिग्गहरया, अम्हा(ण्हा?) लोयलद्धा-
वलद्धवित्तिणो निप्पडिकंमसरीरिणो समतणमणिलेट्टुकंचणा; किं बहुणा अट्टारससीलंग-
सहस्सधारिणो, उवसमाईयविबुहजणपसंसियसमसुहसमेया, अणेगगामागरनगरपट्टण-
मडंवदोणमुहसंनिवेससयसंकुलं विहरिऊण वसुहं मिच्छत्तघणपंकयपडिबद्धे य सद्धंम-
कहणदिवागरोदएण पडिबोहिऊण भव्वकमलागरे महातवचरणपरिकंमियसरीरा जिणोव-
इट्टेणं मग्गेणं कालमासे कालं काऊण देहं परिच्चयंति त्ति । तो अहं पि इयाणीं गंतूण
गुरुचलणंतिए गिण्हामि विसिट्ठं वयविसेसं । आमरणं पि मे सेयाय भविस्सइ त्ति ।
इमं च चिंतिऊण भणिओ सारही-‘भद्द ! पडिप्पहं चोएहि तुरंग-मे, जेण गुणसिलए
चेइए गंतूण वंदिऊण य गुरुं तओ पसिद्धपहेण पविसामो’ त्ति । तेण य तह त्ति
पडिवज्जिऊण तहेव समायरियं । पत्तो य गुरुपायमूलं कुमारो । तओ वंदिऊण य
विन्नत्तो गुरू ।

अवि य- धणियमहं निव्विन्नो जंमजरामरण एत्थ संसारे ।

ता भयवं आमरणं बंभच्चरियं वयं मज्झ ॥९६॥

गुरुणा भणियं गुरुविक्कमेण ते निज्जिओ मयरचिंधो ।

तिन्नो च्चिय संसारो ता एयं हो अविग्घेण ॥९७॥

तओ एवं गहिय महादुद्धरवओ पुणो पुणो वंदिऊण गुरुणो चलणारविंदजुयलं
समारुहिय रहवरं पविट्टो नयरं । संपत्तो य अत्तणो भवणवारं । ओयरिओ य रहवराओ
कयपणामो य अंमापियरं विन्नविडं पयत्तो ।

अवि य- ताय मम मए धम्मो निसुओ जिणयंदभासिओ विमलो ।

सयलदुहक्खयगारी हेऊ जो सयलसोक्खाणं ॥९८॥

सुरसिद्धकिंनरोगपणमियचलणारविंदजुयलस्स ।

चरिमजिणयंददिक्खिय सुहंमसामिस्स पासंमि ॥९९॥

तेहिं भणियं- तं धन्नो जेण सुओ सुहंमसामिस्स पायमूलंमि ।

धंमो जिणवरभणिओ सत्ताण हिओ सुगइमूलं ॥१००॥

तेण भणियं-जइ एवं ता निसुणह जंमजरामरणरोगसंततो ।

सिद्धिवहुदंसणमणो भीओ हं भवसमुद्दाओ ॥१०१॥

ता मुंचह मे अज्जं जेण य गिण्हामि दुक्खखयजणणि ।

पव्वज्जं गुरुमूले मूलं जा सिद्धिसोक्खाणं ॥१०२॥

सोरुण इमं सहसा विगलियअणवरयबाहनियरेहिं(नयणेहिं) ।

जणणि जणएहिं भणियं सगगयं नेहनडिएहिं ॥१०३॥

जं नाम वच्छ धंमो निसुओ अच्चंतसोहणं एयं ।

जं पुण एयं अन्नं तं कालो तुज्झ को एस ॥१०४॥

जिणसासणंमि भत्ता अच्चंतं आसि पुव्वपुरिसा वि ।

सहसा तेहिं वि न कयं निक्खमणं तुम्ह गोत्तंमि ॥१०५॥

अन्नं च- तुह मुहयंदपयंसणविरहानलजालगाढदड्ढाणं ।

कुमुयाण व कत्थ पुणो अम्हाणं निव्वुइं होज्जा ॥१०६॥

अन्नं च- अम्हाण वि बहुकालं धम्मं जिणभासियं सुणन्ताण ।

न य एरिसो अउव्वो एक्कपए निच्छओ जाओ ॥१०७॥

तओ- ईसिवियसंतवयणारविंदपसरंतदसणकिरणेण ।

अह भणियं कुमरेणं एयं पि न कारणं एत्थ ॥१०८॥

जओ- कालेणमणंतेणं तत्तं न मुणंति के वि मूढमणा ।

अन्ने उण थेवेण वि पारं गच्छंति कज्जस्स ॥१०९॥

एत्थ य सुण अक्खाणं इमस्स अत्थस्स सूयगं एक्कं ।

तेहिं वि भणियं साहसु तो भणियं जंबुनामेण ॥छा॥ ॥११०॥

आसि वसंतपु [र व]रे लायन्नवइ त्ति नाम वरगणिया ।

रूयवई गुणजुत्ता महाधणा तंमि कालंमि ॥१११॥

तीए समं रायसुया पुत्ता इब्भाण अ(इ?)त्थि प(व)रभोगं ।

काऊण जंति बहवे नाउं गमणूसुए सावि ॥११२॥

भणइ [य] ते जइ तुब्भे काउं मं निग्गुणं परिच्चयह ।
 ता मम सुमरणहेउं घेप्पउ मह संतियं किं पि ॥११३॥
 उवरोहेण य ते वि हु गिण्हंति य कडयकुंडलाईयं ।
 आहरणं अह अन्नो समागओ तत्थ इब्भसुओ ॥११४॥
 सो रयणविहीकुसलो दिट्ठं अह तेण तत्थ कणयमयं ।
 पंचमहारयणजुयं एक्कं वरपायपीढं ति ॥११५॥
 तं पुण अणायरेणं दीसंतं तत्थ ताहिं गणियाहिं ।
 खिप्पइ इओ तह च्चिय अनायरमत्थसाराहिं ॥११६॥
 अह कं पि सो वि कालं तीए सह अच्छिऊण य पयट्टो ।
 देसाहिमुहं तीए सो भणिओ सुहय ! निसुणेसु ॥११७॥
 जइ तं चलिओ अवस्सं ता गिण्हसु मज्झ संतियं किंचि ।
 सुमरणहेउ महग्घं आहरणं किं पि जं दिव्वं ॥११८॥
 तेण य भणियं धवलच्छि ! निच्छओ तुज्झ एत्थ अइगरुओ ।
 ता एयं पावीढं तुह पयपरिफंसियं गहियं ॥११९॥
 तीए भणियं अन्नं गिण्हाहि महग्घमुल्लयं किंचि ।
 किं ते इमेण होही गहिण्णं अप्पमुल्लेणं ॥१२०॥
 एएण वि पज्जत्तं वरतणु तुह पायफंसललिएण ।
 अन्नेण मह न कज्जं इह भणियं इब्भपुत्तेण ॥१२१॥
 दिन्नं अह तं तीए तेण [य] परिचिंतियं अहो मुद्धा ।
 ते रायसुया सव्वे जाणंति न रयणपरमत्थं ॥१२२॥
 एयं महग्घमुल्लं परिहरिउं जे य लींति निसा(स्सा)रे ।
 अन्नाणमोहियमणा आहरणे कुंडलाईए ॥१२३॥
 अह सो तं घेतूणं पत्तो निययंमि चेव देसंमि ।
 विणिवट्टिऊण रयणे सुहभाई तत्थ संवुत्तो ॥१२४॥

कहिओ दिदुंतो भे एयस्स य उवणओ निसामेह ।
 जह गणिया तह जाणसु धम्मसुई जिणसमुद्धिवा ॥१२५॥
 जह इब्भरायपुत्ता तह जीवा विमलनाणपरिहीणा ।
 इच्छंति ते सुहाइं सुरमणुयभवेसु विउलाइं ॥१२६॥
 जह आहरणा तह देससव्वविरईतवोविहाणाइं ।
 जह होइ इब्भपुत्तो भविओ तह मोक्खसुहकंखी ॥१२७॥
 जह रयणपरिक्खाकुसलं तं होइ तह संमवरनाणं ।
 कंचणपीढं च जहा होइ तहा दंसणं एत्थ ॥१२८॥
 अच्चंतमहग्घाइं हुंति जहा एत्थ पंच रयणाइं ।
 महसदसंजुयाइं पंच वयाइं तहा हुंति ॥१२९॥
 जह रयणाण विणोए सुहसंपत्तीउ इब्भपुत्तस्स ।
 भव्वाण तहा मोक्खो होइ गयाणं सुहुप्पत्ती ॥१३०॥
 ता जह इब्भसुएणं रयणगुणविणिच्छिओ कओ तत्थ ।
 थेवेण वि कालेणं न तहा इयरेहिं बहुणावि ॥१३१॥
 एवं च तत्तगहणे न कारणं चे(थे)वकाल-बहुकालो ।
 ता एयं नाऊणं ममं विसज्जेह तायम्ब ! ॥छा॥ ॥१३२॥

तओ तेहिं भणियं -

एही पुणो वि भयवं विहरंतो एत्थ गणहरो जइ य ।
 तइया करेसु पुत्तय ! वयगहणं तं अविग्घेणं ॥१३३॥

तेण भणियं-एत्थ य सुणेह एक्कं साहिप्पंतं तुमे उ आहरणं ।
 तेहिं वि भणियं साहसु अह कहिउं सो समाढत्तो ॥१३४॥
 उतुंगधवलपायारवेढियं अत्थि कंचणसमिद्धं ।
 कंचणपुरं पसिद्धं सरिसं जं देवलोएण ॥१३५॥
 तत्थ य पंच वयंसा वसंति ते अन्नया समोसरियं ।
 आसन्ने कुंथुजिणं तत्थेव गया सुणेऊण ॥१३६॥

दिट्टं च तेहिं सहसा देविदविणिमियं समोसरणं ।
कंचणरयणसमिद्धं अवयरियं सग्गखंडं व ॥१३७॥

तओ- ताणं परोप्परं चिय उल्लावो सहरिसाण संवुत्तो ।

पेच्छह पेच्छह एयं दिव्वं हो जिणसमोसरणं ॥१३८॥

सुरधणुवलयं व इमं अणेयरयणेहिं विविहवन्नडुं ।

पेच्छह हो एयं पि य रयणमयं पढमपायारं ॥१३९॥

रविमंडलं च उइयं कणयमयं पेच्छ बीयपायारे ।

सरयब्भपुंजघडियं व पेच्छ तइयं पि रुप्पमयं ॥१४०॥

नवजलहरपडलं पिव फुरंतविज्जुज्जलं इमं पेच्छ ।

वहलघणनीलपत्तं रत्तपवालं वरअसोयं ॥१४१॥

पगलियकलंकससिबिंबधवलवरमालिय व्व रेहंती ।

पेच्छसु जिणिंदउवरिं रिंछोली आयवत्ताण ॥१४२॥

सरयससिबिंबनिग्गयमयूहसच्छयसोहिरपहालो(? ले) ।

कणयमयडंडरुइरे पेच्छसु अह चामरकलावे ॥१४३॥

सुरधणुसमसोहेहिं पवणपहोलंतधयवडग्गेहिं ।

थाहरमाणं व इमं गयणयलं पेच्छ भव्वयणे ॥१४४॥

मयरंदमत्तमहुयरनिब्भररवमुहरजणियइंकारा ।

ओपेच्छ कुसुमाण(कुसुम)वुट्टी विटट्टियपंचवन्नाहा ॥१४५॥

बहिरंतदिसायक्को जयजयजयघोसघोसणामुहलो ।

सुरमणुयासुरकिंनरमुहकमलविणिग्गओ पेच्छ ॥१४६॥

मुहलेइ दिसाए(य)क्कं निब्भररवभरियभुयणविवरोहो ।

सुरकरताडियदुंदुहिपवरनिनाओ इमो पेच्छ ॥१४७॥

तओ अन्नेण भणियं-‘अहो वयंस ! पेच्छ पेच्छ किं पुण इमे कुरंगमजूहा
मंदगईए समल्लियंति जिणं पइ ?’ तेण भणियं-

अवि य- कंचणतोरणपसरियबहलमयूहोहपूरियदिगंतं ।

मन्नंता दवजलणं मंदं मंदं इमे लीणा ॥१४८॥

तओ अन्नेण भणियं- 'ता किं पुण इमे समल्लियंति ? ।' तेण भणियं-
अवि य- जिणमुहकमलविणिग्गयवायारसलद्धगरुयसुहयासा ।

अवहत्थियसेसभया जिणवयकमलं इमे लीणा ॥१४९॥

तओ अन्नेण भणियं-

पणयसुरमउडपसरियमयूहसंकंतकब्बुरच्छयं ।

जायं जिणपयकमलं ओपेच्छसु कणयवत्तं पि ॥१५०॥

जिणभत्तिपणयसुरसुंदरीयणकवोलतेयपडलेहिं ।

बालयरवि व्व जाया पेच्छसु सयले वि दिसिनिवहा ॥१५१॥

अन्नं च- इमेसिं चेव सुरसुंदरीणं । अवि य-

तणुलग्गपवरत्तंसुउच्छलियबहलतेयपडलेहिं ।

संझारायजुया इव गयणद्धंता इमे पेच्छ ॥१५२॥

अन्नं च- देहट्टियभूसणमणिमयूहपसरंतपडलविच्छुरियं ।

सुरतणुमइयं व इमं ओपेच्छसु मेइणीवट्टं ॥१५३॥

दीसइ य इमे पेच्छसु ससुरासुरसूरचंदसंकिन्नो ।

देवमइओ व्व जाओ भूभाओ देवलोओ व्व ॥१५४॥

अन्नं च- दिणयरचंदंगारबिहप्फइबुहसुक्कराहुसणिपमुहा ।

सव्वे वि गहा सव्वायरेण ओपेच्छ जिणपणया ॥१५५॥

ता सव्वहा वि पत्तं जम्मफलं जं जिणो समोसरिओ ।

दिट्ठो अज्जम्हेहिं पच्चक्खं सव्वसुरमहिओ ॥१५६॥

मन्ने अज्ज कयत्था नयणा अम्हाण जं जिणो दिट्ठो ।

अज्जं तिन्नो य इमो रुंदो भवसायरो मन्ने ॥१५७॥

अन्नं च- जं सव्वभाववित्थरपरमत्थविभावयं सुयं वयणं ।

एयस्स तेण मन्ने सवणाण वि अज्ज सहलत्तं ॥१५८॥

ता पत्तं पत्तव्वं अज्जं अम्हेहिं पुन्नफलमेयं ।

जं दिट्ठं पयकमलं कलिमलमहणं जिणिंदस्स ॥१५९॥

ता एयं वो(णे) सेयं असुरिंदसुरिंदवंदियकमस्स ।
 एयस्स पायमूले गिण्हामि(मो) जमिह सामन्नं ॥१६०॥
 ताणेक्केण भणियं सच्चमिणं जं जहा तुमं भणसि ।
 किंतु सुओ ता धम्मो दिट्ठो य गुरू जिणवरिंदो ॥१६१॥
 एयं वा अन्नं वा जइया उण दच्छिमो उ तित्थयरं ।
 तइआ वि य गिण्हस्सं पव्वज्जं तस्स पामूले ॥१६२॥
 तो भणियं अन्नेणं वा जइया उण दच्छिमो उ तित्थयरं ।
 तइआ वि य गिण्हस्सं पव्वज्जं तस्स पामूले ॥१६३॥
 भवसायरभव(म)णकिलंतएहिं जरमरणरोगतविएहिं ।
 कंमविवरेण पत्तो कत्तो पुण होज्ज संपत्ती ॥१६४॥
 अन्नेण तओ भणियं पुच्छामो जिणवरं इमं एत्थ ।
 किं सुलहं दुलहं वा जिणाण इह दंसणं होइ ॥१६५॥
 जइ दुलहं ता सेयं इमस्स मूलंमि अम्ह वयगहणं ।
 अह भणइ होइ सुलहं ता इच्छा तुम्ह सव्वेसिं ॥१६६॥
 सव्वेहिं तओ भणियं एवं ही सोहणं तए भणियं ।
 उवसप्पिऊण सव्वायरेण अह पुच्छओ तेहिं ॥१६७॥
 किं भयवं हुंति जिणा संपइणागयअईयकालेसु ।
 पाविज्जइ सुहमेसिं च दंसणं किं व दुक्खेण ॥१६८॥
 अह भगवया वि भणियं निसुणह हो सोम भरहेरवएसु ।
 दुविहो वच्चइ कालो विजएसु य होइ एक्कविहो ॥१६९॥
 उवसप्पिणी उ एक्का वीया अवसप्पिणी मुणेयव्वा ।
 वीसं कोडाकोडीहिं दो वि अयराण वच्चंति ॥१७०॥

तत्थ अवसप्पिणी छहि अरएहिं वच्चइ । ते य इमे अरया । तंजहा-एगंतसूसमा
 चउहिं सागरोवमकोडाकोडीहिं वच्चइ, तत्थ य तिपल्लोवमाउणो तिगाउयप्पमाणा य
 पुन्नविसेसेण कप्पपायवउवणीयभोयणसेज्जगंधमल्लाइउवगरणा रिजुसहावा विसिट्ठुबुद्धि-

विरहिया मरणंते देवगइगामिणो जुयलाहंमिया मणुस्सा भवंति । बीया य **सूसमा** तिहिं सागरोवमकोडाकोडीहिं वच्चइ, तत्थ य दुप्पल्लोवमाउणो दुगाउयप्पमाणा सेसं सव्वं तहा जहा पढमे । किंतु मणायं मंदाणुभाविणो तेसिं ते कप्पहुमा भवंति । तइया य **सुसमदूसमा** दुहि सागरोवमकोडाकोडीहिं वच्चइ, तत्थ य एगपल्लोवमाउणो एगगाउयप्पमाणा य जुयलाहंमिणो । सेसं सव्वं जहा बीए; किंतु मणायं मंदाणुभाविणो हवंति तेसिं कप्पहुमा । चउत्थी **दुसमसूसमा** एगाए सागरोवमकोडाकोडीए बायालीस-वरिससहस्सूणाएवच्चइ, तत्थ य पुव्वकोडीय पढमंते य वाससयाउणो हवंति । पंचधणुसयपमाणा य पढमं अंते य सत्तरयणीउ पमाणं मणुयाणं ति । एयंमि वोच्छिज्जइ । जुयलाहंमो, न होंति चित्तियफलदाइणो कप्पहुमा । उववज्जंति चउवीसं तित्थयरा, दुवालसचक्कवट्टिणो, नववासुदेवबलदेवा य । नज्जइ धंमाधंमो । हवंति धन्नविसेसा । नज्जंति कलाओ । पयडीहुंति विन्नाणाइं । संगहिज्जंति धन्नविसेसाइं । कीरंति सव्वववहारं ति । तओ एवं च वच्चमाणेसु दियहेसु वोच्छिन्नेसु तित्थयर-चक्कवट्टि-वासुदेव-बलदेवेसु होही **दूसमा** पंचमकालो । एगवीसवरससहस्सेहिं सा वच्चइ । तत्थ य वरिससयसत्तरयणीहिंतो वि परिहीयमाणं आउय[देह?]पमाणं हवइ । थोवो य से तत्थ धंमो, बहुओ अहंमो । विरला साहुणो, बहुयाओ कुपासंडिणो । दुल्लहं सच्चं, बहुयमसच्चं । थोवा सज्जणा, बहवे दुज्जणा । परिहीलिज्जंति विज्जाओ । पम्हुसन्ति विन्नाणाइं । अप्पोयगवरिसणं । बहवे दुक्काला । ताव जाव वोच्छिज्जिही धंमो । भणियं च-

“एयंमि अइक्कंते वाससहस्सेहिं एक्कवीसाए ।
 फिट्ठिहिइ लोघधम्मो अग्गी मग्गो जिणक्खाओ ॥१७१॥
 पुव्वाए संझाए वोच्छेओ होइ धम्मचरणस्स ।
 मज्झण्हे रायाणं अवरण्हे जायतेयस्स ॥१७२॥
 पच्छिमसंझाए भवे कुलवोच्छेओ उ देसधंमाणं ।
 सो खलु वोच्छेओ दूसमाए चरिमंमि समयंमि ॥१७३॥
 अवसप्पिणीउमीसे चत्तारि अपच्छिमाइं इह भरहे ।
 अन्नंमि दूसमाए संघस्स चउव्विहस्सावि ॥१७४॥

दुप्पसहो साहूणं सच्चसिरी होइ साहूणीणं च ।
 सड्डो नाइल नामो फग्गुसिरी सावियाणं तु ॥१७५॥
 सव्वाऊ पणवीसं अट्टु य वासा गिहत्थपरियाओ ।
 कालं काही य पुणो अट्टमभत्तेण दुप्पसहो ॥१७६॥
 उववज्जिही विमाणे सागरनामंतु(मि) सो उ सोहंमे ।
 तत्तो य चइत्ताणं सिज्झिहिइ सुनिव्वुओ धीरो” ॥१७७॥

तओ एवं च-तंमि दूसमकाले वोलीणे होही एगंतदूसमानाम छट्टो कालो ।
 एगवीसवरिससहस्सेहिं सो वि वच्चिही, महादुक्खजणगो मणुयाईणं । तस्स य अंते
 सव्वं वोच्छिज्जिही । किं पि बीयमेत्तं माणुसमाईणं सव्वेसिं जाईणं होहीइ । आहारो
 कुणिमं तेसिं ।

भणियं च- “होही हाहाभूओ दुक्खब्भूओ हल्लप्फलभूओ ।
 कालो अमाइउत्तो गोधंमसमो जणो पच्छ ॥१७८॥
 खरफरुसधूसरयरा अणिट्टफासा दुहावहा वाया ।
 वायंति भयकरा पुण दुहावहा सव्वसत्ताणं ॥१७९॥
 धूमायंति दिसाओ रओसला रेणुपंकबहुलाओ ।
 भीमा भयजणणीओ समंतओ अंतकालंमि ॥१८०॥
 चंदा य मुयंति हिमं सूरा य तवंति अहियरं तावं ।
 जेण इहं नरतिरिया सीउण्हभया किलिस्संति ॥१८१॥
 पुणरवि भिक्ख अभिक्खं अरसं विरसं च खार-खट्टं च ।
 अगिगविसअसणिसरिसं मुंचइ मेहो जलमणिट्टं ॥१८२॥
 जेण इहं मणुयाणं खासं सासं भगंदरं कोढं ।
 होहिंति एवमाई रोगा अन्ने य णेगविहा ॥१८३॥
 मणुया खरफरुसनहा उब्भडघोडामुहा विगडनासा ।
 वन्नाईहिं गुणेहिं य सुनिट्टुरगिरा भवे सव्वे ॥१८४॥
 रयणीपमाणमेत्तो उक्कोसेणं तु वीस-सोलसमा ।
 बहुपुत्तनत्तुसहिया निल्लज्जा विणयपरिहीणा ॥१८५॥

होहिंति य बिलवासी बावत्तरि ते बिलाओ वेयड्ढे ।
 उभयतडाण नईणं नव-नव एक्केक्कए मूले ॥१८६॥
 सेसं तु बीयमेत्तो होही सव्वेसु मणुयमाईणं ।
 कुणिमाहारा सव्वे नियगे संपायकालंमि ॥१८७॥
 रहपहमेत्तं तु जलं होही बहुमच्छकच्छभाइन्नं ।
 गगासिंधुनईणं रत्ताईणं चउणहं पि ॥१८८॥
 सूरुगमणमुहुत्ते ते मणुया मच्छकच्छभ जलाउ ।
 घेत्तुं तडे छुभंती अन्ने अत्थमणकालंमि ॥१८९॥
 सीउणहपउलिएहिं वित्ती तेसिं तु होइ मच्छेहिं ।
 बायालीससहस्सा वासाणं निरवसेसं तु ॥१९०॥
 अवसप्पिणीए अब्द्धं अब्द्धं उवसप्पिणीए नायव्वं ।
 एयंमि अइक्कंते होही उसमाहलं सव्वं ॥१९१॥
 अवसप्पिणि जह एसा उसप्पिणी तह य किं तु विवरीया ।
 नायव्वा अरएहिं एयं तं कालचक्कं तु ॥१९२॥
 एएण कारणेणं थोवा होहिंति एत्थ तित्थयरा ।
 पाविज्जह दुहमेसिं च दंसणं सव्वकालेसु ॥१९३॥
 विजए उण जुगवं चिय हुंति जहन्नेण नवर चत्तारि ।
 बत्तीसं जुगवं चिय उक्कोसेणं मुणोयव्वा ॥१९४॥
 ता सव्वहावि दुलहं होइ जिणिंदाण दंसणं एत्थं ।
 दंसणओ वि य वयणं वयणाओ होइ सहहणं ॥१९५॥
 अह सहहिउं कह वि हु संजमकरणांमि(णे ?) न होइ उच्छहो ।
 तह वि न जायइ नूणं कंमवसाणं तु जीवाणं ॥१९६॥

तहा य- होइ निरत्थो नूणं दिणयरबिंबोगगमो व्व अंधाणं ।

जिणसंगमो वि एवं केसिं पि विवेगरहियाणं ॥१९७॥

भणियं च- “दिट्ठो वि अदिट्ठसमो दंसणकज्जफलाइं अकरिंतो ।

काणइ अदिट्ठपुव्वो होइ जिणो मोक्खहेउ त्ति” ॥१९८॥ []

दिट्टो जिणिंद किल तं पावपणासो जयंमि सुपसिद्धो ।
गोसाल-संगमाणं तुमं पि भवहेउओ जेणं'' ॥१९९॥

ता एवं ताव तित्थगरदरिसणं दुल्लहं । तओ तस्स सुहासियं । तं च सोउं कम्मगरुययाए सद्वहिउं । जो वि कम्मविसुद्धीए सद्वहइ, सो वि संजलणकसाओदएणं पडिवज्जइ चरितं । जो वा सचक्खुओ निमीलियच्छे चिट्ठेइ, किं तस्स सूरस्सीओ करंति । एवं अरहंतवयणं सोउं न इच्छइ, सुयं वा न सद्वहइ, सद्वहंतो वा न करेइ, तस्स मोहं तित्थगरदरिसणं ।

ता एयं सोऊणं परोप्परं मंतिऊण निक्खंता ।
तत्थेव समोसरणे कम्मंतकरा य संवुत्ता ॥छा॥

ता एवं तायंम ! अईव सुदुल्लहं जिणगणहराईण सुदंसणं । दंसणाओ उवएसदाणं । तस्स वि तब्भणियवयणकरणं ति । ता सव्वहा जइ सयं न गिण्हामि सुहंमसामिणो पायकमलमूले सव्वसावज्जविरइलक्खणं जइधम्मं; तो कत्थ पुणो रागदोसमोह-मूढमाणसाणं असुहकम्मगरुयभरभारक्कंतदेहाणं चउगइसंसारसायरे अरहट्टघडिय व्व अबद्धमूलं सययं चिय इओ तओ परिभमणमहादुक्खसमक्कंतनासग्गविलग्गनियय-पाणाणं अचिंतचिंतामणितुल्लं गुविलासंचारमहाकंमकंतारमहिंधणपज्जलियजलणभूयं सिवसुहामयपरमेक्कमहानिहाणं, नरयमहंधकूवनिवडण दढमहाबलं बलकप्पं, किं बहुणा, सव्वसत्तअणाइक्खणीयपरमसुहपहाणेक्ककारणं तित्थयराईण दंसणं ति । अह कह वितं पि पत्तं, तहा वि विसयविसवेगपरायत्तनिययमाणविगलियविवेगरयणसाराणं, कल(लु)-सियकुसत्थअत्थनियमईणं, कुसासणा अवहयसच्छभावानं, पणहु(म्हु)ट्ट अचिन्तचिंता-मणिकप्पं(प्प)जिणोवएसपरमत्थगब्भाणं । कत्तो अम्हाण मणुयासुरसुंदरीवंदियकम-कमलजुयलाणं सव्वदरिसीण जिणयंदाणं अमयनिस्संदभूए सव्वसत्तपरमेक्कहियकारए तेसिं वयणे धम्मपडिवत्ति ति । अह कह वि जाया, तहाविहवीरियन्तरायोदएण कम्म-गरुयत्तणेण य तहाविहपावमित्तपसंगेण य कत्तो सव्वसावज्जजोगविरइलक्खणं महापुरिसतित्थयराईअणुचिन्नं असेसपयत्थभावविभावयकेवलवरनाणदंसणलच्छि-अणुवहयपरमेक्कमहाकारणभु(भू)यं भाववयगहणं ति । ता सव्वहा वि विसज्जेह ममं ति ।

अन्नं च, जेसिं विसयाण कारणेणं अभव्वपाणिणो ते पढमं नरयमहंधयार-
निवडणकारणं । जओ अच्चंतपाववसगा एए रागद्वेसाण य कारणेणं सोग्गइमग्गल-
समभूया, तहा दुग्गइगमणपयडपहभूया य मे णायं च मुहरसियकिं पागफलरससारमेत्ता
विवाए उण महाकालकूडविसविवाओवमसमाणा ।

भणियं च- “विसयविसं हालहलं विसयविसं उक्कडं पियंताणं ।

विसयविसाइन्नं पिव विसयविसविसूइया होइ” ॥२००॥ [उ.मा./गा.२१३]

तहा एयाणं च विसयाणं परमेक्ककारणं जो एसो अत्थसंचओ सो वि
चंचलसहावो । जओ जलजलणतक्करनरिददाइयाईणं सामन्नो । ताण चुक्को वि
धरणितलनिहओ चेव खयं पगच्छइ । तो सव्वहा चंचलसहावा इमा अत्थलच्छी ।

अवि य- “अथिरा चंचलराया खणभंगुरदिट्टनट्टसब्भावा ।

विज्जुलया इव लच्छी मणयं पि न होइ थिरभावा” ॥२०१॥ []

तहा वि सोहणो जइ इमो खलसंसग्गिसमो जणणिजणयसहोयराईहिं सह संबंधो
थिरो होइ । इमो य अवस्सं विओयावसाणो, थोवदियहसंपओगलक्खणो य । ठिओ
चेव महासोयाभिभूयाणं संसारभमणदुक्खसंतइयसंपायणपरो हवइ ति ।

भणियं च- “अच्छउ ता अपुणागमपरभवसंकमणजणियसंतावो ।

सुमणे वि बंधुविरहो सुदुस्सहो होइ लोगंमि” ॥२०२॥ []

एवमवि सोहणं जइ इमं नियजीयं कइ वि वासरे अविणस्सरसहावं हवइ । इमं
च अइचंचलसहावं । तिणकोडिसंठियजललवबिंदुसमाणं ।

भणियं च- “जललवतरले विज्जुलयचंचले सक्कचायचवलंमि ।

जीवाण जीविए धयचलंमि कह कीरउ थिरासा” ॥२०३॥ []

ता सव्वहावि नत्थि एत्थ विलंबकारणं ति ।

भणियं च- “जं कल्ले कायव्वं अज्जं चिय तं करेह तुरमाणा ।

बहुविग्घो य मुहुत्तो मा अवरणं पडिक्खेइ” ॥२०४॥ [वैरा.श./गा.३]

“जलबुब्बुयंमि जीए कयलीगब्भोवमेयसारंमि ।

जरवाहिसोगपउरे किं अच्छह निव्वुया इण्हि” ॥२०५॥ []

“धम्मो अत्थो कामो तिन्नि वि एयाइं तरुणजोगाइं ।

गयजोव्वणस्स पुरिसस्स हवंति(होंति) कंतारसरिसाइं” ॥२०६॥ []

जं पुण एवंठिए वि हु विलंबणाणि कीरंति, तं सव्वहा अणाएयं मूढजंतुविल-
सियसरूवं । परिहरणीयं सव्वं जंतुणा जिणमयकुसलेणं ति ।

सव्वन्नूण मएण भावियमणा संसारसंकारये,

मोत्तूणं विसये विनिच्छियमणा संमोहसंदायये ।

जे पालिंति गुणा वरा भुवि नरा संमत्तजुत्ता सया,

संसारोवहिअ(ऽ)णोरपारपरमं पारंगया ते चिरं ॥२०७॥

इय जंबुनामचरिए तस्सेवुप्पत्तिविमलबोहिकरो ।

उद्देसो य समत्तो गिहिधम्मपसाहणो नाम ॥छ॥ ॥२०८॥



॥ सत्तमो उद्देसओ ॥

तओ एवं च अणेगहा भणिए जंबुकुमारेण, नाऊण तस्स निच्छयं अणवरय-
पयट्टबाहसलिलपक्खालियनिययनिम्मलकवोलयलाए, पक्खलियसगगयक्खरगिराए,
दीहुण्हाणवरयनीसासझलुसियपवरदेहलट्टीए, कह कह वि परिमंथरं भणियं जणणीए-
'वुत्त ! जइ एवं अवस्सं तए निच्छओ कओ, ता पूरेसु मम पुव्वविचिंतिए ताव
मणोरहे; सव्वहा वि निव्वत्तेसु इमं मे [मह]त्थं अब्भत्थणं' ति । तओ जंबुणामेण
भणियं- 'अंब ! किं तं महत्थमब्भत्थणं जमम्हेहिं वि किलण कीरइ ?' ति । तीए
भणियं- 'वच्छ ! तुमं तावम्हाणं पढमं चिय मणोरहसएहिं जाओ, वद्धिओ य सययं
वद्धंतमणोरहाणं चेव । संपयं पि जइ अहिणवुव्वाहियवहुयणा अवणयमुहकमल-
लोललोयणा धंना अणवरयनिरिक्खिज्जमाणवरमुहं वच्छ ! पेच्छमि तुमं । तओ अहं
पि एवं कए तुमए सह पव्वइस्सं ति । इमंमि य भणिए, भणियं जंबुणामेण- 'अंब !
जइ ते एवं निब्बंधो तो पूरेह मम (?) वरमुहालोयणेण य नियमणोरहे । किं पुण तए
मममन्नं पि विग्घंतरं विहेयव्वं । अहं च वित्ते विवाहकल्लाणे तयणंतरमेव अप्पहियं
समायरिस्सं' ति । तओ हरिसनिब्भररोमंचकुचुयतणुलट्टीए भणियं धारिणीए- 'पुत्त ! एयं
ति । अन्नं च- अत्थेत्थ तुह पुव्ववरियाओ अट्ट कन्नगाओ जिणसासणरंजियमईण
महाइब्भाणं धूयाओ । तो परिणेषु तुमं ताओ त्ति । ते य इब्भा तंजहा- समुद्दपिओ
समुद्ददत्तो सायरदत्तो कुबेरदत्तो कुबेरसेणो वेसमणदत्तो वसुसेणो वसुपालगो त्ति ।
ताणं च इमाओ भारियाओ, तं जहा- पउमावई कणगमाला विणयसिरी धणसिरी
कणगवई सिरिमई जयसेणा विजयसेण त्ति । ताओ य कंनगाओ एएंसि धूयाओ,
तंजहा- सिंधुमई दत्तसिरी पउमसिरी पउमसेणा, एयाओ चत्तारि देवलोगचूयाओ
देवभवे वि भारियाओ आसि । सेसा उण नागसेणा कणयसिरी कमलावई विजय-
सिरी नामाओ त्ति । एयाओ रूव- जोव्वणविलासविन्नाणकलागुणसोहग्गकलियाओ ।

ता वच्छ ! एयवुत्तंतं तेसिं जणणिजणयाणं विभइयं कहामो; जहा विवाहमंगलाणंतरमेव कुमारो दिक्खं पडिवज्जिही । ता एवं च ठिए पओयणे जहा तुम्हाणं रोयइ तहा अणुचिट्ठह' त्ति । निवेइयं च जहावट्ठियं तेसिं । कुमारो वि ठिओ मज्जणकीलाए । तओ सयसहस्सपाएहिं बहुगुणसारेहिं सिणेहपरमेहिं सुमित्तेहिं व अब्भंगिओ तेलेहिं विलासिणीयणेण । उव्वट्ठिओ य खरफरुससहावेहिं सिणेहाववहरणपडुएहिं खलेहिं व कसायजोएहिं । ण्हाणिओ पयईसत्थसीयलसुहसेवसच्छेहिं कलंकावहारेहिं सज्जण-हियएहिं व जलुप्पीलेहिं । एवं च ण्हायसुइभूओ दिव्वालंकारभूसियसरीरो देवंगवत्थ-जुयलनियंसणो य पविट्ठो नेमिजिणयंदभवणवरं । तत्थ य परियणोवणीयदिव्व-सुरहिपरिमलायड्डियगुमगुमिन्तभमरउलामोडियचरणचुम्बिएहिं गंधमल्लाइएहिं निव्वत्तिया भगवओ नेमिजिणिंदस्स महापूया । उप्पाडिओ य कप्पूरहरियंदणमयणकत्थूरियायट्ठो सयलगतयणयलमभिवासयंतो धूओ । तओ पणिवइओ भगवओ संखचक्कंकुसंकिए विमले पायकमलजुयले । उवविट्ठो य भगवओ पुरओ सुद्धवसुहावीडे । भगवओ विणिवेसियनयणमाणसो य एवं च थोउं समाढत्तो ।

अवि य- जय ! सयलभुवणभूसण ! जय विणिहयपंचबाणसरपसर ! ।

जय ! सिंहकंठसमज्जुइ जय नेमि सुरिंदपणिवइय ! ॥१॥

जय विमलनाणपयडियसमत्थतइलोयभावसम्भाव ! ।

जय बालभावभावियपरमत्थपयत्थसमयत्थ ! ॥२॥

तओ, एवं च सहरिसं थोऊण जिणवरिंदं पुणो पुणो नमिऊण पायकमलजुयलं गओ भोयणमंडवं । तत्थ निव्वत्तियसुहभोयणो पवड्डुमाणसुहज्जवसाओ सह वयंसएहिं अच्छिउं पयत्तो । इओ य निवेसि(इ)ए तेसिं जणणि-जणएण सब्भावे ते सह भारियाहिं मंतिउं पयत्ता । जहा पेच्छ पेच्छ, केरिसं संजायं । अन्नहा परिचिंतियमिमं, अन्नहा संजायं ति ।

भणियं च- “अन्नह परिचिंतिज्जइ सहरिसकंदुज्जएण हियएण ।

परिणमइ अन्नह च्चिय कज्जारंभो विहिवसेण” ॥३॥ []

तो एवं ठिए किं पुण कायव्वं अम्हेहिं । अहवा अत्थि अन्ने वि सोहणा वरा ता तेसिं दिज्जंतु एयाओ त्ति । इमं च वयणपरंपराए निसामियं वुत्तंतं तार्हिं दारियाहिं । तओ ताओ केरिसाओ जायाओ ।

अवि य- अणवरयदीहपसरियनीसासुण्हायमाणहिययाओ ।
 तेण तणुयाओ सहसा जायाओ पंडुरमुहाओ ॥४॥
 नेहवसनयणपसरियजलनिवहवहंतसित्तथणयाओ ।
 उन्नव(य)णाओ अट्ट वि मुहु मुहुमुज्झंतसासाइं(ओ) ॥५॥

तओ, एवं च कह कह वि समासत्थाओ एक्कमेक्कविणिच्छियाओ सव्वाओ वि
 जणए भणिउं समाढत्ताओ-‘किमेवं तुब्भे अभिमन्तेह’ !

अवि य- सहयारमंजरीदिव्वपरिमलं किं कयाइ मोत्तूण ।
 अहिलसइ भसलजूहं सुकुसुमियं जइ वि निंबवणं ॥६॥

तहा- सव्वन्नुवयणवित्थरपरमत्थपयत्थलद्धसब्भावो ।
 किं रमइ को वि भमिओ कुसासणे मूढदिट्ठी वि ॥७॥

तहा- खरनहरतिक्खदारियकरिकुंभकरंकलिहणदुल्ललियं ।
 सीहं मोत्तूण पइं किं सीही जंबुए रमइ ॥८॥

तह जो लडहविलासिणिसमंतओ नयणबाणछन्नो वि ।
 न वियारेणं घेप्पइ तं मोत्तुं कस्स दिज्जामो ॥९॥

ता सव्वहा विमा एवमभिमन्तेह; किं तस्स दाऊण अम्हे अन्नस्स दिज्जामो त्ति ।
 जओ लोयसुइ वि सुव्वह-“सकृत् कन्याः प्रदीयन्ते” इति । अन्नं च जइ सो कह
 वि मुणालतंतुवलएहिं मत्तदिसागओ व्व सव्वत्थ अपरिखलियपयावो विसय-
 सुहतणहानिबंधणेहिं अज्जेव काही पव्वज्जारयणगहणं ता सोहणं, अम्हे वि तेणेव समं
 अणुपव्वइस्सामो । जइ पुण कइ विदियहे अम्हाणुग्गहं कुणमाणो केण वि अम्ह
 गुणेणेव विलंबिही तहा वि सोहणं चेव त्ति । तओ इमं च तेसिं निच्छओ(यं) नाऊण
 सहरिसेहिं सव्वइब्भेहिं निवेइयं उसहदत्तस्स । जहाउज्जमसु सयलसामग्गीए ।
 पडिवन्नं च तेण । तओ किं कीरिउं पयत्तं? -विरइज्जंति मंचसालाओ, उवणिज्जंति
 महाकुलालाई, मंडिज्जंति धवलहराई, मंडिज्जंति(?) महाभवणभित्तीओ, घडिज्जए
 कलहोयं, कीरंति उल्लोवट्ठी(चा?), निमंतिज्जइ बंधुयणो, सक्कारिज्जंति महा-
 खंडगज्जाई, उवक्कीरिज्जंति भक्खावेसेसाईं ति । सव्वहा वि पगुणीकयं सव्वमुवगरणं
 ति । समागओ य पूरंतमणोरहहलफडा(ला)णं उभयकुलाणं पि विवाहमंगलदियहो ।

तओ कयाइं देसवेसकुंलसमयसूयगाइं असेसाइं मंगलकोउयाइं ति । तओ इमंमि य अवसरे अत्थगिरिसिहरमइलंबिओ दिणयररहवरो ।

अवि य- संकुचियनियपयावो अत्थमणं पेच्छ कहमहं पत्तो ।

साहणहेउं नज्जइ अवइन्नो महियलंमि रवी ॥१०॥

अत्थमिए रविदइए संज्ञा नवरंगपाउयसरीरा ।

पु(बु)डुणहेउं नज्जइ उच्चलिया उयहिसलिलंमि ॥११॥

रविनरनाहेऽत्थमिए भुयणं ओपेच्छ कसिणदेहेहिं ।

तमभिल्लेहिं गसिज्जइ व(ध)णियं संरुद्धमग्गेहिं ॥१२॥

असमंजससंगसिए भुवणे रोसेण धमधमेंतो व्व ।

किरणसरेहिं वहंतो तमवक्खं पसरिओ चंदो ॥१३॥

इयरेसिं [च] पओसे समंतओ चंदकिरणसंपसरे ।

सज्जणहियए व्वऽमले आणंदियसव्वजंतुजणे ॥१४॥

तओ सो जंबुणामकुमारो ण्हायसुइभूओ धवलधोयवत्थजुयलनियंसणो सिय-चंदणचच्चियसरीरो, वंदियगोरोयणो, सिद्धत्थयरइयपवरतिलओ, खंधरावलंबियसिय-कुसुमसुरहिदिव्वदामो, सयलसयणपरियरिओ, नयरइब्भजणेण य अणुगंममाओ, वयंसयसत्थसमुववेओ, पढंतेण बंदियणएणं, पगीयमाणेहिं अविहवकलमंगलसएहिं, समंतओ खिप्पमाणाहिं सिज्जियसुरहिकुसुमदामंजलीहिं, पदीयमाणेण य महादाण-विच्छट्टेण, रसंतेहिं मुइंगपवणकंसालयसंखकाहलरवेहिं, जंबूदीवाहिवइअणाढिय-जक्खरायकयसंनेज्जो चलिओ ससुरहरं । सुहदिणलग्गजोयवारमुहुत्ते य आरूढो विवाहवेइमंडववरं । तत्थ य निव्वत्तियसयलकेउयकरणीयविहाणेणं, लज्जोणयवयण-कमलवलंतनयणकडक्खपेच्छिरीणं, गहियं तेसिं दारियाणं करं करेणं ति । तओ एवं च विहिणा निव्वत्ते पाणिग्गहणे, पसाहिए य सयलासेसकरणीए, तओ(?) आरूढो जंबुणामकुमारो सह दारियाहिं, कंचणमणिरयणमयगलदसणविणिम्मविए सिवियारयणे त्ति । तओ पलंवधरियसियायवत्तो, निवडंतपदोलायमाणसियचारुचामरजुयलो मंगलवाढयजयजारवपूरियसयलदियन्तो कमेण य गच्छमाणो संपत्तो जिणभवनं ति । तत्थ य अवयरिओ सिवियाओ । पविट्टो य विहिपुव्वयं सह मणहरपियाहिं

जिणभवणे । तओ निव्वत्तियं पूयोवयाराइयसयलं जिणबिम्बाण करणीयं । थुणितं समाढत्तो ।

अवि य- कंमकलंकविमुक्के जम्मणजरमरणवाहिपरिहीणे ।
 लोअग्गमग्गपत्ते सव्वे वि नमामि जिणयंदे ॥१५॥
 अट्टसयलक्खणधरे पाए सुरविंदचंदपरिसहिए ।
 तित्थयराणं नमिमे(मो) सव्वेहिं कम्ममलमुक्के ॥१६॥
 इय थोऊण सहरिसं तिहुयणनाहाण जिणवरिंदाण ।
 पणिवइओ पयकमले जंबुकुमारो सह पियार्हिं ॥१७॥

तओ एवं च-कयपणामपूयोवयारो सहरिसपईयमाणसयलसमागयलोयमग्गो नीहरिओ जिणभवणाओ । तेणेव य विहिणा संपत्तो नियमंदिंरं ति । तत्थ वि सुरहिपइन्नकुसुमदामविलंबियपवराहिरामं, कप्पूरेणुकुंकुमकेसरलवंगकत्थूरियसुरहि-गंधट्टपूरपूरियं, विप्फुरमाणुब्भडपोमरायसमुज्जोइयओवरं नाणावयारचीणंसुयमहासमुल्लोय-कयपवरवित्थरं चलमाणमत्तमहुयरझंकारमुहलियमुहरवं पविट्ठो कुमारो वासहरं ति ।

तत्थ वि नाणामणिरयणमुत्ताहलविहूसिएसु, चामीयरविणिंमवियमहाभद्दासणेसु सह जणणिजणएहिं उवविट्ठो जंबुकुमारो । ताओ वि पोमरायमणिखइयकणयपवरपहासणेसु निसन्नाओ उभयपासेसु कुमारस्स अट्ट वि दइयाओ । तओ एवं च, सुहासणोवविट्ठण तत्थ के वि हरिसतोसनिब्भरा गायंति लोया । अन्ने उण सहरिसं पणच्चंति । अन्ने वीणावेणुमुयंगमहुसरवाखित्तमाणसा निसुणंति । अवरे य नाणावयारकीलाविसेसवावडा मुइयमाणसा कीलन्ति विविहकीलाविसेसेहिं ।

[प्रभवराजकुमारवर्णनम्]

तओ एवं च हरिसि(स)तोसनिब्भरमणे सयलसमागयलोए किं जायं ? विजय-उरनिवासिणो वीससेणस्स रन्नो तणओ परक्कमाहिमाणधणो सयलविन्नाणकला-कलावकुसलो पहवो नाम रायकुमारो । तस्स य पहु नाम कणीयसो भाया । पिउणा य वीससेणेण पहवकुमारं विलंधिऊण तस्स दिन्नं रज्जं । पहवो य अभिमाणधणो निग्गओ तस्स रज्जाओ ।

भणियं च- “मन्नइ य तणसमाणं पि परिहवं मेरुमंदरसरिच्छं ।

को वि जणो माणधणो अवरो अवरो च्चिय वराओ” ॥१८॥ []

अन्नेहिं वि भणियं-“अवि उडुं चिय फुट्टंति माणिणो न य सहंति अवमाणं ।

अत्थमणे विय रविणो किरणा उडुं चिय फुरंति” ॥१९॥ []

तओ सो समस्सिओ य विंझगिरिं सह भडसमूहेण । तओ तत्थट्ठिओ घाएइ गामे, लूडेइ सत्थे, करेइ चोरियत्तणं, देइ उक्खंदे, वावाएइ पच्चन्तनरवइसमूहे । सव्वहा तत्थट्ठि[ओ] असज्झो सो सयलनरवईणं पि । तओ सो खोलपुरिसेहिंतो णारुण इमं जंबुणाम विवाहइयरं समागयं च इब्भसमूहं, बहुरयणकोडिकं चणविहूसियं जणसमूहं । तओ समागओ पच्चलचोरसमन्निओ सो, अवसोयणितालुग्घाडणविज्जाहिं समंतओ सुपसिद्धकित्ती । पविट्ठो य उस्सहदत्तभवणं । दिट्ठो य जंबुकुमारपमुहेहिं । केरिसा ते चोरभडा ? ।

अवि य- उद्धनिबद्धुब्भडकेसकलाववियडजूडया,
चंदणवहललेवपरियड्ठियपवरछेवया ।
कुवियभुयंगसरिसधणुवावडवामहत्थया,
भीसणतिक्खबाणदाहिणकरवरा चोरय त्ति ॥२०॥

अवि य- दिट्ठोयताण मज्झे पीणनिरन्तरविसालवच्छयलो ।
आयं वदीहपम्ललोयणजुयदीहभुयदंडो ॥२१॥

तओ तेण अउव्वमुत्तिणा पहवाभिहाणेण चोरसेणावइणा अवसोविओ अव-
सोयणिविज्जाए जंबुकुमारो त्ति । सत्तहत्थवहिववत्थियसयलो जणसमूहो । तओ ते
तस्स तक्करभडा घेतुं पयत्ता रयणमुत्ताहारवत्था हरणमाईअच्चंतमहग्घे महालंकारे
जणस्स । तओ इमं च एवं असमंजसं दट्ठुण ताओ दारियाओ केरिसाओ किं काउं
समाढत्ताओ ?-

अवि य- वेविरपओहराओ भयतरलतरत्तपुन्नवयणाओ ।
सरणं त्ति मगिरीओ जंबुकुमारंमि लीणाओ ॥२२॥

तओ भणियाओ जंबुणामेण-

अवि य- मा भयह मुद्धडाओ इमाण अहमाण चोरपुरिसाण ।
जिणवयणभावियंमी ममंमि पासट्ठिए एत्थ ॥२३॥

भणिया य ते जंबुकुमारेण ।

अवि य- भो भो ! अहमा पुरिसा ! निल्लज्जा ! मा छिवेह जणनिवहं ।

होऊण णिंदणीया कह एत्थ तुमे समल्लीणा ॥२४॥

इमंमि य भणिए समकालमेव थंभिया पभवविरहिया सव्वे वि चोरभडा । दिट्ठो य पभवेण निच्चेट्ठा । अवलोइयं च जंबुणा मुहुत्तंतेण । जाव केरिसो दिट्ठो ?

अवि य- पवरविमाणनिसन्नो व्व सुरवरो सुरवहूहिं समवेओ ।

लीलालसपेसियदीहलोयणो कंतिपडिपुन्नो ॥२५॥

तओ दट्ठूण तं चित्तिउं पयत्तो । कह-

किं होज्ज एस चंदो तारागणपरिवुडो समोइन्नो ।

नं सो कलंकमलिणो विहडइ सयलो इमो जेण ॥२६॥

ता होज्ज देवराया अच्छरणपरिगओ विमाणत्थो ।

विहडइ सो सहसक्खो निमेसकलिओ इमो जेण ॥२७॥

ता महुमहणो एसो हवेज्ज गोवीहिं संजुओ नूणं ।

विहडइ सो गयपाणी न होइ कसिणो इमो जेण ॥२८॥

रइबहुरूवविणिमियकलिओ किं होज्ज कामदेवो त्ति ।

विहडइ सो मयरइओ संपुन्नंगो इमो जेण ॥२९॥

अह वा किं मम इमेण विहडणसहावेण वियप्पंतरचित्तेण । सव्वहा वि इमं एत्थ ताव पहाणं । जं इमस्स पुरिसरयणस्स सयासाओ इमाण थंभणमोहणीणं विज्जाणं गहणं ति । एवं च चित्तिऊण भणियं पभवेण ।

अवि य- चंदो इंदो व्व तुमं महुमहणो होज्ज चक्कवट्ठी व ।

जो वा सो वा सुपुरिस ! एक्कं विन्नत्तियं सुणसु ॥३०॥

अन्नं च- लज्जामि तुम्ह पुरतो नियकुलकहणेण तह वि साहेमो ।

पायडकित्तिस्स सुओ रन्नो हं वीससेणस्स ॥३१॥

पभवो नामेण अहं तुह दंसणमेत्तजायसंतोसो ।

ता तह कीरउ सुवुरिस ! वित्थारं जाइ जह नेहो ॥३२॥

अन्नं च- अकए व्व कए व्व पिए पियकारं ता जणंमि दीसंति ।

कयविप्पिए पियं जे करेति ते दुल्लहा हुंति ॥३३॥

भणियं च- “सुयणो सुद्धसहावो अणुसासिज्जंतो वि दुज्जणजणेण ।

छारेण दप्पणो इव अहिययरं निम्मलो जाओ” ॥३४॥ []

“दुज्जणजणवयणकिलामिओ वि पयइं न सज्जणो मुयइ ।

पज्झरइ राहुमुहसंठिओ वि अमयं चिय मयंको” ॥३५॥ []

निक्कवकंममुवगओ अहयं चोरो त्ति लज्जिमो तुज्झ ।

तह वि हु कीरउ एक्कं सुपुरिस ! विन्नत्तियं मज्झ ॥३६॥

देसु ममं एयाओ विज्जाओ थंभ-मोक्खणीयाओ ।

अवसोवणि-तालुग्घाडणीओ मज्झं गहेऊण ॥३७॥

पसरंतदंतकिरणं भणियं लीलाए जंबुणामेण ।

पहव ! निसुणेषु पयडं परमत्थं ताव तं एत्थ ॥३८॥

जं नेहो गुरुभावं निज्जइ तं सुपुरिसाण करणीयं ।

जं पावविज्जगहणं दाणं वा तं निसामेह ॥३९॥

संसारकारणाहिं जम्मणजरमरणसोगभूयाहिं ।

बहुपावकारगाहिं विज्जाहिं न किंचि मह कज्जं ॥४०॥

गहिया य मए विज्जा जंमणजरमरणसोगनिट्ठवणी ।

मोक्खस्स साहणी जा जिणवयणुवएसमाल त्ति ॥४१॥

नत्थि मम कावि अन्ना विज्जा जा थंभमोहणी पावा ।

जह थंभिया य चोरा तह एत्थ तुमं निसामेह ॥४२॥

मम सीलतोसियाए पवयणदेवीए थंभिया एए ।

तुह विज्जाओ वि महं पहवंति न सीलकलियस्स ॥४३॥

अन्नं च- तणमिव विहाय एवं सव्वं धणपरियणं पहायंमि ।

गिण्हस्सं गुरुमूले असिधारसमं वयं घोरं ॥४४॥

चत्ता य मए सव्वे जावज्जीवं पि सव्वआरंभा ।

गहियं च बंभचेरं जावज्जीवं गुरुसयासे ॥४५॥

जं पुण सेसं पाणिग्गहणं कयं मए सोम ! ।
तं गुरुयणतोसत्थं वरमुहदंसणनिमित्तं च ॥४६॥

तओ एवं च-निसामिरुणं पभवो विमहयक्खित्तमाणसो अणेयमणिपहासमूह-
समुज्जोइए उवविट्ठो कोट्टिमतले । चिंतिउं च पयत्तो-अहो पेच्छ पेच्छ इमस्स ललिय-
क्खरालावत्तणं, महुरपियजंपिरी य अमयमया इव इमस्स वाणी । सव्वहा वि इमस्स
रूयजोव्वणलायन्नगुणविहवपरियणाण(रिण्णाण) अणण्णसरिसस्स पेच्छ केरिसो चेव
इमस्स अणुरूवो । एक्कपएणेव महाविरागयासमन्निओ धंमाणुराओ समुप्पन्नो ।
इमाओ य रूयजोव्वणविलासलायन्नगुणोहामियसुरासुरसुंदरीओ पवराहिणवुव्वाहिय-
जायाओ वि मौत्तुकामो इव नज्जइ एसो । ता न सुट्ठु सुंदरं इमं । अहवा दे उवइसामि
इमस्स उवएसं । कयाइ तमणुचिट्ठइ त्ति चिंतिऊण भणियं-

अवि य- सुवुरिस ! धम्मस्स फलं पत्ताओ ते इमाओ विलयाओ ।

माणेसु विसयसोक्खं एयाहि समं तुमं ताव ॥४७॥

पच्छा पुणो वि धमं विगयवओ गुरुयणस्स पासंमि ।

जह इच्छियं करेज्जसु वारेमो नो वयं तुब्भे ॥४८॥

इह जंमसुसंपयभोगफलं लहिऊण परत्त सुदेवसुहं ।

गुणपालणसंजमनाणजुया अइरेण लहंति ते मोक्खपहं ॥४९॥

इय जंबुनामचरिए विवाहपरिमंगलो त्ति नामेण ।

पहवस्स दंसणकरो उद्देशो इह समत्तो त्ति ॥छा॥ ॥५०॥



॥ अट्टमो उद्देसओ ॥

तओ इमं च निसामिऊण भणियं जंबुणामेण-‘सोमं ! निसुणसु, जं तए भणियं जहा माणसु ताव विसयसोक्खं तस्स परमत्थं ति । कुओ एत्थ संसारसमावन्नाणं जाइजरा-मरणरोगसोगपर(रि)पीडियाणं रागदोसगहियाणं विसयपिसाअवहियचेयणाणं च सत्ताणं सुहं ति । न किं पि सुहं, बहुं च दुक्खं ति । एत्थ य सुण एक्कं नायंमि (ति ?)’ ।

[जंबुणा कहियो महुबिंदुदिट्ठतो ।]

जह को वि एत्थ पुरिसो अच्चंतं संपयाए परिहीणो ।

दालिद्दुक्खतविओ विणिग्गओ निययदेसाओ ॥१॥

परदेसं गंतुमणो गामागरनगरपट्टणसणाहं ।

लंघेऊण सएसं कर्हिचि पंथाओ पब्भट्ठो ॥२॥

तओ इओ तओ भमंतो य पत्तो सो सालसरलतमालतालालिबउलतिलयनिचुल्लं-कोल्लकलंववंजुलपलाससल्लइतिणसर्निबकु डयनग्गोहखइरसज्जुज्जणंबजंबुयनियरगुविलं दरियमहिसजूहबहिरियमुक्कनायदिसं महाडविं । तीय तण्हाछुहाभिभूएणं दरियवणदुट्ठ-सावयरवायन्नणओ तत्थ लोललोयणेणं, दीहपहपरिसममुप्पन्नसेयजलधोयगत्तेण, मूढदि-सायक्कविसमपहखलंतपायसंचारं परिभमंतेण, दिट्ठो य पलयघणवंद्रसंनिभो तट्टुविया-णेयपहियजणवड्डिउच्छाहो, गद्दभगज्जियरवायू(वू?)रियवियडरन्नुद्देसो सियवसण-परिहाणनिसियकरवालवावडग्गहत्थविगरालरूवदुट्टरक्खसपायालो मग्गओ तुरियतुरिय-मवधावंतो दुट्टवणहत्थि ति । तओ य तं दट्टूण मच्चुभयवेविरंगो अवलोइयसयलदि-सामंडलो पुव्वदिसाए उदयगिरिसिहरसन्निभं निरुद्धसिद्धगंधव्वमिहुणगयणपयारमग्गं महंतं नग्गोहपायवं । अवलोइऊण परिचित्तं पयत्तो । कह ?-

जइ कह वि आरुहेज्जा रविसंदणतुरयभग्गवेयरसं ।
 वडपायवं महंतं छुट्टेज्ज तओ गइंदस्स ॥३॥
 परिचिंतिऊण एवं भीओ कुससूइभिन्नपायालो ।
 वेएणं संपत्तो तुंगं वडपायवं अह सो ॥४॥
 दट्टूण तं विसन्नो दुल्लंघं गयणगोयराणं वि ।
 उत्तुंगखंधवित्थिन्नपरियं गुहिरनग्गोहं ॥५॥
 आरुहिऊण(हिउं) असमत्थो अच्छइ जा दुट्टगयवरो ताव ।
 संपत्तो वेएणं आसन्नं तस्स पुरिसस्स ॥६॥
 भयवेविरंगमंगो समंतओ खित्तनयणतरलच्छे ।
 सहस त्ति नवर दट्टूण भीममयडं तणच्छइयं ॥७॥
 अप्पा तेण निहित्तो निरावलंबं धस त्ति धरणीए ।
 वित्थिन्नभित्तिरूढो सरथंभो तत्थ य विलग्गो ॥८॥
 पडणाभिघायकुविए पेच्छइ य भुयंगमे य सो भीमे ।
 चत्तारि डसिउकामे विसलवपज्जलियनयणजुए ॥९॥
 अन्नं पि डसिउकामं दीहरदाढाललंतदोजीहं ।
 रत्तच्छकसिणदेहं पेच्छइ सहस त्ति सोऽयगरं ॥१०॥
 पेच्छइ य तिक्खदाढे पंडर-कसिणा य मूसगे दुंनि ।
 घोरे महारउद्दे उम्मूलंते य सरथंभं ॥११॥
 अह तेण गइंदेणं कुविएण नरं अपावमाणेण ।
 वेज्जाइं वि दिन्नाइं नग्गोहदुमस्स अच्छत्थं ॥१२॥
 संचालियस्स सहसा खुडिऊणं वियडसाहसं भूयं ।
 पडियं धस त्ति उवरिं महुजालं तस्स कूवस्स ॥१३॥
 अह कुवियमहुयरीण य समंतओ डसियमाणदेहस्स ।
 सीसंमि कह वि पडिया महुर्बिदू तस्स पुरिसस्स ॥१४॥

सीसाओ गलियाणं कह वि हु वयणंमि ते उ संपत्ता ।
 आसाइरुण इच्छइ पुणो वि अन्ने वि निवडंते ॥१५॥
 अगणेउमुरगऽयगरऽयडकरिंदुरमहुयरीण य भयाइं ।
 महुबिंदुसंदसायणगिद्धो व सो हरिसिओ जाओ ॥१६॥
 एयंमि अवसरंमी कुंडलघोलंतकन्नजुयलेण ।
 गयणयलसंठिएणं दिट्ठो विज्जाहरभडेण ॥१७॥
 करुणोववन्नएणं भणिओ सो तेण देसु करमेक्कं ।
 अयडाओ भीमाओ उद्धरिमो जेण तं खिप्पं ॥१८॥
 भणिओ सो पुरिसेणं मा कड्डसु देव ! कह व मे पत्ता ।
 असणाइएण दुलहा महुबिंदू दिव्वजोएण ॥१९॥
 मूढो एस वराओ ममंमि संते इमस्स वसणस्स ।
 उत्तरिरुणं नेच्छइ चिंतेउं सो गओ ताहे ॥२०॥
 भणि(वि)याण मोहविहडणनिमित्तमेत्तं पयंसियं एयं ।
 परिगप्पियमक्खाणं, उवसंहारं इमस्सेयं ॥२१॥
 “जो पुरिसो सो जीवो अडवी उण चउगई उ संसारे ।
 सो गयवरो य मच्चू निसायरिं तं जरं जाण ॥२२॥
 वडपायवो य मोक्खो वणगयमच्चुभयवज्जिओ दूरं ।
 विसयाउरेहि नवरं आरुहिउं सो न सक्को त्ति ॥२३॥
 मणुयभवो उण अयडो भुयंगमा जाण हुंति उ कसाया ।
 दट्ठो जो तेहिं नरो कज्जाकज्जं न सो मुणइ ॥२४॥
 सरथंभो आउक्खं तमुंदरा किण्ह-सुक्किला पक्खा ।
 उम्मूलयंति दोन्नि वि अहोनिंसं पहरदाढाहिं ॥२५॥
 महुरिगिणो य जो सो विविहा ते वाहिणो मुणेयव्वा ।
 संतत्तो तेहिं नरो उव्विग्गो भमइ निच्चं पि ॥२६॥

रुद्धे य अयगरो जो सो नरओ तिव्ववेयणाकलिओ ।
 निवडियमेत्तो य नरो जत्थ य विविहं लहइ दुक्खं ॥२७॥
 महुबिंदू उण भोए विवायकडुए य दारुणे घोरे ।
 मुहरसिए अइतुच्छे किंपागफलोवमे पावे ॥२८॥
 विज्जाहरो य जो सो धम्मायरिओ त्ति सो मुणेयव्वो ।
 संसारकूववडियं उत्तरइ जो य पाणिगणं ॥२९॥
 तत्थाभविओ नेच्छइ कालं उद्दिसइ दूरभविओ वि ।
 उत्तरइ भणियमेत्तो भणि(वि)ओ जो सिद्धिसुहगामा ॥३०॥
 जेत्तियमेत्तं च सुहं नरस्स कूवंमि निवडियस्स भवे ।
 तेत्तियमेत्तं जइ पर इहेव विसयाउरस्स भवे ॥३१॥
 ता विसयाण कए णं अधुवो(बुधो?) जो नवर एत्थ लोयंमि ।
 अयगरसुहसमरूवे नरयंमि [स] खिवइ अप्पाणं ॥३२॥
 जो उण होइ सयन्नो मंगुल इयराण जाणइ विसेसं ।
 महुबिंदुविसयलुद्धो नरयंमि न खिवइ अप्पाणं ॥३३॥
 पत्ते उद्धरणसहे संसारयडाओ दुक्खपउराओ ।
 आयरिए को मूढो उत्तरइ जो न अप्पाणं ॥३४॥
 अह वा तुमं पि साहसु किं सोक्खं तस्स कूवपुरिसस्स ।
 जह तस्स तह इमस्स य संसारपवन्नजीवस्स ॥३५॥

तओ इमं च निसामिऊण चोरसेणावइणा भणियं पभवेण ।
 अवि य- सुपुरिस ! एवं एयं न चलइ तिलतुसतिभायमेत्तं पि ।
 थोवं जइ पर सोक्खं बहुदुक्खं तस्स पुरिसस्स ॥३६॥
 किंतु तहा वि सुणिज्जइ लोयसुई जेण भत्तुणा भज्जा ।
 पालेयव्वाअ(ऽ)वस्सं अन्नह कह होउ सा एत्थ ॥३७॥
 ता उवभुंजसु भोए निज्जियरइरूवविहवसाराहिं ।
 एयाहिं समं सुवुरिस ! कइय वि संवच्छरे जाव ॥३८॥

पच्छ करेसु विउलं.....।

कीरउ एस पसाओ एयाणं निययजायाणं ॥३९॥

अन्नं च- इमे य सयणा जणणी जणए य नेहपडिबद्धे ।

कह मुंचसि दीणमुहे ता मुंचसु एयमसगाहं ॥४०॥

तओ इमं च निसामिऊण भणियं जंबुणामेण-

जं भणियं- कह मुंचसि जणणी जणए य नेहपडिबद्धे ।

तं पहव ! तुमं निसुणसु परमत्थं जणणि-जणयाणं ॥४१॥

को कस्स एत्थ जणओ का वा जणणि त्ति को भवे पुत्तो ।

अरहद्वघडीसरिसे संसारे को हवे सयणो ॥४२॥

जा होइ एत्थ माया भइणी होऊण सा भवे जाया ।

जणओ वि होइ पुत्तो सत्त मित्तो पुणो भाया ॥४३॥

सव्वे वि जणणि-जणया जणओ(णी?) जणए अहं पि सव्वेसिं ।

जीवाणं संसारे तम्हा को नेहपडिबंधो ॥४४॥

भणियं च एत्थ जम्हा जिणवरमग्गाणुसारिणा कविणा ।

केणावि सुण फुडत्थं साहिप्पंतं पयत्तेण ॥४५॥

“एमेव महामोहेण मोहिया माणुसत्तणं लहिउं ।

परलोयहियं न कुणांति नेहपासेहिं पडिबद्धा ॥४६॥ []

जो चिंतिज्जइ आसन्नबंधवो एस वसणकालंमि ।

संपत्ते मह होही सो वि मरंताण किं कुणइ ॥४७॥ []

सयणेण धणेण व संचिएण बुद्धीबलेण विज्जाए ।

किं कीरउ विउलेण वि सहसा य समुट्टिए मरणे ॥४८॥ []

कंममओ संसारो कम्मं पुण नेहबंधणं जाणे ।

नेहनियलेहिं बद्धा भमंति संसारसागरे जीवा ॥४९॥ []

अधुवं चलं असारं दुत्तयं वाहिवेयणापउं ।

तुसमुट्टि व्व असारं किं न मुणह रित्तयं लोयं ॥५०॥ []

जत्तो जत्तो गम्मइ तत्तो तत्तो जरा य मच्चू य ।
 कलुणा य विप्पओगा नत्थि सुहं किं पि संसारे ॥५१॥ []
 जम्मण-मरण-परंपर-संजोग-विओग-दुक्खसंतत्ता ।
 तिलपीलए व चक्के भमंति संसारचक्कंमि ॥५२॥ []
 जीयंमि चले पेमंमि चंचले जोव्वणंमि छणभूए ।
 नि(दि ?)वसं पि जं विलंबह तं कालं बंधिया होइ ॥५३॥ []
 अबुहो जणो न याणइ ससरिरे अत्तणो पडन्ताइं ।
 जीवस्स जोवणस्स य दिवस-निसाखंडखंडाइं ॥५४॥ []
 निसि-दियहतिक्खदंतं तुरियं परिभमइ कालकरवत्तं ।
 छिंदइ आउक्खंभं आहारं देहभवणस्स” ॥५५॥ []

अन्नेहिं वि भणियं-

“जीयं जलबिंदुसमं संपत्तीओ तरंगलोलाओ ।
 सुमिणयसमं च पेम्मं जं जाणह तं कुणिज्जाह” ॥५६॥ [वैरा.श./गा.४४]
 ता हो ! संसारंमि पलित्ते जंमजरामरणरोगसंतत्ते ।
 जो बोहेइ अबुद्धं सो तस्स जणो परमबंधू ॥५७॥
 जं पुण भुंजसु भोए इमाहिं सह ताव ते इमं भणियं ।
 तं सुव्वउ परमत्थो इमाण पावाण विसयाणं ॥५८॥
 “विज्जुलया इव चवला विसपरिणामं व दारुणा विसया ।
 वेसित्थिसरूवं पिव बहुसामन्ना इमे विसया” ॥५९॥ []
 “मोहणवेल्लि व्व इमं मोहिंति नरं सुपंडियं जइ वि ।
 नेहगहिया वि विमुहा पिया वि तह अप्पिया हुंति” ॥६०॥ []

अवि य- “अथिरा चवला दुट्ठा घोरा रोद्धा सुदारुणा पावा ।
 नरयगइपंथभूया विवज्जणीया अओ विसया” ॥६१॥ []
 विसयामिसमूढमणो पुरिसो जणणिं पि वच्चए पावो ।
 भइणिं पि कुणइ जायं कुबेरदत्ता व्व मूढमणो ॥६२॥

तओ पभवेण भणियं-‘अहो महाणुभाव जंबुकुमार ! को सो कुबेरदत्तो, कहां च तेण जणणिगमणं कयं, सहोयरा पुण जाया कय त्ति ? तओ जंबुणामेण भणियं निसुणसु’ ।

[कुबेरदत्ताकहाणयं ।]

अवि य- उत्तुंगधवलपायारपरिगया पवरगोउरसणाहा ।

लडहविलासिणिजुत्तो परिकलिया देवभवणेहिं ॥६३॥

अत्थि जएसु पसिद्धा जिणिंदवरथूहमंडियहिरामा ।

पासजिणजंमभूमी नयरी महर त्ति नामेण ॥६४॥

तीय य नयरीए आसि कुबेरसेणा नामा एक्का गणिया । अन्नया य सा आवन्नसत्ता संजाया । थोवडियहेहिं य बाहिउं पयत्तो तीए सो गब्भो । दंसिया य जणणीए विज्जाणं । तेहिं भणियं-‘जमलगब्भदोसेणं इमीए बाहा संजो(जा)य त्ति । न उणं अन्नो को वि वाहिविसेसो’ । तओ एवं च मुणियपरमत्थाए जणणीए सा भणिया-‘पुत्त ! मा तुह पसूइसमए देहपीडागारी इमो जमलगब्भो हवेज्जा । ता इमं केण वि दिव्वजोएण गालेमो से गब्भं । तओ निरुवहयसरीरा तुमं हविस्ससि, परिभोगारिहा य । पुत्तभंडेण य न किं पि अम्हाण तहाविहं पओयणमत्थि’ । तीए कुबेरदत्ता एन पडिवन्नमिमं वयणं ति । भणिया य जणणी-‘अंमा ! अन्नो को वि परूढगब्भे विणिवाडिज्जमाणे सरीरविणिवाओ भविस्सइ । ता जायाअ(ऽ)णंतर-मुज्झिस्सामो’त्ति । पडिवन्नं च तीए । तओ अन्नया य उचियसमएण पसूया सा दारयं दारियं च । तओ जणणीए भणिया सा-‘परिच्चइज्जंतु एयाइं बहुदुक्खकारयाइं । मा तुमं एयाणि(णं?) कामुगपुरिसाणं उवहासणिज्जा होहिसि । जहा दुगुणदुगुणं एसा पसवइ’ त्ति । तओ तीए भणियं-‘जइ ते एवं निब्बंधो ता पालिज्जंतु दसअहोरत्ताइं । तओ उज्झिस्सामो’ । तओ तीए अवच्चनेहाणुराएण दोमुद्दाओ कुबेरदत्त-कुबेरदत्ता-नामंक्रियाओ विणिमवावियाओ । पूरे य दसअहोरत्ते मणिरयणसुवन्नपडिपुन्नासु मंजूसासु निहित्तमेक्केक्कं तेसिं दारगदारिगाणं । पवाहियाणि य जमुणानईए । तओ तीए पवाहेण भी(ती)रमाणाणि पत्ताणि सोरियनयरासन्ने । तओ तहाविहभवियव्वयाए किं जायं तेसिं ?-

अवि य- “जं जेण जत्थ जइया पावेयव्वं सुहं च दुक्खं वा ।
सो पावइ तमवस्सं जइ वि विवक्खे जयं सव्वं” ॥६५॥ []

“वसणावडिओ वि नरो मच्चुमुहादसणविवरपत्तो वि ।
पुन्नापुन्नाण फलं पावइ अइरेण सव्वो वि” ॥६६॥ []

भणियं च- “पुव्वकयकंमकंडुल्लएण जं जस्स किं पि उक्किरियं ।
निययनिडाले दुक्खं सुहं व तं तेण भोत्तव्वं” ॥६७॥ []

तओ एवंविहभवियव्वयानिओएण सोरियउरे पच्चूससमुट्ठिएहिं दोहिं इब्भवयंसएहिं दिट्ठाओ ताओ मंजूसाओ । गहियाओ दोहिं वि एक्केक्का । नीयाओ य सगिहेसु । तत्थ य निरिक्खियाओ । दिट्ठाणि य ताणि दारग-दारिगाणि अच्चन्तरूवसमंनियाणि । समप्पियाणि य निययजायाणं । तओ निवेइयं जहा पच्छन्नगब्भाओ एयाओ पसूयाओ । कयं च महाबद्धावणयं दोहिं वि वणिएहिं । तओ कमेण सुहंसुहेण य परिवड्डियाणि । गहियाओ य कलाओ । संपत्ताणि य जोव्वणसिरिं । तओ तेहिं इब्भेहिं नियसंतइनिमित्तं परोप्परमभिमंतिऊण जहा-जुत्तो एएसिं परोप्परं संबंधो । तओ दिन्ना कुबेरदत्तस्स कुबेरदत्ता । तओ एवं च वद्धंतमणोरहाणं समागओ कल्लाणदियहो वत्तं च महावि-भूर्इए तंमि दिणे पाणिग्गहणं । तेसिं च इमो कुलायारो जहा-वत्ते विवाहमंगले वहू-वरेहिं जूय-कीलापमोओ कायव्वो । तओ ताण वयंस-वयंसियासहियाहिं दोन्नि वि जूयकीलाए कीलिउं पवत्ताइं । तहाविहभवियव्वयानिओएण निज्जिओ तीए कुबेरदत्तो । तओ सहीहिं घेतूण तस्स हत्थाओ कुबेरदत्तनामंकियमुद्दा गहणनिमित्तं समप्पिया तीए कुबेरदत्ताए । तओ सा निव्वत्तेउं पवत्ता । तओ सरिसरूवपमाणनामगघडणं च पेच्छिऊण चिंतिउं पयत्ता-अहो किं पुण एयाणं कारणं समरूयत्ते मुद्दाणं ? न य मम इमं पइ भत्तारबुद्धी समुप्पज्जइ । ता भवियव्वमिहेत्थ कारणेण । कयाई एस मम भाया हवइ । इमं च एवं परिचिंतिऊण समप्पियाओ दो वि मुद्दाओ कुबेरदत्तस्स करे तीए । तओ तस्स वि दट्टूण ताओ तहेव चिन्ता समुप्पन्ना । लज्जिओ य तीए । तहावि किं पि भावं पयंसिऊण समप्पिऊण य तीए संतियं मुद्दं गओ जणणिसयासं । तओ सहसा वि काऊण महानिब्बंधेण पुच्छिया तेण निययसमुत्थाणं । तीए वि गरुयनिब्बंधं नाऊण जहाभूयं कहियं निरवसेसं । तओ तेण भणिया सा-‘अंब ! न सुट्टु सोहणं तुब्भेहिं समुट्ठियं । जमम्हाण अणज्जमाणाण संबंधो कओ’त्ति । तीए भणियं-‘वच्छ !

नेहमोहिहं कयमम्हेहिं एवमेवं । तहावि मा गच्छसु विसायं । हत्थगहणेण जइ परं दूसियाइं तुब्भे । न उण अकज्जसेवणेणं ति । ता विसज्जेमो नियगेहं इमं वहुं; तुज्झ पुण अन्नं किं पि तहाविहं अविबुद्धसंबंधं काहामो' । विसज्जिया य निययगेह(हे) दारिया । तीए वि जणणी तहेव निब्वंधेण पुच्छिया, कहियं च जणणीए जहावत्तं । तओ सा अन्नया य इमेण चेव वेरगेण सुव्वयगणिणीसयासे पव्वइया । सा य मुद्दा तीए पवत्तिणीवयणेण न परिचत्ता । वच्चए कालो । पढंतीए आगमं, चरंतीए चरणं, भावंतीए भावणाओ, कुणंतीए गुरुवयणं, समायरंतीए तवनियमसंजमं, भावयंतीए संसारसहावं, निंदंतीए विसयसंगं, पसंसंतीए जिण्णिदपणीयं धमं ति । एवं च विसुज्झमाणचारित्त-परिणामाए समुप्पन्नं ओहिनाणं ।

इओ य सो कुबेरदत्तो अन्नया गओ दिसायत्ताए । तत्थ वि संपत्तो महुरा-नयरीए । घडिओ यं तत्थ कुबेरसेणाए सह निययजणणीए । अच्छइ य तीए समं तं तारिसं विसयसुहमणुवंतो, पहव ! जं तं तुब्भेहि पसंसिज्जइ । तओ सो एवं तत्थऽच्छमाणो दिट्ठो तीए कुबेरदत्ताए साहुणीए ओहीन्नाणेण । चित्तियं च तीए-अहो ! कट्टमन्नाणं । पेच्छ पेच्छ केरिसं इमाणं संजायं ।

भणियं च- “अन्नाणंधो जीवो जत्थ भयं तत्थ मग्गए सरणं ।

अग्गि कीडपयंगा पडन्ति अन्नाणदोसेणं” ॥६८॥ []

अन्नेहिं वि भणियं-

“किं कट्ठं अन्नाणं.....एत्थ निंदियं लोए ।

अन्नाणंधो जीवो न मुणइ कज्जं अकज्जं वा” ॥६९॥ []

ता सव्वहा वि संसारमूलं इममन्नाणं ति । अन्नाणंधा य पुरिसा दुक्खेण विसएसु निरज्जंति ।

भणियं च- “दुक्खं नज्जइ नाणं नाणं नाऊण भावणा दुक्खं ।

भावियमई वि जीवो विसएसु विरज्जए दुक्खं” ॥७०॥ []

ता सव्वहा वि अपसंसणीया इमे विसया । उभयलोयविरुद्धं पि समायरंति पाणिणो इमेहिं मोहियमाणसा ।

अवि य- “गंमागंमं न याणइ वच्चावच्चं अहेयहेयं वा ।

विसयविसवेयघत्थो पुरिसो पेओ व्व पच्चक्खो” ॥७१॥ []

ता पेच्छ केरिसं उभयलोयविरुद्धं इमाण समावन्नं । तहा वि जइ संबोहिज्जंति एयाइं ता सोहणं हवइ । इमं च एवं परिचिन्तिऊणं सव्वं साहियं पवत्तिणीए । तओ ताण संबोहणत्थं समुच्चलियाओ अज्जाओ । पत्ताओ य म्हरं नयरिं । पविट्ठाओ कुबेरसेणाए गेहं । मग्गियाय ताहिं सा वसही । तीए वि सप्पणयाए होइऊण भणियाओ ताओ एवं-‘भगवईओ ! अहं केवलं जाईए गणिया, न उण समायारेण । जा(ज)ओ संपयं सुकुलवहु व्व एक्कपुरिसगामिणी अहं । ता अच्छह मम अणुग्गहं काऊणं ।’ ति । ठियाओ य ताओ तत्थ । तीए य गणियाए एक्को बालो पुत्तो । सा य तं बहुसो साहुणीणं सयासे मोत्तूणं गिहवावारं समणुचिट्ठइ । कुबेरदत्ता वि साहुणी ताइं दारगस्स जणणि-जणयाइं निरारंभाइं दट्टूण जहा तेसिं समवणगोयरं समभिगच्छइ, तहा तं बालयं तेसिं संबोहनिमित्तं खेलावणच्छलेण एवं परियंपइ ।

अवि य- भाया भत्तिज्जो मे पुत्तो तह देयरो तुमं बाल ! ।

तुज्झ पिआ मम भाया ससुरो पुत्तो पई जणओ ॥७२॥

माया वि तुज्झ बालय ! मम जणणी सासुया सवक्की य ।

भाउज्जाया य तहा बहुया इह चेव नायव्वा ॥७३॥

तओ इमं च एरिसं तेहिं निसामिऊण परिखेलावणं जायकोऊहलेहिं दोहिं वि वंदिऊण पुच्छिया सा अज्जा-‘भयवइ ! किमेरिसमसंबद्धकित्तणं तुमं कुणसि ? किं को वि एत्थ परमत्थो ? किं वा अघडमाणं पि एवमेवं तुमं पयंपसि एयस्स दारगस्स विणोयणत्थं ?’ तीए भणियं-‘सव्वमिणं सच्चं’ । तेहिं भणियं-‘कहं चिय ?’ । तओ तीए ओहिनाणावलोयणेण सव्वं परिकहियं । जहा जउणाए पवाहियाइं । जहा सोरियपुरे पत्ताइं । इब्भेहिं गहियाइं । पुणो वि दो वि परोप्परं विवाहियाइं । पयंसिया य सा मुद्दा कुबेरदत्तानामंकिया तेसिं । जाओ य तेसिं पच्चओ जहा एवमेयं न अन्नहा इमं भवइ ति । तओ निंदित्तं समाढत्तो कुबेरदत्तो अप्पाणं ।

अवि य- हा हा हो दुट्ठु कयं अयाणमाणेण मूढचित्तेण ।

महइमहंतं पावं दोण्ह वि लोयाण जमपत्थं ॥७४॥

जलणे जले समुद्दे पायाले वावि जइ वि पविसामि ।
 तह वि मम नत्थि सुद्धी निग्घिणकंमस्स पावस्स ॥७५॥
 पावाण य पावयरो सव्वाहंमाण तह य निद्धंमो ।
 दुट्ठाणमहं दुट्ठो निल्लज्जाणं पि निल्लज्जो ॥७६॥
 ता किं मम इह सेयं निग्घिणकंमस्स पावगारिस्स ।
 अहवा जइ परमरणं एवं मम विनडियस्स भवे ॥७७॥

तओ इमं च भणमाणो जाव मरणत्थं पहाविरुण घरवावीए अत्ताणं पक्खिविहि ताव
 घरिओ अज्जाहिं । भणिओ य-‘धम्मसील ! किमेयं तए बीयमकज्जं समाढत्तं ? ।’

अवि य- एक्कं तावेयं चिय बीयं कह कुणसि सोम ! अप्पवहं ।
 किं बुड्ढो बुड्ढो च्चिय ताव तलं पेच्छसे मुद्ध ॥७८॥
 एक्कं घोरं पावं तं चेव इमं तहा कुणसि मुद्ध ।
 जायंमि पलीवणए तणपूलं खिवसि तं मुद्ध ॥७९॥
 एक्कं कयं अकज्जं बीयं पुण निदियं इमं कुणसि ।
 मालस्स निवडियस्स य एसो उप्पिट्ठणपहारो ॥८०॥

अन्नं च- ण कयाइ पावपुंजो पावेण कएण सुज्झए सोम ! ।
 रुहिरविलित्तं वत्थं किं सुज्झइ सोणिणएणव ॥८१॥
 सुणएण भक्खियस्स य जरखेडीपिट्ठणं कयं तुमए ।
 जइ डसिओ सप्पेणं किं दिज्जइ तस्स विसपाणं ॥८२॥

अन्नं च जं तए भणियं जलाइसु निवडियस्स य नत्थि मम सुद्धी ता किं तत्थ
 पावसुद्धी दिट्ठा ?

अवि य- जल-जलणे य समुद्दे निवडियमेत्तस्स नासए जीयं ।
 पावं पुणो तह च्चिय जीवेण समं परिव्वयइ ॥८३॥
 सुज्झइ जह पुण एयं पावकलंकं तहा सुणसु सोम ! ।
 तवसंजमनीरेणं भावणहाणेण ण्हायस्स ॥८४॥
 ता चइऊणं सव्वं गुरुपामूलंमि कुणसु वयगहणं ।
 कुणसु य तह सज्जायं जइ सुद्धिं इच्छसे सोम ! ॥८५॥

विगईपरिहरणपरो वित्तीसंखेवणं तहा काउं ।
 अविउत्तो सज्जाए पालेसु महव्वए पंच ॥८६॥
 दसविहजइधम्मजुओ अणसणविहिणा उ देहघरमुक्को ।
 पाविहसि परं ठाणं अकलंको जत्थ तं होसि ॥८७॥

तओ इमं च निसामिऊण जायगुरुसंवेगो, भणिऊण य-‘इच्छामो सोहणा पडि-
 चोयणा’ । परिचइऊण य सव्वं घरविहवसारं दमघोसगुरुपायमूले गुरुकंमिधणपज्ज-
 लियजलणगहियसामन्नो तवनियमसोसियंगो विहरिऊण य सव्वपरियायं अणसण-
 विहिणा कालमासे कालं काऊण गओ देवलोयं कुबेरदत्तो त्ति ॥ छ ॥

कुबेरसेणा वि तस्स जणणी गरुयवेरगानलपरिडज्जमाणहियया अज्जाणं सयासे
 गहियपरमधंमुवएससारा भावियजिणवयणमई गहियसावयधंमवया साविगा जाय त्ति
 ॥छ॥

ता एसो परमत्थो एएसिं पहव ! दुट्ठविसयाणं ।
 जाणंतो को वच्चउ विसयाण वसं नरो एत्थ ॥८८॥
 पहवेण तओ भणियं एवं एयं न एत्थ संदेहो ।
 किं तु तहावि सुणिज्जउ जं सुव्वइ लोयसत्थेसु ॥८९॥
 जणणिजणयाण जायइ तित्ती किर लोयपिंडदाणाओ ।
 नित्थारिज्जइ जणओ पुत्तेणं कुगइपत्तो वि ॥९०॥
 कीरइ विगयरिणो किर जणओ पुत्तेण सग्गामी य ।
 ता एयं पि पमाणं कीरउ संवच्छेरे कइ वि ॥९१॥
 एयं निसामिऊणं भणियं वियसन्तवयणकमलेण ।
 अह जंबुणामएणं पहव ! विमूढाण मयमेयं ॥९२॥
 जइ तारिज्जइ जणओ पिंडपयाणेण कुगइमग्गाओ ।
 पिंडाभावे य धुवं टालिज्जइ हंति सग्गाओ ॥९३॥
 एवं चिय पुव्वकयं पुन्नं पावं च होइ उ निरत्थं ।
 एवं च इमं जायं धम्मकरणं तु....अकयत्थं ॥९४॥

एयंमि पसंसिज्जइ लोइयसत्थेसु नूण सयलेसु ।
 नाउयाइं ताइं अह भणसि इमं कहां देयं ॥९५॥
 आएयाइं एवं अह भणसि इमं तु हंदि तो जायं ।
 जं जेण कयं कंमं भोयव्वं तेण तमवस्सं ॥९६॥
 जेण सुहं धारेज्जइ कंमं संसिज्जई सुहं सत्थे ।
 सुहमसुहाणमवस्सं तो जायं नूण कस्स फलं ॥९७॥
 एवं च पिंडदाणं अकयत्थं नूण एत्थ संजायं ।
 जं पुण तहावि कीरइ तं मूढपरंपरा एसा ॥९८॥
 एसा वि अणाएया य मूढसंताणमालिया नूणं ।
 जेणुवएसेणेसिं कट्टतरागं लहइ मोया(लोओ) ॥९९॥

भणियं च- “किं एत्तो पावयरं संमं अणहिगयधम्मसब्भावो ।
 अन्नं कुदेसणाए कट्टतरागंमि पाडेइ” ॥१००॥ []
 अह भणसि तह वि कीरइ होज्ज कयत्थेण हंदि किं तेण ।
 जं जं चिय जेण फलं तं तं चिय विबुहपरिहरियं ॥१०१॥
 एत्थ य सुण दिट्ठंतं जह जणओ घाइ[ओ य] जणयत्थं ।
 दिन्नो सुएण पिंडो मूढेण अयाणमाणेण ॥१०२॥

तओ इमं च निसामिऊण भणियं पभवेण-‘अहो जंबुणाम ! को एसो जेण
 जणओ विणिवाइऊण जणयस्सेव पिंडपयाणं कयं ? कहां वा तं कयं ? ति । तओ
 जंबुणामेण भणियं-‘सोम ! निसुणसु’ ।

अत्थि सुरलोयसरिसा नयरी इह तामलित्तिनामेणं ।
 मणिकंचणरयणजुया धणधन्नसमाउला निच्चं ॥१०३॥
 तीए समुद्दनामो मायाकुडिलो य निग्घिणो लोही ।
 निच्चं पि असंतुट्ठो आसि समुद्धो व्व सत्थाहो ॥१०४॥

तस्स आसि बहुला नाम एक्का भारिया । ताण य सुओ महेसरदत्तो नाम ।
 गंगिला य नाम महेसरदत्तस्स जाया तेसिं वहू । अन्नया य मरणावसाणयाए

जीवलोगस्स समुद्दो मरिऊण तहाविहकंमभवियव्वयाए तंमि चेव विसए महिसो समुप्पन्नो । सा वि तस्स भारिया बहुला मायाकुडिलसहावत्तणओ तीए(?) तहा पइमरणअट्टज्झाणोवगयत्तणओ य मरिऊण अकयपुन्ना तीए चेव तामलित्तीनयरीए सुणिया जाया । तओ सा गंगिला गुरुजणविरहे सच्छन्दासेवणपरा जाया । बहुवावडत्तणओ य महेसरदत्तस्स चंचलरायत्तणओ व जुवइयणस्स ।

जेण- अथिराइं च(?) चलाइं असंठियाइं सब्भावनेहरहियाइं ।

जुवईणं हिययाइं खणे खणे होंति अन्नाइं ॥१०५॥

तओ सा अइचवलत्तणेण सुलहेण इत्थीसहावस्स संपलग्गा परपुरिसे । अच्छइ य तेण समं बहुसो कीलमाणा । अन्नया एगंते कीलंताणि दिट्ठाणि महेसरदत्तेण । तओ दट्टूण य पहाविओ तेसिं संमुहं गहियाउहो । संपलग्गं च दोण्ह वि जुज्झं । तओ संखोहत्तणओ तस्स कयावराहस्स दढपहारेण पहारिओ सो महेसरदत्तेण । थोवंतरे य गंतूण वेयणासमुग्घायविहलो निवडिओ धरणिवट्टे । तओ महावेयणासंततो चित्तिउं पयत्तो-अहो पेच्छ पेच्छ केरिसं मए समायरियं अकज्जं मूढमइणा । इह लोए चेव जस्स समुवट्टियं फलं ति । तओ एवं च निंदमाणो अत्ताणं मरिऊणं अइकुडिलत्तणओ कंमगईए कत्थुववन्नो ? ।

अवि य- अप्पा अप्पेणं चिय तक्खस्स(ण)भुत्ताए तीए गब्भंमि ।

कम्मकुडिलत्तणेणं जणिओ य दुरप्पणा तेण ॥१०६॥

जाओ य निययसमएणं । कयं च वद्धावणाइयं सव्वकरणीयं । अन्नया य पिउणो पिंडपयच्छणनिमित्तं कयं तेण महेसरदत्तेण महाभोयणं । सो य जणगमहिसो गहिऊण वावाइओ पिंडपयाणनिमित्तं माहणाणं वयणेणं । सिट्ठो(द्धो?) य बहुप्पयारं । तओ पयच्छियं पिउणो आमिसपिंडपयाणं । निव्वत्तियं होमकंमं दियवोरेहिं, परिभुत्ता य माहणा । दिन्नाओ दक्खिणाओ, भुत्तो य सेसजणो । तओ आरोविउं उच्छंगे सुअं उवविट्ठो महेसरदत्तो भोयणत्थं । पढमं चिय जणयउवत्तप्पणत्थं वित्थरिओ महिस-मंसाहारो । समागया य सा जणणिजीवसुणिया । उवविट्ठो य तस्स पुरओ । खिवइ य तीए वि सो मंसखंडे । अप्पणा य परिभुंजिउं समाढत्तो । एयंमि य अवसरे समागओ जुगमेत्तनिमियदिट्ठी, मासोववासिओ, भिक्खुं एसणसमीइसमंनिओ गिहपरिवाडीए

विहरमाणो भगवं साहू तस्स गेहंमि । तओ दट्टूण य तं तहाविहं, उवउत्तो भगवं । नाओ य ओहिनाणेण इमो वइयरो । जाणियं च जहा-भव्वो एसो । होही एत्थ चोयणाए परमोवयारो । तओ एवं चिंतिऊण भणियं साहुणा ।

अवि य- हा कट्टं अन्नाणं पेच्छह संसारविलसियं एयं ।

जं जाया पइमंसं परिखित्तं भुंजइ सुएणं ॥१०७॥

तओ इमं च निसामिऊण भणियं महेसरदत्तेण-‘भयवं ! किमेयं तुमे भणियं ?’ तओ साहुणा भणियं-

अवि य- मारेऊणं जणओ पुरओ जणणीए जणयपिंडत्थ ।

उच्छंगगहियसत्तू मा भुंजसु जणयमंसाइं ॥१०८॥

तओ इमं च भणमाणो निग्गओ सो भगवं साहू । ठिओ नयरिबाहिरियाए एक्कंमि विवित्तपएसे । महेसरदत्तो य चिंतिउं पयत्तो-अहो कहं इमेण साहुणा भणियं ? ता भवियव्वमेत्थ कारणेणं । जओ इमे न भणंति अपरिसुद्धं इमं च । एवं परिचिन्तमाणो गओ साहुसयासं अणुमग्गेणं ति । दिट्ठो य भगवं तेण । वंदिओ य भत्तसबहुमाणं । भणिओ स-‘भगवं ! किं तुब्भेहिं न गहिया मम गेहे भिक्खा ? कहं वा मंदपुन्नाणं अम्हाणं व घरेसु न पडंति वसुहाराओ ? अन्नं च भयवं ! किं तुमे इमं भणियं ? जहा-

अवि य- मारेऊणं जणओ पुरओ जणणीए जणयपिंडत्थं ।

उच्छंगगहियसत्तू मा भुंजसु जणयमंसाइं ॥१०९॥

तओ भयवया भणियं, अवि य-

का सा होज्ज अवत्था संसारुच्छंगपरिगओ जंतू ।

जा न वराओ पावइ अन्नस्स विडंबणाभूया ॥११०॥

ता सोम ! तुमे रोसो कायव्वो एत्थ नो इमं सुणिउं ।

भावेयव्वं च तहा विरसं संसारनेउन्नं ॥१११॥

तओ महेसरदत्तेण भणियं-‘भयवं ! जहट्टियपरिकहणे को एत्थ रोसो विन्नाय-परमत्थाणं । अजहट्टियपरिकहणे य किं तुम्ह पओयणं ? । ता भयवं ! सव्वं साहसु’त्ति । तओ भगवया वि सपच्चयं साहिप्पायं च जहा जहा तस्स अवगमो भवइ तहा तहा सव्वं परिकहियं । इमं च निसामिऊण जायगरुयसंवेगो संसारभयपरिभीओ जंमणजरमरणवाहि-

वेयणापरिस्संतो चइऊण घरनिवासं तस्सेव भगवओ समीवे गहिऊण दुद्धरवयं चरिऊण
य घोरतवच्चरणं, अणसणविहिणा कालमासे कालं काऊण देवलोगं गओ त्ति ॥छा॥

ता पभव ! एवंविहे संसारविलसिए मा मूढपरंपरसमागयासु लोइयकुसुईसु
परोप्परं विरुद्धासु पुव्वावरविबाहियासु परमत्थबुद्धीए गहणं कुणसु' त्ति ॥छा॥

अवि य- अन्नाणंधो लोओ धमं गिण्हइ अहंमबुद्धीए ।

जं पुण एत्थाहंमं तं गिण्हइ धंमबुद्धीए ॥११२॥

सव्वो च्चिय एत्थ जणो धम्मं किर कुणइ निययबुद्धीए ।

तस्स य जं परमत्थं तं मूढो न उण जाणेइ ॥११३॥

रागद्वोसपरत्तो नियनियकुग्गाहभाविओ वत्थुं ।

कुमईसु मोहियमणो विवरीओ सव्वहा लोओ ॥११४॥

ता सव्वहा अणाएओ इमो पक्खो । जओ-

छत्ताइसंठिओ वि हु तण्हाभुक्खाभिभूयहिययो वि ।

निययघरे वि सुएणं दिन्नं पि न पावए जणओ ॥११५॥

चोइसरज्जुपमाणे चउरासीजोणिलक्खगहणंमि ।

संसरमाणो किं पुण पावउ संसारकंतारे ॥११६॥

जइ सुरवरेसु जाओ महइमहंतेसु रिद्धिपुन्नेसु ।

ता किं सो पिंडेणं काही असुईसमाणेण ॥११७॥

अह नरए निच्चं चिय दुक्खमहाघोरसंकुले जाओ ।

ता कत्थ तस्स पिंडो पावउ अहवा वि सो लहउ ॥११८॥

ता सव्वहा वि जाणसु न होइ एसो सुसंगओ पक्खो ।

मूढजणसत्थविरइयपरंपरसमागओ नूणं ॥११९॥

अह भणसि तह वि एसो आएओ तह वि बहुमओ पक्खो ।

बहु-बहुमयपक्खाणं को पक्खो तेसि गहणिज्जो ॥१२०॥

मन्नंति के वि जीवं के वि य संसन्ति पंचभूयमयं ।

साम(सम ?)तंदुलसारिच्छं धडविडसरिसोवमं के वि ॥१२१॥

अंगुट्टुपव्वरेहाए के वि मन्नंति नूण सारिच्छं ।

एमाई पक्खाणं को पक्खो तेसि त्थाणिज्जो ॥१२२॥

जइ घडविडयसमाणो तंदुलरेहाए अह समो होज्जा ।
ता कीस एस वावी हवइ य सयलस्स देहस्स ॥१२३॥
केसनहाइअचेयणठाणं मोत्तूण सेस तणुवावी ।
[जीवो] जिणपन्नत्तो होइ न रेहाइओ तम्हा ॥१२४॥
पुढविजलानलमारुयआयासविणिमिओ वि नो जम्हा ।
भावे वि जेण तेसिं देहस्स अचेयणत्त त्ति ॥१२५॥
अह भणसि तत्थ वाऊविनिग्गओ तेण हो अचेयन्नं ।
सो नूण तत्थ विज्जइ लोयव्वावी य सो जम्हा ॥१२६॥
अह भणसि को वि सुहमो विणिग्गओ तेण तं अचेयन्नं ।
अम्हेहिं सो वि जीवो भणिओ सव्वन्नुदिट्ठीए ॥१२७॥
तम्हा उ एस सिद्धो परभवगामी य दुक्खसुहभाई ।
जीवो अणाइनिहणो दिट्ठो सव्वन्नुणा नूणं ॥१२८॥
भणियं च एत्थ जम्हागमभंगपसत्थसत्थनिउणेहिं ।
सव्वन्नुवयणवित्थरपयाणुसारीहिं साहूहिं ॥१२९॥
सिद्धं जीवस्स अत्थित्तं सद्दादेवाणुगंमइ ।
भावइ(?)सरभूइभावस्स सद्दो हवइ केवलो ॥१३०॥
जो चित्तेइ सरीरे नत्थि अहं स इव होइ जीवो त्ति ।
नहि जीवमि असत्ते संसयउप्पायओ अन्नो ॥१३१॥
जीवस्स एस धंमो जा ईहा अत्थि नत्थि वा जीवो ।
थाणुमणुस्साणुगया जह ईहा देवदत्तस्स ॥१३२॥
जायंते केवि नूणं विमलगुणगणे पालिऊणं सुधीरा,
जेसिं सव्वं पि एयं परभवजणियं दिव्वसोक्खं विसालं ।
संपत्तं तं चएउं विगयरयमला भोक्खसोक्खेक्कचिंता,
मोहं हंतूण सिग्घं जिणवरवयणे हुंति ते सुट्ठु लीणा ॥१३३॥
इय जंबुनामचरिए उद्देसो पहवउत्तरभिहाणो ।
एसो होइ समत्तो एत्तो य परं पवक्खामि ॥१३४॥



॥ नवमो उद्देसओ ॥

एत्थंतरे य भणियं निब्भरअणुरायसहरिसमणाए ।

लज्जोणयवयणाए सिंधुमईनामभज्जाए ॥१॥

पियसहिओ ! एस म्हां होज्ज पिओ नूण करिसगसमाणो ।

जह सो पच्छयावं पत्तो तह पाविही एस ॥२॥

निसामिऊण वियसंतवयणपंकएण भणियं जंबुणामेण-‘को सो मुद्धो करिसगो, कहां वा पच्छयावं संपत्तो’ त्ति ? । तओ तीए भणियं-

अवि य- धणधंनगुणसमिद्धो कोडुंबियपवरसेविओ निच्चं ।

अत्थि इह मगहविसए नंदणयं नाम वरगामो ॥३॥

तत्थ य एक्को दालिदुक्खाभिभूओ निवसइ कोडुंबिओ । तस्स य अत्थि सयलकुडुंबभारपरिसहणक्खमा सययं चिय छंदाणुयत्तणपरा य समसुहदुक्खविहवा एक्का भारिय त्ति । एवं च तेसिं गरुयनेहाणुणयबद्धहिययाणं करिसगवित्तीए गच्छइ कालो । अन्नया य सा तस्स भज्जा पसूया दारयं । तओ तस्स जंमेण हरिसतोस-निब्भराइं जायाइं दो वि ताई । निबद्धा य आसा-किर एस अम्हाणं वुडुभावगयाणं अंधलट्टियावलंबणभूओ होही, कुलसंतइकरो य ।

जह य पईवो पयडइ सयलं वि घोयंरं सुपज्जलिओ ।

तह किर कुलमुज्जोयइ सुयजम्मो एत्थ लोगंमि ॥४॥

तओ एवं च बद्धासेहिं सव्वहा सव्वपयत्तेण विद्धिं नीओ सो तेहिं । संपत्तो य जोव्वणं । अन्नया य खणभंगुरत्तणेण दुट्ठसंसारविलसियस्स, मरणपज्जवसाणयाए जीवलोगस्स, तडिविलसियसमचवलत्तणेण आउयस्स, उवरया सा तस्स कोडुंबियस्स भज्जा । गहिया य ते पियापुत्ता महासोएण । कयं च तीए सव्वं मयकंमं । अन्नया य

भणिओ सो पुत्तेण-‘ताय ! न वहइ ते सरीरं विणा कलत्तेण, सीयइ य सयलं कुडुंबयं । ता कुणसु कलत्तपरिगहं तुमं’ ति । तओ एवं च बहुसो तेण चोइज्जमाणेण अन्नया भणिओ निययमित्तो-‘जहा मम कएणं कं पि दारियं वरसु’ त्ति । पडिवन्नं च तेण । पत्थेइ य तस्स कएण कोडुंबिए । तओ ते नेच्छंति । भणंति य-‘तस्स पुत्तो सव्वघरसामी जोवणत्थो । सो य अप्पणो परिणयवओ वट्टइ, अन्नसुयउप्पत्तीए य संसओ । ता कहं तस्स दारियं पयच्छामो ?’ । एयं च सव्वं तस्स परिकहियं मित्तेण । तओ सो चित्तिउं पयत्तो-पेच्छ केरिसं जायं ? । ता किमेत्थ करणीयं ? । अह वा वावा[ए]मि इमं पुत्तं कलत्तागमविग्घभूयं । अन्ने पुत्ता मम कलत्तसंगहेण भविस्संति । तओ एवं च तस्स मारणोवायं परिचित्तिज्जमाणो गओ सो छेत्तं परिवाहणनिमित्तं सुसंगोइयपत्तलधारपरसू । मारणोवायपरिचित्तेण य सुन्नहिय-यनयणो परिणयवयसा संपरिवाहिउं च पयत्तो नंगलेण । परिचितइ य कह इमो वावायव्वो, कह वा लोए न होही वयणिज्जं । एवं च पावेक्कअज्झवसाणोवगओ सव्वहा परवसहियओ सो जाओ । इमंमि य अवसरे *.....नूणमेस अन्नसासपइरणनिमित्तं इमं निप्फन्नं सालिच्छेत्तं नंगलेण सुभिन्नं इति । तो दुट्ठुकयमिमेणं । इमं च परिचितेमाणेण भणियमणेण-‘अहो ताय ! कह तुमे इमं विवरीयं संजायं । अजायस्स कएण जायं विणासियं ति ।’

अवि य- संसइयस्स कएणं निस्संसइयं कहं इमं चयसि ।

मु(मू)ढो तुममच्चत्थं न मुणसि कज्जं अकज्जं वा ॥५॥

इमं च निसामिऊण तेण चित्तियं-अरे नाओ अहमिमेणं । जओ जाव समागयचित्तो अप्पाणं गोविउं पयत्तो । ताव दिट्ठं तं सालिच्छेत्तं । परिवाहियं दट्ठूण पडिबुद्धो तस्स वयणेण । तओ चित्तिउं पयत्तो हा दुट्ठु मे चित्तियं । कहं पावेण विलित्तो मे अप्पा । सोहणं च इमिणा भणियं, तहा-अजायस्स कए कह सुजायं विणासिहसि । जा पेच्छ कह न इमो सव्वहा मम हियकरणेक्कचित्तो तणओ भविस्सकलत्तसुयकएणं वावाइओ होंतो । तओ एवं च महापच्छयावग्गिणा परिडज्झमाणो सो अप्पाणं निदिउं पयत्तो ।

ता जह सो संतत्तो पच्छयावेण तह तुमं पेच्छि ! ।

संतमसंतस्स कए चयमाणो नाह ! तप्पिहसि ॥६॥

★ अत्रादर्शं कियान् पाठः पतितः प्रतिभाति, ततोऽर्थानुसन्धानं न सम्यग् ज्ञायते ।

तओ इमं च निसामिऊण भणियं जंबुनामेण-‘मुद्धे ! निसुणसु, अवि य’-
हत्थिकलेवरलुद्धो व्व वायसो नो अहं भवसमुद्धे ।
अत्ताणं पाडेमो विसयाण कएण तुच्छाणं ॥७॥

तीए भणियं-‘कह सामि ! वायसो सायरे गओ निहणं ?’ भणियं च जंबु-
णामेण-‘सुण मुद्धे ! एक्कचित्तेण जिणसासणम्मि★.....।’

विंझधरावरकलिया अडवी विंझअ(ऽ)डवी अत्थि.....॥

मेहरवफुरियकेसरिविमुक्कहुंकारस्सद्परिभी.....समंमि वणहत्थी ॥

पडिओ धस त्ति कह वि हु नियंवपहार[निययमहाराहार?] पहरनिद्वलिओ ।

परिमुक्को पाणेहिं निवडियमेत्तोत्थ सो तस्स ॥८॥

.....णेणं सो घणकंदरविवरगब्भसंपत्तो ।

दिट्ठो य वायसेणं कह वि हु गंधाणुसारेण ॥९॥

दट्ठूणं परि.....य पुरिसो व्व जह निहिं पत्तो ।

चित्तेउं च पयत्तो एवं सो वायसो तत्थ ॥१०॥

कह कह वि किलेसेणं पत्तं जंमस्स नूण फलमेयं ।

ता भुंजामि जहिच्छं एयं वणवारणं एत्थ ॥११॥

परिचित्तिऊण एवं कह वि पविट्ठो अवाणविवरेण ।

भुंजइ य जहिच्छं से फसफोफसमंसरुहिरोहं ॥१२॥

चिन्तइ य अहो पत्तं सपक्खपरपक्खवज्जियं एयं ।

सग्गो व्व निरुवसगं पुन्नेहिं मए इमं ठाणं ॥१३॥

ता मम एत्थेव सया सेयं ठाणंमि अच्छमाणस्स ।

एवं विचित्तिऊणं परितुट्ठो सो ठिओ तत्थ ॥१४॥

अगणियपरिणामभओ जावच्छइ वायसो तहिं तुट्ठो ।

ता सूरकिरणतवियं संकुइयमवाणविवरं ति ॥१५॥

★ अत्र मूलादर्शभूतताडपत्रस्य कतिपयाः पंक्तयः परिभ्रष्टाक्षराः संजाताः, अतोऽस्पृष्टार्थोऽयं पाठोऽत्रावबोद्धव्यः ।

तह वि हु आमिसलुद्धो न गणइ थेवं पि सो भयं तत्थ ।
जा पत्तो घणसमओ समंतओ तह वि संतावो ॥१६॥

जलहरपरिमुक्कोदगनिन्नुन्नय[धरणि?] भरियभुवणयलो ।
तं जलपवाहखित्तं पत्तं रेवानइं सययं ॥१७॥

वहिऊण तीए खित्तं महासमुद्धे अणोरपारंमि ।
जलवीइतरंगेहिं हीरइ तं सायरजलेण ॥१८॥

जलकल्लोलनिरंतरविलुप्पमाणे कडेवरे कह वि ।
पल्हलिऊण अवाणं विणिग्गओ वायसो भीओ ॥१९॥

पेच्छइ अणोरपारं जलवीइतरंगहल्लकल्लोलं ।
रुद्धं महासमुद्धं समन्तओ नीरपरिपुन्नं ॥२०॥

दट्टूण सो विसन्नो दुल्लंघं गयणगोयराणं पि ।
भीमं महासमुद्धं गज्जंतं जलतरंगेहिं ॥२१॥

भयविंभलो य अह सो काउ काउ त्ति वाहरेमाणो ।
आगयपुणग्गएहिं तत्थेव कलेवरे निलइ ॥२२॥

वीईतरंगपहयं इओ तओ तं पि तत्थ हीरंतं ।
भीमसमुद्धावडियं इत्ति न नायं कहिं पि गयं ॥२३॥

मयरहरुच्छंगगओ इओ तओ सो वि कह वि भमिऊण ।
तत्थेव गओ निहणं भीमावत्तंमि मयरहरे ॥२४॥

ता मुद्धे ! वारणवायसो [व्व] विसयामिसंमि संहिद्धो ।
वच्चामि न हं निहणं भीमावत्ते भवसमुद्धे ॥२५॥

.....

सव्वं चइऊणं गच्छंति विरागं, पालिंति गुणोहे जे केवि नरा ते ॥छा॥ ॥२६॥

इय जंबुणामचरिए सिंधुमईदत्तउत्तरभिहाणो ।

उद्देशो परिकहिओ एत्तो य परं पवक्खामि ॥छा॥ ॥२७॥



॥ दसमो उद्देशओ ॥

इत्थंतरे य भणियं सहरिसमणुरायनिब्भरमणाए ।

लज्जोणयवयणाए दत्तसिरीनामभज्जाए ॥१॥

पियसहिओ एस म्हां होज्ज पिओ नूण वानरसरिच्छे ।

जह सो पच्छयावं पत्तो तह पाविही एसो ॥२॥

तओ इमं च निसामिऊणं वियसंतवयणकमलेण भणियं जंबुणामेण-‘को सो मुद्धे ! वानरो कहं वा पच्छयावसंपत्तो ?’ त्ति । तीए भणियं-

अवि य- मज्जंतथोरवारणकवोलमयदाणसंचलियसलिला ।

गुरुमहिसवंद्रपमुइयकीलंतुच्छलियकल्लोला ॥३॥

अत्थि जलनियरपुन्ना बहुजलयरसेविया अइमहंता ।

भागीरहि त्ति सरिया बहुभंगा दुडुमहिल व्व ॥४॥

तीए [य] तडे ऽत्थि वरो तुंगो साहापसाहपडिपुन्नो ।

वंजलदुमो महप्पा कलिओ फलकुसुमनियरेण ॥५॥

एक्कं वानरजुयलं कीलंतं कह व तं समारूढं ।

पडिओ य पमाणं कह विं हु सो वानरो तत्थ ॥६॥

जाओ य दिव्वरूवी पडणपभावेण सो वरो पुरिसो ।

दिट्ठो य वानरीए दिव्वरूई सो वरजुवाणो ॥७॥

तीए वि तओ(?) खित्तो अप्पा जाया सा इत्थिया य वररूवा ।

दट्ठूण हरिसियाइं दिव्वकुमारोवमं रूवं ॥८॥

वानरनेरेण भणिया सा नियदइया पुणो वि अत्ताणं ।

खिप्पउ सुयणु ! दुमाओ देवत्तं जेण पावेमो ॥९॥

अह भणिओ सो तीए माणुसरूवेण भुंज वरभोए ।
 किं ते संसइएणं दिव्वेण वि देवरूवेणं ॥१०॥
 एवं निवारिएण वि खित्तो अह तेण तक्खणेणऽप्पा ।
 जाओ वानररूवो निवडियमेत्तो पुणो चेव ॥११॥
 पारद्धिनिग्गएण य दिट्ठा सा इत्थिया नरिंदेण ।
 रूवकलिय त्ति काउं निरूविया सा महादेवी ॥१२॥
 अट्टज्झाणोवगओ एगागी दिव्वरूवपरिभट्ठो ।
 नियदइयाइ विहीणो कलुणो सो वानरो जाओ ॥१३॥
 सो निदिउं पयत्तो पेच्छ मए केरिसं इमं रइयं ।
 अधुयकए [परि]चत्तं पेच्छ धुयं कह निहीणेण ॥१४॥
 नियमइविगप्पियमिणं अक्खाणं सुयणु ! जइ वि तुह कहियं ।
 तह वि निसामसु इण्ही उवणयमिणमो परं वोच्छं ॥१५॥
 जह मणुयत्तणभट्ठो पत्थित्तो वानरो अहियलच्छि ।
 एवं तुमं पि पिययम ! पत्थित्तो सिद्धिसोक्खाइं ॥१६॥
 धणधन्नपरियणस्स य इमाण तह रूवजोव्वणधरीण ।
 दिव्वाणं विलयाणं चुक्को तप्पिहिसि तं पच्छ ॥१७॥
 ता सुयणु ! भुज भोए इमाहिं सह सुंदरीहिं तं ताव ।
 परिणयवयो य पच्छ पव्वज्जं कुणसु तं धीर ! ॥१८॥

तओ इमं च निसामिरुण भणियं जंबुणामेण-‘मुद्धे ! निसुणसु’-

अवि य- इंगालदाहगो विव नाहमतित्तो कुसग्गजलसरिसे ।

भोए अभिवंछेमो तुच्छे संसारफलभूए ॥१९॥

तीए भणियं इंगालदाहगो कह कुसग्गनीरेण ।

अहिवंछइ किल तित्तिं ? सुण मुद्धे ! भणियमह तेण ॥२०॥

अत्थि कलि(लिं)गा विसए गामो अंबाडयं ति नामेणं ।

तत्थेक्को किल पुरिसो जीवइ इंगालकंमेणं ॥२१॥

अह अन्नया कयाई संतावियसयलसत्तसंघाओ ।
 पत्तो खलो व्व गिम्हो निट्टुरखरवायसदूलो ॥२२॥
 फरुसो उव्वेवणओ गिम्हो णिद्धहइ सूरकरजलिओ ।
 पलयानलो व्व नज्जइ सयलं भुवणयलजंतुयणं ॥२३॥
 वाओलिकयवडाओ संतावियसयलभुवणजंतुयणो ।
 गिम्हच्छलेण नज्जइ पत्तो जं रक्खसो एसो ॥२४॥
 एयारिसंमि काले समन्तओ सूरकिरणपज्जलिए ।
 मज्झण्हे सो पुरिसो विणिग्गओ निययगेहाओ ॥२५॥
 गहिऊणं सो सलिलं पत्तो गिरिपायसंठियं एक्कं ।
 वणसंडमइमहंतं मुक्कं सलिलं तर्हि तेण ॥२६॥
 पलिच्छिन्ना तत्थ तरू रइया रासी महंतकट्टेहिं ।
 पज्जालिओ हुयासो असोयवरपल्लवसरिच्छे ॥२७॥
 गिम्हरविकिरणतत्तो उवरिं पासेसु जलणसंदड्ढे ।
 तण्हाभिभूयदेहो सलिलं तं जाव संपत्तो ॥२८॥
 ता पेच्छइ तो सलिलं वानरज्जूहेण गिरिनिगुंजाओ ।
 आगंतूणं पीयं नीसेसं कह व चवलेण ॥२९॥
 अह सो धस त्ति पडिओ मुच्छवसविम्हलो महीवट्टे ।
 गिम्हखरफरुसमारुयसभंतओ दड्ढनियदेहो ॥३०॥
 पज्जलियजलणजालावलि व्व संपसरिया अइमहंता ।
 देहं संडहमाणा तण्हा अइदूसहा तस्स ॥३१॥
 एवं तण्हायत्तो मुच्छवसम्ब(म्भ)लो परायत्तो ।
 संचलिओ घरहुत्तं कह कह वि खलंतसंचारो ॥३२॥
 जह जह सो परितप्पइ तह तह खरपवणदाहसंतविओ ।
 तण्हाए बाहिज्जइ वाहीय व लद्धपसराए ॥३३॥
 दूसहतण्हापरिसुसियतालुओ मउलियच्छिजुयलिल्लो ।
 निच्चेट्टो इव पडिओ पुणो वि तत्थेव सो पुरिसो ॥३४॥

एवं च निवडियस्स [य] समागया सव्वरी तर्हि तस्स ।
 जायं च मेहवुट्ठं पवाइओ सीयलो पवणो ॥३५॥
 सीयलवायवसेण य मुच्छविरमंमि आगया निद्दा ।
 तण्हावसेण पेच्छइ सुमिणं अह तत्थ सो पुरिसो ॥३६॥
 सव्वसि(स)रिसायरा[ण] य कूवतलायाण सोसियं नीरं ।
 तह वि न तण्हावगमो जायइ किर तस्स पुरिसस्स ॥३७॥
 दूसहतण्हागुरुवेयणुल्लिओ जाव मग्गए नीरं ।
 जुन्नमयडं अरन्ने पेच्छइ ता कह व जुत्तीए ॥३८॥
 दट्टूण सहरिसं सो वेगेणुद्धाइओ तओहुत्तं ।
 पेच्छइ तत्थावत्तं पायाले किं पि उज्जोयं ॥३९॥
 नाउं किल जलमेयं वारयहंडं निरिक्खि(क्ख)ओ ताहे ।
 पत्तं न किं पि रन्ने दीणत्तं उवगओ ताहे ॥४०॥
 गहिरुणं किल दब्भं वलिया अह तेण सहरिसं रज्जुं(ज्जू) ।
 अन्ने य दब्भमइया बद्धा किल पूलिया तेण ॥४१॥
 ओयारिऊण अयडे पगलियसेसं तु दब्भपूलीओ ।
 जीहाए लिहइ जलं तण्हावच्छेयणनिमित्तं ॥४२॥
 ता जो सरि-सर-सायर-कूव-तलायाण सलिलनिवहेण ।
 तित्तिं कह व न पत्तो सो पावउ मुद्धि ! किं तेर्हि ॥४३॥
 तीए भणियं न एयं भाविज्जइ सामि ! नूण जुत्तीए ।
 धवलच्छि ! एवमेयं तो भणियं जंबुणामेणं ॥४४॥
 “एयस्स सुयणु ! इण्ही निसुणसु तं उवणयं कहिज्जंतं ।
 जो पुरिसो सो जीवो तण्हा वुण होइ भोगेच्छो(च्छा) ॥४५॥
 कूवो पुण मणुयभवो रज्जू पुण भोगसाहणोवाओ ।
 कूवजलं भोगसुहं दब्भं निंदा य मोहणियं ॥४६॥

दुक्कयकम्मं जाणसु जं तं इंगालडहणवाणिज्जं ।
 भोगसुहासानडिओ न गणइ पुरिसो व्व सो डाहं ॥४७॥
 वानरजूहं चोरा तं पि जलं होइ तस्सरिच्छं तु ।
 अवहरिय दविणसारो वच्चइ मुच्छवसं जुत्तं ॥४८॥
 वाओलीसंतत्तो मुच्छवसमुवगओ जहा पुरिसो ।
 तह दालिद्धुहत्तो मुज्झइ पुरिसो व्व सव्वजणो ॥४९॥
 सव्वसरिसायराण य कूवतलायाण जह जलं पीयं ।
 तह पत्तं जीवेणं देवेसु इमेसु भोगसुहं ॥५०॥
 किंनर-किंपुरिस-महोरगेसु गंधव्व-जक्ख-भूएसु ।
 रक्ख-पिसाएसु तहा तह वि न तित्तिं इमो पत्तो ॥५१॥
 नागासुरविज्जुसुवन्नगिथणिउयहिदिसाकुमारेसु ।
 वाउकुमारेसु तहा दीवकुमारेसु तह पत्तं ॥५२॥
 कप्पेसु बारसेसु वि तहा य गेवेज्जवरविमाणेसु ।
 पंचोत्तरेसु वि तहा पत्ताइं इमेण सोक्खाइं ॥५३॥
 सरिसायरोवमेसु य सुखरभोएसु जो इमो अम्ह ।
 जीवो कह वि न तित्तो गच्छउ कह जललवसमेहिं ॥५४॥
 इंगालडाहगो वि य नाहं तणकोडिबिंदुसरिसाणं ।
 भोयाण कारणेणं मुद्धे ! निवडामि संसारे ॥५५॥
 गरुयगुणगणाणं पालणे निच्चजुत्ता,
 परभवजणिणं कंमुणा के वि नूणं ।
 ववगयगुरुकम्मा ते न मोत्तूण मोहं,
 जिणवरवरमगं हुंति लीणा विसालं” ॥५६॥
 इय जंबुणामचरिए दत्तसिरीदत्तउत्तरभिहाणो ।
 उद्देसो परिक्हिओ एत्तो य परं पवक्खामि ॥छा॥ ॥५७॥



॥ एगारसमो उद्देसो ॥

एत्थंतरे य भणियं सहरिसकलललियमम्मणगिराए ।

पउमसिरी भज्जाए लज्जोणयवयणकमलाए ॥१॥

पियसहिओ ! एसऽहं होज्ज पिओ नूण कोल्हुयसमाणो ।

जह सो पच्छायावं पत्तो तह पाविही एस ॥२॥

तओ इमं च निसामिऊण वियसंतवयणकमलेण भणियं जंबुणामेण-‘को सो मुद्धे ! कोल्हुओ ? कहां वा पच्छायावं पत्तो ?’ त्ति । तओ तीए भणियं-

अवि य- अत्थि धणधन्नगोउलगामागरनगरपट्टणसमिद्धो ।

विमलजलभरियसरवरनिव्वाणुज्जाणवणकलिओ ॥३॥

पिक्कफलसालिमंडवपसरियसुसुयंधपरिमलायड्डो ।

कासवजणमणपूरियहेलाए गुरुयसंतोसो ॥४॥

ढेक्कंतथोरपंडरवसहविसाणग्गभिन्नभिउडियडो ।

निज्जियवम्महसरनियरपसरसज्झाणसाहुगणो ॥५॥

जिणभवणधवलधयवडनहयलअंदोलमाणवरपवणो ।

अंगा नाम समिद्धो इह भरहे जणवओ रम्मो ॥६॥

जंमि य जणवए कं कं व दीसइ ?

अवि य- धम्मपसाहणजुत्ता पवरजुवाणा य तह मुणिंदा य ।

सहलाई तरुवर(?)सिहराईं जत्थ य सीमंतराईं च ॥७॥

दियवरनिसेवियाओ सालाओ जत्थ तह य वावीओ ।

भमुयाओ सालीओ जत्थ य कोडुंबिणीओ य ॥८॥

तत्थ त्थि तुंगवित्थिन्नधवलपायारवलयपरिक्खि(ख)त्तं ।
 धवलहरवाविदीहियगोउरसुरभवणकयसोहं ॥९॥
 संचरमाणविलासिणिनेउररवहंससरिसनिग्घोसं ।
 बहुवन्नजाइसिप्पियजणनिवहुद्दामरमणिज्जं ॥१०॥
 दुब्भिक्खडमरचोरारिवज्जियं निच्चमूसवाकलियं ।
 कंचणरयणसमिद्धं नामेण वसंतपुरनयरं ॥११॥

जंमि य नयरे केसु पुण कमुवलब्भइ-

कलहो खग्गलयासुं मासाहारत्तणं जइ मुणीसु ।
 चक्कभमो य कुलाले रन्ने जइ मत्तवालत्तं ॥१२॥
 भसणं च मंडलेसुं दोजीहत्तं च जइ पर फणीसु ।
 जलएसु जलपसंगो वक्कत्तं चंदरेहाए ॥१३॥
 चंदोवगओ सूरुो सोमत्तण दाणओ पयावेहिं ।
 तं भुंजइ जियसत्तू जियसत्तू नाम नरनाहो ॥१४॥

सो केरिसो ? अवि य-

सामन्नमुग्गदंडो तह वि विसेसेण पारदारीणं ।
 चंडो जमो व्व कुविओ पाणवहारं कुणइ खिप्पं ॥१५॥

तस्स य नरवइणो तंमि पुरवरे सव्वहा बहुसम्मओ सायरदत्तो नाम इब्भो
 परिवसइ । सिरिसेणा नाम तस्स भज्जा । तेसिं च वसुपालो नाम एगो पुत्तो अहेसि ।
 विलासवई नाम से तस्स भज्जा । सा य सहियणपरिवुडा अणुसुस्समाणा य
 दासचेडीहिं विमलाभिहाणं नइं ण्हाइउं गया । सा मज्जिउं च पवत्ता जलकीलाए ।
 तओ दिट्ठा एगेण तरुणजुवाणेण माहणेण तत्थ कीलमाणा । तओ तीए रूवाइ-
 सयक्खित्तमाणसेण परिचिंतियमणेण-अहो इमीए रूवाइसयं ! अहो मज्जण-
 विन्नाणाइसयं ! अहो गंभीरत्तणं ! । ता किं इमिणा निरत्थएणं मम माणुसजंमेणं
 जमेवंविहरूवाइसयसमिद्धाए सह विलयाए विसया न सेविज्जंति । किं बहुणा ! तओ
 सव्वहा परिविद्धो सो मयणसरपसरनियरेहिं वच्छत्थले । इमंमि अवसरे देवच्चणनिमित्तं
 कुसुमगवेसणमणी(णा)णं दासचेडीणं कुसुमप्पयाणच्छलेण समासन्नीहूओ सो । दिट्ठो

य तीए-अणंगो इव रईए, अणंगनासो इव उमाए, महुमहणो इव लच्छीए, सव्वंग-सुंदरावयवो । तओ विवरीययाए मयणस्स, अनिरूवियकारित्तणओ महिलासहावस्स, अथिरत्तणओ य पयईए, विलयासरूवं(व)विलसियस्स । तओ सवियारदिट्ठीए अवलोइओ साहिलासं तीए सो । तओ नाऊण साहिलासत्तणं तेण जुवाणेण नियभावसमप्पणत्थं च पढिया इमा गाहुल्लिया ।

अवि य- सुण्हायं ते पुच्छसु, एस नई मत्तवारणकरोरु ! ।

एए य नईवच्छा, अहं च पाएसु ते पडिओ ॥१६॥

तओ बहुमायाभंगकुडिलसहावहिययाए दिन्नं उत्तरं तीए-

सुहया हुंतु नईओ, होउ य रुक्खाण दीहरं आउं ।

पायपणयाण खिप्पं, पूरेमि मणोरहे सव्वे ॥१७॥

एवं च भणिए गहियभावत्थेण तेण चित्तियं-इच्छइ एसा ममं । जणाउलो इमो पएसो । ता केण पुण उवाएण इमीए नामं थामं च नायव्वं । इमं च एवं परिचित्तेमाणेण दिट्ठं तेण एक्कं डिंभरूवं तरुसिहरफलावलोयणपरं तीए सह समागयं नईतीरासन्ने । चित्तियं च तेण-किर अन्न-पाणेहिं हीरंति बालया । तओ तरुवराओ घेत्तूण पिक्कसाउफलाइं विदिन्नाइं तेसिं । पुच्छिया य तीए उत्थाणपउत्ती । साहिया य तेहिं निरवसेसा । पविट्ठाणि य उचियसमएण पट्टणं । तप्पभिइं च अच्छंति परोप्परं संगमोवायपराइं । न य से संपज्जइ तहाविहो अवसरो जत्थ परिमिलणं हवइ । तओ समोलग्गिया तेण जुवाणएण एक्का परिव्वाइया । दाणसंमाणेण य उवयरिया बहुप्पयारं । अन्नया दाणमहामंतवसीकयाए तीए भणिओ सो-‘पुत्त ! अत्थि किं पि ते पओयणं, ता कहसु जेण तं संपाडेमि ।’ तेण भणियं-‘न किं पि तहाविहं किं तु सव्वहा पूयणीयाओ जोगिणीओ अम्हाणं ।’ तीए भणियं-‘अत्थि एवमेयं, तहावि अत्थि किं पि ते पओयणं । गहिया य अहं सव्वप्पयारेण ते । ता पुत्त ! सव्वहा कहेसु इमं जं तुह पओयणं’ । कहियं च तेण जहा-‘तीए सह संबंधं कुणसु’ ति । पडिवन्नं च तीए परिव्वाइयाए । गया य नियवेसालंकारविरइयसरीरनेवच्छा तीए विलासवईए गेहं । दिट्ठा य सा कुलालाइं धोयमाणी भणिया य-‘पुत्त ! कुसलं इमस्स सुंदरविसओवभोगसुहलालणासहस्स सयलसुंदरकामिणीयणकामियजुवाण-जणकामियस्स । तीए भणियं-‘कुसलं तुम्ह पभावेणं’ ति । ‘अज्जे ! पाएसु ते

पडामि' । तीए भणियं- 'सिलीमुहसमाणवरजुवाणाहिलसणिज्जा होह माणुसजम्मस्स य सारकामसुहपसाहणपरा य' । तओ विलासवईए भणियं- 'उवविस किं निमित्तं ते समागमणं ?' उवविट्ठा य सा । पारद्धा कामकहा । तीए भणिया य- 'पुत्त ! किं इमेणं माणुसजंमेणं, जइ इमे माणुसजम्मसारभूया विसया अहिणव-अहिणवा अहिप्पेय-जुवाणएहिं समं न सेविज्जंति?' । एवं च भणिरुण बहुहा, साहियं तीए परिव्वाइयाए । जं किंचि तेण जुवाणेण संकेयट्ठाणनिमित्तं संदिट्ठं ति । तओ चिंतियं च तीए-न सोहणं हवइ छक्कं न गुज्झं । ता पओयंतरेण तस्स संकेयं देमि । इमं च परिचितेमाणीए पहया सा रूसिरुण पट्टीए मसिविलित्तकरयलेण । अक्कोसमाणीए य घेतूण सिरोरुहेसु निक्कासिया पच्छिमदुवारेणं ति । गया य परिमिलाणवयणा तस्स जुवाणस्स सयासं । साहियं च तहा- 'जहा नेच्छइ सा तुमं । इमं इमं च तीए मम समायरियं' । तओ कामसत्थ नीईकुसलेण गहिओ तेण भावत्थो । जहा-जो एस कसिणकरतलप्पहारो सो अंधारपक्खो । पंचंगुलीहिं पुण करतलपहरखुत्तकसिणाहिं कण्हपंचमीए संकेओ । तत्थ य पच्छिमदुवारेण इमीए निक्कासणसूइएण गंतव्वं । अहो पेच्छ तीए चउरत्तणं ! जं इमा वि वंचिया । संकेयं च दिन्नं । इमं च परिचितेमाणेण भणिया सा तेण- 'भयवइ ! खमसु जं तुमं परिकिलेसिया मम निमित्तं तीए पावाए । जा य एवं धिट्ठा सा न तीए मम किं पि पओयणमत्थि, ता उवविससु तुमं' ति । गया य सा निययट्ठाणं । सो य समागयाए कसिणपंचमीए पविट्ठो पच्छिमदुवारेण तीए गेहं । दिट्ठा य असोगवणियाए तेण सा विलासवई । गिहावहडेप्पडिओ य सह तीए पारद्धं च तं किं पि जुवाणजणपरिमोहणियं साहुजणविणिदियं पओयणं ति । एवं च अच्छिरुण कामकीलाविणोएण कं पि वेलं तत्थेव निंदावसेण पसुत्ताइं ति । पच्छिमजामिणीए य सरीरचित्ताविणिग्गएण दिट्ठा ससुरेण पसुत्ता । चिंतियं च णेण-अहो ! दुट्ठसीला इमा वहू, पेच्छ कह परपुरिसेण समं पसुत्ता एसा । इमा य पहाए मिच्छं पडिवज्जिही । ता पुत्तपच्चयत्थं गिण्हामि चलणाओ से नेउरंति चिंतिरुण गहियं । नायं च तीए गहिज्जमाणं । भणिओ य सो तीए जुवाणो नास लहुं, नाओ तुमं । आवयाकाले य मम साहेज्जं कुणसु' ति । गओ य सो । साय गंतूण गेहं पसुत्ता सह भत्तुणा । अच्छिरुण थेववेलं भणिओ सो तीए- 'अज्जउत्त ! अइमहंतो एत्थ उण्हो उव्वेयाउलीहूयं मम सरीरयं । ता सिग्घं पयट्ठसु

कुसुकु(म)मोयपरिवासियसयलदाहावहारिपवणपरिमलायडुं असोगवणियं गच्छामो' । गओ य सो तीए उवरोहेण । पसुत्ताइं च तत्थ ताइं । समागया य तस्स निंदा । समाउलहिययत्तणओ न उण इयरीए । तओ थोववेलाए तरमाणहिययाए साकुयं च उट्टावेऊण भणिओ य सो तीए-‘अहो ! पेच्छ पेच्छ निल्लज्जत्तणं ते पिउणो जमेस मम पसुत्ताए चलणाओ नेउरं गहेऊण एस एस वच्चइ । अहो ! जुत्तं किमेवं तुम्ह कुले, जं ससुरो चलणे लग्गइ बहूए’ त्ति ? । तओ तेण भणियं-‘मा कुणह हलबोलं । मम निंदा समागच्छइ । विद्धत्तणसहावेण विवरीयमई एसो संजाओ । ता पभाए समप्पइस्सइ’ त्ति । सा वि बहुहा रुंठिऊण ठिया निययसमएण; पहाया जामिणी । समुट्ठिओ सयलो जणो । भणिओ य पिउणा सो पुत्तो-‘वच्छ ! दुस्सीला इमा ते भज्जा’ । तओ कोवानलपज्जलिएण भणियं सुएणं-‘निल्लज्ज ! न लज्जसि तुमं इमाणं निययपंडरकेसाणं, जं तीए चलणगहणं काऊण नेउरं परिगिण्हसि ? । इमं च एरिसं पजंपसि । असमंजसं’ । तेण भणियं-‘परपुरिसेण समं सुवन्नाए मए गहियं’ । तओ विसेसेण कुविऊण भणियं सुएण-‘निल्लज्ज ! न लज्जसि तुमं इमाणं निययपंचभूयाणं; जेण एवं वराइं अयसपयाणेण संताविंतो ममं पि परपुरिसं भणसि ?’ । तओ थैरेण भणियं-‘पुत्तं ! पच्चक्खं दिट्ठो मए परपुरिसो । न एयं अन्नहा भवइ’ । तेण भणियं-‘अहं सो । कहियं च मम इमाए तीए वेलाए जहा एसो ते जणओ मम चलणाओ नेउरं गहेऊण एस वच्चइ’ त्ति । इमं च एत्तियं तीए बहूए उल्लावसंलावं तेसिं इओ तओ कम्मवावारसत्ताए निसामिऊण भणियं मायाकुडिलहिययाए-‘किं मे एस एत्तियं पलवइ असमंजसं ?’ । तओ कहियं भत्तुणा इमं से-‘इमं च असंबद्धं एसो तुम्होवरिं जंपइ’ त्ति । तओ हालाहलमहाविसगंठि व्व विसमहिययाए भणियं तीए-‘अहमत्ताणं सोहेमि चिट्ठुउ एसो सिरयंमि’ । तओ ससुरेण भणियं-‘एवं कुणसु’ त्ति । इमं च कलयलं सोऊण मिलिओ सव्वो सयणो । तेण य सयणेण य ठाविओ पक्खो निबद्धो क(का)रो । तंमि य नयरे अत्थि एक्को जक्खो ससंनेज्झो, तस्स य चलणाणं विवरेणं गच्छइ सव्वो वि जणो विसंवाए सोहिनिमित्तं । तत्थ जं दोसगारिणं तं सो गिण्हइ जंघाहिं । न पुण सेसं । उवट्ठिया य सा तस्स पुरओ ण्हायसुइभूया कयबलिकम्मा य कारदियहे । उवट्ठिओ उभयपक्खेहिं पि बंधवजणो । सो य माहणजुवाणो तं दियहं पइ काऊण गहियउम्मत्तगवेसो केरिसो जाओमसिणा गुंडइ अत्ताणयं, उद्धूलए य

छारधूलिणा, धावए दिसोदिसं, नच्चइ चच्चरेसु, अवरुंडए महिलाओ, आरुहइ कडियलेसु, गिणहइ उत्तरिज्जाइं, पकडूए नियंसणाइं, पहसइ अट्टट्टहासेहिं । तओ एवं च सव्वहा तेण रंजिओ लोओ । बहुडिंभवंद्रपरिवारिओ विगयवत्थो परिभमइ नयरमज्जेणं ति । तंमि उ दिणे जक्खपुरओ ण्हाइउत्तिन्नाए तीए अइदक्खत्तणे- णुद्धाइऊण वेगेण अ(उ)वगूढा सा गाढं तेण । तओ भउव्वेविरपओहराए इव ससज्झसं नोल्लिओ इव । तीए अंबाडिओ य लोएण । पहओ य मुट्टिप्पहारेहिं । गओ य अट्टट्टहासं कुणमाणओ । तओ सा पुणो विण्हाइऊण उवट्टिया जक्खपुरओ । कया य सावणा एवं तीए-‘भो भो लोगपाला ! अहो जक्ख ! अईव पच्चक्खो तुमं । ता जहट्टियं पेच्छसु, जइ मह मायापिईविदिन्नं निययभत्तारं मोत्तूण अन्नो को वि कंठेऽवलगो इमं च उम्मत्तगं जं तए वि दिट्ठं सव्वजणपच्चक्खं विलगं तं पि मोत्तूण, ता गिणहसु ममं; अन्नहा मुंचसु’त्ति । इमं च भणमाणी जाव जक्खो तं तीए वयणं कुडिलहिययविणिग्गयं सव्वप्पयारेहिं परोप्परं विरुद्धं विमंसिउं पयत्तो, ताव सा सहसा विणिग्गया जक्खजंघाविवरंतरालेण । तओ भणियं च सव्वलोएण-‘सुद्धा सुद्ध’त्ति । गहिओ सहत्थतालं थेरो समागयजणेण । हीलिओ य बहुप्पयारं । तओ सो चिंतिउं पवत्तो-सोहणं जमहं पवंचिओ इमीए दुट्टसीलाए; जं पुण एसो वि जक्खो पवंचिओ तमित्थ अइमहंतो विम्हउ ति ।

भणियं च- “विसमसहावो मयणो, विसमसहावाओ महिलियाओ य ।

गुरुरागंधमणाओ, कज्जाकज्जं न याणंति” ॥१८॥ []

“रोविंति रुयावंति य, अलियं जंपंति पत्तियावंति ।

कवडेण य खंति विसं, मरंति नो जंति सव्वभावं” ॥१९॥ []

तओ इमाए य चिंताए पणट्टा से निदा । इमं च सोच्चासवणपरंपराए निसुयं जियसत्तुनरवइणा । जहाइब्भस्स किल पणट्टा निदा । तओ चिंतियं नरवइणा-सोहणो अंतेउरमहल्लगो सो हवइ । तओ हक्काराविरुण य निउत्तो अंतेउरदुवारवालो । समागया य रयणी । सुवन्नो य जामिणीए दुवारपएसे । तस्स य अंतेउरियावासभवणस्स हेट्टे रायहत्थी आलाणखंभे निबज्झइ । एगा य महादेवी हत्थिर्मिंठे पसत्ता । चुंवालयोओ हत्थी करेण तं ओयारेइ । उचियसमएण कयकज्जं पुणो वि तत्थेव पडिनियत्तेइ ति । एवं च वच्चए कालो । तंमि दिवसे नियओयरगाओ बहुसो निग्गमणपवेसं कुणमाणी उवलक्खिया तेण

थेरेण । जहा न हवइ एसा सोहणा । ठिओ पसुत्तवेड्डेण । जाणियं च तीए । जहा पसुत्तो किर एसो । तओ निहुयपयसंचारं निग्गया सा मत्तवारणए । तओ घेत्तूण करिणा करेण उक्खित्ता तस्स ठाणस्स विमुक्का धरणीए । समाहया य कुविऊण हत्थिलोहसंकलाए मिंठेण चिराओ समागय त्ति काऊण । कहियं च तीए जहा एरिसो को वि अज्ज रक्खवालो समागओ जस्स निद्दा वि नत्थि । ता मम किं पि मा रूसह त्ति । तओ उचियसमएण य कयकज्जा तेणेव विहिणा समागया निययवासहरं । इमं च सव्वं दिट्ठं तेण । अंतेउरमहल्लएण । तओ चिंतिउं च पयत्तो-पेच्छ एवं परिक्खिज्जमाणीओ वि एयाओ एवं ववहरंति । किं पुण ताओ अम्ह सच्छंदविलयाओ । ता अवस्समेवमेवं गिहे गिहे, न को वि एत्थ विम्हओ, अक्खेवकरणं वा ।

अवि य- छडुंति जणणिजणए, भत्तारं तह कुलं च सीलं च ।

न मुपांति सुकय-दुकयं, मयणपसत्ताओ महिलाओ ॥२०॥

लंघंति फुल्लिसयसंकुलाओ अडवीओ सीहपउराओ ।

रत्तिं दियहे नूणं, कायाण वि हुंति भीयाओ ॥२१॥

मयणानलतवियाओ, निच्चं परपुरिसबद्धरागाओ ।

लंघंति जलनिर्हिं पि य, दीसंति य मुद्धवयणाओ ॥२२॥

गिरिसिहरे दुग्गमकंदरे य लंघंति मयणमूढाओ ।

विसमं पि कयग्घाओ, मन्नंति समं सकज्जंमि ॥२३॥

अह करिमइंदसप्पे, फुल्लिपिसाए य चोरवंद्रे य ।

न गणांति महारुट्ठे, नारीओ अन्नसत्ताओ ॥२४॥

सव्वहा एरिसाओ इमाओ किमेत्थ चित्तखेएणं । इमं च परिचिंतेमाणस्स समागया तस्स निंदा । निययसमएण विगलिया जामिणी । पबुद्धो य सव्वो लोओ न उण सो इब्भो । निवेइयं च नरवइणो जहा-सो अज्ज(?) अज्ज वि पवड्डइ (न उट्टइ) जो किल पणट्टुनिद्धो त्ति । निवारिओ य परियणो राइणा, जहा-‘न पडिबोहणीओ एसो । कारणेण एत्थ भवियव्वं’ । तओ विउद्धो निंदाखएण । सद्दाविओ नरवइणा, समागओ य । पुच्छिओ य किं निमित्तं समागया ते निद्दा अज्ज ? तओ तेण भणियं-‘देव ! न किं पि तहाविहपओयणमत्थि’ । राइणा भणियं-‘न निक्कारणा एसा ते निंदा । ता सव्वहा कहसु’ त्ति । सेट्टिणा भणियं-जइ एवं ता देव ! निसुणसु ।

अवि य- इंधणरहिया महिला, नूनं जालावली सुपज्जलिया ।
 सत्थं च सल्लहीणं, पंको घणसमयपरिहीणो ॥२५॥
 कसणिरहिया भुयंगी, विज्जुनिवाओ य जलहरविहीणो ।
 गोत्ति व्व अणवराहा, निल्लोही खग्गधारा या ॥२६॥

जेण- महिलाए असंगयसीलयाण अन्नोन्नदिन्नहिययाण ।
 अन्ने कुणंति तत्तिं, अन्ने पुण वल्लहा हुंति ॥२७॥

तहा य एयाओ एवंविहाओ भवन्तेव । जओ भणियं च-

“घेप्पइ जलंमि मच्छे, पक्खी गयणंमि विज्झाए राहा ।
 गहियं पि विहडइ च्चिय, दुग्गेज्झं महिलियाहिययं” ॥२८॥ []

“वेसं पि सिणेहेण व, रमंति अइवल्लहं पि निन्नेहा ।
 कारणवसेण नेहं करिंति निक्कारणे नेय” ॥२९॥ []

“रमयंति विरूवं पि हु रूवं पुण परिहरंति दूरेण ।
 रूयविरूयवियप्पो किं हियए होज्ज एयाण” ॥३०॥ []

तहा देव !- दुज्जणमेत्तीओ इव, जाओ निच्चं पि वंचणपराओ ।
 लंघियनियमज्जाओ, संज्झाराउ व्व अथिराओ ॥३१॥
 मयणगिगपलित्ताओ, जाओ निच्चं पि कलुसियमणाओ ।
 बहुमायाभरियाओ, कुललंछणदाणपउणाओ ॥३२॥
 बुद्धिमया पुरिसेणं, ताओ निच्चं पि वज्जणीयाओ ।
 जे पुण न बज्झइ च्चिय, तं सो बज्झिज्जइ इमाहिं ॥३३॥
 इय दिट्ठुनट्ठुतडिविलसियाण निच्चं पि अथिररायाण ।
 महिलाणं को गच्छइ, सब्भावं वंचणपराण ॥३४॥

तओ राइणा भणियं एवमेयं । साहिओ तेण सव्वो र[त्तिवइ]यरो, जहा-‘एवं
 इमेण पओगेण एगा देवी इमं च एवंविहं कम्मं समायरइ सह मिंठेण । ता देव !
 इमेण कारणेण मे समागया निदा’ । तओ इमेण य वेरगेण पव्वज्जं पडिवन्नो सो
 सेट्ठी । नरवइणा य समाहूयाओ सव्वाओ देवीओ । ठिओ य एगंतोयरगे । भणियाओ
 य देवीओ-‘अज्ज मे कुसुमिणं दिट्ठं । ता तस्स पडिहणणनिमित्तं भिंडमयहत्थि होऊण
 विवत्थाओ य कयबलिकम्माओ य जहा परिवाडीए विलंघेह एयं । तओ विलंघिओ

सो भिंडमयहत्थी सव्वाहिं । न उण महादेवीए । भणइ य सा-‘बीहेमि अहमिमस्स । तओ नरवइणा पहया पउमनालपहारेण । मुच्छविहला य निवडिया धरणीयले । नायं च राइणा जहा एसा सा कारगारि त्ति । भणिया य’-

अवि य- आरुहसि निच्चपगलियमयवसघुमंतमत्तकरिनाहं ।

भिंडकरिणो य वुत्ती उप्पिच्छमणा कहं जाया ? ॥३५॥

विसहसि वियसियवयणा पावे ! दढलोहसंकलपहारं ।

संपइ मोच्छं पत्ता तं छित्ता पउमनालेण ॥३६॥

तओ एवं च निसामिऊण भीया सा । जाणियं च जहा-नायाहं नरवइणा । तओ राइणा निरिक्खियं सरीरं । दिट्ठो य पट्ठीए संकलापहारसलवट्ठो । तओ महाकोवानल-पज्जलिएण नरवइणा देवी मिंठो हत्थी य समारोवावियाइं छिन्नटंके महीहरे । भणिओ मिंठो-‘अरे ! चोएसु हत्थि’ । चोइओ य तेण । तओ[कओ] एगो चलणो आगासे गयवइणा । भणिओ य जणेण नरवई-‘किमेस तिरियजोणिसमुब्भवोऽवजाणइ वराओ । एत्थ इयाइं दो वि कारगारीणि’ । नेच्छियममरिसेण नरवइणा । पुणो चोयाविओ । चोइओ य ठिओ दोहिं वि चलणेहिं आयासे । पुणो वि भणिओ जणेण राया । पुणो वि नेच्छियं नरवइणा । तओ ठिओ एगेणं चलणेणं, तिन्नि पुण आयासे । तओ हाहारवगब्भिणं आकंदियं समागयलोएण-‘अहो किमेइणा हत्थिरयणेण विणासिएण’ । इमं च हाहारवं निसामिऊण जणसमूहस्स समागयं चित्तं [राइणो । भणियं च] ‘नरवइणा-किं रे ! तरसि नियत्तेउं वारणं ।’ तेण भणियं-‘देव ! तरामि जइ अम्हाणं दोण्ह वि देसि अभयं । राइणा भणियं-‘एवं दिन्नमभयं तुम्हाण’ । तओ तेण ंकुसपओगेण तहा एक्कचलणोवरिं भामिऊण [चोइओ] जहा समभूमिभायं समागओ इत्थि त्ति । तओ राइणा संपूइओ कुंजरवरो । समप्पिओ अन्नस्स हत्थारोहस्स । ताइं वि निव्विसयाइं समाणत्ताइं । गयाइं च गामंगामेण अणवरयप्पयाणएहिं दूरं देसंतरं । भणिया य तेण देवी-‘मा वच्चसु विसायं । अहं ते सव्वप्पयारेण भलिस्सामि’त्ति । तीए भणियं-को अन्नो तुमं मोत्तूण पडिवन्नवच्छलो ता सव्वहा तुमं मम गइ त्ति । एवं च परोप्परं कयववत्थाइं पयट्ठाइं दक्खिणावहं । तओ अन्नंमि दिणे पहस्सम-परिसंताइं वहिऊण सव्वदिवसं संज्झायाले पत्ताइं एगं नयरं, समावासियाइं देवउडीए पसुत्ताइं य । समागया य निद्दा । मज्झरत्तसमए य रन्नो गिहे खत्तं पाडिऊण तक्करो

एगो घेत्तूण य कणयाहरणकरंडियं विणिग्गओ । [पट्टिपहावियरायपुरिसो] सो य तक्करो तीए देवउडीए इओ तओ परिब्भममाणो समावडिओ पसुत्ताए देवीए सररीरे । चिंतियं च तीए-अहो सुकुमालत्तणं कस्स वि पुरिसस्स ! ता किमिमेण माणुसजंमेण दिव्वफासपुरिसेण समं न परिभुंजंति विसया । तओ चंचलत्तणओ महिलासहावस्स, अथिरत्तणओ नेहाणुबंधस्स, विवरीयत्तणओ य मयणस्स ।

अवि य- एक्कं गिण्हंति इमा, अन्नं मुंचंति तह रमंतन्नं ।
 अन्नेण समं नेहो, पयडंति य तह य अन्नेणं ॥३७॥
 मारिंति नियपइं पिय, अन्नस्स कएण मूढ्हिययाओ ।
 तं पि य अन्नस्स कए, अन्नं पुण अन्नकज्जेणं ॥३८॥
 मारेउं भत्तारं, मरंति तह अप्पणा पुणो चेव ।
 चरियं न याणिमो च्चिय, एसिं कह निम्मियं विहिणा ॥३९॥
 मारिंति पइं पुत्तं, पियरं तह भायरं च मायं च ।
 अत्ताणं च परं चिय, विसयाण कएण मूढओ ॥४०॥
 इय वंकं चिय, चरियं महिलाण सप्पगइसरिसं ।
 हिययं दढवज्जसमं, महुस्तं किं पि वायाए ॥४१॥

तओ, अज्जउत्त जंबुणाम ! किं भणिओ सो तीए महादेवीए तक्करपुरिसो ?-
 'को सि तुमं ?' तेण भणियं-'किं मया पावकम्मेण ते पओयणं ?' । तओ देवीए भणियं-'कीस तं पावकम्मो' । तओ कहिओ तेण सव्वो नियवइयरो । तओ तीए भणियं-'अहं ते देमि जीवियं किंतु मम पइणा भवियव्वं तए' । तेण भणियं-'केण पओएण देसि ?' ति । तीए भणियं-'अत्थि मम पसुत्तो एस भत्ता । इमस्स इमं आरोविमो रित्थं । जेण चोरो ति काउं इमं गिण्हावेमि अहं । अत्थि य मम निययमाभरणं । तं च गहिऊण गच्छामो पहाए जहिच्छियं ठाणं' ति । तओ पडिवन्नं च तीए वयणं तक्करेण ।

अवि य- मच्चुमुहतिक्खदाढासमूहकोडीविवरप्पडियं पि ।
 जइ रक्खिज्जइ पुरिसं, नूणं जावाउयं दीहं ॥४२॥

भणियं च- "अणुपुंखमावहंता [य] अणत्था तस्स बहु गुणा हुंति ।
 सुहदुक्खकच्छपुडओ, जस्स कयंतो वहइ पक्खं" ॥४३॥ []

तओ उचियसमएण पहाया रयणी । भणियं च तीए महादेवीए-‘भो भो ! पुरिसा एसो सो तक्करो चिद्धइ पसुत्तो, जो तुम्हाण पणट्ठो । गहिओ य पहाविऊण तेहिं बद्धो य’ ।

भणियं च- “सक्का सीहस्सवणे, पलाइउं हत्थिणो य मत्तस्स ।

सुकयस्स दुक्कयस्स व, भण कत्थ पलाइउं सक्का” ॥४४॥ []

“जं जेण पावियव्वं, सुहं व दुक्खं व जीवलोयंमि ।

अप्पाणेण य वच्चइ, निज्जइ य बला कयंतेण” ॥४५॥ []

तओ भणित्तं च पयत्तो सो-‘किम[णव]गारिणं ममं बंधह ? एसा मम भज्जा अम्हे दो वि पंथियाणि ।’ तीए भणियं-‘हा हयास ! पत्तं ते असमिक्खियकारित्तणो संपयं फलं; तहावि एवं असंबद्धं पलवसि ?’ तओ तेण चिंतियं-एयं पि भवइ एयाए सयासाओ ।

तओ-एक्कं गिण्हंति इमा, मुंचंतन्नं पुणो रमंतन्नं ।

अन्नं अन्नं च पुणो, मुच्चंति गिहं अभव्वाओ ॥४६॥

तओ एवं चिंतंतो पणामिओ राइणो सयासं सो । राइणा वि वज्झो समाणत्तो । सो भिन्नो सूलियाए । अवगोसणीए सा गया सूलिया । न मओ तक्खणं । गहिओ य दूसहतण्हाए । तओ भणित्तं च पयत्तो सो-‘भो भो लोया ! अणवराही अहमेत्थ गहिओ पुव्वभवकयमसुहकम्मणा, न पुण चोरो अहं भवामि । ता अणाहं ममं पाएह पाणियं’ ति । तओ एवं च कलुणं विलवंतस्स गहिया अणुकंपाए बहवे नायरया । न य रन्नो भएण दाउं तरंति उदयं । एयंमि य अवसरे समागओ तेणंते जिणयासो नाम सावगो । तओ नायरएहिं चिंतियं जइ परं एसो इमस्स कज्जस्स समत्थो । तओ आसन्नमागओ [नायरएहिं य सो चोरो भणिओ ?] ‘भो ! इमं जिणयासं नाम सावगं नयरपहाणं कारुणियं, ता इमं जायसु जइ परं इमो एयस्स कज्जस्स समत्थो । तओ आसन्नमागओ भणिओ तेण-‘भो भो ! जिणयाससावग ! परमकारुणिओ तुमं । अज्जप्पभिइं च पडिवन्नो मए एस तुम्ह धम्मो । ता परितायसु ममं साहंमियं जलपाणेणं’ ति । तओ परिचिंतियं जिणयासेण-अहो एस एवंविहावत्थगओ साहंमियत्तणमवलंबिऊण उदगं पत्थेइ, ता किमेत्थ करणीयं ? एगत्तो मम मरणं

अन्नतो पवयणाइयारो । ता किं सेयं ? अहवा वरं मरणं मा पवयणाइयारो त्ति । जओ भणियं-‘जिणपवयणस्स अहियं सव्वपयत्तेण वारेई’ । ता देमि से उदगं । भणिओ य सो-‘वच्छ ! जइ एवं तुमं मम साहंमिओ ता एयं पंचनमोक्कारं अणग्घेयरयणं घोसंतो चिट्ठु; जाव अहं उदगं समाणेमि’ । पडिवन्नं च तेण । दिन्नो य से नमुक्कारो । घोसिउं च पवत्तो । तओ थोववेलाए समागओ **जिणयासो** घेतूण उदयं । दिट्ठो य तेण । तओ हरिसिओ चित्तेण-अहो धम्मप्पहावो, अहो जिणसासणपवन्नाण करुणत्तणं, अहो साहम्मियवच्छलया, अहो वंचिया(यो) एत्तियं कालं इमस्स अणग्घेयधम्मरयणस्स । तओ एवं च नमोक्कारपरायणस्स गाढं रोमंचकंचुयसरीरस्स संजाया पमोक्कला ऊसासनीसासा । तओ धस त्ति सा सूलिया निग्गया तस्स सिरेण । तओ विसिट्ठवासणोवगयचित्तो नमोक्कारपभावेण य मरिऊण **सोहम्मे** कप्पे देवो उववन्नो । पउत्तो य ओही किंफला किल मम एसा देवरिद्धी संजाया । जाव दिट्ठुं नियसरीरयं सूलाए विभिन्नं, नाओ य पुव्वभवो । जाणियं च नमोक्कारफलमेयं ।

इओ य दिट्ठो **जिणयासो** चारगपुरिसेहिं तस्स उदगं पयच्छंतो । तओ गहिऊण य उवणीओ रायउत्ते ताव जाव राइणा समाइट्ठा तस्स सूलिया । इमं च वइयरं दट्ठूण वेगेण समागओ सो देवो । तओ चउद्दिसं अट्ठट्ठहासपुव्वयं भणियं देवेण-‘अरे रे ! सुमरह इट्ठेदेवए । समागओ अज्ज तुम्हाणं मच्चू’ । इमं च भणमाणस्स समागया वडिया पत्थरसंघाया जणोवरिं । पवाइओ य झंझावाओ । ठइयाइं पओलिदुवाराइं । विउव्विया य उवरिं ता[व] परिलंबमाणा सिला । इमं च सव्वं दट्ठूण भयविहलो सव्वो नायरजणो राया य निग्गओ अप्पं घेतूण । भणियं च राइणा-‘भो भो ! जो को वि अम्हाण एस परिकुविओ देवो वा दाणवो वा सो उवसमं गिण्हउ परिकहउ य जमम्हेहिं अवरद्धं’ । तओ भणियं देवेण-‘हा रे दुरायार ! पावकम्म, पुरिसाहम, निल्लज्ज, अणवेक्खियकारी ! अरे रे अनिरूविऊण जणं वावाएसि । ता एस ते मरणपज्जवसाणो दंडो न अन्नो’त्ति । राइणा भणियं-‘भो महाणुभाव ! खमसु ममेगवराहं । न पुणो वि एवं समायरिस्सं’ । देवेण भणियं-‘रे एक्कं ताव सो पंथिओ विलवंतो अदोसयारी वावाइओ तुमे । बीयं पुण इमो **जिणयासो** महाणुभावो, जो मणेण वि न समायरइ पावं, सो वि तुमे निक्कारणमेव विडंबिउं समाढत्तो । संपयं मरणं ते जइ दंडो । उवभुंजसु दुक्कयफलं’ त्ति । राइणा भणियं-‘कयं मए

अयाणमाणेणेयं मोहंधेण । न उण पुणो समायरिस्सं । ता खमसु एक्कमवराहं'ति । देवेण भणियं- 'अत्थि एक्को ते मोक्खोवाओ, जइ तं जिणयासं खमावेऊण, काऊण य हत्थिखंधमारूढं, अहिंसिचिऊण य कणयकलसेहिं, सियचंदणवत्थसुमणसाहरणं काऊण तमप्पणा मिठत्तणं पवन्नो जयजयसद्दमुहलियदसदिसं संखपडहकाहलनंदी-घोसपूरियंबरं, तियचउक्कचच्चरेण भमाडेऊण, पाएसु निवडिऊण, निययघरे पुणो मुंचसु त्ति । ता खमियव्वं न अन्नह' त्ति । तओ- 'जं तुमं आणवेसि'-भणमाणो चलिओ सपरियणंतेउरो राया । दिट्ठो य जिणयासो नरवइणा । केरिसो ?

अवि य- सिंहासणे निविट्ठो, उवरि पलंबंतधरियपुंडरिओ ।

विज्जंतचमरजुयलो, पुरओ विलुलंतचारुभडो ॥४७॥

तओ निवडिओ राया चलणेसु सव्वजणसमूहसमेओ जिणयासस्स । भणिओ य- 'सामि ! खमसु मे एयमणवेक्खियकारिणो अवराहं' । तओ जिणयासेण भणियं- 'खमियं चेव मए, न अम्हाण सासणे कीरइ रोसो'त्ति । तओ राइणा सव्वं समायरियं जहा उवइट्ठं तं देवसासणं । भणिओ य परितुट्ठेण देवेण राया- 'भो भो ! पडिवज्जसु जिणवरमयं, एस सो मग्गो संसारपञ्जवसाणसाहगो न उण अन्नो' त्ति । पडिवन्नं च राइणा जिणसासणं ।

तओ निरूवियं देवेण कर्हिं पुण सा दुरायारा देवी जाव पेच्छइ तेण चोरपुरिसेण समं चलिया चोरगामाभिमुहं । वच्चमाणाण य अद्धपहे सलिलपडिपुन्ना सरिया परिवहइ । तओ तक्करेण सा भणिया ।

चित्तियं च- एगतथ कह व पडि(इ)मोइयावि अन्नत्थ लग्गइ खणेण ।

दूरेण होउ सुहिया, महिला कन्थारिसाह व्व ॥४८॥

'पिए ! समप्पेह मम ताव सयलं वत्थाभरणं जेण इमं परतडे मोत्तूण तओ तुमं सव्वपयत्तेण उत्तारेमि । विसमा य इमा नई । मा ते को वि सरीरपमाओ भविस्सइ ।' समप्पियं च सव्वं तीए । भणिया य तेण सा- 'मुद्धे ! इमं ताव बहलपत्तनियरपडिपुन्नं पविससु सरथंभं जावा गच्छामि अहं' । पविट्ठो य सा । तओ गओ सो परतडं । भणियं च तेण ।

अवि य- भद्दे भद्दे ! निसुणसु मज्झ कए नियपइं तुमं हणसि ।

जा सा मं कह मुंचसि अन्नस्स कएण ता वच्च ॥४९॥

इमं च भणमाणो गओ तुरियपयनिक्खेवं ताव जाव अदंसणं पत्तो । तओ केरिसा पुण दिट्ठा देवेण सा ।

अवि य- ववगयवत्थाहरणा, बीभच्छा डाइणि व्व पच्चक्खा ।

किं किं पि निययहियए, कलुणं विमणा वि ज्ञायंती ॥५०॥

सा पयडभमिरसावयसंदंसणजायगरुयसंतावा ।

तरलनिवाइयलोयणदसदिसिभयवेविरसरीरा ॥५१॥

भीसणमुहकुहरविणिग्गयग्गिविसनायजायउक्कंपा ।

घोरभुयंगमफणभोयदंसणुप्पिच्छनियचित्ता ॥५२॥

इय सा भीसणरन्ने, भीया हरिणच्छिजूहपब्भट्ठा ।

वुन्नमुहतरलनयणा, रुयमाणी कलुणसद्देण ॥५३॥

तओ एवंविहं दट्टूण तं देविं जाया अणुंकंपा देवस्स । चिंतियं च णेण पेच्छ पेच्छ केरिसं अवत्थंतरं पत्ता वराई ? अह वा भणियं च-

“जं जेण जत्थ जइया, सुहं व दुक्खं व जीवलोयंमि (जेण पावियव्वं) ।

तं सोऽवस्सं पावइ, जइ वि सयं देवराओ त्ति” ॥५४॥ []

ता संबोहेमि जिणवयणे[ण] इमं वराइं । मा संसारकंतरं भममाणी इमाओ वि अहिययरं दुक्खं पाविही एसा । ततो इमं च चिंतिऊण विउव्विओ एगो तेण जंबूओ, गहियमंसपेसिवयणो । दिट्ठो नईतीरासन्ने एक्को मच्छो तेण । तओ मंसपेसिं चइऊणं धाविओ तयाहुत्तं । सो वि उप्पईऊणं जले निवडिओ । सा वि मंसपेसी गस(य)णाओ अवयरिऊणं सउणेण अवहरिया । तओ इमं च दट्टूण पहसिरीए भणियं महादेवीए ।

अवि य- मंसं चइऊण धुवं, अधुवं पत्थेसि कोल्हुया मीणं ।

धुवमधुवाणं चुक्को, अप्पमई एत्थ तं मुद्ध ! ॥५५॥

तओ जंबुएण भणियं-

मिठकए नरनाहं, तं पि य वावाइऊण चोरत्थे ।

पइ-मिठ-चोरमुक्का, अप्पाणं नोवलंभेसि ॥५६॥

पेच्छसि सुइवेहसमे, परछिड्डे न उण अप्पणो थोरे ।
अह वा सव्वो वि जणो, परिमुइओ होइ परवसणे ॥५७॥

भणियं च- “अणुसोयइ अन्नजणं, परभवसंकंतमूढबालजणो ।
न वि सोयइ अप्पाणं, किलिस्समाणं भवसमुद्धे” ॥५८॥ []

तओ एवं च भणियमेत्ता विलि(ल)या चित्तिउं पयत्ता-अहो ! पेच्छ एसो जंबुओ कह परिजंपइ माणुसवायाए । ता दिव्वो एस कोइ पओओ । तओ एयंमि अवसरे सो देवो दिप्पंतमउडमणिकिरणो । वरकुंडलरयणमयूहविमलकवोलसंकंतपडिप्पह-समुज्जोइयदिसिवरंतरालो जाओ महारूवेणं ति । कहिओ य सयलो निययवुत्तंतो । अणुसासिया य बहुसो तेण जिणप्पणीयधम्मं पइ । पडिवन्नो य भावओ तीए । उवणी[या] य तेण साहुणीणं सयासे । कहिओ य ताहिं धम्मो । तओ गहियसामन्ना परिसोहिऊण निंदणगरिहणखामणाहिं अप्पाणं कयउगतवच्चरणा कालमासे कालं काऊण सुरलोगं गय त्ति ॥

ता जह सो परिचुक्को, आमिस-मीणाण जंबुओ नाह ! ।
एवं तुमं पि चुक्कसि मोक्खस्स य तह य विलयाणं ॥५९॥

तओ इमं च निसामिऊण भणियं जंबुनामेण-‘मुद्धे ! निसुणसु ।
अवि य- विज्जाहरो व्व नाहं, विसयाण कएण दोण्ह वि भवाणं ।
परिचुक्को अप्पाणं, नरयंमि खिवामि तुम्ह कए ॥६०॥
तीए भणियं-चुक्को, कह सो विज्जाहरो विसयगिद्धो ।
दोण्ह वि किल लोयाणं कहसु पसाएण मह सामि ! ॥६१॥

तओ जंबुणामेण भणियं ।

अवि य- इंदो व्व करिसणाहो, निच्चं रंभाविदिन्नहरिसो य ।
गयणं पिव वित्थिन्नो, निच्चं पि विभंगकलिओ य ॥६२॥
मयणो व्व पत्तलद्धो, सिलीमुहो सरासणविलद्धच्छओ य ।
उन्नयवंसो अइरावइ व्व तह दीहदंतो य ॥६३॥
सरयब्भतुंगसिहरो, विज्जाहरलोयसेविओ रम्मो ।
वेयड्डो अत्थि गिरी, पुव्वावरपत्तमयरहरो ॥६४॥

तत्थ परितावरहियं, पडिवक्खविदिन्न तह य परितावं ।
 सयलं पि चउरजणनिवहसेवियं निच्चपरिमुइयं ॥६५॥
 उत्तुंगसालकलियं, पि सालकरेज्झकुसुमफलनियरं ।
 पुन्नं पि पुन्नकलियं, रुंदं पि य मडहसंचारं ॥६६॥
 विज्जाहरजणपुन्नं, नयरं अह गयणवल्लहं नाम ।
 अत्थि जए सुपसिद्धं, मणिकंचणरयणधणकलियं ॥६७॥
 गरुयपरक्कमनिज्जियपयंडपडिवक्खलद्धमाहप्पो ।
 भुंजइ तमसणिघोसो नामं विज्जाहरनरिंदो ॥६८॥
 अह तस्स अत्थि पुत्ता, विज्जाधणरूवजोव्वणसमग्गा ।
 दो भायरो महप्पा, मेहरहो विज्जुमाली य ॥६९॥
 ते अन्नया कयाई, परोप्परं मंतिऊण ते(सं?)चलिया ।
 मायंगयविज्जाए, साहणहेउं दुवे कुमरा ॥७०॥
 तीए पुण विज्जाए, एसो पुण ताण साहणोवाओ ।
 तुच्छकुले गंतूणं, परिणयव्वाओ कन्नाओ ॥७१॥
 धारेयव्वं च तहा, परिसुद्धं बंभचेरवयघोरं ।
 संवच्छरेण ताहे, सिज्झइ मायंगवरविज्जा ॥७२॥
 पत्ता दाहिणभरहे, अवयरिया ते वसंतपुरनयरे ।
 पक्कणवेसं काउं, गया य ते पक्कणकुलंमि ॥७३॥
 आराहिया य अह ते, मायंगा तेहिं दोहिं वि जणेहिं ।
 दिन्नाओ कन्नाओ, तेसिं अह तेहिं पाणेहिं ॥७४॥
 दोहिं वि विवाहियाओ, ताओ कन्नाओ पाणधूयाओ ।
 अइकसिणविरूवाओ, लालाउलवयणनासाओ ॥७५॥
 सो विज्जुमालिनामो, विज्जाहरपवरकुमरओ नवरं ।
 महिलाए आसत्तो, विज्जापरिसाहणं मोत्तुं ॥७६॥

लालाउलवयणाए, निच्चं पगलंतसव्वसोत्ताए ।
 बीभच्छरूवउव्वेवणाए मायंगधूयाए ॥७७॥
 अह भुंजइ सो भोए, एरिसरूवे अईव बीभच्छे ।
 इत्थीण अहम्माए, कुच्छियरूवाए आसत्तो ॥७८॥
 जाओ य तीए गब्भो, पुन्ने संवच्छरंमि मेहरहो ।
 परिसिद्धविज्जरयणो, पभणइ तं भाउयं ताहे ॥७९॥
 वच्चामो नियनयरं, सिद्धाओ ताव अम्ह विज्जाओ ।
 वेयड्डुनगवरंमी, कीलामो जेण कीलाहिं ॥८०॥
 भुंजामो वरभोए, विज्जाहरबालियाहिं य समेया ।
 पंचपयारे दिव्वे, विज्जाहरसिद्धसारिच्छे ॥८१॥
 लज्जोणयवयणेणं, भणियं अह विज्जुमालिणा ताहे ।
 भग्गपइन्नो अहयं, कह गच्छेमो अहं तत्थ ॥८२॥
 नो सिद्धा मे विज्जा, एसा य वराइणी गरुयगब्भा ।
 कह वच्चामि पमोत्तुं, एत्थाणाहं इमं वराइं ॥८३॥
 ता वच्च तुमं भाउय !, पुणरवि संवच्छरंमि संपुन्ने ।
 आगंतुं मं नेज्जसु, कह मुंचेमो इमं बालिं ॥८४॥
 मेहरहेणं भणिओ, वच्चसु एयाए किं अहम्माए ।
 विज्जाहरदुहियाओ, गंतूणं तत्थ परिणेषु ॥८५॥
 एवं बहुप्पयारं, भणिओ वि न जाव इच्छए गंतुं ।
 मोत्तुं तं मेहरहो, पत्तो नियपट्टणं ताहे ॥८६॥
 संवच्छरे य पुन्ने, मेहरहो विज्जुमालिणो पासं ।
 गंतूणं तं पभणइ, वच्चेण्हि वच्छ ! वेयड्डुं ॥८७॥
 भणियं च तेण एसा, एक्कं ता बालवच्छया मुद्धा ।
 बीयं च गब्भवंती, कह मुंचेमो इमं वराइं ॥८८॥

ता गच्छ तुमं पुणरवि, आगच्छसु जेण वच्चिमो दो वि ।
 उवलंभिरुण बहुहा, मेहरहो अह गओ ताहे ॥८९॥
 पुणरवि समागओ सो, भणिओ अह विज्जुमालिणा ताहे ।
 गच्छ तुमं ता भाउय !, पुणो वि मे देसु दरिसावं ॥९०॥
 ताहे मेहरहेणं, भणिओ खरफरुसदुट्टवयणेहिं ।
 धिद्धि त्ति दुट्टपावय ! अहमाहम ! जो तुमं मूढे ॥९१॥
 उववज्जिरुण विमले, विज्जाहरवरकुलंमि रे मूढ ! ।
 आसत्तो कह तुच्छे, मायंगकुलंमि रे मूढ ! ॥९२॥
 ता गच्छ तुमं पवयं, पढमं चिय किल तुमं न जाओ सि ।
 जो एवं चंडालो, तं जाओ कुलकलंककरो ॥९३॥
 मन्नसि दुक्खं पि सुहं, इंदियविसएहिं मोहिओ मूढ ! ।
 खरफरुसतज्जणाओ, सहसि य तं पक्कणकुलंमि ॥९४॥
 एवं ठिए वि(?) अज्ज वि मा, मूढ ! तुमं अप्पवेरिओ होह ।
 गच्छसु वेयड्डनगं, सुहभाई जेण तं होह ॥९५॥
 न कयाइ अहं इण्हि, आगच्छमिह पुणो वि तुह पासं ।
 ता मा मूढऽप्पाणं, वंचसु तुच्छ[य]कुलासत्तो ॥९६॥
 एवं बहुहा भणिओ, जाहे सो नेच्छि(च्छु)ओ तहिं गंतुं ।
 ताहे वेयड्डनगं, मेहरहो तं गओ मोत्तुं ॥९७॥
 पिउणा सो अहिसित्तो, रज्जे उवभुंजिरुण तो भोए ।
 रज्जं च पालिरुणं, पच्छा संजायसंवेगो ॥९८॥
 दाउं सुयस्स रज्जं, सुट्टिय अणगारसो(रिणो) सयासंमि ।
 गहिरुणं पव्वज्जं, उगं च तवं तहा काउं ॥९९॥
 अह आउयक्खएणं, पत्तो सो ! देववासवरठाणं ।
 पावेही मुत्तिसुहं, पुणो वि सो सव्वसुहसारं ॥१००॥

एवं सो मेहरहो, परंपरसुहाण भायणं जाओ ।
 इयरो वि विज्जुमाली, आसत्तो तुच्छविसएसु ॥१०१॥
 विज्जाहररिद्धीए, पुणो वि विसयाण तह य रज्जस्स ।
 सुरलोयसुहस्स तहा, तह चेव [य] सिद्धिसोक्खस्स ॥१०२॥
 जरमरणरोगपउरं, हिंडेही तह पुणो वि संसारं ।
 एसो ते दिट्ठंतो, कहिओ सुण उवणयं इण्हि ॥१०३॥
 “जह ते दोन्नि कुमारा, दुविहा जीवा तहा समक्खाया ।
 भव्वाऽभव्वा य तहा, जह मेहरहो तहा भव्वा ॥१०४॥
 ते चइउं घरवासं, पक्कणकुलसंनिभं विगयमोहा ।
 विज्जासमनाणजुया, पार्विति परंपरसुहाइं ॥१०५॥
 जे पुण इयरसमाणा, हुंति अभव्वा नरा कुगइगामी ।
 पक्कणकुले च गेहे, आसत्ता हुंति व अवत्थू ॥१०६॥
 न मुणंति [य] हियमहियं, कज्जाकज्जं व मोहसंतत्ता ।
 मायंगीए समाए, आसत्ता णिययभज्जाए ॥१०७॥
 सव्वसुहाणं चुक्का, विज्जाहरदेवरिद्धिमाईणं ।
 पार्विति पुणो दुक्खं, जह तं मुद्धे ! निसामेह ॥१०८॥
 ते जम्ममरणसलिलं, कसायजलयरसमाउलं भीमं ।
 हिंडंत(ति) सुइरकालं, मोहावत्तं भवसमुद्धं ॥१०९॥
 पार्विति महाघोरं, दुक्खं कुगईसु तेसु संतत्ता ।
 छिंदणताडणमारणफालणउक्कत्तणाईयं ॥११०॥
 सोक्खं सरिसवसरिसं, दुक्खं पुण मेरुपव्वयसमाणं ।
 पार्विति य नरयाइसु, कुगईसु ते सु(?) पाणिणो पत्ता ॥१११॥
 उयहिसमाणं दुक्खं, सोक्खं पुण तिलतिभागसममेत्तं ।
 जीवाणं संसारे, वेरगं तह वि हु न जंति ॥११२॥

भणियं च एत्थ गुरुणो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ।
सासणपभावणेणं, कविणा केणावि इयमत्थं ॥११३॥

“सुरनरनिरयतिरिक्खेसु वट्टमाणामेत्थ जीवाणं ।
को संखं पि समत्थो, काउं तिक्खाण दुक्खाणं ॥११४॥ []
अच्छंतु तिरियनरएसु जाव अइदूसहाइं दुक्खाइं ।
मणुयाण वि जाइँ हवंति ताइँ को वच्चए अंतं ॥११५॥ []
जं होइ जियाण दुहं, कलमलभरियंमि गब्भवासंमि ।
एक्कं चिय वच्चइ नवर तस्स तं चेव सारिच्छं ॥११६॥ []
जायाण वि जम्मजरामरणेहिं अभिहुयाण किं सोक्खं ।
पियविरहपवरभ(परब्भ)त्थणपमुहमहादाहगहियाणं ॥११७॥ []
जं पि सुरयंमि सोक्खं, जायइ जीवस्स जोव्वणे तस्स ।
तं पि य चिंतिज्जंतं, दुक्खं चिय केवलं नूण ॥११८॥ []
पामागहियस्स जहा, कंडुयणं दुक्खमेव मूढस्स ।
पडिहाइ सोक्खमउलं, एवं सुरयंमि विन्नेयं ॥११९॥ []
वंचिज्जइ एस जणो, अचेयणो पमुहमेत्तरसिएहिं ।
खलसंगएहि व सया, विरसेहिं तह य भोगेहिं ॥१२०॥ []
ता उज्झिऊण एयं, अणवरयं परं(परम?)मोक्खसंजणयं ।
तित्थयरभासियं खलु, पडिवज्जह भावओ धम्मं ॥१२१॥ []

जओ- “जोव्वणमारोगं, चिय पियसंवासा तहेव जीयं च ।
सव्वाइं चंचलाइं जिणधम्मो वज्जियं मोत्तुं ॥१२२॥
ता जो अप्पाणहियं, जाइजरामरणसूडणं धम्मं ।
न कुणइ अणागयं चिय, सो सोयइ मरणकालंमि” ॥१२३॥
ता गिद्धो कुकलत्ते, नाहं विज्जाहरो व्व मोहंधो ।
विसयाण कएणेयं, संसारं कह पडीहामि ॥१२४॥

पालेऊणं गुणोहं विमलजणमणाणंदयारे विसाले,
भव्वा जे हुंति जंतू जिणमयकुसला गेहगुत्ति चएउं ।
नाणं चारित्तसम्मं विविहतवजुयं संजमं संपवन्ना,
सिद्धिं गच्छंति धीरा विगयरयमला मोहमल्लं निहेउं ॥छा॥ ॥१२५॥
इय जंबुणामचरिए, पउमसिरीदत्त-उत्तरभिहाणो ।
उद्देसगो समत्तो, संपइ सेसं पवक्खामि ॥छा॥ ॥१२६॥



॥ बारसमो उद्देसओ ॥

एत्थंतरम्मि भणियं, सहरिसपडिबुद्धपंकयमुहाए ।
सललियमिउवायाए, भज्जाए पउमसेणाए ॥१॥
पियसहिओ ! एसऽम्हं, होज्ज पिओ नूण धमगसारिच्छे ।
जह सो पच्छायावं, पत्तो तह पाविही एस ॥२॥

भणियं च- “जइ वि धमिज्जइ कज्जे, किं पुण सोहेज्ज नेय अइधमिए ।
धमिएण जं विढत्तं, पणासियं अइधमंतेण” ॥३॥ []

तओ इमं च निसामिरुण वियसंतवयणपंकएण भणियं जंबुणामेण-‘को सो मुद्धे ! धमगो ? कहां वा पच्छायावं पत्तो ? त्ति । को वा इमस्स अइधमियधमियस्स अत्थो ?’ तओ तीए भणियं ।

अवि य- अत्थि इह भरहवासे, कलिंगविसयंमि नाम वडवद्दं ।
गामो बहुधणकलिओ, गोमहिस[स]माउलो रम्मो ॥४॥
परिवसइ तत्थ एगो, कुडुंबिओ खेतकरिसणपसत्तो ।
वरिसाले सो छेत्तं, परिरक्खइ सावयाईणं ॥५॥
संखं वाएमाणो, अच्छइ सो तत्थ सव्वरयणिं पि ।
तेणंतेणं चोरा, समागया अन्नदियहंमि ॥६॥
सोऊण संखसद्दं, ते भीया गोहणं पमोत्तूण ।
दिसि-विदिसिं च पलाणा, किल कुढिया आगया एए ॥७॥
दिट्ठं तं तेण धणं, नायं जह संखसद्दभीएहिं ।
मुक्कं चोरेहिं इमं, गहियं अहं तेण तं सव्वं ॥८॥

गंतूण तेण गामं, भणियं अह देवयाए तुट्टाए ।
 दिन्नं गोहणमेयं, चिट्ठइ परिपालयंतो य ॥९॥
 वाएइ य सो संखं, पइदियहं चितए य सो एवं ।
 अन्नं पि संखभीया, चोरा मुंचंति जइह धणं ॥१०॥
 अन्नंमि पुणो दियहे, गहणं गहिउं समागया चोरा ।
 निसुओ य संखसद्धो, भणियं अवरोप्परं तेहिं ॥११॥
 एसो पुणो वि निसुओ, संखो अम्हेहिं एस वज्जन्तो ।
 ता मा मुंचेह धणं, संकाए एत्थ कुढियाणं ॥१२॥
 ताव निरिक्खह एयं, संखं को एत्थ वायए रन्ने ।
 समकालं गंतूणं, निरिक्खयं जाव सो दिट्ठो ॥१३॥
 दिट्ठं च गोहणं तं, जं मुक्कं संखसद्धभीएहिं ।
 परिनायं तं तेहिं, सव्वेहिं वि चोरपुरिसेहिं ॥१४॥
 एयं तं अम्ह धणं, भणियं चोरेहिं एस सो चोरो ।
 संखं पवा[इ]ऊणं, अवहरियं जेहिं(ण) अम्हाण ॥१५॥
 एवं भणमाणेहिं, बद्धो सो तक्करेहिं हणिऊण ।
 तं गोहणं च सव्वं, अवहरियं तस्स चोरेहिं ॥१६॥
 ता जह सो परिचुक्को, पुव्वविट्ठत्तस्स अइव धमिएण ।
 तह मा तुमं पि चुक्कसि, विसयाणं तह य मोक्खस्स ॥छा॥ ॥१७॥
 तओ इमं च निसामिऊण भणियं जंबुणामेण-‘मुद्धे ! निसुणेसु । अवि य’-
 नाहं मुद्धे ! सो वानरो व्व इह मंदबुद्धिओ होउं ।
 बंधावे अप्पाणं, विसयाण कएण तुच्छणं ॥१८॥
 तीए भणियं-‘कह सो इह बद्धो वानरो ? कहसु सामि ।’
 जंबुकुमारेण तओ, भणियं-सुण एक्कचित्तेण ॥१९॥
 विलय व्व तिलयकलियत्थि कुसुमपब्भारनिम्महंता य ।
 नवघणपडलसुसामा, विंझगिरि कडंमि वणराइ ॥२०॥

सच्छंदसुहविहारो, बहुणा कालेण परिणओ जाओ ।
 वानरजूहाहिवई, जूहेण समं तर्हि वसइ ॥२१॥
 झाडेइ य सो सव्वे, अन्ने बलदप्पवीरियसमिद्धे ।
 जे के वि वानरभडे, जूहाओ दप्पबलकलिए ॥२२॥
 बलवइणा अन्नेणं, दिट्ठो सो वानरेण तरुणेण ।
 जुज्झं च संपलग्गं, दोण्ह वि बलदप्पकलियाण ॥२३॥
 कहकह वि निज्जिओ सो, [अइ]कट्ठिणकरचलणप्पहारेर्हि ।
 जूहाहिवो बलवया, तरुणेणं वानरभडेणं ॥२४॥
 पडिभग्गदप्पपसरो, छड्डेउं कह वि तस्स सो नट्ठी ।
 इयरो वि मग्गलग्गो, दूरं गंतुं पडिनियत्तो ॥२५॥
 भयतरलनयणजुयलो, तुरियपयक्खेवनिहियसंचारो ।
 किल मम पत्था(च्छ) पहवइ, सत्तू सो धाविओ दूरं ॥२६॥
 निद्दयपहारविहुरो, तण्हाभुक्खाकिलंतनियदेहो ।
 पत्तो महइ महंतं, गुहमेक्कं पव्वयनिगुंजे ॥२७॥
 तत्थ य सिलायलंमि, परिस्सवंतं सिलाजउं दट्ठुं ।
 भयवसवेविरनयणो, पत्तो सो तस्स तीरम्मि ॥२८॥
 परिसुसियवयणकंठो, तण्हावसपरिकिलंतनियदेहो ।
 मन्नंतो जलमेयं, वयणं परिखिवइ जा तत्थ ॥२९॥
 ता तं तस्स निविट्ठुं, सिलाजऊ जाव मज्झ संपत्तं ।
 वयणस्स मोयणट्ठा, पसारिया अह करा तेण ॥३०॥
 ते वि निबद्धा दोन्नि वि, एवं पाया वि(?) पहाणअंगेसु ॥३१॥
 परिखिज्जिऊण पत्तो, तत्थेव सिलाजउंमि सो निहणं ।
 वयणपरिमेत्तबद्धो, कह वि पयत्तं जइ करितो ॥३२॥
 ता कह कह वऽप्पाणं, मोयंतो वानरो सिलाजउणो ।
 एयस्स उवणयमिमं, सुण दिट्ठंतस्स तं मुद्धे ! ॥३३॥

वानरकप्पो जीवो, सिलाजऊसरिसमोहसंबंधो ।
 पंचसु वि इंदिएहिं, विसयासत्तो इमो पावो ॥३४॥
 पावइ पुणो पुणो च्चिय, निहणं संसारसायरे घोरे ।
 जूहाहिवई व इमो, बद्धो पंचसु वि अक्खेसु ॥३५॥
 जइ पुण कुणइ पयत्तं, इंदियविसएसु एस दुट्टजिओ ।
 ता मुंचइ बंधाओ, तडट्टिओ विसयसंगस्स ॥३६॥
 जइ पुण इंदियसत्तो, मज्झे वियसाण वट्टए तेसिं ।
 ता नरय-तिरिय-कुमणुय-किव्विसदेवेसु परिभमइ ॥३७॥
 एक्केक्किंदियबद्धा, बहवे निहणं गया इहं जीवा ।
 पंचणह वि वसवत्ती, निहणं पावेइ सुट्टयरं ॥३८॥
 गंधव्ववीणवाइयरामाकलसद्भूसणक्खेहिं ।
 सवणिंदियवसवत्ती, हरिणो इव गच्छइ विणासं ॥३९॥
 लीलाण[ल]?सविलविलोलनयणविक्खेवक्खि(खि)त्तनयणमणो ।
 चक्खिंदियवसवत्ती, सलहो इव जाइ विणिवायं ॥४०॥
 कुंकुमकप्पूरागरुहरियंदणबहलपरिमलाखित्तो ।
 गंधिंदियवसवत्ती, भसलो इव नासमुवयाई ॥४१॥
 महुरन्नपाणसोणियपिसियमहुरविसयरसगिद्धो ।
 जिब्भिंदियवसवत्ती, विणिवायं जाइ मीणो व्व ॥४२॥
 रामाकोमलसंफरिससुरयसुमणसविलेवणक्खित्तो ।
 फासिंदियवसवत्ती, गओ व्व परिबज्झए मूढो ॥४३॥
 एवमणोगे दोसा, पणट्टिट्टेड्डिसिट्टेड्डाणं ।
 दुव्विहियइंदियाणं, हवंति बाहाकरा बहवे ॥४४॥
 एक्केक्केण विणट्टा, इंदियदोसेण रागदोसत्ता ।
 एए किं पुण एसो, जीवो पंचिन्दियवसट्टो ॥४५॥
 सो नत्थि अक्खविसओ, जेणब्भत्थेण कह वि एयाइं ।
 तित्ताइं मुद्धि नूणं, हवंति निच्चं पि तिसियाइं ॥४६॥

तम्हा नाऊण इमं, इंदियपडिवक्खवत्तिणा निच्चं ।
 होयव्वं बुद्धिमया, नरेण जिणवयणकुसलेण ॥४७॥
 इंदियविसयाण तहा, भावेयव्वं विवायविरसत्तं ।
 आवेइऊण विसए, रागद्वोसाण परिहरणं ॥४८॥
 एवं चिय कुणमाणो, एसो अइरेण पावए मोक्खं ।
 सव्वकिलेसविमुक्को, जीवो मुद्धे ! न संदेहो ॥४९॥
 ता परिमुंचह गाहं, मा मुद्धे ! वानरो व्व पडिबद्धा ।
 निहणं भवकंतारे, पाविस्सह इंदियवसाओ ॥५०॥

अन्नं च- गिण्हह महव्वयाइं, होह सया नाणचरणकलियाओ ।
 सम्मत्तभावियाओ, पंचसु समिईसु समियाओ ॥५१॥
 सज्झायझाणतववावडाओ निच्चं विसुद्धलेसाओ ।
 बंभव्वयकलियाओ, उवसग्गपरीसहसहाओ ॥५२॥
 सीलंगसहस्सद्वारसगुरुभरभारमत्तजत्तट्टं ।
 रागद्वोसविहीणं, महुरवित्तीए उवलद्धं ॥५३॥
 नवकोडीपरिसुद्धं, उंछं गिणहेह देहजावट्टं ।
 सयडक्खडंगकप्पं, भुंजह वणलेवकप्पं वा ॥५४॥
 भावेह भावणाओ, णवणवपरिणामसुहविवेयाओ ।
 गुत्तीसु य गुत्ताओ, होह सया नियमकलियाओ ॥५५॥
 गुरुयणभत्तिपराओ, निच्चं सिद्धंतपढणसीलाओ ।
 विणए वेयावच्चे, निच्चं चिय वावडमणाओ ॥५६॥
 पावेह जेण अइरा, सुरवरनरनाहसिद्धिसोक्खाइं ।
 सव्वेसिं जंतूणं, होह तहा पूयणीयाओ ॥५७॥
 एयं निसामिऊणं, भणियं अह तीए महुरवायाए ।
 सव्वं पिययम ! एवं, किं तु निसामेसु मम वयणं ॥५८॥
 भुंजसु एक्कं वरिसं, इमाहि सह रूवगुणगणधरीहिं ।
 नियभज्जाहिं विसए, मणोरमे मणुयभवसारे ॥५९॥

पच्छ तुम्हेहिं समं, जं ते कहियं जिणिंदपन्नत्तं ।
 गिण्हिस्सं पव्वज्जं, गंतुं गुरुपायमूलंमि ॥६०॥
 जंबुकुमारेण तओ, भणियं-‘सुण जं तुमे इमं भणियं ।
 भुंजसु अम्हेहिं समं, विसए किल वरिसमेक्कं तु’ ॥६१॥
 तत्थ- उन्नयगरुयपयोहरधरीहिं सग्गंमि देवविलयाहिं ।
 सह विसया परिभुत्ता, तह वि न तत्तिं इमो पत्तो ॥६२॥
 गुरुपिहुलजहणखामोयरीहिं करभोरुकुंददसणाहिं ।
 वियसियकमलमुहीहिं, देवीहिं न पाविओ तित्तिं ॥६३॥
 वच्छत्थलहारविलोलमाणमुत्ताहलुल्लसियभाओ ।
 सुरकामिणीओ सुइरं, भुत्ताओ[आसि]मए सग्गे ॥६४॥
 रसणार्किकिणिकलरव विरायमाणगुरुजहणभायाओ ।
 सुरसुंदरीओ सुइरं, सुरलोए आसि भुत्ताओ ॥६५॥
 तहा- इंदत्ते देवत्ते, चक्ख(क्खं)हरत्ते य जाइं सोक्खाइं ।
 परिभुत्ताइं ताइं, तह वि न तित्तो इमो जीवो ॥६६॥
 बलदेव-वासुदेवेसु भवणजोइसियवंतरसुरेसु ।
 वेमाणिएसु य तहा, सोक्खाइं इमेण पत्ताइं ॥६७॥
 सामंतनरिंदेसु य, जुयलाहम्मेसु तह य विजएसु ।
 विसया स(भु)त्ता बहुसो, जीवेण अणाइसंसारे ॥६८॥
 एवं च बहुविहेसु वि, जीवो विसएसु जो न संतित्तो ।
 संवच्छरमेत्तेणं मुद्धे ! कह होज्ज सो तित्तो ॥६९॥
 ता वानरो व्व नाहं, सिलाजऊसरिसविसयभोएहिं ।
 पंचिदिएसु बद्धो, निहणं गच्छामि संसारे ॥७०॥
 सम्मं च नाणं चरणं चरित्ता, कम्मं च सव्वं अह झोसइत्ता ।
 ते जंति सिद्धिं भवदुक्खमुक्खा(क्खा), पालित्ति जे सव्वगुणे पसंता ॥७१॥
 इय जंबुणामचरिए उद्देसो पउमसेणभज्जाए ।
 दत्तोत्तराभिहाणो एस समत्तो सुणह सेसं ॥छा॥ ॥७२॥



॥ तेरसमो उद्देसओ ॥

अहरउडविवरपयडियसमसियदसणंसुधवलियदिसाए ।

एत्थंतरे य भणियं, भज्जाए नागसेणाए ॥१॥

पियसहिओ ! एसम्हं, होज्ज पिओ नूण थेरिसारिच्छे ।

पत्थितो गुरुविहवं, चुक्कीही नूण संतस्स ॥२॥

तओ इमं च निसामिऊण वियसंतवयणकमलेणं भणियं जंबुणामेणं-‘का सा मुद्धे ! थेरी ? कहां वा गुरुरिद्धिपत्थिता संतस्स परिभट्ठा ?’ तीए भणियं-

अवि य- अत्थि इह भरहखेत्ते, मायंदी नाम पुरवरी रम्मा ।

तीए वयंसियाओ वसंति दो चेव थेरीओ ॥३॥

अवरोप्परं च तेसिं, दोण्ह वि अइनिब्भरा महापीई ।

जाया अह थेरीणं, दोण्ह वि समविहववेसाणं ॥४॥

कह कह वि कम्मवित्तीए ताओ नयरीए [नियय]उयरभरं

कुणमाणीओ कालं, गर्मिति दालिहदड्ढाओ ॥५॥

अह अन्नया य जक्खो, संमज्जणपूयणेण एक्काए ।

परितुट्ठो तं थेरिं, दिन्ना(व्वा)ए भणइ वायाए ॥६॥

मम पायतलाओ तुमं, दीणारं पइदिणं पगिण्हेज्जा ।

थेरी वि पइदिणं चिय, तं गिण्हइ जक्खमूलाओ ॥७॥

सा जक्खकयपसाया, अत्थं संचेइ निव्वुयसरीरा ।

सयणस्स जणवयस्स, य अहिययरं आढिया जाया ॥८॥

गहिया य तीए गोणी, सा दुज्झइ पइदिणं पि थेरीए ।
 गिण्हइ य मुंगचउले, धम्मेण य देइ अन्नेसिं ॥१॥
 बीयाए थेरीए, विम्हयखित्ताय पुच्छिया अह सा ।
 कह ते एसा जाया, संपइ सह संपया विउला ॥१०॥
 अह तीए सा भणिया, पियसहि ! एएण किं विचारेण ।
 तं मज्झ निव्विसेसा, मम गेहे चिट्ठसु सुहेण ॥११॥
 जं किं पि मज्झ खाणं, पाणं वा अत्थि एत्थ गेहंमि ।
 तं सहि ! तुज्झ समाणं, अच्छसु तं निव्वुया एत्थ ॥१२॥
 तीए वि य सा भणिया, कह सहि ! चिट्ठामि तुज्झ गेहंमि ।
 जा मम सब्भावं पि व, न गच्छए नेहपरिहीणा ॥१३॥

भणियं च- “को जाणइ हिययगयं कइगयसब्भावनेहपरमत्थं ।

गरुओवयारसारा संववहारा हरंति मणं” ॥१४॥ []

तीए वि चिंतियमिमं, कयाइ एसा एओसमावन्ना ।
 मम देज्जऽब्भक्खाणं, जेण धणं होइ बहुविग्घं ॥१५॥

न य मच्छरेण गहियस्स पाणिणो किं पि अत्थिऽवत्तव्वं ।
 साहिज्जंते य फुडे, न को वि दोसो इहं दिट्ठो ॥१६॥

एवं [वि]चिंतिरुणं, सिट्ठं तीए जहट्ठियं सव्वं ।
 तीए वि तओ जक्खो, विहिणा आराहिओ अह सो ॥१७॥

भणिया सा जक्खेणं, मग्ग वरं सो य तीए अह भणिओ ।
 जं मम सहीए जायं, मम दुगुणं होउ तं सव्वं ॥१८॥

तीए वि य सा सहिया, काणा अह सा वि अंधला जाया ।
 एवं तीए अप्पा, विणासिओ अत्थलुद्धाए ॥१९॥

भणियं चागमे- “दट्ठुणं च सहीए, हट्ठपहट्ठाए तीए सव्व(?)संपत्ती ।

अइसिरिमिच्छंतीए, थेरीए विणासिओ अप्पा” ॥२०॥ []

एवं तुमं पि सामि य, चुक्कसि विउलाइं सिद्धिसोक्खाइं ।

- पत्थेंतो थेरी इव, इमाण उवलद्धभोयाण ॥२१॥

तओ इमं च निसामिरुण भणियं जंबुणामेण-‘एत्थ निसुणसु ।’

अवि य- मुद्धोऽहं जच्चतुरंगमो व्व न हु उप्पहेण तुब्भेहिं ।

सक्को इह नेऊणं, किमित्थ भणिएण बहुएण ॥२२॥

तीए भणियं-कह सो न सक्किओ उप्पहं हरी नेउं ? ।

जंबुकुमारेण तओ, भणियं - सुण एक्कचित्तेण ॥२३॥

अत्थि मियंककरुज्जलथिरथोर[य]तुंगसालपरिक्खित्तं ।

सव्वगुणाण निवासं नामेण वसंतपुरनयरं ॥२४॥

जंमि य नयरे केसुं पुण कमुवलब्भइ ठाणेसु ?-

चंदंमि मओ पउमेसु कंटया करिसणं च छेत्तेसु ।

वसणसमूहो जइ दोसिएसु जलहिम्मि कुग्गाहो ॥२५॥

तं भुंजइ वरनयरं, असेसपडिवक्खनिज्जियपयावो ।

सुकयजहट्टियनामो, जियसत्तू नाम नरनाहो ॥२६॥

जो य सो केरिसो ? अवि य-

चंदो व(ध)णओ इंदो सूरुो तह जो जमो व्व परिकुविओ ।

सोमत्तदाणविक्रमपयावचंडत्तणेहिं च ॥२७॥

नरनाहस्स बहुमओ जिणयासो तत्थ सावगो अत्थि ।

जिणयंदभत्तिनिरओ, साहूणं पूयणरओ य ॥२८॥

जो य सो केरिसो ?-

सव्वन्नुवयणदीवयसमतसंसारदिट्ठपरमत्थो ।

उवलद्धपुनपावो मिच्छत्तपरम्मूहो निच्चं ॥२९॥

तस्स य राइणो असेसतुरयलक्खणपसत्थालं कियनियसरीरं सुप्पमाणं सुवन्नं च
एक्कं महामहंतं तुरंगमरयणमत्थि । तस्स य पहावेण समब्भहियबलकोसविरियवंता वि
नरवइओ तस्साणमुवगय त्ति । तओ अन्नया य राइणा चित्तियं-कस्स पुण एयं
तुरंगमरयणं समप्पेमि जो सव्वायरेण इमं पयत्तेण पडिरक्खइ त्ति ? । इमं च

परिचिंतेमाणस्स सहसा समावडिओ जिणयाससावगो तस्स चित्ते । तओ चिंतियं राइणा-जइ परं एसो इमं तुरंगमं सव्वायरेण परिरिक्खुं समत्थो । जओ सो सम्मत्ता-वहत्थियपावसमायारायरणट्टाणो, जेणगहियजिणवयणदिट्ठपरमत्थवित्थरसारसमुद्दरयणो न पलयकाले वि अकज्जायरणपउणमाणो केण वि महत्थदाणेण भोयाईहिं उवलोहि-ज्जमाणो वि हवइ ति । अन्नं च-सव्वहा सव्वप्पयारेहिं पि सो मम हिययप-साहणेक्कपदिन्ननियमणो वीसासट्टाणं च । ता सव्वहा सो इमस्स परिपालणे समत्थो ति । तओ इमं च परिचिंतिरुण राइणा सबहुमाणं सगोरवं च हक्कारिरुण जिणयासं समप्पिओ सो तुरंगमो । भणिओ य सो राइणा-‘ममं च दट्ठव्वो एस ते महातुरंगमो’ति । पडिवन्नं च राइणो तं वयणं जिणयासेण । तओ महापयत्ते[ण] पडिरिक्खुं पयत्तो तुरंगमं सो । कारावियं च पायारवलयपरिक्खुत्तं तुरंगमनिवासट्टाणं । तत्थ य ठियस्स सयमेव जोगासणाइणा सव्वमक्खूणं सव्वपयत्तेण समायइ ति । जिणिंदवंदणत्थं च तमारुहिउं उभओ तिसंझं चेइयहरं पगच्छइ । तुरंगमारूढो तत्थ य काऊण जिणाययणस्स तिपयाहिणं, तओ पविसिरुण जिणहरं, वंदिऊण य जिणे, पुणो तुरंगमारूढो काऊण तिपयाहिणं, निययमंदिरमागच्छइ ति । एवं च गच्छइ कालो । अन्नया य जियसत्तुनरवइणो पडिवक्खभूएणं अन्नेण महामंडलाहिवइणा नरीसरेण नियथाणमंडवनिविट्ठेण परिजंपियं जहा-‘सव्वे वि नरवइणो’ जियसत्तु-नरवइणो महातुरंगमंरयणप्पहावेण आणं पगहियपाया वट्ठंति । न य कस्स वि रज्जे को वि तारिसो मंती भिच्चो वा अत्थि जो तं अवहरिउं समत्थो’ ति । इमं च निसामिऊण रायकुलपरंपरासमागएण सहसा समुट्ठिरुण पायनिवडियाणंतरं च अच्चंतं सामिहियकारिणा विन्नत्तं एक्केण मंतिणा जहा-‘सामि ! जियसत्तुनरवइणो वि समहिओ तं, [परं दुब्धिज्जो] तस्स तुरंगमस्स रक्खणोवाओ, जेण समप्पिओ सो जिणयासस्स सावगस्स परिरक्खणत्थं । सो वि अच्चंतहिओ नरवइस्स । नियदेहाओ वि समहियं तं तुरंगमं पेच्छइ परिपालेइ य । ता सव्वहा वि दुरावहारो सो तुरंगमो ति । एक्को पुण अत्थि उवाओ । जइ परं धम्मच्छलेण तं कह वि छलिरुण तस्सावहरणं कीरइ ति । ता कुणसु पसायं, समाइससु आएसं, जेण अवहरामि तुरंगमं छम्मासब्भंतरे । तुरमाणेहि य न तीरइ तं तुरंगमं अवहरिउं । जओ तुरमाणो न को वि कज्जसाहणसमत्थो दिट्ठो’ ।

जेण- मउया विज्जइ सिसिरे, सूरस्स वि पेच्छ तेयरासिस्स ।
गरुओ वेसपयावो, अच्छउ तावन्नपुरिसस्स ॥३०॥

भणियं च- “तुरमाणोहिं न सक्का, अत्थो विज्जा य रायलच्छी य ।
हियइच्छियरा य भज्जा, विप्पियकरणं च सत्तूणं” ॥३१॥ []

राजनीत्यावप्युक्तम्-

“न शक्यं त्वरमाणेन प्राप्तुमर्थाश्च सुदुर्लभान् ।
भार्या [च] रूपसंपन्नां शत्रूणां च पराजयम्” ॥३२॥ []

तओ राइणा एवं भणियप्पयारेण तस्स बुद्धिकोसल्लं च दट्टूण नाऊण जहा एसो जइ परं तुरंगमअवहरणसमत्थो । न पुण अन्नो अत्थि उवाओ । भणियमेवं कुणसु त्ति । लद्धाएसो य नीहरिओ सो राइणो सयासाओ । गओ जिणयंदभवणं पणिवइओ तिहुयणपरमगुरूणं वंदिया य साहू । पभणिया य तेण ते जहा-‘नारयतिरियनरामरभवेसु संसरणमूलमूलस्स, जाइजरामरणरोगरयमलकिलेसवाहीइट्टविओगाणिट्टसंपओगसारीर-माणसाइमहादुक्खहल्लकल्लोलवीईतरंगस्स, कोहमाणमायालोभकामरागदोसमहामोह-जलयरस्स, भयमोहन्नाणमिच्छत्तकुग्गाहकुडिललयासमोत्थइयस्स दुरंतपंतलक्खणस्स महासंसारसमुद्दस्स उद्धरणसमत्थं भयवं मम जिणवयणबोहित्थं पसाईकरेह’ त्ति । पयासियं च संसारभओव्विग्गं तेण साहूणऽप्पाणं । न नायं च साहूहिं तं तस्स मायाकुडिलत्तहिययत्तणं । सव्वहा रंजिया तेण साहवो ।

भणियं च- “कालन्नुओ विणीओ, पुव्वब्भासी पियंवओ दक्खो ।
चाई पडिवन्नदढो, भण कस्स न रंजए हिययं” ॥३३॥ []

अन्नेहिं वि भणियं-

“कडुयं पि भन्नमाणो, अणुकूलं भासिउं अयाणंतो ।
को तस्स गुणे वि...णा उज्जंगलरोसणा होइ” ॥३४॥ []

तओ एवं च सत्थभावेहिं तेहिं साहूहिं दिन्नो से जिणवयणुवएसो । कहिओ सावगधम्मो । गहिओ य तेण मायाए । जाओ य सो सावगसामायारीए परिकुसलो । तओ गामाणुग्गामं पूइज्जंतो साहंमिओ त्ति काउं सावगकुलेहिं समागओ वसन्तउरं नयरं त्ति । तत्थ य गओ जिणाययणं, वंदिया य जिणवरिंदा साहुणो य । दिट्ठो य

जिणयाससावएणं वंदिया य परोप्परं । पुच्छियं च जिणयासेण-‘कुओ य साहम्मियाण समागमणं’ । तेण भणियं-‘जरमरणरोगरयमलकिलेसायासबहुले संसारमहन्नवे निमज्जमाणाणं जंतूणं नत्थि अन्नं सरणं मोत्तूण जिणप्पणीयं धम्मं जिणजम्मनिक्खमणनिव्वाणभूमिपवंदणं च । ता इमं नाऊण तित्थजत्ताए अहं समुच्चलिओ तामलित्तीओ महानयरीओ वंदिऊण य सयलतित्थाइं पुणो वि नियपुरवरीहुत्तं संपत्थिओ’त्ति । तओ जिणयासेण भणियं-‘सोहणो ते इमो परिस्समो । न थोवपुन्नपब्भारस्स इमो ते धम्मसाहणोवाओ । सुलद्धं ते माणुसजम्म-फलं’ति । एवं च बहुहा पसंसिऊण भणिओ जिणयासेण-‘आगच्छ, घरचेइयाइं वंदसु’त्ति । तओ सायरं सबहुमाणं च चलिओ सो । पत्ता य गेहं । वंदिया य तत्थं जिणा । मज्जण-भोयणाइं च निव्वत्तियं सयलं करणीयं । भुत्तुरसमए य तित्थयरसाहुकहावावडमणा अच्छिउं पयत्ता । एवं च अच्छमाणाण सभागयं अन्नगामस्स जिणयासबंधवाणं विवाहकल्लाणनिमंतणनिमित्तं हक्कारणं ति । भणिओ य समागयपुरिसेहिं जिणयासो जहा-‘सव्वहा वि तुब्भेहिं सपरियणेहिं तत्थ गंतव्वं’ति । तओ जिणयासेण भणिओ सो कवडसावगो-‘अज्जेक्कं ते मम गिहे भलणीयं, इमं च तुरंगमरयणं परिक्खणीयं । नन्नस्स कस्स वि अहं समप्पेमि । तुमं पुण साहम्मिओ मम निव्विसेसो सव्वकज्जेसु वीससणीओ य’ । तेण भणियं-‘अहं गमणुस्सुओ तहावि जइ तुम्ह न अन्नो को वि वीससणीओ अत्थि ता एवं अच्छमि’त्ति । चित्तियं च णेण ।

अवि य- सूए पयं पलोट्टं, मज्जारो दामिओ [य] मंसेण ।

जलिए हुयासणंमी, कह पक्खित्तं घियं एयं ॥३५॥

तओ वीससिऊण तस्स गओ जिणयासो ।

अवि य- सुयणो सरलसहावो, अप्पाणं पिव परं पि मन्नेइ ।

न मुणइ कुडिलं पि मणं, परस्स नियसच्छहावेण ॥३६॥

भणियं च- “सुयणो न याणइ च्चिय, खलस्स हिययाइं हुंति विसमाइं ।

अत्ताणहिययसुद्धत्तणेण हिययं समप्पेइ” ॥३७॥ []

तमि य दियहे तंमि नयरे को वि महूसवो वट्टइ । तओ सव्वो वि नायरजणो रयणीए रील्लिउं पयत्तो । सो य संज्ञासमए तमारुहिय तुरंगमं गंतुं पयट्टो । तओ सो तुरएण पुलाविओ गओ चेइ[य]हरं । तत्थ य तिक्खुत्तो पयाहिणं काऊण पुणो वि

उक्कढिऊण गेहं गओ त्ति । एवं च इमेण कमेण कसपहारेहिं ताडिज्जमाणो वि घराओ चेइयहरं, चेइयहरा[ओ] वि घरं पुणो गंतुं पयत्तो, न पुण अन्नं पहं पवज्जइ त्ति । ताव जाव पहाया रयणी । तओ पणट्ठो 'आसं परिचइऊण सो कवडसावगो । संपत्तो य एयंमि अवसरे जिणयासो गामाओ नियनयरबाहिरियं । भणिओ य कीलावि-णिग्गयलोएण जहा-'अज्ज तुब्भेहिं सव्वरयणिं पि परिवाहिओ तुरंगमो ?' । तेण भणियमामं ति । तओ सिग्घपयनिक्खेवं सासंकहियओ य गओ तुरमाणो सगेहं । विहाडियं च तत्थ कवाडसंपुडं पविट्ठो तुरंगमावासं दिट्ठो य परिमिलाणदेहो तुरंगमो । तओ परिचिन्तियं च णेण-'अहो ! पेच्छ कहमहं पडिचुक्को अक्खंडिओ तस्स कवडसावगस्स । धम्मवज्जेण कह च्छलिओ तेण उंभपहाणेण । ता अज्ज वि अत्थि मे जिणपणीयधम्मपहावजणियाइं पुन्नाइं जेण एसो परिच्छुट्ठो त्ति । तओ सुट्ठुयरं च परिक्खणुज्जुओ जाओ । ता जहा मुवेसो (?) तुरंगमो उप्पहेण न पडिवन्नो न य सिक्खापरिच्चाओ कओ तेण । एवमहं पि न जिणप्पणीयं धम्मपहं मोत्तूणं न विसयासानिवडिओ इंदियवसवत्ती तुमहं कएण कुप्पहं पवज्जामि । जयगुरुपयंसिय-धम्मसिक्खापरिच्चयं विहेमि त्ति । तहा जं तए भणियं-जहा थेरीए अप्पा विणासिओ अइअत्थलुद्धाए, एवं तुमं वि अन्नं किंपि अणिच्छियविणिवायंतरं पाविहिसि त्ति । तत्थ निसुणसु' ।

अवि य- चारित्तनाणदंसणवीरियतवनियमसंजमजयस्स ।

सज्झायझाणभावणणिच्चं चिय वावडमणस्स ॥३८॥

पाणवहालियमेहुणपरिग्गहादिन्नदाणविरयस्स ।

तह कोहमाणमायालोभिंदियभग्गपसरस्स ॥३९॥

तह सहूरुवरसगंधफासविसयरागदोसनिहयस्स ।

मणवयणकायदंडा निच्चं परिरुंभमाणस्स ॥४०॥

सव्वन्नुवयणवित्थरपरमत्थपयत्थदिट्ठुसारस्स ।

अन्नाणमोहमिच्छत्तकुसुडपरिहार[वि]दुरस्स ॥४१॥

किं बहुणा भणिएणं, निच्चं चिय चरणकरणजुत्तस्स ।

संजमजोएहिं निरंतरं च परिभावियमइस्स ॥४२॥

न हु को वि होइ अन्नो, विणिवाओ एत्थ सुंदरि ! अणिट्ठो ।

कज्जाकज्जविवेइयमणस्स जिणवयणकुसलस्स ॥४३॥

ता सुंदरि ! जच्चतुरंगमो व्व परमत्थसिक्खपरिमग्गं ।

विसयाण कए चइउं, कुपहं न कयावि वच्चामि ॥४४॥

सव्वगुणागरपालणजुत्ता, संजमनाणसुए य पसत्ता ।

मोहभडं हणिरुण सुधीरा, भव्वजणा इह हुंति विरत्ता ॥छा॥ ॥४५॥

इय जंबुणामचरिए उद्देसो नागसेणभज्जाए ।

दत्तोत्तराभिहाणो एस समत्तो सुणह सेसं ॥छा॥ ॥४६॥



॥ चोद्दसमो उद्देसओ ॥

कंठद्वियमुत्ताहलमऊहसन्नियरधवलियदिसिए ।

एत्थंतरे य भणियं, कणगसिरी नाम भज्जाए ॥१॥

पियसहिओ ! एसम्हं, होज्ज पिओ गामवोद्दसारिच्छे ।

जह सोअइ गाहाओ, परित्तो तप्पिहीमो वि ॥२॥

तओ इमं च निसामिऊण वियसंतवय[ण]पंकएण भणियं जंबुणामेण-‘को सो दइए ! गामवोद्दो, कहां वा सो परित्तो ?’ तीए भणियं । अवि य-

बंगा नाम जणवओ, इहेव भरहंमि अत्थि विक्खाओ ।

भद्दालंदो गामो, नामेणं तत्थ अत्थि वरो ॥३॥

तत्थ य एगो गामउडो परिवसइ । अन्नया मरणावसाणयाए जीवलोयस्स, पंचत्तमुवगओ सो । तस्स य अत्थि एगो पुत्तो जोय(व्व)णत्थो, सो य अईव विसयपसत्तो । न किं पि घरवावारं सामायरइ त्ति । तओ सो जणए परोक्खे विसीयमाणं दट्टूण घरं जणणीए भणिओ-‘वच्छ ! ते जणओ सव्वायरेण सव्वकज्जेसु समारुहंतो न य किं पि विसूरणं च तइया आसि । तुमं पुण विसयपसत्तो उवेक्खसि विसीयंताइं सव्वकज्जाइं । न मुणसि एत्थ कुडुंबे किं पि अत्थि नत्थि वा, कहां वा, परिपालेयव्वं’ति ?,

भणियं च- “पुव्वपुरिसाणुचरियं, जं कम्ममर्निदियं हवइ लोए ।

पुत्तेण वि कायव्वं, तं चिय एसो जणे नियस्सु” ॥४॥ []

इमं च भणमाणी रोविउं पयत्ता । तओ तेण भणिया-‘मा अंबे ! अधिइं कुणसु । अज्जप्पभिइं घेतूण अहं पि तायसंतियं वावारं अणुचिद्विस्सामि’त्ति । अन्नया य सो गामेल्लयपुरिससमन्निओ अत्थाइयाउवविट्ठो आलावसंल्लावेहिं चिद्विउं पयत्तो । एयम्मि

अवसरे भम्महसत्थाओ एक्को खरो जोत्तयं गहिऊण तेणंतेणं पहाविओ । तओ पिट्ठओ पहावमाणेण तस्स सामिएण ते अत्थाइयपुरिसा भणिया--‘अहो ! एत्थ जो तुम्हाणं मज्झे समत्थो सो एयं पहाविऊण गिण्हउ दुट्ठरासहं’ ति । तओ तेण चितियं--‘मम जणओ वि सव्वकज्जेसु सव्वायरेण समारुहतो अंबाए कहियं, ता अहं पि एयं गिण्हामि’ ति चित्तिऊण पहाविओ गहिओ पुच्छे । तओ पच्छिमपहारेण संचुन्निया तस्स दसणावली तहा वि न मुंचइ तं खरं । किल जणओ वि मे निच्छिओ आसि । ता कहं विमुच्चामि ? तओ निद्वयचलणपहारेहिं पुणो पुणो पहओ । तओ भणिओ लोएण--‘अरे ! मुंच मुंचसु ति एयं दट्ठु(दुट्ठु)खरं’ ति । तहा वि न मुंचइ । किल मया अंबाए समक्खं इमं जणयसंतियं दढसमारुहणं पडिवन्नं ति । ताव जाव गुरुपहारविहलो निवडिओ धरणीए । गहिओ गुरुपहाराहिं दुक्खसंतावेण ।

ता जह सो परित्तो, गाहाओ निवारिओ वि लोएण ।

तह मा तुमं पि तप्पिसि, पिययम ! अइगरुयगाहाओ ॥छा॥ ॥५॥

तओ इमं च निसामिऊण भणियं जंबुणामेण--‘सुंदरि ! निसुणसु ।

अवि य- वडवाए पोसओ वि य, नाहं तुम्हाण आभिओगेण ।

कम्मेण वसवत्ती, विहेमि लुहुडुखु(क्खु)डं जेण ॥६॥

तीए भणियं कह सो, वडवाए पोसगो कहसु अम्ह ।

किल आभिओगजणियं, लुहुडुखु(क्खु)डमेत्थ संपत्तो ? ॥७॥

तओ जंबुणामेण भणियं ।

अवि य- अत्थि सरसरियसोहिरनीरपसत्ताणिसरसतामरसो ।

इह भारहंमि वासे, नामेण कलिंगविसओ ति ॥८॥

तत्थ य सीहनिवासो नाम एक्को गामो । तत्थ य इक्को भोइओ परिवसइ । तस्स अच्चंतसुंदरी इट्ठा य एक्का वडवा अत्थि । सो य जहा कुडुंबं परिवालइ तहा तीए वि जवसजोगासणेण तेल्लघयदाणेण य अक्खूणं कुणइ ति । समप्पिया य सा सोलगा-भिहाणस्स एगस्स पुरिसस्स परिवालणत्थं । सो य तं जोगासणं किं पि तीए दाऊण सेसं सव्वं जहोच्चियं अप्पणो कुणइ ति । अन्नया असारयाए पावसंसारस्स, सपज्जवसाणयाए जीवलोयस्स, मरणंतयाए सव्वपाणिणं कालकलिणा कवलिओ सो

सोलगाभिहाओ वडवापालगो वडवा य । तओ हिंडिरुण नाणाविहतिरिय.....दो वि ताइं । तओ कालंतरेण तहाविहकम्मोदएण खिइपण(इ)ट्टिए नयरे सोमदत्तमाहणस्स सोमसिरीए भट्टिणीए गब्भत्ताए उववन्नो सोलगजीवो । जाओ य कालक्कम्मेण । वड्डिओ देहोवचएण । सा वि वि(व?)डवा बहुं हिंडिरुण संसारं तम्मि चेव नयरे कामपडाया-भिहाणाए गणियाए धूयत्तणेण संजाया । पत्ता य जोव्वणं । सो य सोलगबडुओ संपत्तो जोव्वणं । तओ जोयणभरसुलभत्तणेण य मयणस्स गहिओ सो मयणवियारेण । संपलगो य तीए गणियादुहियाए । ओइन्नं च तं वच्चणपच्चयं आभिओगियकम्मं । तस्स कुणइ य जल्लिधणाइसमाणयणं । पमज्जणोवलेवणाइयं च सव्वं घरकम्मं । सा वि नरवइसुयसत्थवाहसेट्टिसुएसु य सममभिरममाणी चिट्ठइ त्ति । अवमन्नइ य । तओ भणइ य 'हा किमेसो नयणाणिट्ठो परिपेल्लिओ वि न मुंचइ मम गेहं ?' तओ सो तीए दुव्वयणं अमयसरिसं मन्नमाणो सव्वं पेसणाइयं कुणइ त्ति । परिपेल्लिज्जमाणो वि न णिग्गच्छइ । दढयरं च तीए चित्ताराहणपरो संजाओ । एवं सो ताडणधाडणतण्हाछुहाओ परिस्सहमाणो तत्थ निधाडिज्जमाणो वि अच्छ्छं पयत्तो । भणिओ य सो जणणिजणएहिं- 'वच्छ ! मा इमाए आसत्तो अप्पाणं दोण्ह वि लोयाण परिभट्टं कुणसु । मुंचसु य इमं । अन्नं ते दारियं वरेमो विसुद्धजाइकुलसमुप्पन्नं । अन्नं च वच्छ ! इमाओ वेसाओ विसिट्ठजणपरिनिंदियाओ विडजणबहुमयाओ य । अणेयपुरिसमग्गणपराओ रज्जंति अत्थवंते, मुंचंति णिरत्थयं, अकुलीणं पि पुरिसं सुकुलुब्भवं पिव समायरंति । अत्थलुद्धाओ गुरुकुलसमुब्भवं पि अवमन्नंति धणपरिहीणं । जओ एयाओ'-

अवि य- महयरपंतीओ इव, सदाणमायंगसेवणरयाओ ।

स्तायरिसणन(नि)उणाओ जाओ निच्चं जलोय व्व ॥९॥

डाइणिओ इव जाओ, सुंदरनरछलणतग्गयमणाओ ।

पियमंसाहाराओ, कूराओ रक्खसीओ व्व ॥१०॥

सुरपाणपसत्ताओ, चामुंडाओ व्व निद्वयमणाओ ।

अत्थावहारिणीओ, दुट्ठाओ चोरसेण व्व ॥११॥

चित्तावहारिणीओ, नडो व्व एयाइं हुंति पावाओ ।

मायंगग(घ)रं व जहा, परिवज्जियसिट्ठलोयाओ ॥१२॥

जलहरसमओ व्व जहा, जाओ बहुपंकपावमलिणाओ ।

गिम्हसमओ व्व निच्चं, परिवड्ढियगरुयतण्हाओ ॥१३॥

परलोयविम्महाओ, लोयाय[य]दिट्ठिओ व्व एयाओ ।

वेज्जो व्व हुंति जाओ, कोट्टियवलखयइकलियाओ ॥१४॥

भणियं च- “चोप्पपडयं (?) मसिमंडियं पि रामंति अत्थलुद्धाओ ।

सिरिवच्छंकियवच्छं, मुहाए विणहुं पि नेच्छंति ॥१५॥ []

अत्थस्स कारणद्वा, मुहाइं चुंबंति वंकविरसाइं ।

अप्पा णो च्चिय वेसो, कह ताण पिओ परो होउ ॥१६॥ []

अन्नेण गहियमुक्का, वज्जियनेहा पणडुसब्भावा ।

उच्चिट्ठपत्तलिं पिव, भण को वेसं समल्लियइ ॥१७॥ []

को नाम नरो चुंबे, वेसामुहपंकयं मणि(ण)भिरामं ।

जूयकरचेडतक्करनरभडनिट्ठहणमल्लं व” ॥१८॥ []

ता सव्वहा वि वच्छ ! विवज्जणीयाओ वेसाओ । जओ एयाओ असुइट्ठाणं कोवानलस्स । पढमकारणं मायापवंचस्स । अणुवहयबीयं महादुक्खतरुणो । महापहो नरयगईए । उट्ठाणं माणस्स । पभवो लोहस्स । महाविग्घं धम्माहिलासस्स । मूलं संसारनिवासस्स । जम्मभूमीओ सयलाणं पि अणत्थाणं ति । ता वच्छ ! परिच्चयसु वेसापसंगं । अंगीकरेसु महापुरिसचरियं । भवसु य नियघरवावाराभिउत्तो । तओ एवं पि भन्नमाणेण न परिचत्ता सा तेण । तओ एवं च सो तीए घरे किंकरो व्व दुक्कयकम्मपसत्तो निदिज्जमाणो जणेण, खिसिज्जमाणो वयंसएहिं, खरंट्टिज्जमाणो सयणेण, दुण्ह वि लोयाण परिचुक्को अकयपुन्नो तत्थेव खयं गओ त्ति ।

अवि य- अत्तो(न्नो) वि जो पसत्तो, वंचेइ परं कुडुंबअत्थंमि ।

सो अप्पाणं वंचइ, परलोए सव्वसोक्खाणं ॥१९॥

दारसुयाण निमित्ते, सुन्हाधूयाण बंधवाणं च ।

मूढो करेइ पावं, एक्को च्चिय सहइ तं सव्वं ॥२०॥

छिंदणभिंदणफालणउक्कत्तणमोडणाइं दुक्खाइं ।
 नरयंमि गओ पावइ, जीवो दुहकम्मजणियाइं ॥२१॥
 पज्जलियजलणजालावलीए नरयंमि डज्जमाणाणं ।
 न हु हुंति नवर सरणं, जायाओ सुट्टु वि पियाओ ॥२२॥
 जाण कए बहु पावं, कीरइ जीवेण सोक्खत्तण्हाए ।
 ताओ नरयगईए, गयस्स जायाओ न हु सरणं ॥२३॥

भणियं च- “एयाण कमलदलए, चलणे पवराण नूण विलयाण ।
 नरए न हुंति सरणं, पुरिसाण निबुड्डुमाणाणं” ॥२४॥ []
 कोमलकयलीसरिसं, ऊरूजुयलं पि जाणिमेएसिं ।
 नरए न होइ सरणं, पुरिसाण निबुड्डुमाणाणं ॥२५॥
 एयाण नियंबयडं, पिहुलं कलकणिरकंचिदामिल्लं ।
 नरए न होइ सरणं, पुरिसाण निबुड्डुमाणाणं ॥२६॥
 पीणं चक्कलतुंगं, हारावलिसोहियं च थणवट्टं ।
 नरए न होइ सरणं, भणामि धम्मक्खरं तेण ॥२७॥
 वियसियसयवत्तनिभं, मुहयंदं जइ वि होइ जुवईणं ।
 नरए नूण न सरणं, तेण हियं तुम्ह तं भणिमो ॥२८॥
 दीहरपम्हलधवलं, नयणजुयं जइ वि नूण जुवईण ।
 नरए न होइ सरणं, चिंता मह तेण हिययम्मि ॥२९॥
 कयलीगब्भसरिच्छं, अईव फासेण कोमलं जइ वि ।
 देहं न होइ सरणं, नरयं निबुड्डुमाणाणं[मि] ॥३०॥
 इय जाणिऊण एयं, ताणं सरणं च नत्थि नरयंमि ।
 तम्हा करेह धम्मं, नरयम्मि य जेण नो जाह ॥३१॥
 तम्हा एयाण कए, वंचेऊणं सुहाण सव्वाण ।
 अप्पा नरयगईए, कह निज्जउ बुद्धिमंतेहिं ॥३२॥

ता सुंदरि ! वडवापोसगो व्व न हु किं पि तुम्ह घेत्तूण ।
उवन्नो एत्थ अहं, वच्चामिह निक्कयंतस्स ॥३३॥

विहडियगुरुकम्मा गेहवासं पमोत्तुं,
तवकरणसमग्गा जे य चारित्तलीणा ।

इय सयलगुणोहं पावि(लि)?ऊणं सुधीरा,
सिवसुहवरमग्गं ते पवज्जंति लीणा ॥छा॥ ॥३४॥

इय जंबुणामचरिण् कणयसिरीदत्तउत्तरभिहाणो ।
उद्वेसगो समत्तो एत्तो य परं पवक्खामि ॥छा॥ ॥३५॥



॥ पनरसमो उद्देसओ ॥

सरयसमाग[मससहर?]वियसियवरकमलसरिसवयणाए ।

एत्थंतरे य भणियं कमलवई नाम भज्जाए ॥१॥

पियसहिओ ! एसऽम्हं होज्ज पिओ नूण पक्खिसारिच्छो ।

इच्छइ जेण सुहाइं, निंदह पुण कारणं तस्स ॥२॥

तओ इमं च निसामिऊण वियसंतवयणकमलेण भणियं जंबुणामेण- 'को सो सुंदरि ! पक्खी ? कहां वा सुहमिच्छइ, सुहस्स य कारणं परिनिंदइ' ति ? तओ तीए भणियं ।

अवि य- अत्थि इह भरहवासे, गोउरसुरभवणसालपरिखित्तं ।

अरिजयपुरं पसिद्धं, नयरं सुरलोयसारिच्छं ॥३॥

तम्मि य नयरे अच्छमाणाणं सुहंसुहेण सव्वलोयाणं, अन्नया य समागया अहमा वीसिया । तीए य गओ संवच्छरो । तेण य कया महाअणावुट्ठी । जाओ य दुक्कालो । तओ निवडंति पंसुवुट्ठीओ । धमधमायन्ति महावायाओ । उक्कंपए मेइणीवीढं । निवडंति निग्घाया । धूमायंति सयलदिसाओ । निवडइ महामुंमुंगारनिभो दि[ण]यरकरविमुक्को आयवमहासंतावो । तओ एवं च महाउप्पाएसु निवडमाणेसु उच्छन्नाओ ओसहीओ । न रोहंति तणंकुराइं । परिसडियपत्ता पायवा न दिंति कुसुमफलाइं ति । तओ एवं च महारउरवभूयाए मेइणीए किं जायं ? विउत्थिया सयले पुहइपाला । उत्थरंति परचक्काइं । उव्वसंति गामा । भज्जंति महानयराइं । जाव सए जणो(?) सिद्धि[लि]ज्जंति देवच्चणपूयासक्कारविहाणाइं । न समायरिज्जंति अतिहिसक्कारा । विसंवयंति गुरु-सम्माणपूयणपयाणाइं । परिहरिज्जंति पणइयणदाणाइं । पमाइज्जंति पोरुसाइं । अवमन्निज्जंति दक्खिन्नाइं । वंचिज्जंति पुत्तभंडाइं पि । आहारगहणवेलाए जोइज्जए जइणो वि पुट्ठी । दुट्ठभज्जाओ य सिद्धिलिज्जंति भत्तारेहिं ।

भणियं- “गलइ बलं उच्छाहो, अवेइ सिद्धिलेइ सयलवावारो ।

नासइ सुत्तं अरई, पवइइ असणरहियस्स” ॥४॥ []

तओ एरिसम्मि रउरवीभूए काले महादुक्कालपीडिए सव्वजणसमूहे, तस्स य अरिंजयपुरस्स नरय(यर)स्स देवदिन्नो नाम एगो माहणजुवाणो छुहापीडियसरीरो अट्टिचम्मावसेसदेहो दीणत्तणमुवगओ विणिग्गओ सह पंथियजणसमूहेण जीवणत्थं अन्नं देसंतरं । पत्तो य कालंतरेण एकं सुभिक्षनयरं । तत्थ य कुणइ दुग्गयकम्माइं । अन्नया य दारुयनिमित्तं गओ सो एकं पव्वयनिगुंजं । तओ इओ तओ पव्वयगुहासु दारुगवेसणपरेण सुओ तेण सद्दो कस्स वि पक्खिणो । माणुसभासाए ‘मा साहसं, मा साहसं’ ति एवंरूवो । तओ तेण चिंतियं-को एसत्थ महारन्ने पव्वयनिगुंजे गुहाविवरसंकडे माणुसभासाए समुल्लवइ ? । ताहे निरिक्खामि । को एसागओ य । गओ तओहुत्तं । दिट्ठो तेण गुहामुहविवरपसुत्तो एकको महाभासुरो मयवई । दिट्ठो य तस्स मुहविवरं पविसिऊण दंतंतरपलग्गाओ मंसपेसिओ गहेऊणं तरुवरसाहाविलग्गो [पक्खी] वाहरमाणो ‘मा साहसं, मा साहसं’ ति । पुणो पुणो गहिऊणेयं । तओ तेण माहणजुवाणेण एवं दट्ठुं(ट्टू)णेवं भणियं-

अवि य- ‘मा साहसं’ति पलवसि, सीहमुहं पविसिउं हरसि मंसं ।

अइमुद्धडो सि सउणय, जह जंपसि तह न यायरसि ॥५॥

जइ जाणसि ताव इमं, कह एयं मुद्ध तं समायरसि ।

अह एवं कुणसि तुमं, वाहरसि निरत्थयं कहणु ॥६॥

ता सामि ! तुमं सरिसो, अम्हं पडिहासि पक्खिणा तेण ।

इच्छसि सुहाइं भोत्तुं, निंदसि पुण कारणं तेसिं ॥७॥

ता ताव इमं सोक्खं, उवलद्धं चेव इत्थ पच्चक्खं ।

भुंजसु एयाहिं समं, सुरकामिणिहसियरूवाहिं ॥८॥

मिउसण्हकसिणकंचियसिणिद्धवरचिहुरसोहिरसिराहिं ।

सरयससिपुन्ननिम्मलसमसोहिरवयणकमलाहिं ॥९॥

दीहरपम्हलनिम्मलधवलविरायंतनयणजुयले(ला)हिं ।

ससहरमऊहसन्निभदस[ण]विरायंतजोण्हाहिं ॥१०॥

सविलासहसियजंपियविष्ममयर्चिधजणियसोहाहिं ।
 वेल्लहलसरलकोमलपलंबवरबाहुलइयाहिं ॥११॥
 पीणनियकलस[पीणुन्ननिय?]थणहरगुरुणा(भा)[रेणं] ।
 पिहुलनियंबत्थलसोहिराहिं करभोरुजंघाहिं ॥१२॥
 इयदिणयर(इंदीवर?)दलसमनहसणाहवरचलणजुयलकमलाहिं ।
 भुंजसु भोए पिययम !, एयाहिं समं सुरिंदो व्व ॥१३॥
 इय एरिससुंदरमणभिरामविसयसुहसमूहदुल्ललिओ ।
 अच्छसु किं अन्नेणं, अदिट्टसोक्खेण तुह नाह ! ॥१४॥

भणियं च- “धणिय कुलीणी घरि सरइ, अन्नु भुयणि जसु पडहु वज्जइ ।
 एत्थ समप्पइ मोक्खसुह, मोक्खि सोक्खु किं कवलेहिं खज्जइ” ॥१५॥ []
 ता मा भणिओ वि तुमं, मा साहससउणसन्निभो होह ।
 जं चिय इच्छसि भोत्तुं, मा निंदसुं तमिह संलद्धं ॥छा॥ ॥१६॥
 तओ इमं च निसामिऊण भणियं जंबुणामेण-‘सुंदरि ! निसुणसु’ ।
 अवि य- बीयवयंसयसरिसाण सुयणु ! तुम्हाण कह णु मंति व्व ।
 अहयं विसयासत्तो, वि एस भवसायरं भमिमो ॥१७॥
 तीए भणियं वरजस !, को मंती को य एत्थ सो मित्तो ? ।
 कह अम्हाणासत्तो, भमिहिसि भवसायरं तं सि ? ॥१८॥

तओ जंबुणामेण भणियं-

अत्थेत्थ भरहवासे पुरमेक्कं खिइपइट्टियं नाम ।
 उत्तुंगधवलपासायपरिगयं फरिहयसमेयं ॥१९॥
 तं भुंजइ नरनाहो, तइया अवराइओ त्ति नामेणं ।
 तस्स य सुबुद्धिनामो, काम(कमा?) गओ अत्थि वरमंती ॥२०॥
 सो राया वरभोए, भुंजइ नियकामिणीहिं आसत्तो ।
 आरोवियरज्जभरो, अह तम्मि सुबुद्धिमंतिमि ॥२१॥
 तस्सऽत्थि तिन्नि मित्ता, सुबुद्धिमंतिस्स ताण जो पढमो ।
 सो ण्हाणखाणभोयणवत्थसमालहणएहिं च ॥२२॥

आईओ घेतूणं निययसरीरं व मन्तिणा तेण ।
 परिपोसिओ य सययं, सव्वेसुं चेव कज्जेसु ॥२३॥
 बीओ पुण वसणू(पुण छणु?)सवेसु मित्तो भुंजेइ तस्स गेहम्मि ।
 तइए य दिट्ठमेत्ते 'जोकारे'णं तु ववहारो ॥२४॥
 सो अन्नया य राया, परिकुविओ कारणेण केणावि ।
 मंतिस्स सो वि भीओ, संपत्तो पढममित्तगिहं ॥२५॥

भणियं च- "सो अत्थो जो अ(ह)त्थे, तं मित्तं जं निरंतरं वसणे ।
 तं रूवं जत्थ गुणा, तं विन्नाणं जहिं धम्मो" ॥२६॥ []
 "असढ्हियओ सलज्जो, सुसहावो वच्छलो कयन्नूय ।
 विहलुद्धरणधणो वि हु, मित्तो इह होइ धन्नाणं" ॥२७॥ []
 "पंधसमा नत्थि जरा, दारिद्वसमो परिभ(ब्भ)वो नत्थि ।
 मरणसमं नत्थि भयं, छुहासमा वेयणा नत्थि" ॥२८॥ []
 कहियं च तस्स सव्वं, जह राया मित्त ! मज्झ परिकुविओ ।
 ता संपइ तह कीरउ, जहहं गच्छामि परविसयं ॥२९॥
 मम तं भवसु सहाओ, गच्छसु तं मित्त ! निक्कयं अज्ज ।
 जं मे तुह उवगरियं, तं कीरउ अज्ज इह सहलं ॥३०॥
 भणिओ अह सो तेणं, गच्छसु गेहाओ मज्झ तं सिग्घं ।
 कोसि तुमं किं दिट्ठो, जेण य मम आगओ गेहं ॥३१॥
 किं तुज्झ कएण अहं, गिण्हामिह राइणा सह विरोहं ।
 ता गच्छसु सिग्घं चिय, मम गेहाओ तुमं को सि ॥३२॥
 सोउ(ऊ)णिमं विसन्नो, सो मंती पेच्छ केरिसं एस ।
 परिजंपइ मम भित्तो, जो नियदेहं व मे आसि ॥३३॥

अहवा भणियं-

"उवयारसहस्मेहिं वि, वंकं को तरइ उज्जुयं काउं ।
 सीसेण वि वुब्भंतो, हरेण वंको चिय मयंको" ॥३४॥ []

ता अत्थि मज्झ बीओ, भुंजंतो ऊसवेसु जो मित्तो ।
 परिचिंतिऊण एवं, गओ य सो तस्स गेहंमि ॥३५॥
 तस्स य सव्वं कहियं, सो विय अब्भत्थिओ गमणहेउं ।
 भणियं च तेण एए, कह सयणा छड्डिमो इण्ही(हिं) ॥३६॥
 रायविरुद्धं च इमं, तहाविहं मित्त ! तुज्झ कज्जेण ।
 गच्छामि तुह सहाओ, वसिमंतं जाव नयरस्स ॥३७॥
 सोउं(ऊ)णिमं विसन्नो, मंती चिन्तेइ अत्थि मे तईओ ।
 जोकारमेत्तमित्तो, गंतुं अब्भित्थिमो तं पि ॥३८॥
 स मया संते वि धणे, मणयं पि न किं पि आसि पडियरिओ ।
 एवं विचिंतयंतो, गओ य अह तस्स गेहंमि ॥३९॥
 दट्टूण सो वि मंतिं, दूराओ समागयं ति भणमाणो ।
 अब्भुट्ठिओ य सहसा, कयं च सव्वं पि करणीयं ॥४०॥
 सिट्ठं च तस्स सव्वं, भणिओ तं मित्त ! कुणसु साहेज्जं ।
 वच्चसु मज्झ सहाओ, अन्नं रज्जंतरं जाव ॥४१॥
 अह सो वि भणियमेत्तो, घेतुं वसुणंदयं च खगं च ।
 उप्फुल्लवयणकमलो, मंतिं सो भणइ परितुट्ठो ॥४२॥
 निवडइ [य] आवयाकसणवट्टए सुअणुमित्तसब्भावो ।
 आवइपत्ते चंदे, मयरहरो पेच्छ कह खीणो ॥४३॥

भणियं च- “सुयणस्स विहलियस्स वि, पुणो वि सुयणेण होइ उद्धरणं ।
 पंकपडियं गइंदं, को कड्डइ वरगयं मोत्तुं ?” ॥४४॥ []

अन्नेहिं वि भणियं-

“सो च्चिय कीरइ मित्तो, जो च्चिय पत्तंमि वसणसमयंमि ।
 न हु होइ पराहुत्तो, सेलसिलाघडियपुरिसो व्व” ॥४५॥ []

जओ भणियं-“सो अत्थो जो हत्थे, तं मित्तं जं निरंतरं वसणे ।
 तं रूवं जत्थ गुणा, तं विन्नाणं जहिं धम्मो” ॥४६॥ []

★ पूर्वेऽपि “सो अत्थो..... ॥ “असढहियओ..... एतद्गाथायुगलमागतमस्ति ।

अन्नेहिं वि भणियं-

“असढहियओ सलज्जो, सुसहावो वच्छलो कयन्नु य ।
विहलुद्धरणधणो वि हु, मित्तो इह होइ धन्नाण” ॥४७॥ []
ता मज्झ एस सहलो, जम्मो अब्भत्थिओ जमिह सुयणु ! ।
ते आवइपत्तेणं, दुल्लहअब्भणेणेत्य ॥४८॥

भणियं च- “उक्कत्तिऊण कवयं, दिन्नं कन्नेण तियसनाहस्स ।
सप्पुरिसपत्थणा जे, करिन्ति ते दुल्लहा हुंति” ॥४९॥ []
ता परिमुंच विसायं, पयट्ट सिग्घं तु जत्थ गंतव्वं ।
अह दो वि ते पयट्टा, पत्ता य जहिच्छियं ठाणं ॥५०॥
दिट्ठो य तस्स राया, कओ पसाओ य तेण मंतिस्स ।
मंतिपयंमि निउत्तो, जाया ते दो वि सुहभाई ॥५१॥
ता एसो दिट्ठंतो, कहिओ भे अबुहबोहणनिमित्तं ।
एयस्स उवणयमिमं, सुण इण्हि तं विसालच्छि ! ॥५२॥

“जह नरवइस्स कोवो जं नूणं होइ तह य इह मरणं ।
जारिसओ सो मंती तारिसओ होइ पुण जीवो ॥५३॥
जो ण्हाणपाणभोयणवत्थसमालभणलालिओ मित्तो ।
आवइकालविलोट्टो सो देहो इह [य] नायव्वो ॥५४॥

जओ- सेज्जासणसंवाहणवत्थसमालिहणण्हाणकुसुमेहिं ।
वेल्लहलविलयकोमलबाहुलयार्लिगणेहिं च ॥५५॥
विविहवरपाणभोयणसुयंधतंबोलसुरयदुल्ललिओ ।
मरणंतं पि निहीणो विलोट्टए एस हयदेहो ॥५६॥
एक्कं पि पयं गंतुं जीवेण समं न होइ एस खमो ।
तम्हा एयस्स कओ अकयत्थो होइ उवयारो ॥५७॥
जो पुण ऊसवमित्तो सो सयणो माइपुत्तवग्गो य ।
जाया जणओ य तहा नायव्वो बुद्धिमंतेहिं ॥५८॥

जओ सो वि- अइलालिओ वि बहुसो पत्ते मरणंतयंमि सो जेण ।
 गंतुं जाव मसाणं पुणो नियत्तंति सव्वे वि ॥५९॥
 न उण पयट्टेण समं मणुयासुरतिरियनारयगईसु ।
 थोवं पि हु साहेज्जं सो तस्स पयच्छइ हयासो ॥६०॥
 जो पुण तइओ मित्तो 'जोकारे'णं तु जेण ववहारो ।
 सो जिणवरिंदभणिओ धम्मो इह होइ नायव्वो ॥६१॥
 जीवेण समं गच्छइ एसो दुग्गोसु कुणइ साहेज्जं ।
 ता एसो आएओ बुद्धिमया होइ पुरिसेण ॥६२॥

भणियं च- "धम्मो च्चिय चारभडो घेतव्वो पंडिण पुरिसेण ।
 जो ठाइ अग्गओ मग्गओ य वासे पवासे य" ॥६३॥ []
 एयं पि मंदबुद्धी केइ पमायंति जंतुणो मूढा ।
 लद्धे वि मणुयजम्मे धम्मसुई सद्धपरिहीणा ॥६४॥
 ता मुद्धे ! एक्को च्चिय एसो संसारसायरे घोरे ।
 जंतूण होइ सरणं परलोयपुरं पयट्टाण ॥६५॥
 ता एयं मोत्तूणं तुम्ह कए बीयमित्तसरिसीणं ।
 मंति व्व वसणवडिओ होहामि ह कहमहं पच्छ ॥६६॥
 तुम्हेहिं परिमुक्को विवज्जिओ धम्ममित्तसंगेण ।
 होहामि कहं अंतोभममाणो भवसमुद्धंमि ॥६७॥
 ता सुंदरि ! एयं चि[य] अहयं सव्वायरेण गिण्हामि ।
 धम्मं जिणपन्नत्तं जं सरिसं तइयमित्तेण" ॥६८॥
 इह जे गुणपालण निच्चरया तवसंजमनाणदमे य द्वि(ठि)या ।
 उवसंतकसायमहाजलणा अह जंति सिवं परिमुक्कभवा ॥६९॥
 इय जंबुणामचरिए, कमलवईदत्तउत्तरभिहाणो ।
 उद्देसगो समत्तो, एत्तो य परं पवक्खामि ॥छा॥ ॥७०॥



॥ सोलसमो उद्देसओ ॥

पिहुलनियंभयउट्टियरसणामणिकिरणधवलियदिसाए ।

एत्थंतरे य भणियं **विजयसिरी** नाम भज्जाए ॥१॥

पियसहिओ ! एसऽम्हं होज्ज पिओ नूण **भट्टधूयसमो** ।

सयमइविगप्पिएहिं कुसलो अक्खाणयसएहिं ॥२॥

तओ इमं च निसामिऊण सहरिसं वियसमाणवयणकमलेण भणियं **जंबुणामेण-**
का सा सुंदरि ! **भट्टधूया** ? कहां वा सयमइविगप्पियक्खाणयकुसल त्ति ?'

तीए भणियं ।

अवि य- अत्थेत्थ **भरहवासे** नयरी **वाणारसि** त्ति नामेण ।

गरुयपरक्कमकलिओ राया **अवराइओ** तत्थ ॥३॥

सो अच्चंतकहापरिसवणाखित्तहिययनिबद्धाणुराओ पइदिणं पि अत्थाणमंडव-
मुवगओ नायरमाहणयाण कयउवजीवणमहावित्ति अक्खाणगाइं परिवाडीए परिकहावितो
उवचिद्वइ त्ति । अन्नया य एक्कस्स चक्कयरमाहणस्स समागओ अक्खाणगकहणपरिवाडीए
दिवसो । तओ सो तम्मि दिणे चिंताभारसमक्कंतो विमणदुम्मणो य दिट्ठो निययधूयाए
कन्नकुमारीए । भणिओ य- 'ताय ! किं ते पुण चिंतासमुव्वहकारणं ?' तओ तेण
भणियं- 'पुत्त ! अज्ज मम रायत्थाणमंडवसहाए अक्खाणगकहणपरिवाडी समागया ।
एयनिमित्तं च राइणा कओ अम्ह उवजीवणपसाओ । अहं च सव्वसुइपरिहीणो महाजडो
न परिकुसलो इमंमि विसए । ता इमाए मम चिंताए पम्हुट्ठं भोयणं पि । अच्छउ
कहाणगपरिकहणं' । तओ इमं च निसामिऊण भणिओ सो तीए धूयाए- 'ताय ! मा
वच्चसु विसायं । अहं कहिस्सामि' त्ति । तओ सा ण्हायसुइभूया धवलवत्थनियंसणा
गया य अत्थाणमंडवं । दिट्ठो य नरवई । दिन्नासीसा उवविट्ठो पुरओ । भणियं च तीए ।

अवि य- नरनाह ! देसु कन्नं सुव्वउ अक्खाणयं जमिह वित्तं ।
मा गव्विउ त्ति होउं परिभवसु मए तुमं बालं ॥४॥

जओ- बालो वि सुइसयन्नो आएओ होइ बुद्धिमंताण ।
विद्धो वि होइ हेओ सत्थत्थविवज्जिओ पुरिसो ॥५॥

तओ इमं च निसामिऊण राइणा गरुयविम्हयखित्तमाणसेण-अहो ! पेच्छ इमाए बुद्धिकुसलत्तणं कुमारीए निक्खोभत्तणं च । मम अत्थाणमंडवपुरओ कह सललिय-क्खरगिराए एसा परिजंपइ-त्ति चिंतिऊण भणिया सा राइणा-‘न तुमं बाला जीए ते एरिसो वायाविहवो । ता उवउत्तो अहयं परिकहसु’ त्ति ।

तीए भणियं ।

अवि य- तुह गुरुविक्रमपसरियजसनिवहदियंतपत्तनियनामा ।
अत्थि इमा वरनयरी मणिकंचणरयणसंपुन्ना ॥६॥

इमीए वाणारसीए नयरीए अत्थि एगो नागसम्मो नाम चक्कयरो दालिदकंदली सयलसुइपरिहीणो । माहणमित्तवेसधारी बि(दि)ओ । सोमसिरी नाम से भज्जा । अहयं च तेसिं धूया । कुमारी अहं । अन्नया य ममं जोव्वणभरे वट्टमाणे दट्टूण ताओ गहिओ चिंताए, जहा को इमीए होही वरो । इमंमि य अवसरे समागओ एक्को बडुओ परिब्भममाणो मेइणिमंडलं कस्स वि देसंतराओ अम्ह गेहं । दिन्ना य अहं तस्स समागयबडुयस्स । तओ तंमि चेव दिणे ताओ सह अंबाए मम विवाहनिमित्तं गओ जायणत्थं परिभमणियाए । ममं तं च बडुगं मोत्तूण गेहे । तओ मए चिन्तियं-एयस्स मम दइयस्स कह मए चित्ताराहणं कायव्वं । अहवा उज्झिऊण लज्जं पोढमहिला इव सव्वमुवयारं निव्वत्तेमि त्ति । तओ निव्वत्तियं मए ण्हाणभोयणाइयं सयलं पि तस्स करणीयं । समागया य जामिणी । निव्वत्तियं पुणो वि मए सव्वं तस्स संज्ञायाल-करणीयं । अम्ह गेहे एगा चेव खट्टा अत्थुरणगं च । अत्थुरिया य सा मए तस्स । नुवन्नो य सो मम दइओ । मया वि परिचिंतियं अहं पि इत्थेव नुवण्णामि । मा भूमीए पसुत्ताए अन्नो को वि अणत्थो अहिमाईजणिओ भविस्सइ । न य को वि एत्थ तहाविहो अन्नो अत्थि जो ममं एत्थ पसुत्तं दच्छिही । तओ इमं च परिचिंतिऊण तम्मि तस्स सयणीए पसुत्ता अहं । तओ मए हावभावविब्भममयणवियारेहिं कओ सो अवहियहियओ । जाव कामवियारं पयंसिउं पयत्तो ।

भणियं च- “किं न करेज्ज अकज्जं पिण्ण महिलायणेण भन्ततो ।

पुरिसो विसुद्धरूवो वि विसयसंगं समासत्तो” ॥७॥ []

तओ किं बहुणा वित्थरेण । भणिया य अहं तेण-‘सुंदरि ! इच्छसु मए समं सुरयपसंगो ?’ निच्छियं च मए ।

अवि य- निव्वत्तयंति तं चिय तं चिय नेच्छंति नूण महिलाओ ।

वंकं वि वंकचरियं दुल्लक्खं होइ नारीणं ॥८॥

तओ महाराय ! पवत्तो सो वलायारेण ममं परिभुंजेउं । तओ वा(धा)हावियं मए । समागओ सयलो समासन्नलोओ । भणियं च तेण समागयलोएण-‘किमेयं किमेयं ?’ । पसोइओ य सो मए सेज्जाए तुरमाणाए । भणिओ य ‘मा भयसु’ । पलोट्टियं च धरणीए तहाविहं आसंकाठाणजणगं आहारं । मए भणियं च समागयजणहुत्तं-‘एस एस मम भत्तारो अज्जेव वरिओ, न याणामि केणावि कारणेण उड्डुविरेयं काऊण अवडुसरीरो संजाओ ।’ तओ लोओ ‘मलसु मदसु सेवसु य’ भणिऊण गओ नियनियट्टाणेसु । पुणो वि पसुत्ता अहं तस्स सपासे ।

अवि य- काऊण तं पुणो च्चिय कज्जं विहडाविऊण स(सं)धिन्ति ।

तत्थुप्पन्नं नारीण न नज्जएँ कह समुप्पन्नं ॥९॥

भणियं च- “एयाइं असिक्खियपंडियाइं दीसंति एत्थ लोयंमि ।

कुक्कुडयाण य झुज्झं तत्थुप्पन्नं च नारीण” ॥१०॥ []

ता महाराय ! दुल्लक्खहिययाओ एयाओ ।

भणियं च- “रोयाविंति रुयंति य अलियं जंपिंति पत्तियाविंति ।

क्वडेण य खंति विसं मरंति न य जंति सब्भावं” ॥११॥ []

गइयह मुइयह दड्डियह निधूम.....हूयाह ।

छारोवाइं सहं रमइ कओ वेसा सुत्तियाह ॥१२॥

तओ सो महाराय ! मम फासजणियाहिलासनिरोहेण लज्जाभरसमुत्थइयचित्तो ममोवरिं सुरयाभिलासकोऊहलसज्झसेण य संजायमहासूलवेयणो पंचत्तमुवगओ त्ति ।

जओ भणियं च-“परिरुंभइ सोत्तपहे वलेइ हिययं जणेइ मइमोहं ।

पेमं विसंवसंतं विसं व दंतंतरनिहित्तं” ॥१३॥ []

नाओ मए निच्चेट्टुत्तणेण सरीरस्स । हा ! किमेसो एरिसो संजाओ ?-ससज्झसाए जाव निरिक्खिओ ताव नाओ निस्संसयं एसो मओ त्ति । तओ महासोआभिभूया विलविउं पयत्ता-हा ! पेच्छ एसो मम दइओ कह मंदभाइणीए पंचत्तमुवगओ । एवं च किल विलविऊण बहुप्पयारं परिचिंतिउं पयत्ता-कह पुण एस मए कायव्वो, कस्स साहेमि, कह करेमि, कह वा न करेमि । किं वा मम एत्थ करणीयं । कत्थ वा इमाए जामिणीए एगागिणी वच्चामि ? तओ एवं च बहुप्पयारं परिचिंतिऊण खणिया मे (मए) गत्ता निहित्तो य सो । थगिऊण य तं गत्तं संमज्जिओवलित्तं कयए मए गेहं । दिन्नो य धूयवासो । एयंमि अवसरे पहाया जामिणी । समुग्गओ विरहानलसंत-वियचक्कवायसमोण्हवणसमत्थो अंसुमाली । तओ समागयाणि तायं वाणि । कहिया य तेसिं मए इमा पउत्ती ।

अवि य- एयं ते परिकहियं नरवइ ! अक्खाणयं जमम्हाण ।

परिवाडीए दियाणं समागयं परिकहेयव्वं ॥१४॥

तओ इमं च निसामिऊण राइणा सव्वं सव्वहाविरुद्धं गरुयच्छेरयकप्पं च भणिया य सा कुमारी-‘किं बाले ! इमं जहा ते परिकहियं तथा सव्वं सच्चं ?’ तीए भणियं ।

अवि य- किं जं नरवइ ! सुव्वइ सव्वं अक्खाणएसु तं सच्चं ।

चउरमइविगप्पियं तं नरनाह ! इमं च नायव्वं ॥१५॥

एवं तुमं पि पिययम ! कुसलमइविगप्पियत्थमेत्तेहिं ।

दिट्ठंते[हऽ]म्हाणं विफलेसि मणोरहे सव्वे ॥छा॥ ॥१६॥

तओ इमं च निसामिऊण भणियं जंबुणामेण-मुद्धे ! निसुणसु ।

अवि य- “अच्छउ परभवजणियं दुक्खं देहीण एत्थ लोयंमि ।

पच्चक्खं चिय दीसइ जं एयं गब्भवासंमि ॥१७॥

पूइजररुहिरिकिव्विसमुन्नं(त्तं)तपुरीसनियरमज्झंमि ।

जं वसइ तं पि(?) मुद्धे ! विरागचिंधं मुणेयव्वं ॥१८॥

भणियं च जेण पयडं कविणा केणावि तं सुणसु मुद्धे ! ।

जिणवयणभावियमणा दुक्खं जं गब्भवासंमि ॥१९॥

“असुइमलरुहिरकइमवमालिओ गब्भवासमज्झंमि ।
 वसिओ सि संपयं चिय जीव ! तुमे कीस पम्हुट्टं ? ॥२०॥ []
 संकोडियंगमंगो किमि व्व जणणीएँ जोणिदारेण ।
 संपइ नीहरिओ च्चिय पम्हुट्टं केण कज्जेण ? ॥२१॥ []
 संपइ बालत्तणए कज्जाकज्जेसु मूढचित्तेण ।
 अवि असियं ते वच्चं पम्हुट्टं तुज्झ तं कीस ? ॥२२॥ []
 नवमासजणणिय्यरे असिओ जणणीएँ तह य निस्संदो ।
 जीवेण संपयं चिय तं चिय दुक्खं किमन्नण ? ॥२३॥ []
 एवं च एत्थ बहुसो पत्तं जीवेण गब्भवसहीसु ।
 ता जाणिऊण एयं को संसारंमि रज्जेज्जा ॥२४॥ []
 जो पुण जाणंतो च्चिय जम्मजरामरणगब्भयं दुक्खं ।
 न वि विसएसु विरज्जइ सो गब्भपरं परं लहइ” ॥२५॥ []
 इय एयं नारुणं जम्मजरामरणगब्भयं दुक्खं ।
 गब्भपरंपरमूलं विसयसुहं को हि नंदिज्जा ? ॥२६॥
 ता एण य (?)पज्जन्तं सुइसत्थवियक्खणाण पुरिसाण ।
 एत्थ य सुण दिट्ठंतं ससंकवयणे ! जिणक्खायं ॥२७॥
 अत्थेत्थ जंबुदीवे भरहे वासंमि तुंगपायारं ।
 नलिणिवणपुन्नफरिहासणाहदुल्लंघपरचक्कं ॥२८॥
 सुविभत्तितिय[य?]चउक्कचच्चरजिणभवनगोउरसणाहं ।
 भवनजियदेवभवनं नामेण वसंतपुरनयरं ॥२९॥
 गुरुविणयभत्तिजुत्तो सत्थत्थवियक्खाणो सुहाभिगमो ।
 धम्मपसाहणकुसलो जत्थ जणो गुणनिही वसइ ॥३०॥
 एकाउहो वि होउं सयाउहो जो जणंमि उग्घुट्ठो ।
 सुकयजहट्ठियनामो सयाउहो तत्थ नरनाहो ॥३१॥

अंतेउरप्पहाणा ललियानामेण तस्स वरदेवी ।

सइवड्ढियभोगसुहा इट्ठा य रइ व्व मयणस्स ॥३२॥

तओ एवं वच्चइ कालो राइणो तीए समं विसयसुहमणुहवंतस्स । अन्नया य अवलोयणपासायसंठियाए दिट्ठो तीए देवीए एक्को वरजुवाणो रायंगणंमि । केरिसो य जो ?-

लायन्नरूवजोव्वणसोहग्गसरीरसंपयाकलिओ ।

सविलासहसियजंपियजुवईयणनयणमणहरणो ॥३३॥

तओ दट्ठूण य तं केरिसा संजाया देवी ?

अवि य- निप्फंदलोललोयणविम्हयवसमुक्कदीहनीसासा ।

लेप्पमइय व्व घडिया अवहियहियया खणं जाया ॥३४॥

दिट्ठा य अब्भासवत्तिणीए मयणाभिहाणाए चेट्ठी(डी)ए । चिंतियं च णाए-किं पुण एसा अवहियहियया संजाया देवी ? तओ तीए पलोइयं देवीए अवलोय-
णाणुसारेण रायंगणाहुत्तं ।

तओ अवि य-

सुपलंबबाहुजुयलो कोमलसुसिणिद्धदेहसंपुत्तो ।

कमलदलनयणजुयलो दिट्ठोऽणंगो व्व रइरहिओ ॥३५॥

तओ नायं चेडीए जहा-इमं रइरहियकामदेवं अहिलसइ देवी । तओ तीए विन्नत्ता देवी । इमाए पुव्वपढियगाहुल्लियाए-

दढसोहियं सलज्जं चाइ(इं) विन्नाणगुणसमिद्धं च ।

पियजंपिरं च सामिणि ! पडिवज्जसु वच्छलं दइयं ॥३६॥

अन्नं च-देवि !

अवि य- जणमणनयणाणंदे कलपुत्ते तह कलंकपरिहीणे ।

न रमइ य कस्स दिट्ठी अउव्वचंदे व्व एयंमि ॥३७॥

ता देवि ! देसु आएसं जेणं तं सव्वं समीहियं संपाडेमि त्ति । तओ सा देवीए भणिया-साहु साहु सुट्ठु ते नायं मम चित्ताभिप्पायं । किंतु एवं सुम्मइ-

सुसहावं सुविणोयं समसुहदुक्खं सनेहलं सरलं ।

पाविज्जइ अच्चंतं पुत्तेहिं विणा न माणुस्सं ॥३८॥

असढहिययं सलज्जं सुसहावं वच्छलं कयन्नुं य ।
विहलुद्धरणधणं पि हु माणुस्सं होइ धन्नाणं ॥३९॥

अन्नं च मयणे !-मरणं न होइ गरुयं संसारे सब्वलोयसामन्नं ।

मरणस्स वि गरुययरं जं जस्स पियं पराहीणं ॥४०॥

तओ चेडीए भणियं-देवि ! सुणसु ।

अवि य- असहायस्स न सिद्धी पुन्नब्भहियस्स सुट्टु वि पियस्स ।

किं किलि(ल) तस्स न सिद्धं सुसहायं जस्स माणुस्सं ? ॥४१॥

तओ सा देवीए भणिया-जइ एवं ता मयणिए !

अवि य- को उण हवेज्ज एसो मेइणिवट्टंमि पुन्निमायंदो ।

मम नयणकुमुयपडिबोहवच्छलो हिययआणंदो ॥४२॥

ता जाणसु इमं गंतूण को वेस । गया य चेडी, समागया थोववेलाए । भणियं च णाए ।

अवि य- सामिणि ! इहेव नयरे समुद्दइब्भस्स सत्थवाहस्स ।

एस सुओ ललियंगो ललियंगो नाम गुणकलिओ ॥४३॥

तओ इमं च निसामिऊण देवी अहिययरं तस्स समागमुच्छुगा संजाया मयणा-
नलदाहपरवसा य निवडिया सयणीए । तओ तक्खणं चिय केरिसा संजाया ।

अवि य- परिवड्डमाणमयणगिगताविया केवलं समूससइ ।

नीससइ वलइ वेवइ हुं हुं महुरक्खरं भणइ ॥४४॥

अलयवलयाइं तीए घोलंति विसंतुलाइँ मुहकमले ।

मउल्लिति लोयणाइं रुंभइ सासो खलइ वाणी ॥४५॥

निद्दहइ हारवलयं पि थोरथणवट्टसंठियं तीए ।

पवणो वि सुसइ देहं कमलिणिदलसिसिरजलकणिरो ॥४६॥

पीलेइ य नियदेहं भुयाहिँ नीससइ दीहनीसासं ।

पवणं पि समालिगइ तीए दिसाएँ पवायंतं ॥४७॥

तं चिय दिसं पलोयइ पम्हलमउल्लिततारनयणेहिँ ।

संजूइ नियदेहं रूसइ य [स?]याण पुन्नाण ॥४८॥

इय सा तमपेच्छंती पुणो पुणो मोहमुवगया हसइ ।

आसासिज्जइ नवरं पुणो वि सा संगमासाए ॥४९॥

तओ एयावत्थं च तं देविं दट्टूण मयणियाए भणियं ।

अवि य- अवलंबसु धीरत्तं मुंच विसायं च मुज्झ मा देवि ! ।

आणेमि तुज्झ दइयं नियजीयं जइ वि दाऊण ॥५०॥

तओ 'आणेमि तुज्झ दइयं' ति समायन्निऊण समासासियहिययाए भणियं देवीए ।

अवि य- जा जा हि वच्च तुरियं मयणे ! जा जीवियं न निग्गमइ ।

पच्छ किं लद्धेण वि पिण्ण मम आउए खीणे ॥५१॥

दिज्जइ हत्थालंबो मयणे ! मा एत्थ तं चिरावेसु ।

सो च्चिय एक्को सुयणो जो विहुरे होइ निब्भिच्चो ॥५२॥

तओ एवं च भणिया गया तुरमाणा दासचेडी । दिट्ठो य सो जुवाणो । निवेइयं च सव्वं देवीसंदिट्ठं । दंसणसमुब्भववियाराइयं च साहियं तस्स सयलं ।

अवि य- सा तुह विरहानलडाहसोसिया सुयणु जं न परिवडइ ।

तं तुह संगमआसाविलोहिया मज्झ वयणेणं ॥५३॥

ता तह कीरउ सुपुरिस ! जह सा मयणाहिणा सुयणु डक्का ।

तुह संगमागएणं पन्नप्पइ तक्खणं वराई ॥५४॥

इमं च निसामिऊण भणियं ललियंगेण-

अवि य- आणंदिओ इमेणं देवीनेहेण सुयणु अच्चंतं ।

तुम्हावलोयणेण य किंतु निसामेहि परमत्थं ॥५५॥

तीए भणियं-किं तं ? तेण भणियं ।

अवि य- किं धरणिगोयरेणं अहिलसिया सुयणु जह व ससिरेहा ।

पाविज्जइ अच्चंतं निउणेण वि केण वि नरेण ॥५६॥

तह जीए दंसणं पि हु संपडइ न कह व पुन्नरहियाण ।

पाविज्जइ अच्चंतं कह सा अम्हेहिं पसयच्छी ॥५७॥

तओ चेडीए भणियं-एवं एयं । किन्तु-

अवि य- जं सुयणु तुमे भणियं सहायरहियाण होइ तं सव्वं ।

जो उण सहायसहिओ किं तस्स न एत्थ भण सिद्धं ॥५८॥

ता अच्छ तुमं वीसत्थो, मम एसो सलयो वि भारो । पडिवन्नं च तेणिमं । गया य चेडी । कहिओ य चेडी(देवी)ए एस वुत्ततो ।

अवि य- अहिलसइ को न तं सुयणु एत्थ भवणंमि जइ वि देविंदो ।

ता अच्छसु वीसत्था सो तरुणो तुह वसीहूओ ॥५९॥

तओ देवीए भणियं ।

अवि य- पाविज्जइ अचिरेणं दुलहं पि पियं न सुयणु संदेहो ।

[तं] मयणे सुपसन्ना जेसिं गोरि व्व अच्चंतं ॥६०॥

तओ इमं च भणिऊण दिन्नं पारिओसियं तीए । जायाओ य तस्स पवेसणोवा[य] पओगपराओ । तओ य एयम्मि य अवसरे समागओ सरयसमओ कोमुइमहूसवो ।

अवि य- जायम्मि सरयसमए कोमुइवारम्मि को न परिमुइओ ।

मोत्तूण झाणसज्झायवावडे साहुणो एक्के ॥६१॥

तओ एवं च सरइकोमुइमहूसवे सयलो वि नायरजणो पवत्तो विविहकीलासु कीलितं ।

अवि य- सयलो वि नायरजणो कोमुइवारंमि विविहकीलत्थं ।

पमुइयमणसो पत्तो उज्जाणे नंदणवणंमि ॥६२॥

तओ राया वि सअंतेउरो पयट्टो कीलानिमित्तं तमुज्जाणं ।

अवि य- अंतेउरपरियरिओ सग्गे इंदो व्व पमुइओ मणसा ।

उब्भिन्नपुलयरोमंचकंचुओ निग्गओ राया ॥६३॥

महादेवी वि 'मम सीसे वेयणा बाहिउं पयत्ता, अओ गंतुं न तरामि'त्ति भणिऊण ठिया न पयट्टा कीलत्थं ति । तओ एवं च जाणिऊण विवित्तं पवेसिओ सो महादेवीहिययणंदणानंदणो जुवाणो केणइ पओएण मयणाए देवीए वासभवणं ति । इओ य राया किल महादेवीए ललियाए महासीसवेयणा बाहिउं पयत्ता । तओ महामाणसदुक्खवेयणाभिघाइयहियओ अतक्किओ चेव सयलपरियणेण नियत्तो उज्जाणाओ अविन्नाओ य पवत्तो ललियावासभवणं समारुहिउं । तओ समासन्नीभूओ य कह कह वि नाओ मयणाए । सिट्ठं च णाए महादेवीए रायागमणं । तओ अन्नो

[न] को वि अप्पसंरक्खणोवाओ, [अओ] भयभीयाहिं संरक्खणत्थं च तस्स निहितो ताहिं पाउक्खालयकूवे ललियंगो ।

अवि य- ताव पिओ होइ जणो जाव न वसणं समेइ मज्जेण ।

वसणंमि समावडिए किं कीरइ सुट्टु वि पिएण ॥६४॥

भणियं च- “सुनिबद्धबंधणाइं सहावघडणाए जइ वि घडियाइं ।

वसणंमि समावडिए सच्चं विहडंति पेमाइं” ॥६५॥ []

ताव च्चिय होइ सुहं जाव न कीरइ पिओ जणो को वि ।

पियसंगो जेण कओ, दुक्खाण समप्पिओ अप्पा ॥६६॥

असुइचिलिच्चिलमलिणे, किमिसयसंताणफिप्फिसदुगंधे ।

पाउक्खालयकूवे, पडिओ दुमे(म्मे)ज्झपउरंमि ॥६७॥

तओ चितियं पयत्तो ।

अवि य- हा कह एत्थ अउत्तो दुमे(म्मे)ज्झचिलिच्चिलंमि अयडंमि ।

बीयं जोणि व्व अहं संपत्तो पुन(न्न)परिहीणो ॥६८॥

अह वा- परदार[स्स?] फलं मे इहेव जम्मंमि पावियं एयं ।

जं अप्पणा विरइयं तं भुंजसु संपयं जीव ! ॥६९॥

भणियं च- “परदारं चिय अइभीमविसमदोसायरं महापावं ।

उभओवक्खदुहयरं भवनिग्गमवज्जपायारं” ॥७०॥ []

“इह लोगंमि य अइदुक्खकारयं बंधवहणसंजणणं ।

वेराणुबंधजणयं लोगम्मि य गरहियतरं च” ॥७१॥ []

अन्नं च- पाउक्खालयसरिसे मुत्तासुइपूइगंधबीभच्छे ।

को रमइ जाणमाणो इत्थीदेहंमि दुहमूले ॥७२॥

भणियं च- “मंसट्टिरुहिरमज्जावसपूइपुरीसपूरियसरीरे ।

बहिचंदणचच्चिक्खियमुत्तासुइभरियकलसे व्व” ॥७३॥ []

“को जाणंतो रायं करेइ एवंविहे इह सरीरे ।

उन्नयपुहन्न(?)मासे खीणे य सिरावणद्धे य” ॥७४॥ []

ता जइ कह वि हु होज्जा इम[स्स] अयडस्स निग्गमे(मो) मज्झ ।
ता अलमलं ति भोएहिं सव्वहा मज्झ पज्जत्तं ॥७५॥

तओ इमं च परिचितयंतो तत्थ अच्छिउं पवत्तो । ताओ वि तस्स भुत्तसेसं
पक्खिवंति आहारं । परिभुंजइ य सो तं छुहाए किलामियसरीरो । जओ-‘छुहासमा
वेयणा नत्थि’ त्ति ।

भणियं च- “पंथसमा नत्थि जरा, दालिदसमो पर(रा)भवो नत्थि ।

मरणसमं नत्थि भयं, छुहासमा वेयणा नत्थि” ॥७६॥ []

तओ इमेण विहिणा बोलीणा तत्थ बहवे मासा । समागओ पाउससमओ । तओ
जलहरपरिमुक्कजलपूरेण य पूरियं काऊण तं पाउक्खालयकूवं । कीलियापओगेण य
निच्छूढं तं सव्वं असुइकिब्बिसं नयरनिद्धमणेण य वहिउं पवत्तं । तओ सो वि
जलप्पवाहेण निच्छुभमाणो पत्तो फरिहीयातडं । तत्थ य तहाविहभवियव्वयानिओएण
समुज्झओ सो जलप्पवाहेण । वायवसमुच्छ विहलंघलसरीरो य दिट्ठो कह कह वि
भवियव्वयानिओएणं तत्थ य समागयधाईए । पच्चभिन्नाओ भणिओ य तीए ।

अवि य- हा पुत्त ! कह इमं पे पत्तं अइदारुणं महावसणं ।

नरयब्भहियं मन्ने चित्तिज्जंतं च दुहजणणं ॥७७॥

तओ साहियं च तेण सव्वं इमं वुत्तंतं । नीओ य तीए निययगेहं । पउणीकओ
य काढयविरेयणवमणाईहिं वेज्जेहिं । तओ पुणो वि बीयतइयवारं पि तेण य विहिणा
पत्तो सो तत्थ वच्चाहरकूवे महादुक्खं ।

अवि य- बीयं तइयं पि पुणो वारं अच्चु(ब्भु)दुदुक्खसंतावो ।

पत्तो नरयब्भहियं अयडेयरमज्झसंपत्तो ॥७८॥

कहिओ ते दिट्ठंतो एयस्स य उवणयं निसामेहि ।

संखेवेण महत्थं भणामहं गुरू(रु)वएसेण ॥७९॥

“अत्तित्तकामभोओ पुणो पुणो वसइ जह य ललियंगो ।

तह एस होइ जीवो विसएहिं विमोहिओ निच्चं ॥८०॥

जह देवीए संगो नायव्वा तह [य] विसयसंपत्ती ।

जह चेडी तह इच्छा नायव्वा होइ विसएसु ॥८१॥

जह रायभयं जायं संसारभयं पि होइ तह एत्थ ।

कूओ य गब्भवासो मुत्तासुइरुदिरदुहपुन्नो ॥८२॥

जह असुइप्पक्खेवो जणणीपरिणामियस्स तह होइ ।

निस्संद्रो नायव्वो पाणन्नाईण दव्वाणं ॥८३॥

जह निग्गमणं जायं कह वि हु निद्धमणजलसमूहेण ।

जोणिदुवारेण तहा निग्गमणं होइ जीवस्स ॥८४॥

धाईपडियरणं जह नायव्वा तह य होइ निउणेहिं ।

देहोवग्गजणणी कम्माणं संतई एत्थ” ॥८५॥

ता- ललियंगो इव नाहं पाउक्खालस्स सुयणु सरिसंमि ।

गब्भंमि विसामि पुणो तुम्ह कए देविसरिसीणं ॥८६॥

अन्नं च इमं सव्वं धम्माधम्माणं जं फलं लोए ।

पच्चक्खं चिय दीसइ तं मुद्धे जेण भणियं च ॥८७॥

“अविरयडज्झंतागरुविसंखलुच्छलियधूमपडहच्छे ।

एक्के वसंति भुवणे निबद्धमणिनिम्मलुल्लोए ॥८८॥ []

अन्ने विरइयफुंफुयविणिमधूमोलिपूरिउच्छंगे ।

जुननिहोतणविवरंतरालपरिसंठियभुयंगे ॥८९॥ []

एक्के धवलहरोवरि मियंककरदंतुरे सह पियाहिं ।

लीलाए गमंति निर्सिं पेसलरयचाडुकम्मेहिं ॥९०॥ []

अन्ने वि सिसिरमारुयसीयपवेविरसमुट्टुमि(द्धिसि)यदेहा ।

कह कह वि पियारा(र)हिया वाइंता दन्तवीणाओ ॥९१॥ []

एक्के कंचणपडिबद्धथोरमोत्ताहलुब्भडाहरणा ।

विलसंति बहलकुंकुमफंसलियवच्छथलाभोया ॥९२॥ []

अन्ने वि विसममहियलनिसम्मणुप्पन्नकिणियवोंगिल्ला ।

मलिणजरकप्पडोच्छइयविग्गहा कह वि हिंडंति ॥९३॥ []

एक्के पूरिंति मणोरहाइं जं मग्गिराण पणईण ।

अन्ने पुण परघरहिंडणेण कुच्चिं पि न भरंति” ॥९४॥ []

इय पुन्नापुन्नफलं पच्चक्खं चेव दीसए लोए ।
 एत्तो य तव विसेसो लक्खिज्जइ आगमबलेण ॥१५॥
 “एक्के दोघट्टघडानि[व]हा जंपाणजाणतुरएहिं ।
 वच्चंति सुकयपुन्ना अन्ने अणुवाहणा पुसओ ॥१६॥ []
 एक्के चंदणमयनाहिघुसिणकप्पूरपरिमला निच्चं ।
 अन्ने लायंजणटिकयं पि मन्नंति छणभूयं ॥१७॥ []
 एक्काण वित्थरिज्जइ सिप्पीकच्चोलथालसंघाओ ।
 अन्नाण कह वि दुक्खेण पत्तपुडिया वि संपडइ ॥१८॥ []
 एक्काण पाणभोयणवंजणसंजुत्तविविहमाहारं ।
 अन्नाण नेहरहियं दिज्जइ वरदड्डवल्लस्यं ॥१९॥ []
 एक्के पट्टंसुयविविहवत्थदेवंगसुकयनेवच्छ ।
 अन्ने विसिन्नसाडियजरडंडीखंडपाउरणा ॥२०॥ []
 एक्काण निसा निज्जइ मणिदीवसणाहचारुसयणेहिं ।
 अन्नाण भूमिकोणे धूलीतणफंसलियंगाण ॥२०१॥ []
 बोहिज्जंति पहाए थुइमंगलवयणगीयसज्जे(द्वे)हिं ।
 अन्ने साहिक्खेवं खरनिट्टुरदुट्टुवयणेहिं” ॥२०२॥ []
 इय पुन्नापुन्नफलं विविहं नारुण कम्मवसयाण ।
 तह प्प[व]त्तह काउं जह मुंचह सव्वदुक्खाणं ॥२०३॥

- अन्नं च- “जरमरणरोगउं संसारे विसयतणहनडियाओ ।
 मा पावह मुद्धाओ दुक्खाइं अणोरपाराइं” ॥२०४॥ []
- ता- “अमयं व गिण्हइ इमं जिणवयणं अहव कप्परुक्खं वा ।
 चिंतामणि व्व अहवा सव्वेसिं आयरतरेण” ॥२०५॥ []
- जओ- “रयणारे व्व नदुं(द्वं) दुलहं रयणं व होइ मणुयत्तं ।
 जोणिबहुलक्खकिन्ने संसारे णोरपारंमि” ॥२०६॥ []
 ता एयं नारुणं गिण्हइ भावेण जिणमयं धम्मं ।
 पावेह जेण अइरा सिवमयलमणंतकल्लाणं ॥२०७॥

एयं जयंमि सारं परमं पत्तं परंपरं नेयं ।
सयलसुहाण निहाणं दुक्खाणं छेयसंजणयं ॥१०८॥

जओ- “नारयतिरियनरामरभवेसु परिभमइ दुक्खसंतत्तो ।
जीवो जिणमयहीणो पुणो पुणो भवसमुद्धंमि ॥१०९॥
निच्चंधारे नरए निच्चासुइपूइरुहिरदुरगंधे ।
निच्चनिरंतरजलिए बहुदुक्खदवग्गिणा कलिए ॥११०॥
खरतिक्खपरिसदुक्खे निच्चं चिय छेयभेथपरिकलिए ।
पावन्ति अणंताइं दुक्खाइं जिणमयविहीणा ॥१११॥
तिरिएसु य असुहाइं तण्हासीउण्हभुक्खदुक्खाइं ।
उहणंकणछेयणताडणाइं तह मारणाइं च ॥११२॥
पावन्ति अणेगाइं पाणी इह के वि नरयसरिसाइं ।
कम्मोदएण नूणं जिणमयपरिवज्जिया मूढा ॥११३॥
दोहग्गसोगकलिया परिभवदारिद्ररोगसंतत्ता ।
मणुयत्तणे वि पत्ते दुक्खाइं अणेगरूवाइं ॥११४॥
पावन्ति के वि जंतू तिच्चासुहभावकम्मजणियाइं ।
जिणवयणबाहिरमईं घत्था मिच्छत्तमोहेण ॥११५॥
अभिओगियकिव्विसिया सुरसंपयवज्जिया य जायंति ।
देवा वि धम्मरहिया निच्चं चिय दुक्खपरिकलिया” ॥११६॥
ता एयं नाऊणं संसारे केवलं परं दुक्खं ।
घेत्तव्वं पच्छयणं असेसदुक्खाण निव्वहणं ॥११७॥
जिणपवयणभणिएणं विहिणा निच्चं पि उज्जमेयव्वं ।
जइ इच्छह संसारं तरिउं तुब्भे इमं भीमं ॥११८॥
नत्थेत्थ इमं मोत्तुं सरणं जंतूण दुक्खतवियाणं ।
सयलंमि वि तइलोए सदेवमणुयासुरसमिद्धे ॥११९॥
एयं पि के वि जंतू मिच्छत्तन्नाणरागदोसत्ता ।
जिणयंदभा(भ)णियमत्थं मोहंधा इह न याणंति ॥१२०॥

अवि य- मन्ति अहम्मं पि य ते मूढा एत्थ धम्मबुद्धीए ।
 तं तं कुणंति बाला जं जं चिय धम्मपडिकूलं ॥१२१॥
 मंसं मज्जं सुरयं धम्मत्थं एत्थ के वि सेवन्ति ।
 अजयाण दिति दाणं गोनंगलदारमाईयं ॥१२२॥
 जाणंति न उण एयं मंसाईयाणि पाणिघाएण ।
 धम्मस्स विरुद्धाईं विसिट्ठजणगरहियाईं च ॥१२३॥

भणियं च- “एत्थ जम्हा दयागुणविसारएहिं धीरेहिं ।
 जिणवयणभाविएहिं साहूहिं पवरनाणीहिं” ॥१२४॥ []
 “खइयं वरं विसं पि हु खणेण मारेइ एक्कसिं चेव ।
 मंसं पुणो वि खइयं भवमरणपरंपरं नेइ ॥१२५॥ []
 मंसासिणो नरस्स हु पारत्तं आउयं च परिहाइ ।
 परिवड्डइ दोहगं दूसहदुक्खं च नएसु ॥१२६॥ []
 भेसज्जं पि हु मंसं देई अणुमन्ई य जो जस्स ।
 सो तस्स मगलगो वच्चइ नरयं न संदेहो ॥१२७॥ []
 दुग्गंधं बीभच्छं इंदियमलसंभवं असुइअं च ।
 खइए य नरयपडणं विवज्जणीयं अओ मंसं ॥१२८॥ []
 सव्वजलमज्जणाइं सव्वपयाणाइ सव्वदिक्खाओ ।
 एयाइ अंसासित्तणस(स्स) तणुयं पि न समाइं ॥१२९॥ []
 जे चोरसुमिणसउणावणिहपियासा भूयग्गहदोसा ।
 एक्केण अमंसासित्तणेण ते तणसमी हुंति ॥१३०॥ []
 मंसस्स वज्जणगुणा दो चेव अलं नरस्स जियलोए ।
 जं जियइ निरुवसग्गं जं च मओ सोग्गइं लहइ ॥१३१॥ []
 काऊण धम्मबुद्धी जे मंसं दिति जे य खायंति ।
 उभओ वि जंति नरयं तिक्कमहावेयणं घोरं ॥१३२॥ []
 मंसं पुण पयडं चिय दीसइ सव्वाण एत्थउणत्थाणं ।
 मूलं तह वेराण य पढमं चिय कारणं एयं ॥१३३॥ []

सुर्यं च रागजणणं दोसस्स विवड्डुणं तहा भणियं ।
 रागदोसा य इमे मूलं संसारचक्कस्स” ॥१३४॥ []
 इय एवं पयडो च्चिय दोसो एएहिं दीसए एत्थ ।
 के वि पुण एत्थ मूढा धम्मत्थं नवर सेवंति ॥१३५॥
 न उण मुणित्ति वराया धम्मो तवनियमचरणकरणेहिं ।
 अपवग्गसाहणो इह पन्नत्तो लोगनाहेहिं ॥१३६॥

“अजयाण य जं दाणं दिज्जइ तं नो कयाइ तारेइ ।
 उयहिनिहित्ता हु सिला अग्गसिलं उयहिमज्झंमि ॥१३७॥
 गोनंगलमाईयं दाणं संसारकारणं नेयं ।
 मूलं सव्वदुहाणं मूढा एय न याणंति ॥१३८॥
 तवनियमकिलंताणं सद्धासक्कारदोसपरिहीणं ।
 फासुयदाणं भणियं सिवसुहमूलं जिणित्तिदेहिं” ॥१३९॥
 जे रागदोसकलिया संसारनिवासमोहिया देवा ।
 परमप्पाबुद्धीए ते मूढा नवर मन्तंति ॥१४०॥
 रागदोसपराणं जं जं पडणाइयं इहं तेसिं ।
 धम्मत्थं किल कीरइ तं तं चिय नरयगइमूलं” ॥१४१॥

अवि य- “परमप्पा नायव्वो सिद्धो बुद्धो निरंजणो निच्चो ।
 निट्ठवियअट्ठकम्मो रागाईदोसपरिहीणो ॥१४२॥
 तस्स य जं जं कीरइ, वंदणसक्कारपूयसम्माणं ।
 तं तं सिवसुहमूलं पावस्स पणासणं होइ ॥१४३॥
 भणियं च एत्थ जम्हा दाणं जं लोयसम्मयं किंचि ।
 गोइत्थिसुवन्नाई कुगईहेऊ महापावं ॥१४४॥
 जे इत्थिभूमिदाणं सुवन्नदाणं च जे पउंजंति ।
 ते पावकम्मगरुया भमंति संसारकंतरं ॥१४५॥
 बंधणताडणदमणेसु होइ गाईणा दारुणं दुक्खं ।
 हलकुलिसेसु वि पुहई दारिज्जइ जंतुघाएहिं ॥१४६॥

जो विह देइ कुमारिं सो विह रायं करेइ गिर्द्धि च ।
 रागेण हवइ मोहो मोहेण वि दुग्गईगमणं ॥१४७॥
 हेमं भयावहं पुण आरंभपरिग्गहस्स आमूलं ।
 तम्हा वज्जंति मुणी चत्तारि इमाइं दाणाइं ॥१४८॥
 नाणाभयप्पयाणं फासुयदाणं च भेसजं चेव ।
 एए हवंति दाणे उवइट्ठा वीयरगेहिं ॥१४९॥
 नाणेण जिब्बनाणी दीहाऊ होइ अभयदाणेण ।
 आहारेण य भोगा पावइ दाया न संदेहो ॥१५०॥
 लहइ य दिव्वसरीरं साहूणं भेसजस्स दाहा(या)रो ।
 निरुवहयअंग(गु)वंगो उत्तमभोगं [च] अणुहवइ ॥१५१॥
 जह खेत्तंमि सुकिट्ठे सुपउत्तं अब्भुयं हवइ वीयं ।
 तह संजयाण दाणं महंतपुन्नावहं होइ ॥१५२॥
 जह ऊसरम्मि बीयं खित्तं न य होइ तस्स परिवुट्ठी ।
 तह मिच्छत्तमइल्ले पत्ते अफलं हवइ दाणं ॥१५३॥
 विविहाउहगहियकरा सव्वे देवा कसायसंजुत्ता ।
 कामइरागवसगा निच्चं कयमंडणाहरणा ॥१५४॥
 जे एवमाइदेवा न हु ते दाणस्स हुंति नेयारा ।
 सयमेव जे न तिन्ना कह ते तारिंति अन्नजणं ? ॥१५५॥
 जे य पुण वीयराया तित्थयरा सव्वदोसपरिमुक्का ।
 ते हुंति नवर लोए उत्तमदाणस्स नेयारा ॥१५६॥
 जे जिणवराण धम्मं करिंति पडिमा य छिन्नसंगाणं ।
 पूयासु य उज्जुत्ता ते हुंति सुरा महिड्डीया ॥१५७॥
 धयपडहपट्टबंधा धूयं दीवं च जे जिणाययणे ।
 दिंति नरा सोममणा ते वि य देवत्तणमुर्विति ॥१५८॥
 एवंविहं तु दाणं दाऊण नरा परंपरसुहाइं ।
 भोत्तूण देव-मणुयत्तणंमि पच्छ सिवं जंति ॥१५९॥

तम्हा जिणंमि भत्ती दाणं साहूण होइ दायव्वं ।
अविरुद्धोसो धम्मो धम्मे य मई जिणुद्धो(ट्टा)'' ॥१६०॥

तओ इमं च एत्तियं निसामिऊण भणियं पभवेण-‘अहो जंबुणाम ! एयं पुण
कहं जं सुव्वइ सोम ! सुईए’ ।

अवि य- “सव्वे वि वंदणीया देवा धम्मा य हुंति आएया ।
जो जस्स को वि धम्मो देवो वा तस्स सो सेओ ॥१६१॥
एयं कह न विरुज्झइ जं सुव्वइ लोयसत्थसूईसु ।
सव्वण्णुवयणवित्थरभणिण्ण इमेण धम्मेण” ॥१६२॥

तओ जंबुणामेण भणियं-‘निसुणसु एत्थ पभव !’ ।

अवि य- “सव्वे न निंदणीया सेयं भज्जतु वंदणीयाउ ।
गुण-दोसविचारे उण निंद-पसंसाण को संगो ॥१६३॥
जो राग-दोसमूढा मारिंति मरिंति अप्पणा तह य ।
तेसिं तु वंदणमिमं सेयाय न होइ कीरंतं” ॥१६४॥

जेण- पत्तं तं देवत्तं इमेण जं रागदोसमूढाणं ।
देवाणं जीवेणं अणेयसो अप्पणा चेव ॥१६५॥
तह य न जातं किंचि वि इमस्स संसारदुक्खसंतरणं ।
ता एयमप्पमाणं न सव्वहा होइ आएयं ॥१६६॥
धम्मा पुण आएया सव्वे वि तुमेत्थ सोम ! जं भणियं ।
तं म(स ?)त्थपयाणेण वि मिच्छणं वन्निओ धम्मो ॥१६७॥
ता किं सो आएओ एवं अन्ने वि जे विरुज्झंति ।
परलोयं पइ धम्मा ते किं इह हुंति आएया ॥१६८॥
सव्वे वि जओ एए सरायपुरिसेहिं भासिया सोम ! ।
जीवोवद्दवहेऊ न सम्मया मोक्खमग्गस्स ॥१६९॥
ता सव्वहा वि एए उवेक्खणीया न सोम ! आएया ।
बुद्धिमया पुरिसेणं भावियजिणवयणसारेणं ॥१७०॥
जो जस्स को वि धम्मो, देवो वा हवउ तस्स सो सेओ ।
जं ते भणियं तत्थ वि न संगओ एस ते पक्खो ॥१७१॥

जेण- जं जस्स अत्थि इहइं तं तं किं तस्स होइ आएयं ।
 अह भणसि एवमे[वं] ता सोम ! इमं तुमे जायं ॥१७२॥
 कोढं दालिदं वा कह वि हु जइ अत्थि कस्स व नरस्स ।
 तं तस्स होउ एवं आएयं सव्वकालं पि ॥१७३॥
 एयं पि न इच्छिज्जइ सव्वेण वि नूण एत्थ लोएण ।
 तम्हा विहइइ एवं ते भणियं सोम ! दूरेण ॥१७४॥
 एत्थ य सुण दिट्ठं जह पुरिसा तिन्नि के वि नीहरिया ।
 निययनयराओ तुरियं दालिदोवहुया केइ ॥१७५॥
 चलिया य दाहिणदिसं दविणत्थं कह व देवजोएण ।
 पत्ता महइमहंते रन्ने ते भीमरोद्धंमि ॥१७६॥
 लोहायरो महंतो दिट्ठो रन्मि तेहिं सहस त्ति ।
 गहियं च तेहिं लोहं उव्वहिउं जेत्तियं तरियं ॥१७७॥
 गच्छंति जाव दिट्ठीपत्तो रुप्पायरो अह विसालो ।
 लोहं मोत्तूण तओ गहियं एक्केण कलहोयं ॥१७८॥
 लोहद्धं चइऊणं गिण्हियमन्नेण किं पि कलहोयं ।
 लोहन्नेण न मुक्कं न गिण्हियं किं पि कलहोयं ॥१७९॥
 मुंचह एयमसारं भणिया पढमेण दो वि ते पुरिसा ।
 लोहं गिण्हह रुप्पं महन्तमोल्लं इमं जेण ॥१८०॥

भणियं च- “ताणेक्केणं मुक्कं अद्धं अयस्स मे सुयणु ! ।
 अद्धं पुण कह मुंचउ अइदूरं जेण मे वूढं” ॥१८१॥ []
 तइएण वि सो भणिओ लोहं मुंचामि कहमहं एयं ।
 दूराओ जं वूहं भारकिलंतेण देहेण ॥१८२॥
 चलिया पुणो वि तिन्नि वि पत्तो अह तेहिं आयरो अन्नो ।
 रन्मि भमंतेहिं उत्तसुवन्नपडिपुन्नो ॥१८३॥
 गहियं पढमेण तओ रुप्पं कंचणं विउलं ।
 समभायाइं तिन्नि वि बीएणं नवरि गहियाइं ॥१८४॥

तइएण पुण न मुक्कं तं लोहं नेय कंचणं गहियं ।
 पढमेण तओ भणिया ते दो वि[य] सायरं पुरिसा ॥१८५॥
 मुंचह एयारं तुमे गिण्हह एयं सुवन्नपब्भारं ।
 पावेह जेण दोन्नि वि लाहं हियइच्छियं विउलं ॥१८६॥
 एक्केण तओ भणियं तिन्नि वि गहियाइं मे तिभायाइं ।
 दूरं मे वूहाइं मुंचामिह सव्वहा कहणु ॥१८७॥
 तइएण पुणो भणियं लोहं मुंचामि कहमहं एयं ।
 दूराओ जं वूहं भारकिलंतेण देहेण ॥१८८॥
 एवं बहुहा भणिया ते न य गिण्हंति कंचणं जाहे ।
 ताहे सो निव्वण्णो तेसिं उवएसदाणस्स ॥१८९॥
 ते आसाइयलाभा तिन्नि वि वलिऊण निययनयरंमि ।
 पत्ता कालकमेणं नियनियगेहेसु य पविट्ठा ॥१९०॥
 पत्तो पढमो रिद्धि बीओ वि य मज्झिमं न उण तईओ ।
 एयस्स उवणयमिमं सुण दिट्ठंतस्स तं सोम ! ॥१९१॥
 “जे ते तिण्णि मणुस्सा जीवा ते हुन्ति एत्थ नायव्वा ।
 नामेहिं पसिद्धेहिं इमेहिं जह तह निसामेह ॥१९२॥
 पढमा सम्मदिट्ठी बीया पुण सम्म-मिच्छदिट्ठी य ।
 तइया य मिच्छदिट्ठी नायव्वा हुंति जहसंखं ॥१९३॥
 अडवी उण नायव्वा संसारमहाडवी इमा भीमा ।
 हिंडंति कम्मवसगा इमीए एए चिरं जीवा ॥१९४॥
 दालिहं नायव्वं कम्मं जीवाण दुक्खसंजणगं ।
 हिंडंति तेण एए संसारमहाडवी(विं)भीमं ॥१९५॥
 ते आगरा य तिन्नि वि मिच्छं मीसं च होइ सम्मं च ।
 एएसिं तु फलाइं हुंति य लोहाइसरिसाइं ॥१९६॥

सम्मत्तं जिणधम्मं पाउब्भूयंमि होइ जीवस्स ।
 मिच्छत्तं नायव्वं लोइयधम्मेषु सव्वेषु ॥१९७॥
 मीसं पुण पडिवज्जइ जिणमइए लोइए य जं भावे ।
 जीवो तं नायव्वं कम्माणं गुरुत्तणेणं ॥१९८॥
 सम्मत्तस्स य भावो सुदेव-मणुयत्तणं लहइ जीवो ।
 अन्ते नेव्वाणसुहं अचिरेणं पावए एसो ॥१९९॥
 सम्मामिच्छत्तेणं साहेइ इमाइं दीहकालेण ।
 सम्मत्तपुव्वगाइं तेसिं मूलं इमं जेण ॥२००॥
 मिच्छत्तेणं जीवो विमुहो च्चिय होइ मोक्खमग्गस्स ।
 जेण इमं असुहाणं मूलं कम्माणं सव्वेसिं ॥२०१॥

जओ जिणवयणं-

“एयस्स पुण निमित्तं मिच्छत्तं अविर्इं य अन्नाणं ।
 जोगा तहा कसाया हुंति पमाया य नायव्वा” ॥२०२॥ []
 ता कह सेओ लोहागरो व्व इह तइयपुरिससरिसाणं ।
 जीवाणेष कुहम्मो होइ कुदेवो व्व जुत्तीए ॥२०३॥
 ता सोम ! कह विरुज्जउ एवं सव्वन्नुइद्विद्वीए ।
 सव्वं पि जओ मिच्छ कुदिद्विद्वीहिं इह दिद्वी(द्वं) ॥२०४॥
 अहवा फुडं विरुज्जइ मिच्छदिद्वं कुदिद्विद्वीहिं ।
 सव्वन्नुणा न एवं अविसंवायाओ भावाणं ॥२०५॥
 ता मुंचसु असगाहो कुदिद्विद्वीहिं जो इमो दिद्वो ।
 पडिवज्ज सम्मभावं जइ इच्छसि अप्पणो सिद्धिं” ॥२०६॥
 संभूयसम्मभावो विगलियमिच्छत्तदंसणो सहसा ।
 सोऊण इमं पभवो पणिवईओ जंबुचलणेषु ॥२०७॥
 परिओसनिब्भरमणो सहरिसपगलंतनयणबाहजलो ।
 रोमंचकंचुयंगो एवं भणिउं समाढत्तो ॥२०८॥

सामि ! तए उद्धरिओ भीमावत्तंमि भवसमुद्धंमि ।
 निवडंतो ना(दा)ऊणं जिणवयणालंबणं मज्झ ॥२०९॥
 मोत्तूण जिणे तह साहुणो य सरणं तुमं पि मोत्तूणं ।
 अन्नो को वि न विज्जइ मज्झं संसारभीयस्स ॥२१०॥

तओ जंबुणामेण-‘पभव ! किच्चमेयं भवियाणं जिणवयणदिट्ठीए उबलद्धपुन्न-
 पावाणं । जओ, विसमो एस संसारो । बहुदुक्खाओ नरएसु वेयणाओ । अच्चंतदुल्लहो
 जिणयन्दपणीओ एस संसारुत्तरणवरमग्गो । दुप्परिपालो संजमगुरुभारभरो बंधणायारो
 घरनिवासो । नियलाइं दाराइं महाभयमन्ताणं । बहुदुक्खदुक्खिया जंतूणो । सुसुंदरो
 धम्मोवएसो । सुलहा धम्मायरिया । तुलगलगं माणुसत्तणं । विवागदारुणा विसओवमा
 भोगा । नरयगइमूलं परधणावहरणं । महादुक्खहेऊ पाणिवहो । ता इमं जाणिऊण गिण्हसु
 सम्मत्तं । पडिवज्जसु साहुदक्खिन्नं । निसेवसु मोक्खपहसाहणाइं चरणकरणाइं’ ।

तओ इमं च निसामिऊण भणियं पभवेण-‘कह पुण जंबुकुमार ! एस मोक्खो
 अम्हारिसेहिं साहियव्वो । को वा इमस्स पसाहणमग्गो, केरिसं वा तत्थगयाणं सुहं’ ति ।

तओ इमं च निसामिऊण भणियं जंबुकुमारेण-‘सोम ! सोहणं ते पुच्छियं, ता
 निसुणसु इमं’ ति ।

अवि य- अत्थि अवंतीविसए उज्जेणी नाम पुरवरी पयडा ।
 नरनाहो पउमरहो देवी कमलप्पहा तस्स ॥२११॥
 तत्थत्थि धणभिहाणो सत्थाहो दसदिसीसुविक्खाओ ।
 कारुणि[यो] दयजुत्तो धम्मिद्वो सयलगुणकलिओ ॥२१२॥
 सो अन्नया कयाई भंडं भरिऊण रयणदीवंमि ।
 संपत्थिओ महप्पा नवरं चिंतेइ हियएणं ॥२१३॥
 इह पुरिसेण सयं चिय नियकुलअहिमाणमुव्वहंतेण ।
 सपरोवयारकरणे पयट्टियव्वं सया कालं ॥२१४॥
 दारिदोसदुक्खाभिओगपरिपीडिओ जणो एत्थ ।
 परिवसइ छुहक्कंतो निच्चं परपेसणासत्तो ॥२१५॥

ता मोएमि इमाओ बहुदुक्खदरिद्दोसनियराओ ।
आरोवेमि इमं से निरुवहयसुहालए ठाणे ॥२१६॥

भणियं च- “पहुमित्थत्थे(?) जीयं रूवं तारुन्नयं च दइयाए ।

विहलुद्धरणे य धणं जस्स गयं किं गयं तस्स” ॥२१७॥ []

जओ सुव्वइ य-

“रूवेण किं गुणपरक्कमवज्जिएण, अत्थेण किं किविणहत्थगएण लोए ।
नाणेण किं बहुजणाणुवगारएण, मित्तेण किं वसणकज्जपरंमुहेण” ॥२१८॥

तहा- तणलग्गविसमसंठियपवणाहयसलिलबबिंदुसरिसेण ।

विहवेण जइ विढप्पइ थिरो जसो किं न पज्जत्तं ॥२१९॥

चित्तेऊणं एवं कया य उग्घोसणा तर्हि नयरे ।

धणनामसत्थवाहो निवसइ जो एत्थ नयरीए ॥२२०॥

सो एस रयणदीवं मि पत्थिओ सिवउरिं महानयरिं ।

जो वच्चइ सह तेणं तस्स य सो भलइ सव्वेण ॥२२१॥

सोऊण इमं ताहे बहुओ संपत्थिओ जणो तत्थ ।

सो तेसिं मिलियाणं परिकहिओ पंथगुण-दोसो ॥२२२॥

भो भो निसुणह लोया ! अववाओ मा भविस्सए मज्झ ।

मा मा अयाणमाणा वसणं पावेह तुम्हेत्थ ॥२२३॥

अडवी तत्थ महंता सिवउरिनयरीए अंतरालंमि ।

पंथा य दोन्नि तीए समुज्जओ तह य वंको उ ॥२२४॥

वंकेण तत्थ बहुणा गम्मइ कालेण सुहतरागं च ।

उव(त्त?)इ सो वि अंते समुज्जगं नवर जं पंथं ॥२२५॥

इयरेण गम्मइ दुहं लहुं च सो जेण विसमतणुओ य ।

ओयारे च्चिय घोरा वग्घा सीहा य निवसंति ॥२२६॥

पाएण ते वि दोन्नि वि कह वि पमाणं पंथभट्ठणं ।

लग्गंति न उण पंथे वच्चंति य जाव अवसाणं ॥२२७॥

रुक्खा य तत्थ एगे मणोरमा बहलपत्तलच्छया ।
 तेसु न वीससियव्वं छाया वि य मारए तेसिं ॥२२८॥
 परिसडियपंडुपत्तेसु नवर रुक्खेसु वीसमेयव्वं ।
 एक्कं तत्थ मुहुत्तं पुणो वि पंथंमि गंतव्वं ॥२२९॥
 बहवे य तडनिविट्ठा रूवस्सी तह य महुरवाया य ।
 सद्धंति तत्थ पुरिसा तेसिं वयणं न सोयव्वं ॥२३०॥
 मोत्तव्वा न सहाया खणं पि एगागिणो अवस्सभयं ।
 अत्थि दुरंतो य तर्हि पंथंमि दवानलो घोरो ॥२३१॥
 जयणाए सो दवग्गी पमायरहिएहिं वेझवेयव्वो ।
 अणविज्झाणो नियमा पज्जलिऊणं डहइ पुरिसं ॥२३२॥
 पुरओ वि तुंगसेलो पमायरहिएहिं सो विलंघेव्वो ।
 नियमेण होइ मरणं तमलंघंताण पुरिसाण ॥२३३॥
 पुरओ वि कुडिलगुहिरा वंसकुडंगी पयत्तजुत्तेहिं ।
 लंघेयव्वाऽवस्सं बहवे अविलंघणे दोसा ॥२३४॥
 खड्डोलओ य तुच्छो तस्स समीवे मणोरहो नाम ।
 अच्छइ निच्चुवविट्ठो पूरेह इमं भणइ विप्पो ॥२३५॥
 सो य न पूरेयव्वो पूरिज्जंतो य जाइ वित्थारं ।
 पंथस्स य पलिभंगो वयणं पि न तस्स सोयव्वं ॥२३६॥
 अत्थि पुणो दिव्वाइं किंपागफलाइं सुरहिपिक्काइं ।
 जीयहराइं फलाइं ताइं पि विवज्जणीयाइं ॥२३७॥
 घोरा महाकराला अत्थि पिसाया य तत्थ बावीसं ।
 निच्चं चिय गसणपरा जेयव्वा ते पयत्तेण ॥२३८॥
 विरसं च भत्तपाणं भुंजेयव्वं च जाइउं निच्चं ।
 वोढव्वं दो जामे रयणीए पच्छिमे पढमे ॥२३९॥

न कयाइ अप्पयाणं कायव्वं निच्चमेव वोढव्वं ।
 एएण नवर विहिणा खिप्पं लंघिज्जए अडवी ॥२४०॥
 पाविज्जइ अच्चंतं गंतुं दोगच्चसयलपरिहीणं ।
 सव्वुत्तमसुहवसहिं सिग्धं चिय सिवपुरिं ताहे ॥२४१॥
 तत्थ न जरा न मच्चू न वाहिणो नेय सयलसंतावा ।
 अच्चंतव्वाबाहं होइ सुहं सयलकालं पि ॥२४२॥
 एवं च तेण सिट्ठे उच्चलिया के वि सरलपंथेण ।
 अन्ने पुण ऽन्नयरेण तेण समं पंथिया बहवे ॥२४३॥
 पुरओ य वच्चमाणा मग्गं दावेइ सयललोयाणं ।
 संलिहइ अक्खरेहिं सिलासु पंथस्स दोस-गुणा ॥२४४॥
 एवं जे तेण समं सयलसमाएसकारिणो चलिया ।
 ते तेण समं पत्ता अचिरेणं तं पुरिं पवरं ॥२४५॥
 पार्विति ते वि नूणं जे च्चिय गच्छंति तस्स मग्गेण ।
 लिहियं अणुसरमाणा दोसे वज्जेति जत्तेण ॥२४६॥
 जे उण तस्सुवएसे न वट्टिया नेय वट्टइस्संति ।
 वट्टंति नेय अहुणा ते न य पत्ता न पार्विति ॥२४७॥
 दव्वाडवीए एवं संपइ भावाडवीए जोडेमि ।
 एयं चिय अक्खाणं संखेवेणं जडा कमसो ॥२४८॥
 “जो तज्झ सत्थवाहो सो तिहुयणेक्कदिवसयरो ।
 केवलपईवपयडियपरमत्थपयत्थवित्थारो ॥२४९॥
 जम्मजरमरणसलिले मिच्छत्ताविरइदूरपायाले ।
 भीसणकसायवत्ते दुल्लंघे सोमगंभीरे ॥२५०॥
 रागदोससमीरणविक्खोभियवीई(विइ)तरंगकल्लोले ।
 सोगाइदुट्टुमच्छे संजोगविओगविक्खोभे ॥२५१॥

पवरमणोहरकूले सुदीहसंसारसायरे घोरे ।
 दट्टूणं भममाणा दुक्खत्ते पाणिणो बहवे ॥२५२॥
 सपरोवयारकरणक्कवच्छलो तिहुयणेक्कहियजुत्तो ।
 गंभीरोदारो वासवो व्व परमत्थकुसलो य ॥२५३॥
 एए उद्धरिऊणं इमाओ भीमाओ भवसमुद्दाओ ।
 आरोवेमि सिवपुरिं अच्चंतेगंतसुहठाणं ॥२५४॥
 एवं परिकलिऊणं सरिसा उग्घोसणाए धम्मकहा ।
 सव्वेसिं सत्ताणं परिकहइ हियत्थबुद्धीए ॥२५५॥
 सत्थियपुरिसा जीवा अडवी य भवाडवी इमा नेया ।
 सरलपहो जइधम्मो सावयमग्गो भवे इयरो ॥२५६॥
 पप्पुरं पुण मोक्खो हरि-पुल्ली हुंति राग-दोसा य ।
 निहणंति ते वि जीवं मोक्खं पइ पत्थियं दो वि ॥२५७॥
 न मुयंति मग्गचारं जा पत्तं केवलं वरं नाणं ।
 इत्थीसंसत्ताओ वसहीओ सीयला रुक्खा ॥२५८॥
 परिसडियपंडुपत्ता रुक्खा सुद्धाओ हुंति वसहीओ ।
 मग्गतडट्टा पुरिसा पासंडी ते मुणेयव्वा ॥२५९॥
 तह सत्थिगा य साहू कोहो य दवानलो मुणेयव्वो ।
 सेलो य होइ माणो वंक(स)कुडंगी भवे माया ॥२६०॥
 खड्डुेलगो य लोहो पूरिज्जंतो ज जाइ वित्थारं ।
 इच्छामणोरहादओ किंपागफलोवमा विसया ॥२६१॥
 बावीसं पि पिसाया परीसहा विरसभोयणं भिक्खा ।
 दोसेहिं विप्पमुक्का उवलद्धा भमरवित्तीए ॥२६२॥
 अपयाणगं तु निच्चं नायव्वं संजमे समुच्छाहो ।
 जामदुगे सज्झाओ कायव्वो निच्च कालं पि ॥२६३॥

एवं नित्थरिऊणं भवाडविं सयलकम्मपरिमुक्का ।
जीवा निव्वाणपुरे पारिविति अणोवमं सोक्खं ॥२६४॥
जे सदरूवरसगंधफासपरिमोहिया इमं पंथं ।
मोत्तूण उप्पहेणं वच्चंति नरा कुबुद्धीया ॥२६५॥
ते पुण हिंडंति इमं अणोरपारं सुदुत्तरं घोरं ।
सयलदुहाण निहाणं भीमं संसारमयरहरं ॥२६६॥
एत्थ जिणवयणपोयं मोत्तूण तरंडयं न उण अन्नं ।
तस्सेय जेण वयणं होइ अवंझं अगाराओ ॥२६७॥

भणियं च- “रागाओ दोसाओ मोहाओ वा भणेइ अलियाइं ।
जस्स न एए दोसा भण अलिए तस्स को जोगो” ॥२६८॥ []

ता सब्बहा आएयं सजुत्तिमत्ताओ इमं जिणवयणं ।

भणियं च- “जुत्तीखमं च वयणं कोहकसायाइसूडणं परमं ।
हिसाइदोसरहियं परमपयनिसेवणं गुज्झं” ॥२६९॥ []

तहा पहव ! दुल्लहं च इमं जिणवयणं । जओ भणियं-

“घणघाइचउक्कयंमि भवणमूलभूयए,
रागाइसमुब्भवमि खीणंमि असुहकम्मए ।
उल्लसिए केवलंमि सयलपयत्थसाहए,
उवएसो जो जिणाण तं पावेइ सउन्नओ” ॥२७०॥ []

ता एयं नाऊणं संसारमहाडविं दुरुत्तारं ।
उज्जयपहेण लग्गह जिणभणियविहाणुसारेण ॥२७१॥
परलोयगमणनेव्वाणसाहणं जं जिणेहिं उवइट्टं ।
गिण्हह वरपच्छयणं पुणो वि मणुयत्तणं दुलहं ॥२७२॥

भणियं च- “माणुसत्ताओ पब्भट्ठो बुट्ठो संसारसायरे ।
दुक्खेण लहइ पाणी माणुसत्तं पुणो पुणो” ॥२७३॥ []

चिद्वुता ता मणुयत्तं कह वि किलेसेण एत्थ संसारे ।
जोणिबहुलक्खपुत्ते लब्भइ बेइंदियत्तं पि ॥२७४॥

जओ- एसो पुढविकाए असंखकालं वि नियसए जीवो ।
चिद्वुइ असंखगुणियं आउक्काए पुणो वेस ॥२७५॥
तेउक्काए वि तहा वाउंमि वणस्सइंमि य अणंते ।
कायट्टिइंए एवं पवाहपेक्खाए अक्खायं ॥२७६॥
कह वि तुलग्गेणेवं इमाण कायाण उप्फडेऊण ।
संपावइ बेइंदियभावं तसकम्मउदएण ॥२७७॥
परिवाडीए एवं लहई पंचिंदियत्तणं जीवो ।
लद्धे वि तंमि एयं मणुयत्तं दुल्लहं होइ ॥२७८॥
जह रयणं मयरहरे पब्भट्टं दुल्लहं पुणो होइ ।
एवं पुणो वि जम्मो सुदुल्लहो मणुयजाईए ॥२७९॥

भणियं च- “चोल्लापासगधन्ने जु(जू)ए रयणे य सुमिणचक्के य ।
चम्मजुगे परमाणू दस दिट्ठंता मणुयजंमे” ॥२८०॥ [उक्त.नि. गा.१६०]
वित्थरभयाओ न मए दिट्ठंता एत्थ विरइया एए ।
तह सुयसिद्धंताओ ससूयणीया विमलधिइहिं ॥२८१॥
एवं चिमेण विहिणा दुल्लहलंभं पि कह वि लहिऊण ।
धम्मस्स साहणाइं खेत्ताईयाइं न लभेइ ॥२८२॥
“माणुस्स-खेत्त-जाई-कुल-रूवारोगमाउयं बुद्धी ।
समणोग्गह-सद्धा-संजमो य लोगंमि दुलहाइं” ॥२८३॥ [उक्त.नि. गा.१५९]
नाऊण एवमेवं संसारे दुल्लहं मणुयजम्मं ।
धंमंमि समुच्छहो कायव्वो अप्पमत्तेहिं ॥२८४॥

भणियं च- “जोणीसहस्साणि बहूणि गंतुं, चिरस्स लद्धूण य माणुसत्तं ।
सुहावहं जे न चरंति धंमं, नरा हु ते अप्पयसत्तुभूया” ॥२८५॥ []

खेत्ताईसुविसुद्धे लद्धे मणुयत्तणे वि अइदुलहं ।
संसारसमुद्धरणं जिणिंदवयणामयं एयं ॥२८६॥

भणियं च- “रयणायरं पि पत्तो रयणाइं पवरसोक्खसाराइं ।

जह विरलो च्चिय पावइ, तह मणुयत्ते वि जिणधंमो” ॥२८७॥ []

अइदुल्लहे वि य(प) [ते] इमंमि जइ कुणइ संजगुच्छाहं ।
ता सहलं चिय सव्वं अन्नह किं तेण लद्धेण ॥२८८॥

लद्धं अलद्धपुव्वं जिणवयणं भवसएहिं बहुएहिं ।

लद्धं पि अलद्धसमं जं न कयं जं जहा भणियं ॥२८९॥

भणियं च एत्थ कविणा जिणिंदवयणंमि भावियमणेण ।

तं पहव ! निसामिज्जउ साहिप्पंतं समासेण ॥२९०॥

“एक्के नयणं तच्चिय जिणवरमगं न चेव पावंति ।

अवरे लद्धे वि पुणो संदेहं नवर चिंतिति ॥२९१॥ []

अन्नाण होइ संका न याणिमो कह व हो [ज्ज] से धम्मो ।

अवरे भणंति मूढा सव्वो धम्मो समो चेव ॥२९२॥ []

अवरे बुद्धिविहूणा रत्ता सत्ता कुतित्थिसत्थेसु ।

के वि पसंसंति पुणो चरग-परिव्वायदिकखाओ ॥२९३॥ []

अवरे जाणंत च्चिय धम्माधम्माणं जं फलं लोए ।

तह वि य करिन्ति पावं पुव्वज्जियकम्मदोसेण ॥२९४॥ []

अवरे सामन्नं चिय पत्ता घणरागदोसमूढमणा ।

पेसन्ननियडिकोवेहिं भीमरूवेहिं घिप्पंति ॥२९५॥ []

अन्ने भवसयदुलहं पावेऊणं जिणिंदवरमगं ।

विसयामिसमूढमणा संजमजोए न लगंति ॥२९६॥ []

न य हुंति ताण भोगा न य धंमो अलियविरइआसाणं ।

लोयाण दुन्नि चुक्का न य सगगे खत्तियकुले य ॥२९७॥ []

अवरे उण नाणेणं सव्वं किर जाणियं ति अम्हेहिं ।

पेच्छंत च्चिय दड्ढा जह वंगुलया वणदवेण ॥२९८॥ []

अवरे तवगारविया किर किरिया मोक्खसाहणी भणिया ।
उज्झंति ते विमूढा धावंता अंधला चेव ॥२९९॥ []

इय बहवे जाणंता तह वि महामोहपसरभरमूढा ।
न कुणंति जिणवराणं आणं सोक्खाण संताणं” ॥३००॥ []

ता पत्ते मणुयत्ते धम्मे य जिणिंदभासिए विमले ।
उज्जमियव्वं सव्वायरेण विसए विमोत्तूण ॥३०१॥

मणुयत्तणं च जाणसु ओसाजललवतुसारसमसारं ।
खणदिट्टुनट्टुविहवं वाहिसयसमाउलं निच्चं ॥३०२॥

बहिरम्मं दीसंतं अब्भितरअसुइपूइपडिपुन्नं ।
दुगंधं बीभच्छं नवसोत्तचिलिच्चिलचिलीणं ॥३०३॥

खणसोहियरमणीयं खणमणहररूवजोव्वणविलासं ।
खणरिद्धिदेहजीवियपरिसंठियअसुहपरिणामं ॥३०४॥

नाऊण चंचलमिमं आउं तह जोव्वणं च जीयं च ।
जुवईण य असुइत्तं देहस्स य भंगुरत्तं च ॥३०५॥

काऊणं समभावं अविहिंसालक्खणं जिणक्खायं ।
गिणहह य धम्मरयणं परलोयहियं पयत्तेण ॥३०६॥

मा मुज्झह घरवासे इमाण किंपागतरुफलसमाणं ।
अंतेसु दारुणाणं तुच्छाण कएण विसयाणं ॥३०७॥

जओ- देहस्स उप्पत्ती एवंविहा वन्निया समयन्नूहि-

“सररुहिरमंसमेओ अट्ठी मज्जा य सुक्कथाऊ य ।
देहस्स य उप्पत्ती एसा किं तत्थ राएणं ॥३०८॥ []

पच्चक्खं चिय दीसइ नवसु विसोत्तेसु असुइनिज्जासो ।
बहिरंतगलंतमलो निच्चं असुभो दुरहिगंधो ॥३०९॥ []

जं चिय कुंकुमचंदणकप्पूरसुयंधपरिमलायडुं ।
तं होइ असुइगंधं देहविलगं खणद्धेण ॥३१०॥ []

सिंभो लाला वयणे सिंघाणो नासियाए नीहरइ ।
 नयणे सुदूसियाओ कन्नेसु मलो दुरहिगंधो ॥३११॥ []
 मुत्तपुरीसाईयं सेफा वाणाइसु (?) सव्वेसु ।
 नीसरइ दुरहिगंधं बीभच्छं लज्जणीयं च ॥३१२॥ []
 तं पि जराअक्कंतं पयडियवलिपलियनहरसमजालं ।
 विगलियदसणं पयडडियं च ओहोइ हासणयं ॥३१३॥ []
 थरहरइ सिरं कंपंति हत्थया गलइ नासियाविवरं ।
 चुक्कइ दिट्ठी न सुणंति कन्नया खलइ वाया वि ॥३१४॥ []
 तं चेव इमं देहं अन्नहरूवं जराए संजायं ।
 पायडियकडिक्कपहं पायडवयणं दुगुंछणियं” ॥३१५॥ []

भणियं च- “चच्चरनिरंतरुब्भडजच्चंजणजलयसामला जे वि ।
 परिणमिउं कालवसेण ते वि कह पंडुरा जाया” ॥३१६॥ []
 रत्तंतथवलपमहलसललियभूभंगतरलताराइं ।
 नयणाइं गलंति विहीवसेण जरछज्जगेहं व ॥३१७॥ []
 जे सव्वसत्थसललियमहरिहगंधव्वकव्वसुइसुहया ।
 कन्ना दुप्पुत्तजुवाणय व्व भणियं पि नि(न) सुणंति ॥३१८॥ []
 जे वि समसहियनिद्धनिम्मललक्खारसरायरंजियच्छया(?) ।
 दीसंति पविरला सज्जण व्व दंता दुरालक्खा ॥३१९॥ []
 जा विविहकलाकोसल्लपणइयणगुणमणोहरा वाणी ।
 सा मुद्धयकंठपरिक्खलंतखलियक्खरा जाया ॥३२०॥ []
 जं समयनाभिपुवं दिट्ठं चवलाहि ताहि तरुणीहिं ।
 चलणजुयलं नमिज्जइ तं पिय गुरुभत्तिराएणं ॥३२१॥ []
 वयणं वाहाजुयलं अणोवमं विणयनेहपडिबद्धं ।
 कह विहिवसेण जायं घुणक्खरुब्भिनकट्टं व” ॥३२२॥ []
 इय ते सोयंति नरा नारायणसरिसया वि जियलोए ।
 जे पढमं चिय न कुणंति मोक्खहेउं तवच्चरणं ॥३२३॥ []

अहवा बालार्इसुं दुहाइं जीवस्स दससु वि दसासु ।
अच्छउ पुण विद्धत्ते देहेण विगल्लपुरिसस्स ॥३२४॥

भणियं च- “बाला किड्डा मंदा बला य पम्हा य हायणिपवंचा ।
पब्भारमुम्मुही सायणी य दसमा य कालदसा” ॥३२५॥ []

“जायमेत्तस्स जंतुस्स जा सा पढमिया दसा ।
न तत्थ सुह-दुक्खाइं बहुं जाणइ बालया ॥३२६॥ []
बीयं च दसं पत्तो नाणाकीलाहिं कीलई ।
न तत्थ काम-भोगेहिं तिक्वा उप्पज्जई मही(ई) ॥३२७॥ []
तइयं च दसं पत्तो पंचकामगुणे नरो ।
समत्थो भुंजिउं भोए जइ से अत्थि घरे धुवा ॥३२८॥ []
चउत्थी उ बला नाम जं नरो दसमस्सिओ ।
समत्तो(त्थो) सत्तिं दंसेउं जइ होइ निरुवहुओ ॥३२९॥ []
पंचमी उ दसं पत्तो आणुपुव्वीए जो नरो ।
इच्छियत्थं व चित्तेइ कुडुंबं चाभिकंखइ ॥३३०॥ []
छट्ठी ओम(उण?)हायणी नाम जं नरो दसमस्सिओ ।
विरज्जई य कामेसु इंदियत्थेसु हायई ॥३३१॥ []
सत्तमिं च दसं पत्तो आणुपुव्वीए जो नरो ।
निट्ठहइ चिक्कणं खेलं खासई य अणिव्खणं ॥३३२॥ []
संकुइयबलीचम्पो संपत्तो अट्टमी दसं ।
नारीणमणभिप्पेओ जराए परिणामिओ ॥३३३॥ []
नवमी उ मुम्मुही नाम जं नारो दसमस्सिओ ।
जराघरे विणस्संते जीवो वसइ अकामओ ॥३३४॥ []
हीणभिन्नस्सरो दीणो विवरीओ विचित्तओ ।
दुब्बलो दुक्खिओ वसइ संपत्तो दसमं दसं” ॥३३५॥ []
ता सव्वहा वि दुक्खं नत्थि सुहं किं पि एत्थ संसारे ।
इय नाऊणं एयं मा मुज्झह किं पि मुद्धाओ ॥३३६॥

तओ इमं च एत्तियं निसामिऊण संजायगरुयमहाभयसंसारमहन्नववेरग्गाहिं
उप्पन्नसव्वविरइमणग्घेयरयणचित्ताहिं करकमलविरइयंजलिउडाहिं भणियं सिंधुमइ-
पमुहाहिं अट्टहिं वि जंबुणामजायाहिं ।

अवि य- उत्तारियाओ मन्ने संसारमहासमुद्दुक्खाओ ।

दाऊण सव्वविरइं जगुत्तमं सामि ते अम्हे ॥३३७॥

ता पज्जत्तमिमेहिं दुट्टविवाएहिं अम्ह भोएहिं ।

निव्विन्नाओ अम्हे इमाण संसारकारीण ॥३३८॥

तुब्भेहिं समं सामिय ! पच्चूसे गणहरिंदपासंमि ।

गिण्हामो पव्वज्जं सव्वाओ ते अणुन्नाओ ॥३३९॥

एककं पुण साहिज्जइ इमेण जं पुच्छियं कुमारेण ।

पभवेमि (?) सामि ! सोक्खं मोक्खे किल केरिसं होइ ॥३४०॥

तओ इमं च निसामिऊण भणियं जंबुणामेण-

अवि य- सव्वन्नुवयणवित्थरपयत्थपय(र)मत्थलद्धसारेहिं ।

भविएहिं किच्चमेयं वयगहणं जिणसमुद्धिदं ॥३४१॥

ता सुट्टु सुंदरो च्चिय ववसाओ एस तुम्ह संजाओ ।

निव्वाणसुहपसाहणनिच्छियमणसाण सव्वाण ॥३४२॥

जं पुण नेव्वाणसुहं तं कह अम्हेहिं नाणरहिएहिं ।

साहेऊण तरिज्जइ तह वि य वोच्छं जिणुद्धिदं ॥३४३॥

“सव्वनरामरसोक्खं भूय-भविस्सं च वट्टमाणं च ।

बुद्धीए कप्पिऊणं कीरइ एगत्थपिंडोलो ॥३४४॥ []

एक्कसमएण सोक्खं उप्पन्नं जं च एक्कसिद्धस्स ।

तं तेण समं कीरइ बुद्धीए नरामरसुहेण ॥३४५॥ []

वडवीय-सुरगिरीणं जेत्तियमेत्तं तु अंतरं तत्थ ।

तेत्तियमेत्तं तेसिं दोण्ह वि किं होउ सोक्खाण” ॥३४६॥ []

अलियस्स वीहमाणो होउ त्ति न जंपिमो अहं एयं ।

जेणंतरं महंतं तेसिं सोक्खाण तं दिदं ॥३४७॥

भणियं च- “न वि अत्थि माणुसाणं, तं सोक्खं न वि य सव्वदेवाणं ।
 जं सिद्धाणं सोक्खं अक्वाबाहं उवगयाणं” ॥३४८॥ [आव.नि./गा.९८०]

“सुरगणसुहं समत्तं सव्वद्धापिंडियं अणंतगुणं ।
 न वि पावइ मोत्तिसुहंअ(?)णंताहिवि वग्गवग्गूहिं” ॥३४९॥ [आ.नि.९८१]

“सिद्धस्स सुहो रासी सव्वद्धा पिंडिओ जइ हवेज्ज ।
 सोऽणंतवग्गभइओ सव्वागासे न माएज्जा” ॥३५०॥ [आव.नि./गा.९८२]

ता कह तं साहिज्जउ उवमा जस्सेत्थ नत्थि भुवणंमि ।
 तह वि सुणिज्जउ पयडं जिणभणियं एत्थ दिट्ठंतं ॥३५१॥

“जह को वि मेच्छपुरिसो विंझधराधरनियंबपरिवासी ।
 विहिजोएणं पत्तो बारवई पुरवरिं रम्मं” ॥३५२॥

कणयमयसालवलयं पेच्छइ सो तत्थ तुंगसिहरड्डं ।
 उत्तत्तकणयघडिए तुंगे य विसालपासाए ॥३५३॥

कणयमयसालिभंजियवेइयमाणिककोट्टिमे रम्मे ।
 जिणभवणे उत्तुंगे पेच्छइ वररयणदिप्पंते ॥३५४॥

जिणवय(भव)णसिहरसंठियरयणसमुल्लसियकरसमूहेहिं ।
 पेच्छइ गयणनिबद्धे सुरचावे पायडे तत्थ ॥३५५॥

लायन्नरूवपोरुसविविहगुणकलाकलावपरिकलिए ।
 पेच्छइ जायवकुमरे देवकुमारोवमे तत्थ ॥३५६॥

रयणवरभूसणमयूहजालबद्धिदविविहचावाओ ।
 जायवविलासिणीओ पेच्छइ सुरविलयसरिसाओ ॥३५७॥

अण्णं च तत्थ सव्वं पेच्छइ असुयं अदिट्ठपुव्वं च ।
 दट्ठूण विम्हिओ सो सुरलोयसमं पुरिं दिव्वं ॥३५८॥

तओ चित्तिउं पयत्तो ।

अवि य- किं एस होज्ज सग्गो मोक्खो वा किं व परभवो एस ।

किं वा वि इंदयालं किं वा सुमिणंतरं किं पि ॥३५९॥

एवं च विम्हयमणो जं जं नयरीए पेच्छए किं पि ।
 तं तं अदिट्टपुव्वं दट्टुणं विम्हियं जाइ ॥३६०॥
 विहिविलसिएण केण वि पुणो वि सो विंझनगवरं पत्तो ।
 पुच्छिज्जइ सबरोहिं किं दिट्ठं भद्द ते तत्थ ॥३६१॥
 केरिसया सा नयरी बारवई जीए तं गओ आसि ।
 सो भणइ अहो भद्दा ! पच्चक्खं तीए मम सव्वं ॥३६२॥
 किं तु न तीरइ कहिउं तुम्हाण अदिट्टनयरिरूवाणं ।
 न य अत्थि किं पि विंझे तारिसयं जेण उवमेमि ॥३६३॥
 जो तं पेच्छइ नयरिं तीए सो चेव जाणइ सरूवं ।
 सेसो उण न वि याणइ कहिज्जमाणं पि अम्हेहिं ॥३६४॥

भणियं च- “जह नाम कोइ मेच्छे नयरगुणे बहुविहे वियाणंतो ।
 न चएइ परिकहेउं उवमाए तहिं असंतीए” ॥३६५॥ [आव.नि./गा.९८३]

ता- सो तेसिं किं साहउ कह वा तेसिं पि होउ पडिवत्ती ।
 कहिए वि तेण तीए नयरीए किल सरूवंमि ॥३६६॥
 एवं नेव्वाणसुहं नीरुवमं कह व साहिमो तुम्ह ।
 तं पुण जिणेहिं दिट्ठं वियाणियं तह सरूवेण ॥३६७॥
 साहितु ते वि कह तं वियाणमाणा वि उयवमा(उवमया)रहियं ।
 कह साहियं पि होज्जा पडिवत्ती होउ कह तस्स ॥३६८॥
 अत्थं(च्वं)तेगंतसुहं अव्वाबाहं नीरुवमं परमं ।
 अयलमरूवमणंतं सिवसासयमक्खयसरूवं ॥३६९॥
 ता एत्थ इमं सारं जं कह वि हु पाविऊण मणुयत्तं ।
 साहिज्जइ अच्चंतं सासयसोक्खं अणाबाहं ॥३७०॥
 सोऊण एवमेयं पभवो संसारचारवासस्स ।
 भीओ निययमणेणं चित्तेउं एवमाढत्तो ॥३७१॥

“नत्थि सरणं जयंमि वि अम्हाणं मोहमूढहियया[णं] ।
 जरमरणाणं(ई?)हितो भणियं च इमं जओ जीव ॥३७२॥
 सम्मोहसंभवुभंतदीहमुच्छानिमीलियच्छिस्स ।
 परिट्ठि(परिरुंभि?)यसासपरिक्खलंतखलियक्खरगिरस्स ॥३७३॥
 आवद्धउद्धसासानिरुद्धघुरुघुरुपुरंतकंठस्स ।
 किं ते होही सरणं अत्थायं तंमि जियलोए ॥३७४॥
 निवडंतदंतसंघट्टगाढसंदट्टहिययपीडस्स ।
 तम्मि समयंमि जरजिय जइ पर धंमो तुमे सरणं ॥३७५॥
 वेज्जपरिच्छ(छ)न्नवीसन्नविमणवट्टंतहिययसोयस्स ।
 आसन्नपत्तपरियणहलबोलकंतविहलस्स ॥३७६॥
 आपंडुरखामकवोलदीणदइयामुहं नियंतस्स ।
 पासट्टियमुद्धडबालतणयहीरंतहिययस्स ॥३७७॥
 माया पिया परियणो सयणो वा गरुयनेहपडिबद्धो ।
 अत्थो वा दुक्खसहस्ससंचिओ कुणइ किं ताणं ॥३७८॥
 जस्स य कए अकज्जाइं कुणसि नीसेसरोगनिलयस्स ।
 सव्वासुईनिहाणस्स कायकलिणो कयघस्स ॥३७९॥
 तं चिय इमं सरीरं सउणा खार्हिति जीयविप्पजढं ।
 अह व किमियाण पुंजो होही कूडं व भूईए ॥३८०॥
 इय ते सोयंति नरा अप्पाणं मरणदेसकालंमि ।
 जे पढमं चिय न कुणंति माणतुंगं तवच्चरणं ॥३८१॥
 अहवा - मा होह रे विसन्नो जीव ! तुमं विमणदुम्मणो दीणो ।
 न हु चिंतिएण फिट्ठइ तं दुक्खं जं पुरा रइयं ॥३८२॥
 जइ पइससि पायालं अडविं व दरिं गुहं समुहं वा ।
 पुव्वकयाओ न चुक्कसि अप्पाणं खायसे जइ वि ॥३८३॥

जइ रुयसि वि(?)लवसि (?) वेवसि दीणं पुलएसि दस वि दिसिचक्रे ।
 हाहा पलवसि विलवसि चुक्कसि कत्तो कयंताओ ॥३८४॥
 जइ गासि वासि दुम्मण मुज्झसि अह लोलसी धरणिवट्टे ।
 जंपसि मूओ व्व ठिओ चुक्कसि न वि तं कयंताओ ॥३८५॥
 जं चेव कयं तं चेव भुंजसी नत्थि एत्थ संदेहो ।
 अकयं कत्तो पावसि जइ वि सयं देवराओ त्ति ॥३८६॥
 मा हो जूरह [पुरिसा] विहवो नत्थि त्ति अम्ह हियएणं ।
 जं पुव्वं चिय न कयं तं कत्तो पावसे इण्हि ॥३८७॥
 मा हो मज्जह पुरिसा विभवो अत्थि त्ति उत्तुणा हियए ।
 किं पि कयं सुकयं वा पुणो वि तं चेव भो कुणह ॥३८८॥
 होऊण अम्ह न हुयं मा दीणा होह इय विचिंतेह ।
 काऊण पुणो न कयं किं पि पुरा सुंदरं कम्मं” ॥३८९॥

तओ इमं च एत्तियं चित्तिऊण पहरिसवयणलोयणेण भणियं पभवेण-‘अहो
 महाणुभावचरियजंबुकुमार ! सोहणो एस जो तए पसाहिओ उज्जयपहो । दुरंता य
 संसाराडवी बहुपच्चवायसयसंकुला य । दुल्लहो जिणसत्थवाहो कुसलो य । निव्वाणपुर-
 गमणपहस्स पढमं च सिवउरिसुहं बहुपुन्नफलपसाहणं च । अइकडुयविवागा विसया ।
 बहुदुक्खपरिहरणीया य’ ।

भणियं च- “दुक्खं नज्जइ नाणं नाणं नाऊण भावणा दुक्खं ।

भावियमई वि जीवो विसएसु विरज्जए दुक्खं” ॥३९०॥ []

तहा नाणावयारदुक्खाओ नारयतिरियनरामरगाईओ, अइबहुकालनिवसणं च
 पुढविजलानिलवणस्सइकाएसु जीवाणं । दुक्खेण य लब्भइ बेइंजियभावो । इंदिय-
 परिवाडीए पुणो वि अइदुल्लहं पंचिंदियत्तणं । तत्थ वि मणुयजाई । पुणो वि
 खेत्ताइयाइं जिणप्पणीयधम्मोवगरणाइं । तत्थ वि जिणवरधम्मो । जिणधम्मे य
 जहाभणियविहाणुट्टाणकरणं । लोहागरगहणपुरिसत्तिभेयतुच्छफलए कुदिट्ठिपणीए धम्मे
 जच्चकंचणपुरिससरिसो य सिवसुहपसाहणफलो इमो जिणप्पणीओ धम्मो । ता इमं च
 एत्तियं निसामिऊण विरत्तं मम भवपंजराओ चित्तं । निव्विन्नो य इमाणं

किंपागफलसरिसाणमसुहविवायाण विसयाणं । ता तए सह सामन्नमहं पि गिण्ह-
स्सामि ति । केवलं इमस्स कोणियनरिदस्स कया मए बहवे अवराहट्टाणा । तं मम
कएण तए सव्वे वि मरिसावणीया । अहं पि गंतूण जणणिजणए आपुच्छिऊणा-
गच्छमि' ति भणमाणो निवडिओ चलणेसु जंबुकुमारस्स । विणिग्गओ नयराओ ।
ताइं पि पंचचोरपुरिसा(स)[सया]इं पडिवन्नसम्मत्ताइं विमुक्काइं बंधणायाराओ
देवयाए । तओ इमंमि य अवसरे किं जायं ?-

अवि य- नज्जइ सुणिउं(ऊ)णेंवं जायविराएण मुच्चइ नहेण ।

तमभावो पयडिज्जइ सच्छतं मित्तसंगेण ॥३९१॥

वित्थिन्ननहदुमस्स य विलयंति भरेण तारया कुसुमे ।

निव्वट्टिऊण बद्धं ससिपिक्कफलं पि लंबंतं ॥३९२॥

रायंगणे य पहयं पहायपडिसूयगं महातूरं ।

देवभवणेषु संखा पवाइया गुहिरकलसदा ॥३९३॥

तमनिवहं पेळंतो उज्जोयंतो य दसदिसाचक्रं ।

धम्मनिरए य लोए कुणमाणो उग्गओ सूरो ॥३९४॥

इय एरिसे पहाए जंबुकुमारो बहूहिं परिकलिओ ।

चेइयहरं पयट्टो जिणाण परिवंदणनिमित्तं ॥३९५॥

दिट्ठं च- विविहधयवडपवणपहोलंतदसदिसानिवहं ।

ससिकिरणसंगपसरियचंद[य]मणिजलपवाहिल्लं ॥३९६॥

तओ पयंसिउं च पयत्तो निययजायाणं जंबुकुमारो जिणभवनं ।

अवि य- फलिहमणिभित्तिविरइयगवक्खवरपोमरायपडिमाणं ।

किरणुल्लसियनिबद्धे ओपेच्छसु विविहसुरचावो(वे) ॥३९७॥

नज्जंति पलित्ता इव जिणिंदपासेसु चामरकलावा ।

थंभनिवेसियमणिपोमरायपहपडलनियरेहिं ॥३९८॥

मरगयमणिकिरणेहिं फलिहविणिज्जंतनहमयूहेहिं ।

सामलधवलं जायं जिणबिंबं कणयवन्नं पि ॥३९९॥

तओ इमं च भणियाहिं अवलोइयं ताहिं तं जिणभवणं । केरिसं दिट्ठं च ?-

अवि य- “जोइंदनीलमणिनियरजालकुवलयकओवयारं व ।
 विहुमलयजालेहिं संझाराओ व्व तं दिट्ठं ॥४००॥
 मुत्ताहलनियरोहिं नज्जइ गयणं व तारयाइन्नं ।
 आयंबकणयतेएण बालसूरो व्व दिप्पंतं ॥४०१॥
 नज्जइ ससलंछं पिव मरगमणि[सिय?]मयूहपडलेहिं ।
 आलंबियवरमुत्तावलीहिं धारानिहायं व ॥४०२॥
 सुद्धफलिहभित्तीहि य निरावलंबं व संठियं गयणे ।
 जणि उल्लोचं नज्जइ बहुरयणमिलंतकिरणोहिं” ॥४०३॥
 एवं पेच्छंताइं काऊण पयाहिणं च तिक्खुत्तं ।
 पणिवइऊण जिणिंदं रइया पूया जिणिंदाणं ॥४०४॥
 “कप्पूरागरूपूरो दट्ठो(ट्ठो) य जिणिंदयाण भत्तीए ।
 भत्तीसु विरइयाओ कत्थूरियबहलचच्चाओ ॥४०५॥
 कुंकुमजलेण धोयं कोट्टिमवीढं च दासचेडीहिं ।
 परिमलमिलंतमहुयरदिन्ना कुसुमोवयारा य” ॥४०६॥

तओ एवं च निम्मविए सयलपूओवयाराइए करणीए विरइयकरकमलंजलिउडो
 जंबुकुमारो सह जायाहिं भयवं वद्धमाणजिणयंदभवणगुरुं एवं थुणिउं समाढतो-

“भवभयपणासणसहं जिणिंद ! पणमामि तुम्ह पयकमलं ।
 अजलामलामलाणं सुपबुद्धं कंटयविहीणं ॥४०७॥
 पणयस्स देसु जयगुरु ! कह वि हु पसिऊण चरिमजिणयंद ! ।
 नियपयकमले विमले भसलत्तं लंपडमणस्स” ॥४०८॥

तस्स य समकालमेव भणियं करकमलंजलिउडाहिं जिणसंथवंताहिं वहुहिं ।
 कह ?-

अवि य- “तुम्ह चलणारविंदे केवलमयरंदबहललुद्धाओ ।
 जिणवर ! भवभीयाओ लीणाओ महुयरीओ व्व ॥४०९॥

ता पसिय पसिय जयगुरु ! विहेसु पणईण कह वि तं वीर ! ।

कम्मकलंकविमुक्कं नियचलणासन्नपरिवासं” ॥४१०॥

एवं थुणिऊण जिणं सहिओ सो पणइणीहिं पणिवइओ ।

जिणपयकमले विमले पयाहिणं तह पुणो काउं ॥४११॥

काऊणं सयलं चिय जहारुहं तं पि तत्थ करणीयं ।

परियणसहिओ य गओ जिणभवनं जंबुणामो त्ति ॥४१२॥

सहयारमंजरीगंधलुद्धभसलालिगीयसंवलिओ ।

ताव य माहवमासो समागओ जणमणाणंदो ॥४१३॥

केसुयनिहेण नज्जइ वणलच्छी महुसमागमे मुइया ।

पयडेइ रायभावं दइयस्स व पोढमहिल व्व ॥४१४॥

परिहरइ निययवावाइयं पि जो केसरी वणुद्देसे ।

पिसियं च भुक्खियं पिव किंसुयउक्केरसंकाए ॥४१५॥

फुल्ली पलाससिहरे पलंबिए कुसुमनियरभारेण ।

देइ चलप्फं बहुसो असणत्थं मंससंकाए ॥४१६॥

पंधियवंद्राइं वणे दट्टूण(दट्टुं) सहयारमंजरीनियरे ।

ऊसुयमणाइं बहुसो सरिउं दइयाण मुज्झंति ॥४१७॥

कप्पूरेणुपरिमलमयरंदामोयनिब्भरसुयंधो ।

पहियाण दहइ हिययं सिसिरो विय दाहिणो पवणो ॥४१८॥

पहियदइयाण हियए चंदणमयरंदनिब्भरसुयंधो ।

विरहानलदड्डाइं दाहिणपवणो समुद्धवइ ॥४१९॥

सयराहं मुक्काओ जीएणं पहियदइयदइयाओ ।

ईसीसि जाव निसुओ कोइलकलकंठउल्लावो ॥४२०॥

दइयावाहजलेण वि पंधे न निवारिओ तहा दइओ ।

मांसलमयरंदेणं जह पाडलकुसुमगंधेण ॥४२१॥

दइए निवेसियाइं दइयाए धवलपम्हलच्छीणि ।
 दोण्ह वि विरहभएणं जायाइं निमेसरहियाइं ॥४२२॥
 माणकलिया वि पयडइ रायं दइयस्स पोढवरमहिला ।
 सुरयसुहासापरिखित्तमाणसा पुलयभेएण ॥४२३॥
 कवडेणं नासंतं दइयं दट्टूण झत्ति मुद्धाए ।
 अवहत्थिज्जइ माणं कंठविलग्गाए दइयस्स ॥४२४॥
 विरहग्गिणा वि दट्टो पहिओ कह कह वि पाविओ दइयं ।
 अणवरयं चिय घुट्टइ तण्हासुसिओ व्व अहररसं ॥४२५॥
 सव्वो वि जणो सव्वायरेण संलद्धगरुयपसरेण ।
 महुणा मयजज्जरिओ कीरइ मयबाणपहरेहिं ॥४२६॥
 सज्झायझाणकलिए जुत्ते चारित्तकवयसंनद्धे ।
 गुरुवयणतग्गयमणे मोत्तूणं साहुणो एक्के ॥४२७॥
 इय एरिसे वसंते मयणसरा नो मणं पि मउए वि ।
 खुप्पंति जंबुहियए सिद्धिवहूनिब्भरमणस्स ॥४२८॥
 गुरुवयणकवयकलिए जंबुकुमारे अलद्धसंपसरे ।
 परिजूरइ पंचसरो विमुहीकयसयलवावारो ॥४२९॥
 वयगहणनिच्छियमइं जंबुकुमारं वियाणिउं ताहे ।
 ण्हाणेह समाणत्तो जणएहिं विलासिणीलोओ ॥४३०॥
 माणिक्कवेइयाए कंचणपीढंमि जंबुवरनामो ।
 उवविट्ठो विलयाहिं उवणीया मज्जणविही य ॥४३१॥

ताव य किं जायं ?-

अवि य- घोलंतकन्नकुंडलकंठविरायंतधवलहाराहिं ।
 बाहुलयायणवलयकलरवपरिमुहरियदिसाहिं ॥४३२॥
 पिहुलनियंबयडट्टियरसणाकिंककिणिकलप्पवालाहिं ।
 चलचलणरयणनेउररवभरियनहंतरालाहिं ॥४३३॥

पियकामिणीहिं सहिओ समागओ वइयरं इमं नाउं ।
 जंबूदीवाहिवई अणाढिओ सुरवरो तुट्ठो ॥४३४॥
 सो य सहस त्ति भवणे अवइन्नो निययपरियणसमेओ ।
 गीयंतकामिणीयणकलगीयविमाणमारूढो ॥४३५॥
 आयन्निऊण एवं कलघोसं जंबुनामकुमरेण ।
 भणिओ विलासिणिजणो मज्जणघरसंठिएणेंवं ॥४३६॥
 किं एस अयंडे च्चिय अतक्किओ हंसकलरवो जाओ ।
 परियाणिऊण भणियं चेडीहिं न एस हंसरवो ॥४३७॥
 दिव्वजुवईण एसो नेउरउव्विह्णबाहुवल्याण ।
 रसणाकिंकिणिघोसो दिव्वो भवणंगणगईण ॥४३८॥
 एत्तियमेत्तुल्लावो संवुत्तो जाव सुरवरो दिट्ठो ।
 ता दारवालसिट्ठो जंबुकुमारंतिए पत्तो ॥४३९॥
 आणत्ताओ तेणं ताहे दिव्वाओ निययविलयाओ ।
 निव्वत्तह सिग्घाओ मज्जणमहिमं कुमारस्स ॥४४०॥
 पभणियमेत्ताओ च्चिय हल्लप्फलनिययभूसणरवाओ ।
 तुट्ठंतहारअंगयमोत्तियपगलंतधाराओ ॥४४१॥
 समकालं सव्वाओ गंधोदयभरियरयणकलसाओ ।
 कुमरस्सुवट्टियाओ मंगलकलगीयसद्दाओ ॥४४२॥
 वज्जंतपवरवव्वीसवीणवरवंसमंगलरवेण ।
 निव्वत्तिया जहिच्छं मज्जणमहिमा कुमारस्स ॥४४३॥
 कयमज्जणस्स ताहे सयमेव अणाढिएण जक्खेण ।
 रइओ सिरंमि मउडो कुमरस्स फुरंतमणिरयणो ॥४४४॥
 कन्नेसु कुंडलाइं कंठे हारो ललंतदेवंगो ।
 अंगयरयणे वट्ठे रयणललियबाहुलइयासु ॥४४५॥

दिव्वं च खोमजुयलं नियंसियं पवरकडियलाहरणं ।
 सव्वंगो(गे?) य विलित्तो पवरहरियंदणरसेण ॥४४६॥
 एवं सयलाहरणो काऊणं सुरवरेण हिट्टेण ।
 भणिओ जंबुकुमारो पयडियगुरुनेहपसरेण ॥४४७॥
 तित्थयरेण व भुवणं सुरलोओ धीर ! जह सुरिंदेण ।
 सुयनाणं पसमेणं सुकुलवहू जह व सीलेण ॥४४८॥
 गयणं व मियंकेणं जंबूदीवं व मेरुणा सहइ ।
 मरगयमणीहि उयहि व्व जलहरो इंदचावेण ॥४४९॥
 सोहइ नाणेण जहा जंतुगणो तह तुमे वि अम्हाण ।
 एस विरायइ वंसो कुलभूसणचरमकेवलिणा ॥४५०॥
 सिट्ठो य तस्स सव्वो संबंधो जह य चरमजयगुरुणा ।
 वीरजिणेणं कहिओ सेणियनरनाहपुट्टेण ॥४५१॥
 जाव अणाढियजक्खो सोऊणेवं पणच्चियं तत्थ ।
 पुट्टं च सेणिएणं नच्चइ किं एस परिमुइओ ॥४५२॥
 जह भगवया वि सिट्ठो सेणियरायस्स तस्स पुव्वभवो ।
 तह सव्वं परिकहियं कुमरस्स अणाढियसुरेण ॥४५३॥
 सोऊण इमं सव्वं जंबुकुमारेण चुल्लबप्पो त्ति ।
 काऊणं पणिवइओ हिट्टेणं सुरवरो तत्थ ॥४५४॥
 ताओ वि तस्स विलयार्हिं जंबुकुमरस्स पवरजायाओ ।
 मंडियपसाहियाओ कयाओ वरभूसणभराओ ॥४५५॥
 जणणि-जणयाओ ताहे पसरियसंदोसनिब्भरा जाया ।
 पव्वज्जाएऽभिमुहा निव्वत्तियसयलसिंगारा ॥४५६॥
 आणत्तो कुमरेणं व परियणो देह घोसणापुव्वं ।
 तिय-चच्चरेसु दाणं किमिच्छियं सयललोयाण ॥४५७॥

उदयधराधरसिहरं व सरयपडिपुन्नमंडलमियंको ।
आरूढो वरसिवियं सहस्सवोज्झं अहकुमारो ॥४५८॥

जणणि-जणएहि सहिओ जायापरिवारिओ सयणकलिओ ।
पुणरवि अणुगम्मंतो नीहरिओ निययगेहाओ ॥४५९॥

तओ संचलियाणंतरं च कह पुण पवज्जियं तूरं ?-

अवि य- संखपडुपडहजयसद्दसंमीसयं मंगलुग्गीयकलसद्दवरकाहलं ।

विलयनच्चंतअक्खित्तजणमाणसं वज्जियं तूरयं भुवणसंखोहणं ति ॥४६०॥

तओ पसरंतेहिं मंगलपाढयजयजयासद्दहलबोलेहिं, कीरंतेहिं मंगलथुइसंभूय-
गुणसंथवणेहिं, गिज्जंतेहिं कलमंगलगीयसद्देहिं, दिज्जंतेणं महादाननिहायसंचएणं,
पक्खिप्पंतेणं थोरमुत्ताहलनियरेणं, पयच्छिज्जंतेणं कडयकुंडलमणिमेचएणं, अवहत्थि-
ज्जंतेहिं कणयकलहोयथालसमूहेहिं, अवमन्निज्जंतेहिं दुगुल्लजुयलेहिं, उब्भिज्जंतेहिं
रल्लयकंबलएहिं, विक्खिप्पंतेहिं कोमलनेत्तपट्टएहिं, काणच्छिज्जंतेहिं वामलोयणवंत-
कडक्खिएहिं, वइज्जंतेहिं दीणारनाणारूवयकरंबकयारूक्केरएहिं ति ।

अवि य- तं नत्थि जं न लब्भइ भुवणांमि य नत्थि जं न तत्थ ति ।

मोत्तूण कडुयवयणं जणमणपरिसोसणसमत्थं ॥४६१॥

तओ- वज्जंततूरमंगलजयजयजयसद्दहलहलारावे ।

बंदियणकीरमाणे अवइन्तो रायमगंमि ॥४६२॥

एवं च नीहरंते जंबुकुमारंमि पुरजणो सयलो ।

जो जत्तो च्चिय निसुणइ तहुज्जयं धाइ सो तत्तो ॥४६३॥

ताव य पत्तो जंबू लीलाए तुंगभवणपडिपुन्नं ।

नरय(यर)स्स मज्झदेसं जणसयसंबाहपरिकलियं ॥४६४॥

ताव य को वुत्तंतो नायरयजणस्स संबट्टिउं पयत्तो ?-

अवि य- मुंचंति गवक्खयसंठियाओ काओ वि सहरिसं तस्स ।

पुरओ दिप्पंतीओ रयणालंकारवुट्ठीओ ॥४६५॥

महुयरखमुहलाओ दसद्दवरकुसुमपवरमालाओ ।

पासायसंठियाओ उवरिं मुंचंति अन्नाओ ॥४६६॥

सच्छं पि हवइ सहसा पइन्नपडवासधूसरच्छायं ।
 सुसुयंधबहलमोयं नहभोयं वीरभवनं च ॥४६७॥
 सुव्वंति गवक्खयसंठियाण जुवईण मणहरुल्लावा ।
 निज्जियवम्महरुवो हल सहिओ एस सो जंबू ॥४६८॥
 निज्जियरइरूवाओ घेतुं सोहम्मगुणसमिद्धाओ ।
 सामन्ननिच्छियमई सुहम्मचलणंतिए चलिओ ॥४६९॥
 नहभोयं रविरहियं भारहवासं व जिणवरविहीणं ।
 एएण विणा एयं होही सुन्नं व मगहपुरं ॥४७०॥
 रयणि व्व चंदरहिया कमलिणिसंडं व सिसिरपरिदडुं ।
 पेयवणं चिय होही रायगिहं वज्जियमिमेण ॥४७१॥
 एक्का य भणइ विलया एसो सो पंचबाणसमरूवो ।
 हल सहि पेच्छसु पेच्छसु मणवयणाणंदणो कुमरो ॥४७२॥
 अन्नेक्का परिमगइ पढमं चिय सहियणं समारूढं ।
 पासायवरगवक्खे हत्थालंबो अइतुरंती ॥४७३॥
 अन्ना तुंगनियंबा रूसइ सहियाण दारदेसंमि ।
 अचयंती गंतूणं पढमं संरुद्धमग्गाणं ॥४७४॥
 अन्ना गरुयपओहरगुरुभारकिलंतदेहतणुमज्झा ।
 नीससइ च्चिय नवरं असमत्था नीहरेऊण ॥४७५॥
 अन्ना वि धावमाणी मुत्ताहलहारखुडियसंपसरा ।
 मयबिंदु व्व मुयंती बाला पडिहाइ महिवट्टे ॥४७६॥
 एक्का गुरुजणलज्जाएँ तह य कुऊहलनिब्भरस्तेण ।
 दारं बहुसो पत्ता विणिग्गया तह वि न य बार्हि ॥४७७॥
 कोऊहलेण अन्ना हियएण गुरुयणस्स पच्चक्खं ।
 बार्हि विणिग्गया से भणिया वि न देइ पडिवयणं ॥४७८॥

गमणल्हसियकडियलोभयवेविरंकरगयाए बालाए ।
 कीरंति पहसिरीओ एक्काए नवर सहियाओ ॥४७९॥
 अन्नाए उत्तरिज्जं दाहिणहत्थेण कह वि ल्हसमाणं ।
 धरियं वामेण नियंसणं च परिधावमाणीए ॥४८०॥
 अह सुव्विउं पयत्ता आलावा नायरीण तत्थेए ।
 सहि पसिय ! देसु विवरं किं तुह एक्कीए कोहल्लं ॥४८१॥
 किं नोल्लसि वज्जसमे इमेण करिकुंभविब्भमेण ममं ।
 नियथणहरभारेणं पट्टिपएसंमि नसिएणं ॥४८२॥
 मणयं वालसु एयं सहि ण य कवाडसंपुडायारं ।
 वियडनियंबपडतडं पसिरुणं जा निरिक्खेमि ॥४८३॥
 वज्जसमे वालिज्जउ मम दिट्ठिपहस्स रुब्भणसमत्थं ।
 तडुवियसिहंडिकलावसच्छहं केसपब्भारं ॥४८४॥
 जीवउ जंबुकुमारो हाहा अइनिग्घणे ! अवट्ठि(हि)यासि ।
 संठवसु उत्तरिज्जं थणोवरिं कह व निल्लज्जे ! ॥४८५॥
 उक्खडियहारवलया सुनिट्ठेरे निग्घणे ! मुयसु वत्थं ।
 मुसुमूरियं सुचवले ! एयं ते कुंडलं मज्झ ॥४८६॥
 जावेत्तियमुल्लावं वट्टइ विलयाण हरिसियमणाण ।
 ता एत्तो आसन्नं नारीणं जंबुवरनामो ॥४८७॥
 तओ- एक्कंमि अणेयाओ तस्स सरीरंमि नयणमालाओ ।
 निवडंति नायरीहिं खित्ताओ विखत्तचित्ताहिं ॥४८८॥
 सो नत्थि देहदेसो भमुहाधणुमुक्कनयणवरबाणा ।
 कुमरस्स जंमि तेसिं बहुसो वि न लंपडा पडिया ॥४८९॥
 उद्दिसिय जंबुकुमारं जुवइजणो भाणिउं अह पवत्तो ।
 होज्ज हला रूवेणं जंबुकुमारो अणंगो व्व ॥४९०॥

अन्नाए भणियं-दीणंमि जुवइसत्थे जइ पहवइ होज्ज मुद्धि ! ताऽणंगो ।
एसो पुण रागगइंदनिद्वलणपच्चलो सहइ ॥४९१॥

अन्नाए भणियं-वच्छत्थलभोएणं नज्जइ नारायणो व्व सहि ! एसो ।

अन्नाए भणियं-होज्ज फुडं महुगहणो जइ अंजणसप्पभो हुंतो ॥४९२॥

उत्तत्तकणयवन्नो एसो पुण तेण विहडए दूरं ।

अन्नाए भणियं-होज्ज हला कंतीए संपुन्नो पुन्निमायंदो ॥४९३॥

अन्नाए भणियं-सहि एस होज्ज चंदो खंडिज्जइ जइ य होइ सकलंको ।

एसो कलंकरहिओ संपुन्नो सहइ निच्चं पि ॥४९४॥

अन्नाए भणियं-सहि सत्तीए नज्जइ पुरंदरो चेव होज्ज पच्चक्खं ।

अन्नाए भणियं-होज्जा सो देविंदो जइ नयणनिरंतरो हुंतो ॥४९५॥

अवि य- वेल्लहलनिविडदेहो सहि एसो तेण विहडए दूरं ।

अन्नाए भणियं-अंगेहि नज्जइ इमो उमावई होज्ज पच्चक्खं ॥४९६॥

अन्नाए भणियं-घडइ तिनयणसमाणो जइ हुंतो जुवइघडियवामद्धो ।

एसो संपुन्नंगो परंमुहो तह य जुवईण ॥४९७॥

इय जाव किं पि घडिओ सुराण विलयाहिं ताव अन्नाहिं ।

विहडाविज्जइ दूरं वियडुनारीहिं अच्चत्थं ॥४९८॥

ताव य जंबुकुमारस्स रूवलायन्नअवहियमणाओ ।

आढत्ताओ काउं विलयाओ बहुविहं चेदुं ॥४९९॥

एक्का भासइ उच्चं अन्ना रुणुरुणइ महुरसदेण ।

अन्ना वि पढइ गाहं अन्ना पंचं समालवइ ॥५००॥

अन्ना वंसं वायइ अन्ना वीणं पुणो पुणो छिवइ ।

जइ कह वि कुवलयच्छी एसो परिनियइ [य] मुहुत्तं ॥५०१॥

विलयायणस्स एवं अणेयवावारकरणसीलस्स ।

अवहियमणस्स सुइरं नयराओ विणिग्गओ जंबू ॥५०२॥

गुरुसेन्नमिलियसहरिसखुरवसंपायदलियभूवीढो ।
 जंबुस्स दंसणत्थं समागओ कोणियनरिंदो ॥५०३॥
 भणिओ नराहिवेणं जंबुकुमारो अहो तए धीर ! ।
 समइक्कंतमहापहुचरियं पयडं कयं अज्ज ॥५०४॥
 उज्जालिओ इमो ते. नियवंसो दुक्करं ववसिऊण ।
 नित्थिन्नो च्चिय एसो भवजलही वट्टए तुज्झ ॥५०५॥
 ता सकयत्थो जम्मो पसंसणीयं च तुह कुलं अज्ज ।
 छेतूण जेण मोहं पडिवन्नो उत्तमं मगं ॥५०६॥

अन्नं च- गज्जंतचारणभडा तुरंगकल्लोलसंकुला जइ वि ।
 पडिवक्खसुहडसेणा नरेण परिजिप्पइ सुहेण ॥५०७॥
 इंदियतुरंगचवला गरुयमणोरहगइंदघडकलिया ।
 रागाइसुहडसेणा सुदुज्जया होइ लोयम्मि ॥५०८॥
 कीरइ सप्पो वि वसं कोहग्गी दुज्जओ जए होइ ।
 गुरुवारणो वि जिप्पइ माणभडो दुज्जओ एत्थ ॥५०९॥
 विसगंठीविसरहिया कीरइ माया य दुज्जया सप्पी ।
 वित्थिन्नो मयरहरो लंघिज्जइ नूण (न उण) लोहदहो ॥५१०॥
 एयं पुण ते सव्वं विणिज्जियं दुज्जयं पि गुरुकम्मं ।
 अक्खयसोक्खावासो उवज्जिओ नूण ते धीर ! ॥५११॥
 तुब्भेहिं चिय एसो मणहरलायण्णरूवचरियेहिं ।
 भुयणाभोओ सोहइ हेलाजियमयरचिंधेहिं ॥५१२॥
 जइ गरुयसत्तचरिया न हुंति तुम्हारिसा महापुरिसा ।
 धम्मधुरा जिणभणिया ता खुप्पइ मोहपंकमि ॥५१३॥
 एवं महानरीसरनरिंदसामंतसेट्ठिपमुहेहिं ।
 अणुगम्मंतो जंबू गओ पसंसिज्जमाणो य ॥५१४॥

धणओ व्व पूरमाणो दविणमहासंचएण पणइयणं ।
 कोणियनरनाहेणं सहिओ य अणाढियसुरेण ॥५१५॥
 दूराओ अवयरिया सव्वे वि य जाणवाहणाहिंतो ।
 गुणसिलए अह पत्ता जिणिंदभवणे मणहरम्मि ॥५१६॥
 नमिऊणं तत्थ जिणं सुहम्मसामिं च वंदिउं सव्वे ।
 उवविट्ठा गुरुमूले नरिंदपमुहा महियलम्मि ॥५१७॥
 नमिऊण पायकमलं सुहम्मसामिस्स जंबुणामेण ।
 निजपस्थिणसहिएणं भणिओ एवं सहरिसेणं ॥५१८॥
 जम्मणंमरणपरंपरनारयतिरिमणुयदेववासाओ ।
 बहुगब्भसंकुलाओ भयवं संसारवासाओ ॥५१९॥
 जिणदिक्खवादाणेणं इमाओ बहुदुक्खसंकडिल्लओ ।
 उत्तारेसु अणाहं सयणेण समं इमं धीर ! ॥५२०॥
 भणियं सुहम्मगुरुणा एवमविग्घं ति मा चिरावेसु ।
 किच्चमिणं भवियाणं अवगयसंसारभावाणं ॥५२१॥
 अह कोणियनरवइणा भणिओ जंबू पसन्नवयणेण ।
 आइससु धीर ! इणिंह जं कायव्वं मए किंचि ॥५२२॥
 पंचसयचोरसहिओ समागओ अह इमंमि पत्थावे ।
 पभवो नरनाहसुओ नमिओ य गुरुण चलणेसु ॥५२३॥
 जंबुकुमारेण तओ भणियं नरनाह ! खमसु एयस्स ।
 पभवकुमारस्स तुमं अवरद्धं किं पि जमिमेण ॥५२४॥
 अज्ज रयणीए एसो समागओ चोरीयाइ मम गेहं ।
 तत्थ मए उवसमिओ सामण्णं गिण्हिही एसो ॥५२५॥
 नरनाहेणं भणियं कुणसु अविग्घेण एस सामण्णं ।
 खमियं सव्वं पि मए एयस्स महाणुभावस्स ॥५२६॥

“एयंमि अवसरंमि [य] हरिसभरिज्जंतणाढियसुरेण ।
 सज्जावियं जिणहरं रइया पूया बहुपयारा ॥५२७॥
 नाणाविहरयणेहिं देवंगविचित्तवत्थकुसुमेहिं ।
 निम्मविया वरपूया लोयगुरूणं जिणिंदाणं ॥५२८॥
 विविहाओ ऊसियाओ धयाओ दिप्पंतरयणपउराओ ।
 कुंकुमरसेण लित्तं जिणहरमणिकोट्टिमतलं च ॥५२९॥
 ण्हवियाओ जिणिंदाणं पडिमाओ तह पुणो विलित्ताओ ।
 आरोवियाइं ताहे कुसुमाइं बहुपयाराइं” ॥५३०॥
 पडुपडहसंखकाहलगुहिरं च पवज्जियं महातूरं ।
 जय जय जय त्ति घुट्टं सव्वेण समागयजणेण ॥५३१॥
 अह एवं च पयट्टे हलवोले बह(हि)रिए दिसाचक्के ।
 जंबुपमुहेहिं ताहे निक्खित्ते निययआहरणे ॥५३२॥
 पट्टंसुए य मुक्के गहिये गोखीरहंसहारपभे ।
 दिव्वंसुए पसत्थे उवणीए नरवरिदेण ॥५३३॥
 तक्कालिओ य वेसो गहिओ य महाजईण जो जोगो ।
 परिसंठिया जिणाणं पुरओ नमिउं जिणं ताहे ॥५३४॥
 पवयणविहिणा गुरुणा सव्वेसिं जंबुसामिपमुहाणं ।
 बहुपावरओहरणे रयहरणे अप्पिए ताहे ॥५३५॥
 उप्पाडियाओ गुरुणा जुवईहिययं व कुडिलभंगाओ ।
 सुसिणिद्धतरंगाणं केसाणं तिन्नि मुट्ठीओ ॥५३६॥
 उच्चारियं च भवसयसहस्ससंबद्धपावमलहरणं ।
 वाराओ तिन्नि सामाइयं च अह जंबुपमुहेहिं ॥५३७॥
 कयभंते ! सामइओ तिविहं तिविहेण जाव जीवं पि ।
 सव्वं सावज्जं मे जोगं परिवज्जियं इण्हि ॥५३८॥

आरूढस्स य एवं महापइन्नागिरिस्स मत्थंमि ।
मंदरगिरिगरुययरो पव्वज्जभरो समुक्खित्तो ॥५३९॥
आरोवियसामण्णो सव्वेहिं पणमिओ मुणिदेहिं ।
कोणियपमुहेहिं चिय पवंदिओ सव्वराईहिं ॥५४०॥
जणणि-जणएहिं सहिओ पभवपमुहपंचचोरसयकलिओ ।
जायासमण्णिओ सो उवविट्ठो गहियसामण्णो ॥५४१॥
सव्वंमि तओ लोए सुहासणत्थंमि भव्वकुमुयाणं ।
पडिबोहेणेक्कससिणा भणियमिमं गणहरिदेण ॥५४२॥
“भो भो देवाणुपिया ! संसारे दुल्लहं मणुयजम्मं ।
तत्थ वि जिणवयणसुई सद्धा य जिणिंदवयणम्मि ॥५४३॥
दुलहो पुणो वि एसो संजमजोगंमि वीरिउच्छहो ।
एयम्मि य संपत्ते पत्तं जं पावियव्वं ति ॥५४४॥

भणियं च- “चत्तारि परमंगाणि दुल्लहाणिह जंतुणो ।
माणुसत्तं सुई सद्धा संजमंमि य वीरियं” ॥५४५॥ [उत्तरा./अ.३ गा.१]
जुगसमिलादिद्वंतो माणुसजम्मोवमो जिणिदेहिं ।
दुलहत्ते पन्नत्तो भणियं च इमं जओ तेहिं ॥५४६॥
जह समिला पब्भट्ठा सागरसलिले अणोरपारंमि ।
पविसेज्जा जुगच्छिडुं कह वि भमंति भमंतंमि ॥५४७॥ [उ.नि.गा.१५९टी.]
पुव्वंते होज्ज जुगं अवरंते तस्स होइ समिला उ ।
जुगच्छिडुंमि पवेसो इय संसइओ मणुयलंभो ॥५४८॥ [उ.नि.गा.१५९टी.]
अवि चंडवायवीईपणोल्लिया सा लभेज्ज जुगच्छिडुं ।
न य माणुसाओ भट्ठो जीवो पडिमाणुसं लहइ ॥५४९॥ [उ.नि.गा.१५९टी.]
अइदुल्लहं पि कह वि हु संपत्तं देसरूवकुलकलियं ।
मणुयत्तं धम्मसुई सुदुल्लहा होइ जिणवयणे ॥५५०॥
जओ- कुसुइकुमोहियचित्तो मिच्छत्तन्नाणमोहपडिबद्धो ।
जं जं जिणेहिं भणियं तं तं जीवो न सदहइ ॥५५१॥

मिच्छत्ततिमिरवामोहियस्स जीवस्स गरुयकम्मस्स ।
 जलुयस्स व सूरपहा जिणवयणं होइ मोहाय ॥५५२॥
 जह खंडखीरजूयं परिमन्नइ पित्तमोहिओ कोइ ।
 महुरं पि कडुयरूवं विवरीयमइ त्ति इह पुरिसो ॥५५३॥
 निंबरसं पुण मन्नइ सो च्चिय कडुयं पि महुरसतुल्लं ।
 इंदियदोबल्लाओ किं कीरइ तस्स पुरिसस्स ॥५५४॥
 तह जिणवयणं परिणामसुंदरं जइ वि महुरसरूवं ।
 मिच्छत्तपित्तपहओ वितहमइ.....अहियं ॥५५५॥
 कुगइपहपयडपंथं कडुयविवायं पि निंबरसतुल्लं ।
 महुरसं परिमन्नइ कुसुइपहं.....वि जीवो ॥५५६॥

भणियं च- “जह तिमिररूद्धदिट्ठी गयणे सं.....वि पेच्छए रूवे ।
 सो वि न पेच्छइ फुडवियडे वय.....पहरूवे” ॥५५७॥ []
 तह पावतिमिरमूढो पेच्छइ धम्मं कुतित्थतित्थेसु ।
 पयडं पि नेय पेच्छइ जिणधम्मं तत्थ किं कुणिमो ॥५५८॥
 इय दुल्ल (ल)हा होइ सुई जिणिंदभणियस्स विमलधम्मस्स ।
 अह सा वि कह वि पत्ता तत्थ वि सद्धं न सो कुणइ ॥५५९॥
 सद्धा भन्नइ भत्ती जिणिंदवयणंमि अवितहं सव्वं ।
 जं जं जिणोहिं भणियं तं तं चिय मन्नइ तह त्ति ॥५६०॥
 सद्धारहिओ जीवो निसुणइ पर केवलं न सहहइ ।
 मन्नइ जिणिंदवयणं पलालपरिभव्वणप्पायं ॥५६१॥
 अग्गिगव(ध)णजलपमुहं सामग्गि कह वि जइ वि संपत्तो ।
 तह वि न पावइ पारं कंकडुओ निययदोसेण ॥५६२॥
 तह जिणवरिंदवयणे जई (?) विच्छत्ती होइ गरुयकम्मस्स ।
 कंकडुयस्स व सद्धा न होइ मणयं वि जीवस्स ॥५६३॥
 किं कीरइ गुरुकम्मो जाणंतो वि य न जाणई जीवो ।
 अहवा दिसिमूढमई सत्थो वि य होइ विवरीओ ॥५६४॥

तह जो जिणिंदवयणे मिच्छत्तमहंधयाररविकप्पे ।
 उलूओ व मन्नइ तमं न कुणइ सब्धा तहिं मूढो ॥५६५॥
 इय सब्धा जिणवयणे दुलहं चिय होइ कम्मगरुयाणं ।
 केसिं पि जओ जायइ कम्मोवसमेण जीवाणं ॥५६६॥
 सब्धाकलिओ वि जई संजमजोगं न पावई जीवो ।
 घरपुत्तदारसत्तो निरुज्जमो चरणकरणेसु ॥५६७॥
 गुरुकम्मवसा जीवा जिणमयदिट्ठीए जाणमाणावि ।
 न य विरमंति अउन्ना पावाओ कुणइमूलाओ ॥५६८॥
 जह को वि जाणमाणो विसगंठिगुणं तहावि मूढमई ।
 असइपमायवसेणं सो पावइ तस्स विणिवायं ॥५६९॥
 तह जो पमायजुत्तो जिणवयणं जाणमाणओ वि नरो ।
 न कुणइ संजमजोगं कुणइ य असमंजसं पावं ॥५७०॥
 सो मूढमई पावइ अणोरपारंमि भवसमुद्धंमि ।
 विरईरयणविहीणो दुक्खाइं अणंतकालं पि ॥५७१॥
 जह तक्करो वि याणइ मूलं मरणस्स चोरिया होइ ।
 पेच्छइ मारिज्जंते अन्ने जे चोरियासत्ते ॥५७२॥
 तह वि न विरमइ पावो एवं जीवो वि जाणमाणो वि ।
 पावस्स फलं मूढो न य गिण्हइ संजमं तह वि ॥५७३॥

भणियं च- “जह सयलजलियकाणणवणतणडज्झंतभीसणं जलणं ।
 ददूण जाणइ नरो डज्झिज्जइ न य पलाएइ” ॥५७४॥ []
 तह सत्तुमित्तघरवासजलणजालावलीविलुद्धो वि ।
 जाणइ डज्झामि अहं न य नासइ संजमं तेण ॥५७५॥ []
 अज्जं कल्लं परं परारं (कल्लपरारं) विरमामो जा मिमं निवत्तेमि ।
 एवं चिंतंतो च्चिय ता जा निहणं पि पावेइ ॥५७६॥
 अन्ने वि किल विरत्ता संजमपडिकूलसेविणो पावा ।
 तं तं करिंति मूढा जं जं चिय नरयगइमूलं ॥५७७॥

ता सव्वहा वि दुलहं संजमरयणं अउन्नजीवाण ।
 एयंमि पुणो लद्धे दुलहं चिय वीरियं होइ ॥५७८॥
 तुमए पुण संपत्तं एयं सव्वं पि वीरियसणाहं ।
 पालेसु जहा भणियं गुरूवएसाणुसारेण” ॥५७९॥
 इय एसो चउरंगो सुदुल्लहो मोक्खसाहणोवाओ ।
 अहवा वि पनरसंगो भणियं च इमं निसामेह ॥५८०॥

“ भूएसु जंगमत्तं तम्मि वि पंचेदियत्तमुक्कोसं ।
 तत्तो वि य माणुस्सं माणुस्से आरिओ देसो ॥५८१॥ []
 देसे कुलं पहाणं कुले पहाणंमि जाइ मुक्कोसा ।
 तीए रूवसमिद्धी रूवे य बलं पहाणयरं ॥५८२॥ []
 होइ बले वि य जीयं जीए य पहाणयं तु विन्नाणं ।
 विन्नाणे संमत्तं संमत्ते सीलपडिवत्ती ॥५८३॥ []
 सीले खाइयभावो खाइयभावे य केवलं नाणं ।
 केवलिए पडिपुन्ने पत्ते परमक्खरे मोक्खो” ॥५८४॥ []
 पन्नरसंगो एसो समासओ मोक्खसाहणोवाओ ।
 एत्थ बहू पत्तं ते थेवं संपावियव्वं ति ॥५८५॥
 ता तह कायव्वं ते जह तं पावेसि थेवकालेण ।
 सीलस्स नत्थि सज्झं जयंमि तं पावियं तुमए ॥५८६॥
 लद्धूणं सीलमेयं चिंतामणिकप्पपायवब्भहियं ।
 इह परलोए य तहा सुहावहं परममुणिचरियं ॥५८७॥
 एयंमि अप्पमाओ कायव्वो सइ जिणिंदपन्नत्ते ।
 भावेयव्वं च तहा विरसं संसारनेउन्नं ॥५८८॥

अन्नं च- चरणकरणेसु सत्तो होसु य धंमंमि निच्छियो धीर ! ।
 कुणसु तवं दुविहं चिय बज्झं अब्भितरं तह य ॥५८९॥
 पावंमि होसु विरओ रओ य चारित्तदंसणे नाणे ।
 तग्गयमणो य ज्ञाणे किरियाए उक्कडो होसु ॥५९०॥

पंचसमिओ तिगुत्तो पंचमहव्वयधरो य तं होसु ।
 पडिपुन्नसंजमधरो अट्टारससहस्ससीलंगो ॥५९१॥
 भावेसु भावणाओ बद्धसु किरियाकलावनियरेण ।
 निद्दहसु कम्मकिट्टं पच्छा सिद्धिं पि पावेसि ॥५९२॥
 एयं निसामिरुणं भयवं रोमंचकंचुओ जंबू ।
 गुरुचलणेसु नओ सह पभवाईहिं [च] साहूहिं ॥५९३॥

तओ भणियं जंबूसामिणा ।

अवि य- जं जं चिय कायव्वं भगवं तं तं च अम्ह तुम्हेहिं ।
 आणवणीयं सव्वं सेसं पडिसेहियव्वं ति ॥५९४॥
 एवं ति तओ भणिए गुरुणा वि य गणहरिंदचंदेण ।
 चलणपणामं काऊण उट्टिओ जंबूसामि ति ॥५९५॥
 कोणियपमुहेहिं तओ नमिओ सामंतनायरजणेहिं ।
 कुणमाणा य पसंसं नरवइपमुहा गया नयरं ॥५९६॥
 तक्कालियं च किरियं गुरुणा वि य जंबूसामि कारविओ ।
 धारिणिपमुहाओ वि य ताओ सयलाओ अज्जाओ ॥५९७॥
 गुरुणा समप्पियाओ विहिपुव्वं जेट्टमयहरज्जाए ।
 तप्पभिइं चिय भयवं गुरुणा सह विहरिओ जंबू ॥५९८॥

कह ? अवि य-

कायव्वाइं कुणंतो अकुणंतो तह य वज्जणीयाइं ।
 भणियव्वाइं भणंतो[य] अभणियव्वाइं अभणंतो ॥५९९॥
 वर्ज्जितो य अगम्मे समायरंतो य तह य सो गम्मे ।
 भुंजंतो भक्खाइं अभुंजमाणो अभक्खाइं ॥६००॥
 पेयाइं अह पियंतो अपियंतो तह य सो अपेयाइं ।
 इच्छंतो इट्ठाइं वर्ज्जितो तह अणिट्ठाइं ॥६०१॥
 सोयव्वाइं सुणंतो असुणंतो तह विरुद्धवयणाइं ।
 आएयं गिण्हंतो उवेक्खणीए उवेक्खंतो ॥६०२॥

निंदंतो संसारं पसंसमाणो य जिणमयं धम्मं ।
 पालितो सामणं अहिज्जमाणो य सुयधम्मं ॥६०३॥
 किं बहुणा भणिणं कज्जाकज्जं हियाहियं [नि]यमं ।
 विहरइ वियाणमाणो अवसेसियकम्ममलमुक्को ॥६०४॥
 सामाइयाइयाइं (आयारमाइयाइं) बारसअंगाइं जंबुणामेण ।
 गहियाइं थोवदियहेहिं भयवया सुत्तअत्थेण ॥६०५॥
 जाओ चोदसपुव्वी गुरुणा विय ठावियो गणिपयम्मि ।
 पभवो वि य से सीसो अह दिन्नो गणहरिंदेणं ॥६०६॥

“निक्खिखविऊणं गच्छं गणहारी जंबुसामिणो ताहे ।
 नित्थिन्नभवसमुद्धो निप्फाइयसीसगणनिवहो ॥६०७॥
 निट्ठवियअट्ठकम्मो पडिबोहियभव्वजंतुकमलवणो ।
 केवलनाणदिवायरसुरनरदेविंदपणिवइओ ॥६०८॥
 भुयणाभोयपइट्ठियअसेससब्भूयभावभावन्नु ।
 केवलपईवपयडियभव्वाणं पुन्नपावफलो ॥६०९॥
 सव्वजयजंतुपरमेक्कबंधवो तिहुयणेक्कपरमगुरू ।
 जयसरणं पाणिहे(हि)ओ परमाणंदो य भव्वाणं ॥६१०॥
 केवलपज्जायं विहरिऊण भवगाहिकम्मणा मुक्को ।
 भयवं सुहम्मसामी सिवमयलमणुत्तरं पत्तो” ॥६११॥
 भयवं पि जंबुसामी गोयमपयविमलपालणेक्करओ ।
 सयलगणसंपरिवुडो दंसणचारित्तनाणधरो ॥६१२॥
 परिविहरिओ य वसुहं गामागरनगरकव्वडसणाहं ।
 सारयससि व्व सययं बोहितो भव्वकुमुयाइं ॥६१३॥
 नाणाविहदेसेसुं एवं सफलं च विहरमाणस्स ।
 निव्वूढो बहुकालो जाया सीसाण निप्फत्ती ॥६१४॥
 “अह अन्नया कयाई धम्मज्झाणंमि निच्छियमइस्स ।
 परिभावित्तस्स सुयं जीवसरूवं गुणितस्स ॥६१५॥

तवसंजमनियमरयस्स जंबुसामिस्स झाणनिरयस्स ।
 निम्मलचित्तस्स सया भावणपरिभावियमइस्स ॥६१६॥
 कम्मविवायं विविहं चिंतेमाणस्स भवसरूवं च ।
 जिणवरवयणं च तहा निच्चं चिय अणुगुणंतस्स ॥६१७॥
 धुयमायाकलिमलनिम्मलस्स जियसव्वलोहतणहस्स ।
 खंतिपहाणस्स तहा सययं मज्झत्थचित्तस्स ॥६१८॥
 एवं विसुद्धजोगस्स तस्स निद्वड्ढकम्मकिट्टस्स ।
 जोगंतरसंकमणं जायं परिणामसुद्धस्स ॥६१९॥
 उल्लसियं सुहझाणं ठिओ य सामाइयंमि पवरंमि ।
 परिणयजोगस्स तओ अउव्वकरणं अह पवत्तो ॥६२०॥
 जाया य खवगसेढी उल्लसियं जीववीरियं ताहे ।
 निहया य कम्मसत्ती विवड्ढिओ तह य झाणग्गी ॥६२१॥
 पढमं चिय निद्वड्ढा चउरो वि अणंतबंधिणो तेण ।
 मिच्छत्तमोहणीयं खवियं मीसं पुणो सम्मं ॥६२२॥
 लंघिय नियट्टिठाणं खाइयसम्मत्तकारणं एयं ।
 दड्ढे अट्टकसाए नपुंसवेयं पुणो भणियं ॥६२३॥
 इत्थीवेयं च पुणो दड्ढं हासाइछक्कमन्नं च ।
 खवियं च पुरिसवेयं दड्ढे कोहाइसंजलणे ॥६२४॥
 खविये य लोहखंडे पच्छिम्मखंडं च किट्टियो काउं ।
 सो सुहुमसंपराओ तं वेयंतो मुणी जाओ ॥६२५॥
 पुण चरणमहक्खायं पत्तो सो तं पि लंघिउं भयवं ।
 वीसमिउं खणमेक्कं निहं पयलं हणइ पढमे ॥६२६॥
 नाणस्स य आवरणं पंचविहं दंसणं चउविगप्पे ।
 पंचविहमंतरायं खवेइ अह बीयसमएण ॥६२७॥
 अह सव्वदव्वपरिणामभावविन्नत्तिकारणं परमं ।
 सासयमव्वाबाहं केवलनाणं समुप्पणं ॥६२८॥

“लोयालयपयासे उप्पण्णे केवलंमि वरनाणे ।
 केवलमहिमनिमित्तं समागया सुरवरा हिट्ठा ॥६२९॥
 देववरवंद्रसहिओ एरावणवियडखंधमारूढो ।
 देविंढो सम्पत्तो कयजयजयसद्दहलबोलो ॥६३०॥
 नच्चंति अच्छराओ गायंति य तत्थ किन्नरा तुट्ठा ।
 उक्कुट्टिजयजयरवं कुणंति असुरिंदेदेविंदा ॥६३१॥
 वायंति दिव्वतूरे परिमुइया वाणमंतरा देवा ।
 हरिसियमणा य सव्वे जोइसिया जयजयाविंति ॥६३२॥
 सक्केण समाणत्ता अह सव्वे सुरवरा हरिसिएण ।
 केवलमहिमं सिग्घं निव्वत्तह अह सुरेहिं पि ॥६३३॥
 सोहेउं धरणियलं सव्वे संपाडिया निययसमया ।
 गंधोदयं च वुट्ठं कुसुमुक्केरो कओ दिव्वो ॥६३४॥
 मंदं मंदं पवणो पवाइओ सुरहिसीयलो ताहे ।
 निव्वत्तियं विसालं कणयमयं दिव्वपउमं ति ॥६३५॥
 तत्थुवविट्ठो भयवं मणुयासुरदेवसूरचंदा य ।
 उवविट्ठा गुरुपुरओ नमिउं सव्वे वि पयकमलं” ॥६३६॥
 “हरिसियमणेहिं ताहे भणियं देविंदपमुहदेवेहिं ।
 निहओ ते मोहतरू भयवं कर्मिधणं दड्ढं ॥६३७॥
 पत्तं परमं तत्तं केवलनाणं जगुत्तमं तुमए ।
 अप्पा सासयसोक्खे मोक्खपए ठाविओ धीर ! ॥६३८॥
 सयलजयजंतुजम्मणजरमरणभओहुए भवसमुदे ।
 जाओ य एस जम्मो भयवं तुब्भेत्थ सकयत्थो ॥६३९॥
 ता सकयत्थो भयवं भवभमणभयाउराण एस भवो ।
 संजाओ अम्हाण वि जं पत्तं तुम्ह पयकमलं ॥६४०॥

ता उवइससु जगुत्तम ! जमेत्थमम्हेहिं होइ कायव्वं ।
भुवणुद्धरणसमत्थे संपत्ते तुम्ह पयकमले' ॥६४१॥

तओ इमं च भणमाणा सव्वे वि समकालमेव सुरीसरपमुहा जयजयरवाऊरमाणा-
(ण)सयलदिसिविवरंतरालववत्थियसयलजंतुयण'किं किं ति'संजणियनिययभावावन्न-
समाउलमाणसुत्तत्थभयविहलवेविरतणुसुरासुरनरीसरकिन्नरोरगाइणो देवमणुयविसेसा
पहरिसुद्धामपसरंतहिययभिन्नरोमायमाणपयडिउ[ब्धि]न्नबहलरोमंचकंचुइयसरीरा सयल-
लक्खणोववेयविमलपयकमलजुयले पणिवइया । तओ भववया वि जयगुरुणा सयल-
जयजंतुहिययाणंदयारिणा विमलदसणावलीजुइपडिप्पहामुज्जोइयभुवणयलेण सजल-
जलजलहरुद्धामनिनाइणा भणियं जंबूसामिकेवलिणा-'भो ! भो ! मणुयासुरदेव-
दाणवगणा निसुणह, तावेत्थ जिणेहिं भगवंतेहिं वीयरगेहिं सव्वन्नूहिं सव्वदरिसीहिं
सयलजयजंतुपरमहिययब्भुज्जएहिं पणीयस्स परमधम्मस्स पहाणोवएसो' ।

अवि य- चारित्तनाणदंसणसुहभावसमुज्जयस्स जीवस्स ।

उवएसो उ जिणाणं रोव(य)इ बहुखवियकम्मस्स ॥६४२॥

दुक्खाहिणंदिणो पुण अहवा जीवस्स गरुयकम्मस्स ।

मणयं पि न होइ मणे जिणिंदवयणस्स सव्वभावो ॥६४३॥

सम्मदंसणनाणं चारित्तं जेण मोक्खवरमग्गा ।

एएसिं विवरीओ संसारपहो अभव्वाणं ॥६४४॥

जओ जिणवयणं-

“सम्मदंसणसुद्धं जो नाणं विरइमेव पावेइ ।

दुक्खनिमित्तं च इमो तेण सुलद्धो हवइ जम्मो ॥६४५॥

सम्मत्तविरहिया पुण अविरइबहुलाण नाणहीणाणं ।

लद्धो वि होइ विहलो मणुयभवो अह इमो तेसिं ॥६४६॥

तुम्हेत्थ पुण सुलद्धो एस भवो जेण जिणमयपवन्ना ।

सम्मत्ताइगुणजुया अरिहा उवएसदाणस्स ॥६४७॥

पाणवहालियविरईअदत्तमेहुणपरिग्गहाणं च ।

एसो परमुवएसो जिणपन्नत्तो समासेणं ॥६४८॥

पंचेयाइं वयाइं देसे सव्वे य अणु-महंताइं ।
 निस्सल्लो होइ वई सो अणगारी अगारी य ॥६४९॥
 पंच य अणुव्वयाइं गुणव्वयाइं च हुंति तिन्नेव ।
 सिक्खावयाइं चउरो होइ अगारीणिमो धम्मो ॥६५०॥
 अणगारीणं दसहा खंताईओ उ होइ विन्नेओ ।
 मूलगुणुत्तरभेओ निच्छयनयसम्मओ सव्वो ॥६५१॥
 खंती य महवज्जवमुत्ती तवसंजमे [य] बोधव्वे ।
 सच्चं सोयं आकिंचणं च बंभं च जइधम्मो ॥६५२॥
 एवंविहधम्मजुओ अणगारी बुद्धतत्तपरमत्थो ।
 सत्तहियणुज्जओ वि य अचलियसत्तो सयाकालं ॥६५३॥
 धम्मावस्सयजोएसु भावियव्वा(प्पा) पमायपरिवज्जी ।
 उवसमगुणसंपन्नो तह अव्वाबाहसुहकंखी ॥६५४॥
 सद्धम्मसुत्थियमई तिदंडविरओ तिगुत्तिगुत्तो य ।
 विसयसुहनिरहिलासो धम्मज्झाणे अभिरओ य ॥६५५॥
 जिणवरखयणगुणगणं सच्चित्त(तं)तोवहादवाए(?) य ।
 कम्मविवाए विविहे संठाणविही अणेगा य ॥६५६॥
 वासीचंदणकप्पो य निरहियमणो य खंतिकलिओ य ।
 जियसव्वलोयतण्हो धुयमायाकलिमलकलंको ॥६५७॥
 समसत्तुमित्तविहवो समतणमणिलेट्टुकंचणो तह य ।
 सज्झायज्झाणपरायणो य दढमप्पमत्तो य ॥६५८॥
 सम्मत्तनाणचारित्तगुणजुओ तवसमाहिबलजुत्तो ।
 सीलंगसयलकलिओ साहुसमायारसत्तो य ॥६५९॥
 विहिउंछगहणजुत्तो थीपसुपंडगविवित्तसेज्जो य ।
 सगुणब्भासेक्कमई परदोसपरंमुहो तह य ॥६६०॥

संपुन्नायारविऊ अट्टारसपयसहस्सपरिपट्ठिओ ।
 भावणविसुद्ध.....त्तो वि उत्तमं पारं ॥६६१॥
।
 परहियकरणेक्करया जेण जिणा हुंति सव्वे वि ॥६६२॥
 सो भयवं कयकिच्चो जयजीवहिएक्कउज्जओ सययं ।
 केवलिपरियायं विहरिऊण इह मणुयलोयंमि ॥६६३॥
 खविऊण सेसकम्मं संसारनिबंधणं चउवियप्पं ।
 आउयनामं गोयं निस्सेसं वेयणीयं च ॥६६४॥
 देहं मोत्तूण तओ समएणेवकेण सिद्धिखेत्तुड्डं ।
 लोयगगे परिसिज्झइ गंतूणं तत्थ सो भयवं ॥६६५॥
 साइअपज्जवसाणं निरुवमसुहमुत्तमं अणुहवंतो ।
 सम्मत्तनाणदंसणविसुद्धअप्पा हवइ मुक्को ॥६६६॥
 सम्मत्तसीलकलिओ जो य जई नाणगुणगणायड्ढो ।
 वीरियमगूहमाणो नियसत्तीए सया जयइ ॥६६७॥
 संघयणाउयबलकालवीरियसमाहिसंपयविगल्ला ।
 कम्माइगरुयओ वा न य नेव्वाणं पसाहेज्जा ॥६६८॥
 सोहम्माइविमाणेसु सो वि सव्वट्ठसिद्धिचरिमेसु ।
 उववज्जइ कयउन्नो भासुरबोदी सुरवरिंदो ॥६६९॥
 तत्थ सुरसेलसोक्खं दिव्वं दिव्वाहिं सुरवहूहिं समं ।
 उवभुंजइ चिरकालं अणोवमं मणवहारहिं ॥६७०॥
 दिव्वविलित्तंगवरो दिव्वालंकारभूसियसरीरो ।
 दिव्वनियंसियवत्थो दिव्वजुई दिव्वदेविंदो ॥६७१॥
 दिव्वभवणोयरगओ दिव्वे सिंहासणे सुहनिविड्ढो ।
 दिव्वविलयाहि कीरइ पुरओ नट्टं मणभिरामं ॥६७२॥

कलगीयवंसवव्वीसतंतिवीणामुङ्गरवकलियं ।
 पुरओ मणाभिरामं पेच्छंतो दिव्वपेच्छणयं ॥६७३॥
 देवाउयं असेसं एवं सो तत्थ भुंजिउं भोए ।
 ठीइखएणुववज्जइ पुणो वि माणुस्सलोयंमि ॥६७४॥
 कुलजाइरूवविन्नाणनाणसंमत्तसंवरसमेओ ।
 विहुणियसंसारपहो भावियजिणवयणपरमत्थो ॥६७५॥
 सिज्झइ विगयमलो सो भवत्तएणं च सुरभवंतरिओ ।
 जो पुण होइ अगारी सेसविही होइ तस्सेसा ॥६७६॥
 जहसत्तिवयपवन्नो जिणगुरुसाहूय(ण) पूयणरओ य ।
 सम्मत्तभावियमणो भवभवणविरत्तभावो य ॥६७७॥
 सद्धासंवेगजुओ 'नमो जिणाणं' ति भणिय पच्चूसे ।
 पडिवुज्झइ विगयमलो सरीरजोगं अह करेइ ॥६७८॥
 भत्तिब्भरनिब्भरंगो एक्कमणो अह जिणाण भवणंमि ।
 वच्चइ इरियासमिओ असेसवावारपरिमुक्को ॥६७९॥
 अवणेउं निम्मल्ले तत्थ गओ जिणवराण गंधडुं ।
 निम्मवइ पवरपूयं दसद्धवन्नं मणाभिरामं ॥६८०॥
 एसा वि य कायव्वा जओ नियंतस्स गुरुमणपसाओ ।
 धम्मज्झाणं च तओ झाणाओ निज्जरा विउला ॥६८१॥

भणियं च- “मिच्छादंसणमहणी जणणी नेव्वाणगमणमग्गस्स ।
 समदंसणसंसोहणी य पूया जिणिंदाणं” ॥६८२॥ []

तह य जिणागमो-

“सुणणं दंसणं चेव पूयणं पज्जुवासणं ।
 संकहा य जिणिंदाणं नाधन्नो पावए नरो” ॥६८३॥ []

तओ- “पज्जालिउं पईवं धूयं उग्गाहिऊण गंधडुं ।
 अहिसेयसमालहणं कुणइ जिणिंदाण भत्तीए” ॥६८४॥ []

भणियं च- “अच्चणमवि बहुभेयं पुप्फसमालहणधूयदीवाई ।
 एवं समायरंतो वि णोज्ज पुन्नं बहुविगप्पं” ॥६८५॥ []
 “कुसुमाहरणविलित्तं काऊण जिणं पराए भत्तीए ।
 जयजयसहुम्मीसं जिणाण थुइसंथवं कुणइ” ॥६८६॥ []

जओ भणियं-“सयलावायविमुक्कत्तणओ सिरिरूवअइसयत्तणओ ।
 सोमं वियाररहियं जिणिंदइंदाण मइविमलं ॥६८७॥ []
 निरुवमगुणं निहाणं पयइपसन्नमवि गरुयलायन्नं ।
 दडूण देवसोहं तिहुयणनाहत्तणुब्भवणं ॥६८८॥ []
 विमलगुरुभत्तिनिब्भरहरिसवसुब्भिनबहलरोमंचो ।
 जयजयसहुम्मीसं करेज्ज एक्कं पि पणिवायं” ॥६८९॥ []

जओ- “एक्को वि नमोक्कारो जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ।
 संसारसागराओ तारेइ नरं व नारिं वा” ॥६९०॥ [सिद्धस्तव/गा.३]

तह य जिणवयणं-

“सज्झायझाणविणया चिइवंदणपूयणाइकिरियाओ ।
 वेयावच्चं च तहा कुणमाणो हणइ संसारं” ॥६९१॥ []

अन्नेहिं वि भणियं-

“जिणवंदणं कुणंतो विणएणं वंदणाइ साहूणं ।
 खवइ विविहं सुबहुयं असुहं पुव्वज्जियं कम्मं” ॥६९२॥ []

तह जिणागमो-

“वंदणमरिहंताणं तिगरणसुद्धं पराए भत्तीए ।
 जीवपएसनिबद्धं विहुणइ घणचिक्कणं कम्मं ॥६९३॥ []
 झाएइ वंदणत्थं मणसा वायाए घोसइ पयाइं ।
 काएण विणयपणओ वंदंतो सोग्गइं लहइ ॥६९४॥ []
 पूएउं जिणमेयं अहवा पढमं पि कुणइ सामइयं ।
 जिणभवणे व घरे वा पुरओ वा अहव साहूणं” ॥६९५॥ []

भणियं च- “चेइयसाहुसमीवे पोसहसालाए अहव निययघरे ।
 जत्थ व वीसमइ मणो तत्थ हु सामाइयं कुणइ ॥६९६॥ []

समभावो सामइयं सव्वेसिं एत्थ होइ जीवाणं ।

सावज्जाण य जोगाण वज्जणं होइ सामइयं ॥६९७॥ []

भणियं च- “जो समो सव्वभूएसु तसेसु थावरेसु य ।

तस्स सामाइयं होइ इइ केवलिभासियं” ॥६९८॥ []

अहव कसायाण समे सम्मत्तणचरणणाणलाभो जो ।

सामइयं ति तयं इह भन्नइ भणियं जिणिं देहिं ॥६९९॥

जइ अवरेण समाणं केण वि अह दायगं विवाओ वा ।

नत्थि हु तया घराओ काउं गच्छेज्ज सामइयं ॥७००॥

पंचसमिओ तिगुत्तो विगयकसाओ विमुक्कभयहासो ।

परिमुक्कपरम्मत्तो जाइ स पावं परिहरंतो ॥७०१॥

अह अत्थि को वि दडुं अंछाअंछिं करेज्ज जो पंथो ।

ता नियमा कायव्वं गंतूणं तत्थ सामइयं ॥७०२॥

मा गहियमंतराले भज्जीही गाहिण केणावि ।

ता गंतूणं कुणइ हु दुविहं तिविहेण जा इच्छ ॥७०३॥

पविसंतो कुणइ निसीहियं ति जा अप्पयं निसिद्धेइ ।

पावाणं कम्माणं नियमा जा पज्जुवासेइ ॥७०४॥

आगंतूण य पच्छ करेइ सामाइयं तओ विहिणा ।

अरिहंते नमिउं चिय साहुजणं वंदिउं सम्मं ॥७०५॥

कड्डेइ तओ सुत्तं करेमि भंते ति एवमाईयं ।

आलोएइ गुरूणं इरियावहियं पडिक्कमिउं ॥७०६॥

वंदइ तओ य साहू विणएणं वंदिरुण आयरियं ।

पुच्छइ पढइ सुणेइ य झायइ झाणं निसिद्धिप्पा ॥७०७॥

सामाइयंमि [य] कए जइ कह वि करेज्ज सावओ कालं ।

ता सो हु जहन्नेण य सोहम्मे होज्ज देवो त्ति ॥७०८॥

जओ- “अविराहियसामन्नस्स साहुणो सावगस्स य जहन्नो ।
 सोहम्मे उववाओ भणिओ तेलोक्कदंसीहिं” ॥७०९॥ []
 तेणऽइयारविसुद्धं पालेयव्वं अवस्स जा गहियं ।
 अइयारे सेवितो निरत्थयं कुणइ सामइयं ॥७१०॥
 दुप्पणिहाणं मणमाइयाण अणवट्टियस्स करणं वा ।
 सइसामइयाकरणं सामइए हुंति अइयारा ॥७११॥
 सामाइयंमि उ कए घरचितं जो उ चितए सट्ठो ।
 अट्टवसट्ठेवगओ निरत्थयं तस्स सामइयं ॥७१२॥
 कडसामइओ पुव्वि बुद्धीओ पेहिऊण भासेज्जा ।
 सइ अणवज्जं वयणं अन्नह सामाइयं न भवे ॥७१३॥
 अनिरिक्खियापमज्जिय थंडिल्ले ठाणमाइसेवंतो ।
 हिंसाभावे वि न सो कडसामइओ पमायाओ ॥७१४॥
 न सरइ पमायजुत्तो जो सामइयं कया उ कायव्वं ।
 कयमकयं वा तस्स हु कयं पि विहलं तयं नेयं ॥७१५॥
 काऊण तक्खणं चिय पारेइ करेइ वा जहिच्छाए ।
 अणवट्टियसामइयं अणायराओ न तं सुद्धं ॥७१६॥
 एयं नाऊण इमं वज्जेयव्वे इमे हु अइयारे ।
 सुविसुद्धं सामइयं पालेयव्वं पयत्तेण ॥७१७॥
 सामाइयं कुणंतो मुंचइ जरमरणरोगपउराओ ।
 संसारओ अवस्सं पावइ य सुहं निराबाहं ॥७१८॥
 देसावगासियं तह पुव्वग्गहियस्स गिण्हए निच्चं ।
 अणुदियहं गिण्हंतो विसेसलाहं जओ लहइ ॥७१९॥
 न य दीहकालियं जं संवच्छरमाइयस्स कालस्स ।
 परिमाणं इह गहियं दिणेण सयलं तरइ गंतुं ॥७२०॥

तं च पहराइभेएण कीरई जाव दिवसदेवसियं ।
 इय एवं जो कुणइ हु पावइ सो निज्जरं विउलं ॥७२१॥
 गहियं च इमं सम्मं अइयारविवज्जियं च पालेइ ।
 अइयारे पुव्वुत्ते अइयरियमसुंदरं होइ ॥७२२॥
 ता तं चेव करेज्जा जस्स हु परिपालणं तरइ काउं ।
 अइयारेहिं विसुद्धं बहुप्फलं तं चिय हवेच्चा ॥७२३॥
 आहारे सक्कारे अव्वावारे य बंभचेरे य ।
 तह पोसहोववासो गिणहइ परमाए सद्धाए ॥७२४॥
 दुविहो एत्थाहारो देसे सव्वे य पोसहोवासो ।
 देसे अमुगा विगई सव्वे सव्वस्स विरओ हं ॥७२५॥
 गम्मम्मि य आहारे विरओ तस्सेव एत्थ कायव्वो ।
 जेण विणा जोगाणं हाणी न हु हवइ धन्नाणं ॥७२६॥
 विणओ वेयावच्चं झाणं सज्झाओ तह य किइकम्मं ।
 एयाइं न सीयंती कायव्वो पोसहो तस्स ॥७२७॥

जओ- “सो य तवो कायव्वो जेण मणो मंगुलं न चिंतेइ ।
 जेण न इंदियहाणी जेण य जोगा न सीयंति” ॥७२८॥ []
 वयभंगे उण गरुओ दोसो सो ताव इच्छियविणासी ।
 अन्नं पि बंधइ बहुं असुहं वयभंगदोसाओ ॥७२९॥
 तेणागारविसुद्धं पच्चक्खाणं सया गहेयव्वं ।
 ते य जहाविहिरूवं भणिया इह वीयरगेहिं ॥७३०॥
 दो चेव नमोक्कारे आगारा छच्च पोरिसीए उ ।
 सत्तेव य पुरिमट्टे एक्कासणगंमि अट्टेव ॥७३१॥
 ठाणंमि सत्त आयंबिले य अट्टेव छच्च पाणंमि ।
 पंचाभिग्गहसत्तट्टएसु चत्तारि चरिमंमि ॥७३२॥

विगईसुं अट्टेव य समंतओ ता हवंति एएसु ।
 पत्तेयमणाभोगा सहसाकारो नमोक्कारो ॥७३३॥
 पोरिसिपच्चक्खंतो पच्चक्खइ इच्छिण य आहारे ।
 तह उगयसूराओ अन्नत्थ इमं मम वयं ति ॥७३४॥
 पोरिसिमाईसुं जे पच्चक्ख्राणेसु वन्नियागारा ।
 तेहिं विसुद्धं गिण्हइ पच्चक्ख्राणं गुरुसयासे” ॥७३५॥
 इण्हिं सरीरसक्कारपोसहो सो वि होइ दुविहो उ ।
 देसे सव्वे य तहा देसे अमुग त्ति न करेमो ॥७३६॥
 ण्हाणुव्वट्टणवन्नगविलेवणाहरणगंधपुप्फाणं ।
 तंबोलाईण तहा चागो सव्वंमि कायव्वो ॥७३७॥
 तह बंभचेरमइओ देसे सव्वे य पोसहो भणिओ ।
 देसे दिणाइओ खलु एगं दो तिन्नि वा वारो ॥७३८॥
 सव्वे य अहोरत्तं बंभच्चेरं चरंति सुविसुद्धं ।
 कुसलाणुट्टाणं वा भन्नइ तं बंभचेरं तु ॥७३९॥
 तक्करणेणं पोसेइ अप्पयं सोहणेण कम्मेण ।
 ता बंभचेरमइओ[उ] पोसहो होइ का[ना?]यव्वो ॥७४०॥
 वावारा पुण रंधण-घरचितण-पयणसयडमाईया ।
 तक्करणवारणपरो अब्बावारो इहं भणिओ ॥७४१॥
 जे जीवघायणपरा परपीडयरा जुगंछिया पावा ।
 परलोयंमि दुहयरा ते वावारा इहं असुहा ॥७४२॥
 ताण निसेहणरूवो अब्बावारो त्ति सावसेहे(हो) य ।
 पडिसिज्झए य असुहं जं परभवदुहयरं होइ ॥७४३॥
 न य पुण सोहणवावारकरणपडिसेहतप्परो सो हु ।
 सोहणवावाराणं करणं जिणसासणांमि मयं ॥७४४॥

जओ भयवओ वयणं-

“जिणवंदणच्चणनमंसणाहिं सुहसंपयं समज्जिणहा ।
 किसलयदलग्गसंठियजललवइवचंचलं जीयं” ॥७४५॥ []
 ता एयं नाऊणं असेसकल्लाणजणणभूएसु ।
 सब्बायरेण जत्तो सुहेसु जोएसु कायव्वो ॥७४६॥
 जिणवंदणाइ काउं एवं परमाए गरुयसब्बाए ।
 संघस्स कुणइ पूयं तित्थयराणंतरं संघो ॥७४७॥

जओ भगवओ एवं वयणामयं पवयणं-

“[चेईय]कुलगणसंघआयरियाणं तहेव साहूणं ।
 पूयं ससत्तिओ वि हु कुणमाणो हणइ संसारं ॥७४८॥ []
 गुरुथेरतवस्सिगिलाणबालवसभेसु जो उ भत्तीए ।
 ओसहसयणासणवत्थवसहिआहारपाणं च” ॥७४९॥ []
 जो देइ सुपरिसुद्धं विहाणओ गरुयविणयपरिकलिओ ।
 निरुवमसंवेगगओ पवड्डुमाणाए सब्बाए ॥७५०॥
 सम्मत्तनाणचारित्तविणयसज्झायझाणकलियाणं ।
 संजमसोयरयाणं खंतज्जवमद्वरयाणं ॥७५१॥
 वेयावच्चधराणं तिगुत्तिगुत्ताणं समिइजुत्ताणं ।
 समलेट्टुकंचणाणं निरगिगसरणाण साहूणं ॥७५२॥
 रागाइदोसरहियाण निम्ममत्ताण निरुवमगुणाणं ।
 परपरिवायविमुक्काण असुहवावारहियाण ॥७५३॥
 जं दव्वं ठवणं वा आहारो य सयणासणाईयं ।
 उवओगयाए वच्चइ एयाण महाणुभावाए(ण) ॥७५४॥
 धन्नाण साहुगहणुज्जयंमि सुविसुद्धवासणिल्लाण ।
 संपज्जइ परिसुद्धं दाणं जोगं जइयणस्स ॥७५५॥
 धन्ना सम्मद्विद्वीविवेयजुत्ता सुवासणोवगया ।
 जाणणुदिनं पहाए जाइउ(जाउ)वओगं जईण धणं ॥७५६॥

एमाइभत्तिजुत्तो दाणमियं देइ जो अणभिसंगो ।
संघे गणे गुरूणं गिलाणथेराइसाहूणं ॥७५७॥

सो पावइ ता [वि]उलं सुरगणनरनाहनमियचलणजुओ ।
सोक्खं सयलगुणनिही अर्निदियं निग्गयजसोहं ॥७५८॥

तत्तो पुणो वि संपत्तदंसणो निहणिऊण गुरूमोहं ।
निट्ठवियकम्मरुक्खो संपावियनाणवरस्यणो ॥७५९॥

काऊण सेसकम्मक्खयं पि अह निरुवमं ति विहुयरओ ।
सासयमव्वावाहं पावइ अयरामरं सोक्खं ॥७६०॥

एवं चिय अणगारा तह य अगारा य जिणमयपवन्ना ।
वच्चंति सिद्धिवसहिं काउं कम्मक्खयमसेसं ॥७६१॥

तओ एवं च भगवया इह भरहावसप्पिणिनाणदंसणावलद्धासेसलोयालोयपइ-
ट्टियसयलपयत्थवित्थरपच्चक्खापच्छिमकेवलिणा भव्वकुमुयसंडसंबोहणेक्कमयाउव्व-
सरयससिणा जंबुणाममहरिसिणा भणिए पणिवइया सव्वे वि सुरासुरमणुया भगवओ
जंबुपायकमलजुयले भणिउं च समाढत्ता-‘भयवं ! एवं इमं जहा तुब्भेहिं समाइट्ठं ।
तओ तत्थ के वि सव्वसावज्जजोगविरइलक्खणं साहुकिरियाकलावपरिसेवणपच्चलं च
पवन्ना अणगारियं दिक्खं । अन्ने उण विचित्तवयपरिसेवणपरिकुसलं जिणिंदगुरूसाहु-
पूयणकरणेक्क[.....★] भावो तहविमुक्कसव्वसंगो य’ ।

एवंविहगुणजुत्तो संवरियप्पा निरासवो साहू ।
परिसुद्धचरणकरणो छिन्नइ नवकम्मसंताणं ॥७६२॥

पुव्वज्जियं खर्वितो जहुत्तभणियाहिं खवयहेऊहिं ।
संसारतूलबीयं मूला उम्मूलए मोहं ॥७६३॥

मोहणियं च खर्वितो खवेइ एयाइं तिन्नि कम्माइं ।
नाणघणदंसणघणं तहंतरायं च निस्सेसं ॥७६४॥

गब्भयसूइपणासे तालस्स जहा धुवो हवइ नासो ।
तह कम्माण विणासो मोहणियखए समुद्धिओ ॥७६५॥

★ अत्र मूलादर्शे क्रियान् पाठः पतितः प्रतिभाति ।

खीणघणघाइकम्मो अहखायं संजमं च संपत्तो ।
 सुद्धो बुद्धो य जिणो सव्वन्नू केवली होइ ॥७६६॥
 सो भयवं कयकिच्चो अवगयतत्तो निरंजणो निच्चो ।
 परमप्पा सुद्धप्पा जहत्थवत्ता य सव्वन्नू ॥७६७॥
 तेण य सुहासुहाइं अरायदोसेण निउणभणियाइं ।
 घेत्तव्वाइं अ[?]भव्वेण जंतुणा तत्तबुद्धीए ॥७६८॥
 तत्तत्थसद्धहाणं सम्मत्तं जेण जिणवरा बिंति ।
 तं होइ निसग्गेणं भव्व्वाणं अहिगमेणं वा ॥७६९॥
 एमेव निसग्गेणं कह व भमंताण भवसमुद्धंमि ।
 संजायइ जीवाणं सुहाण कम्माण उदएणं ॥७७०॥
 दडूण जिणवरिंदं आयरियं साहु-साहुणिं चावि ।
 अहिगमओ संजायइ तत्तत्थायन्नणपरस्स ॥७७१॥
 जीवाजीवा पुन्नं पावासवसंवरो य निज्जरणं ।
 बंधो मोक्खो य तहा नवतत्तत्था जिणक्खाया ॥७७२॥
 जीवा मुक्का संसारिणो य संसारिणो य बहुभेया ।
 उवओगो सव्वेसिं जीवाणं लक्खणं भणियं ॥७७३॥
 सो अट्टहा य चउहा सागारो तह य चेवणागारो ।
 नाणानाणे पंच-इ(ति)भेए पढमो उ अट्टविहो ॥७७४॥
 चक्खुअचक्खुद्धंसणा(दंसण अण?)गारो अवहिकेवलं नाणं ।
 एवं एसो चउहा निद्धिट्ठो जिणवरिन्देणं ॥७७५॥
 धम्माधम्मागासा य पोग्गला काल अत्थिकाओ य ।
 पंचपयारा जीवा य अत्थिकायामओ लोओ ॥७७६॥
 लोयालोएसु गयं आयासं मच्चलोइओ कालो ।
 लोयं भविऊण ठिया चउरो अवसेसया काया ॥७७७॥
 आहारो दव्वाणं गइठिइवंताण धम्मकाओत्थ ।
 ठिइउवकिच्चाधम्मो आयासो देइ अवगासं ॥७७८॥

पोग्गलका [अह?] रूवी सेसा य अरूविणो समक्खाया ।
 उप्पायविगमनिच्चत्तलक्खणं अत्थि जं सव्वं ॥७७९॥
 जं पुग्गलसुहकम्मं तं पुन्नं असुहपोग्गलं पावं ।
 पुंनासवो य जोगो सुद्धो पावस्स य असुद्धो ॥७८०॥
 मणवयणकायगुत्तीनिरासवो संवरो समक्खाओ ।
 संवरियतवविहाणं तु निज्जरा होइ नायव्वा ॥७८१॥
 कम्मायाणं बंधो मोक्खो कम्माण उवगमो भणिओ ।
 तत्तपयत्था नवहा संखेवेणं समुद्धिटा ॥७८२॥
 तम्हा सुभासियाइं केवलिणा उत्तमट्टवयणाइं ।
 घेत्तव्वाइं भव्वेण जंतुणा तत्तबुद्धीए ॥७८३॥

सो वि य भासइ भयवं सय[ल]त्थपच्चलं च अणगारियं सुसावगधम्मं ति । तओ
 एवं च तीयाणागयवट्टमाणवुत्तंताइं साहिऊण समुद्धिओ भगवं जंबुणामचरिमकेवली ।
 ताव य उवगया निययट्टाणेषुं देवदाणवनरिंदा । अन्ने उण उप्पन्नधम्माणुरायपरमत्था
 अणुगया सुरासुरगुरुणो भयवओ जंबुणामकेवलिणो संजाया । भगवं पि अचिंतचिंता-
 मणिकप्पपायवब्भहियसमुप्पन्नासेसतिहुयणघरोयरपइट्टियपयत्थत्थवित्थरपयडियपरमत्थ-
 पयत्थसत्थत्थसब्भावकेवलनाणदंसणपईवो सुहविहारेण विहरिऊण य निस्सेससत्त-
 सुहाणंदयारिणं असेसकेवलिपरियायं पडिबोहिऊण निम्मलसंपुन्नवयणिंदुविणिग्गयवाया-
 पवित्थरविमलमऊहोहसङ्गपयाए भव्वयणकुमुयसंडनियरसंघाए संपत्तो विमलुत्तुंगगयणं-
 गणसण्णिहं तं वलाहगसेलसिहरं ति । तत्थ य समवसरियं नाऊण भयवमिहावस-
 प्पिणिभरहच्छेत्तचरिमकेवलिं जंबुणामं समागया देवदाणवसिद्धगंधव्वकिन्नरोरगाइणो
 सुरमणुयविसेसा बहवे । पत्थुया य भयवया अहिंसाइया धम्मदेसणा । पडिबुद्धा य बहवे
 पाणिणो । तओ भगवया नाऊण अत्तणो थोवाउयत्तणं कयं सव्वं भत्तपच्चक्खाणं
 पायवोवगमणाइयं जहाविहिं जहाकरणीयं । ठिओ य तत्थ सिलायलोवगओ मासमेगं
 पाओवगमणेण । समाणत्ता य तत्थट्टियस्स भगवओ सुरिंदपमुहेहिं सुरासुरनरीसरेहिं
 नेव्वाणगमणविसेसपूय ति ।

तओ एवं च महापूयाकरणुज्जएसु सयलसुरासुरेसु भणियं सुरिंदआणाओ
 हरिणगवेसिणा-“अहो हो सुरासुरनरीसरगणा ! एत्थ ताव पढमं चिय भरहच्छेत्ते इमीए

अवसप्पिणीए पढमतिथयरस्स सव्वजयपियामहस्स भगवओ उअहनाहस्स सव्व-
सुरमणुएहिं निव्वत्तियं महापमोएणं पंचकल्लाणमहामहिमापूयाकरणं । तयणंतरं च
मरुदेविसामिणीए पढमसिद्धस्स । तओ जहापरिवाडीए सव्वतिथयराणं पि अणेयाणं
च केवलीणं संपन्नं च सयलतेलोककेकल्लसरोयरसरसपोंडरीयसिरिसोहियस्स भगवओ
महइमहावीरवद्धमाणसामिणो नायकुलसमुभवस्स अपच्छिमतिथयस्स इमंमि चरिम-
तित्थे पवहमाणे एस कासवकुलसमुभवो महइमहावीरवद्धमाणसामिणो सव्वपहाण-
सीसस्स गणहारिणो गोयमसामिस्स पहाणसीसो संतइपवाहकारओ अपच्छिमकेवली
सव्वपहाणपयसंधारणेकलद्धमाहप्यो जंबुनामो भगवं जाओ त्ति । ‘इमेण य भगवया
सव्वप्पहाणकल्लाणगाणं किल वोच्छेओ होहिई’-इइ भगवया वीरवद्धमाणसामिणा
सुरासुरनरीसरपरिसाए गएण समाइट्टमासि । जओ भगवओ वयणं ।

“मणपरमोहिपुलाए आहारगखवगउवसमे कप्पे ।

संजमतियकेवलिसिज्झणा य जंबुमि वोच्छिन्ना” ॥७८४॥ []

ता सव्वहा वि पुणेत्थ दुल्लहा केवलजिणा होहिंति । ता सज्जिणेह इमस्स
भयवओ नेव्वाणगमणविसेसमहिमसंपूयाकरणेण अत्तणो पुन्नपब्भारं” ति-इमंमि य
तेण हरिणगवेसिणा भणिण (?) सव्वेहिं समकालमेव सुरवरेहिं सुट्टु समाइट्टं ति
भणमाणेहिं पवाइयाओ पवरदेवदुंदुहीओ । पमुक्कं सुरहिगंधोदयं । पवाहिओ
सुरहिसीयलो पवणो । पमुक्काओ कुसुमसुरहिवुट्टीओ । पगाइयं देवगणविलासिणीहिं ।
पणच्चियं अच्छराहिं । पवाइए वंसवीणामुइंगमुहे पवरदेवाउज्जविसेसे सुरवरेहिं । तओ
एवं च पमुइयमाणसा सुरवरा के वि गायंति, अन्ने वायंति, अवरे नच्चंति, अन्ने पुण
कीलंति, तहन्ने बाहुसदं कुणंति, अन्ने थुणंति, अन्ने नमंसंति, अन्ने थुइमंगल-
जयजयासदहरिसनिब्भरा पुणो भयवओ पणयउत्तमंगा सब्भूयगुणुक्कित्तणं काउं
समाढत्ता । तओ एवं च भत्तिभरसहरिसनिब्भरमाणसेसु सुरवरेसु भगवं पि निडुहिऊण
संदडूरज्जुसंठाणाणि आउयनामगोयावेयणियकम्माणि सेलेसीं संपत्तो, विमुक्को
अउव्वकरणेण एक्कसमएणेव विमुक्कबुंदी नेव्वाणपुरवरं संपत्तो त्ति ।

भणियं च पुव्वसत्थेसु-

“भयवं पि जंबुणामो बहूणि वासाणि विहरिऊण जिणो ।

भत्तं पच्चक्खायइ वलाहगसेलसिहरेसु ॥७८५॥ []

नक्खत्तेसु पसत्थे सिद्धिसिलायलगयंमि संथारे ।
 मासं पाओवगओ कम्मविमुक्को गओ मोक्खं ॥७८६॥ []
 खीरोयहिंमि य तथा पवाहियं भगवओ सुखरेहिं ।
 देहं उक्खविऊणं पहरिसमणसेहिं सब्बेहिं ॥७८७॥ []
 ताओ वि तस्स जायाओ सेससाहू य जणणि-जणओ य ।
 देवेसु समुप्पन्ना सिज्झिस्संती विगयमोहा ॥७८८॥ []
 भगवं पि य गणहारी पभवो परिपालिऊण जंबुपयं ।
 मरिउं देवेसु गओ विगयमलो सिज्झिही सो वि' ॥७८९॥ []



एत्थ य इमं समप्पइ चरियं सिरिजंबुणाममहरिसिणो ।
 गुणपालणेक्कनिरयस्स भगवओ कित्तिमाहप्पं ॥७९०॥ []



सहरिसपणयसुरीसरसुंदररिमिंदागलियमयरंदं ।
 मुहलभसलोलिगीयं पणमह जिणयंदपयकमलं ॥७९१॥
 पुन्नं सिवं पसत्थं चरियं जो जंबुणाममहरिसिणो ।
 निसुणइ पढइ य वायइ अन्नेसिं वा परिकहेइ ॥७९२॥
 कम्मकलंकविमुक्को विसुद्धसन्नाणदंसणचरित्तो ।
 सो पावइ मोक्खसुहं भवत्ताएणं विसुद्धप्पा ॥७९३॥
 छंदागमपरिहीणं विभत्तिर्लिगत्यकयविवज्जासं ।
 एत्थ मए जं रइयं तं तं कुसलेहिं सोहणियं ॥७९४॥
 एयं विरयंतेणं समज्जियं जं मए विपुलपुन्नं ।
 भव्वा नेव्वाणसुहं तेण अविग्घेण पार्वितु ॥७९५॥



भव्वकुमुओहपडिबोहपच्चलो पावतिमिरनिट्टवणो ।
 आसी ससि व्व सयलो सूरी पज्जुन्नवरनामो ॥७९६॥
 जो दंसणनाणचरित्तसीलतवसंजमेसु कुसलमई ।
 जइयणगुणगणकलिओ मुत्ती(त्तो) धम्मो य(व) अवयरिओ ॥७९७॥
 तस्स य पयंमि जाओ आयरिओ वीरभद्द नामो त्ति ।
 परिचिंतियदिन्नफलो आसी सो कप्परुक्खो त्ति ॥७९८॥
 सेसेण व भुवणभरं धरियं लीलाए नियगणं जेण ।
 जिणभवणसाहुसावय[एँ] निच्चं चिय वच्छलो जो य ॥७९९॥
 संदंसणे य जस्स य परिमुइओ होइ जो अभव्वो वि ।
 अमयं व जस्स वाणी सुहजणणी सव्वसत्ताणं ॥८००॥
 जस्स य सीसो पयडो पयडियमू(गू)ढत्थसत्थपरमत्थो ।
 दंसणचारित्तधरो सूरी पज्जुन्ननामो त्ति ॥८०१॥
 अन्ने वि जस्स बहवे सीसा जइयणगुणेहिं परिकलिया ।
 संजाया धम्मरया सद्दंसणनाणचरणड्ढा ॥८०२॥
 गुणपालणेक्कनिउणेण साहुणा पवयणत्थभत्तेण ।
 सीसेण तस्स रइयं चरियमिमं जंबुनामस्स ॥८०३॥



पणयामरिंदसुंदरिधम्मेल्लुव्वेल्लकुसुमकयसोहे ।
 उसभाइजिणिंदाणं सव्वेसिं नमह पयकमले ॥८०४॥
 पणमामि सव्वसिद्धे नमिमो तह गणहरे य आयरिए ।
 पणमामि य उज्झाए पणओ तह सव्वसाहूणं ॥८०५॥
 संमत्तं च चरित्तं केवलनाणं च दंसणं नमिमो ।
 मइनाणं सुयनाणं मणपज्जव-ओहिनाणं च ॥८०६॥
 जिणपन्नत्तं धम्मं, नमामि तह सव्वसत्तसुहजणणं ।
 जणमणजणियाणंदा वाणी य जिणिंदचंदाण ॥८०७॥

सन्नाणदंसणधरा सव्वे वि य केवली पणिवयामि ।
 वंदामि जिणपणीयं जिणिंदइंदाण तित्थं पि ॥८०८॥
 सव्वेसिं इंदाणं जिणिंदइंदाण पणमिमो तह य ।
 उड्ढाहतिरियलोएसु संठियाणं पयत्तेण ॥८०९॥
 जे के वि सम्मदिट्ठी देवा मणुया य नारया तिरिया ।
 सिज्झिस्संती भव्वा वंदामिह ते वि भावेण ॥८१०॥
 इय एयं पच्चूसे संझासमए य जो य मज्झणहे ।
 पढइ जिणाणं पुरओ सद्धाए जुओ वि सुद्धप्पा ॥८११॥
 सो गहडाइणिरक्खसभूयपिसायारिचोरसप्पाणं ।
 न य भाइ विसुद्धप्पा य कम्मणा सिवसुहं लहइ ॥८१२॥
 सव्वे वि सुहसमिद्धा परहियकरणेक्कउज्जया सव्वे ।
 जायं तु जंतुनिवहा मंगलमउलं तु पावित्तु ॥८१३॥

अह वा -

जम्मजरमरणभवजलहिउत्तारए, सिद्धिपुरगमणसुहसंपयागारए ।
 असुरसुरमणुयपरिवंदिए जे जिणे, मंगलं पढमयं हुंतु ते बुहयणे ॥८१४॥
 सयलसंसारपरिमुक्कसंवासए, भवियलोयाण सद्धिन्नसुहवासए ।
 कम्मवणगहणयं सोसिउं सिद्धए, मंगलं बीययं हुंतु तुह सिद्धए ॥८१५॥
 कुमयवाईकुंरंगाण पंचाणणे, ससमयपरसमयसम्भावपंचाणणे ।
 पंचहायारपडिपुन्नसंधारए, मंगलं तइययं हुंतु तह सुहयरे(सुयहारए ?) ॥८१६॥
 सव्वसाहूण उवएससंपदा(संदा ?)यए, उभयसुत्तत्थकयपवरसज्झायए ।
 धम्मसुक्काण झाणाण सग्गा(ज्झा)यए, मंगलं चोत्थयं हुंतु वज्झायए ॥८१७॥
 नाणतवचरणसम्मत्तगुणपुन्नए, कोहमयमाणभयलोहसंचुन्नए ।
 सयलसावज्जवावारकयसंवरे, मंगलं पंचमं हुंतु तह मुणिवरे ॥८१८॥

ईय पणिवयासुरिंदिंदगोविंदनाइंदराइंदचंदेहि पायारविंदाण पंचाण एयाण तेलोक्क-
 साराण वावारमुक्काण जीवाण बंधूण जे पायवीढं नमंते सया, विमलवरनाणजुत्ताण

१. “इय०” इत्यारब्ध “मंगलं पाविरे” ॥ इत्येदन्तपाठात्मको गद्यविभागो दण्डकछन्दोऽव-
 गन्तव्यः ।

चारित्तधारीण सद्दंसणुप्पत्तिसुन्नायसद्धस्स तत्ताण भव्वारविंदेक्कसंबोहसूराण संसाररुंदं समुद्दं जिणाणत्थ संतिन्नयाणं सुहेणं सया ।

तह य विमलमोक्खमगं गयाणं च सन्नाणजुत्ताण कम्मण मुक्काण सिद्धाणणंताण आयारधारीणुवज्झा[य]याणं च सज्झायवंताण साहूण संसारमोहेण संचत्तयाणं तहा, विगयमव(य)कलंका होइऊणं सुराणं ब(हू?)तेयवंता सया देवलोएसु देवंगणासंघ-सब्भावसोक्खं चिरं पाविऊणुत्तमं ते पुणो सव्वकल्लाणजुत्तं सुहं मंगलं पाविरे ॥छा॥

इय मंगलमालियमुत्तमयं परमेट्टिमहामुणिकित्तणयं ।

गुणपालण खंतिसमाहिरया पढिऊण सिवं अह जंति नरा ॥८१९॥

एयाइं मंगलाइं पुरिसोत्तमथुइपहाणवयणाइं ।

भवियाणं हुंतु सया जिणभणियत्थं सुणंताण ॥८२०॥

॥ इइ महामुणिगुणपालविरइयं जंबुणामचरियं समत्तं ॥



परिशिष्टानि

[१]
 प्रथमं परिशिष्टम्
 जंबुचरिये

उद्धरणानामकाराद्यनुक्रमः ॥

पद्यांशः	श्लोक-पत्राङ्कः	पद्यांशः	श्लोक-पत्राङ्कः
अ			
अच्चणमवि बहुभेयं	६८५।२४७	अन्ने वि विसममहियल-	९३।१९६
अच्छंतु तिरियनरएसु	११५।१५६	अन्ने वि सिसिरमारुय-	९१।१९६
अच्छउ ता अपुणागम-	२०२।१००	अन्ने विरइयफुंफुय-	८९।१९६
अणसणमूणोयरिया	२८।१३	अन्नेण गहियमुक्का	१७।१७५
अणुपुंखमावहंता [य]	४३।१४६	अबुहो जणो न याणइ	५४।११६
अणुरायनेहभरिए	१३१।५५	अमयं व गिण्हह इमं	१०५।१९७
अणुसोयइ अन्नजणं	५८।१५१	अवरे उण नाणेणं	२९८।२१३
अत्थस्स कारणट्ठा	१६।१७५	अवरे जाणंत च्चिय	२९४।२१३
अत्थो होइ अणत्थो	९४।८८	अवरे तवगारविया किर	२९९।२१४
अथिरं जीयं रिद्धी य	११०।३९	अवरे बुद्धिविहूणा	२९३।२१३
अथिरा चंचलराया	२०१।१००	अवरे सामन्नं चिय	२९५।२१३
अथिरा चवला दुट्ठा	६१।११६	अवि उट्ठं चिय फुट्ठंति	१९।१०७
अथिराण चंचलाण य	११८।४०	अवि चंडवायवीईपणोल्लिया	५४९।२३५
अधुवं चलं असारं	५०।११५	अविरयडज्झंतागरु-	८८।१९६
अन्नह परिचिंतिज्जइ	९५।८८	अविराहियसामन्नस्स	७०९।२४९
अन्नह परिचिंतिज्जइ	३।१०३	असढहियओ सलज्जो	२७।१८१
अन्नाण होइ संका	२९२।२१३	असढहियओ सलज्जो	४७।१८३
अन्नाणंधो जीवो	६८।११९	असुइमलरुहिर-	२०।१८९
अन्ने भवसयदुलहं	२९६।२१३		
		आ	
		आहारविरहियस्स य	२५।१७२

आहारो तणुमूलं	२५०।७१	कंममओ संसारो	४९।११५
	इ	कारुण धम्मबुद्धी	१३२।१९९
इय जीवियधणजोव्वण	७१।४८	कामिणिखंधविलगो	५५।३१
इय बहवे जाणंता	३००।२१४	कालन्नुओ विणीओ	३३।१६८
इह लोगंमि य अइदुक्ख-	७१।१९४	किं एत्तो पावयरं	१००।१२३
	उ	किं कट्टं अन्नाणं	६९।११९
उक्कत्तिऊण कवयं	४९।१८३	किं न करेज्ज अकज्जं	७।१८७
उवयारसहस्सेहिं वि	३४।१८१	कुसकोडिबिंदुसंठिय	७०।४८
	ए	कुसुमाहरणविलित्तं	६८६।२४७
एक्कसमएण सोक्खं	३४५।२१७	को जाणंतो रायं करेइ	७४।१९४
एक्काण निसा निज्जइ	१०१।१९७	को जाणइ हिययगयं	१४।१६५
एक्काण पाणभोयण-	९९।१९७	को नाम नरो चुंबे	१८।१७५
एक्काण वित्थरिज्जइ	९८।१९७	को नेच्छइ संजोगो	१०३।३८
एक्के कंचणपडिबद्ध-	९२।१९६	कोहो माणो माया	११९।४०
एक्के चंदणमयनाहि-	९७।१९७		ख
एक्के दोघदुघडानि[व]हा	९६।१९७	खइयं वरं विसं पि हु	१२५।१९९
एक्के धवलहरोवरि	९०।१९६	खरपवणविहयतामरस-	६७।४७
एक्के नयणं तच्चिय	२९१।२१३	खंती य महवज्जवमुत्ती	२५।१३
एक्के पट्टंसुयविवह-	१००।१९७	खंती गुत्ती (?) य महवज्जव	१८४।६५
एक्के पूरिंति मणोरहाइं	९४।१९६	खीरोयर्हिमि य तहा	७८७।२५७
एक्को वि नमोक्कारो	६९०।२४७		ग
एत्थ उ परिणामो	५७।८५	गलइ बलं उच्छाहो	४।१७९
एत्थ जम्हा दयागुण-	१२४।१९९	गंठि त्ति सुदुब्भेओ	५९।८४
एमेव महामोहेण	४६।११५	गंगागंमं न याणइ	७१।१२०
एयस्स पुण निमित्तं	२०२।२०५	गुणसुद्धियस्स वयणं	२२।१०
एयाइं असिक्खियपंडियाइं	१०।१८७	गुरुथेरतवस्सिगिलाण-	७४९।२५२
एयाइं ताइं चिरिचंतियाइं	१५२।६२	गुरुसिणेहबद्धबंधुयण-	११६।२१
एयाण कमलदलए	२४।१७६		घ
एवं अपरि(प्पडि)वडिए	९१।८७	घणघाइचउक्कयंमि	२७०।२११
एवं च एत्थ बहुसो	२४।१८९	घणविवरंतरखणदिट्ठ-	६९।४८
	क	घरवासे वामूढो	१११।३९
कडुयं पि भन्नमाणो	३४।१६८	घेप्पइ जलंमि मच्छे	२८।१४४

च		जं	
चउत्थी उ बला नाम	३२१।२१६	जं मारेसि रसंते	११६।४०
चच्चरनिरंतरुब्भड-	३१६।२१५	जं वुत्थो नवमासे	११४।३९
चत्तारि परमंगाणि	५४५।२३५	जं समयनाभिपुव्वं	३२१।२१५
चेइयसाहुसमीवे	६९६।२४७	जं हरसि परधणाइं	११७।४०
[चेईय]कुलगणसंघ-	७४८।२५२	जं होइ जियाण दुहं	११६।१५६
चोप्पपडयं (?) मसिमंडियं	१५।१७५	जा विविहकलाकोसल्ल-	३२०।२१५
चोल्लापासगधन्ने	२८०।२१२	जायमेत्तस्स जंतुस्स	३२६।२१६
		जायाण वि जम्मजरा	११७।१५६
		जाव य न दिंति हिययं	६।४१
छ		जिणवंदणं कुणंतो	६९२।२४७
छट्ठी ओम(उण?)हायणी	३३१।२१६	जिणवंदणच्चण-	७४५।२५२
		जीयं जलबिंदुसमं	५६।११६
ज		जीयंमि चले पेमंमि	५३।११६
जइ जाणउं खसुहं माणउं	८१।३५	जुत्तीखमं च वयणं	२६९।२११
जइ वि धमिज्जइ कज्जे	३।१५८	जे चोरसुमिणसउणा	१३०।१९९
जत्तो जत्तो गम्मइ	५१।११६	जे वि समसहियनिद्धनिम्मल-	३१९।२१५
जम्मण-मरण-परंपर-	५२।११६	जे सव्वसत्थसललिय-	३१८।२१५
जरमरणरोगउं	१०४।१९७	जो चिंतिज्जइ	४७।११५
जलनिबहुल्लसंतडंडीरय-	११३।२१	जो पुण जाणंतो	२५।१८९
जलबुब्बुयंमि जीए	२०५।१००	जो समो सव्वभूएसु	६९८।२४८
जललवतरले विज्जुलय-	२०३।१००	जोणीसहस्साणि बहूणि गंतुं	२८५।२१२
जस्स किर नत्थि पुत्तो	८।४२	जोव्वणयं पि रूवलायन्-	११४।२१
जह तिमिररुद्धदिट्ठी	५५७।२३६		
जह नाम कोइ मेच्छो	३६५।२१९	झ	
जह समिला पब्भट्ठा	५४७।२३५	झाएइ वंदणत्थं	६९४।२४७
जह सयलजलियकाणाण	५७४।२३७		
जं कल्ले कायव्वं	२०४।१००	त	
जं गयवरकंठ(वरघडगल)-	५३।३१	तइयं च दसं पत्तो	३२८।२१६
जं चिय कुंकुमचंदण-	३१०।२१४	तह सत्तुमित्तघरवास-	५७५।२३७
जं जेण जत्थ जइया	५४।१५०	तं पत्ते य समाणे	५२।८४
जं जेण जत्थ जइया	६५।११८	तं चेव इमं देहं	३१५।२१५
जं जेण पावियव्वं	४५।१४७	तं पि जराअक्कंतं	३१३।२१५
जं नेउरसणखलन्तहार-	५४।३१	ता उज्झिऊण एयं	१२१।१५६
जं पि सुरयंमि सोक्खं	११८।१५६	ताओ वि तस्स जायाओ	७८८।२५७

ताणेक्केणं मुक्कं	१८१२०३	निहाविगहापरिवज्जिण्हि	१८१०
तिणमेत्तं पि हु कज्जं	७१४१	निरुवमगुणं निहाणं	६८८२४७
तुरमाणेहिं न सक्का	३११६८	निसि-दियहतिक्खदंतं	५५११६
	थ		प
थरहरइ सिरं कंपंति	३१४२१५	पच्चक्खं चिय दीसइ	३०९२१४
	द	पज्जालितं पईवं	६८४२४६
दट्टूण पाणनिवहं	६१८५	पडुपडहवीणमदल-	५१३१
दट्टूणं च सहीए	२०१६५	पयईय व कंमाणं	५८८५
दिट्ठो वि अदिट्ठसमो	१९८१९८	परदारं चिय अइभीम-	७०१९४
दीसंति मणहिरामा	५०३१	परिरुंभइ सोत्तपहे	१३१९८७
दुक्खं नज्जइ नाणं	३९०२२१	पवणाहयजलकल्लोल-	६६१४७
दुक्खं नज्जइ नाणं	७०११९	पवणुद्धयजलहितरंग-	६८१४७
दुगंधं बीभच्छं	१२८१९९	पहुमित्थत्थे(?) जीयं	२१७२०७
दुज्जणजणवयण-	३५१०९	पंचमी उ दसं पत्तो	३३०२१६
देसे कुलं पहाणं	५८२२३८	पंचासवा विरमणं	३०१३
	ध	पंचासवाणि(ण) विरई	१८५६५
धणिय कुलीणी घरि सरइ	१५१८०	पंथसमा नत्थि जरा	२८१९८१
धम्मो अत्थो कामो	२०६१०१	पंथसमा नत्थि जरा	७६१९५
धम्मो च्चिय चारभडो	६३१८४	पामागहियस्स जहा	११९१५६
धवलहरतुंगतोरण-	५२३१	पायच्छित्तं विणओ	२९१३
	न	पिंडविसोही समिई	१७७६४
न य नाणदीवरहिओ	३१८	पुव्वंते होज्ज जुगं	५४८२३५
न य हुंति ताण भोगा	२९७२१३	पुव्वकयकंमकंदुल्लण	६७११८
न वि अत्थि माणुसाणं	३४८२१८	पुव्वपुरिसाणुचरियं	४१९७२
न शक्यं त्वरमाणेन	३२१६८	पुव्वभवकम्मकंदुल्लण	७७३५
नक्खत्तेसु पसत्थे	७८६२५७	पूएउं जिणमेयं	६९५२४७
नरविबुहेसरसोक्खं	५९८५		ब
नवमासजणणियउये	२३१९९	बीयं च दसं पत्तो	३२७२१६
नवमी उ मुम्मुही नाम	३३४२१६	बोहिज्जंति पहाए	१०२१९७
नाणं च चरणसहियं	४१८		भ
नाणं पगासगं सोहओ	५१९	भयवं पि जंबुणामो	७८५२५६
नारय-तिरिय-नगरभवेसु	६०८५	भूएसु जंगमत्तं	५८१२३८

भेसज्जं पि हु मंसं देई	१२७।१९९
म	
मणपरमोहिपुलाए	७८४।२५६
मन्नइ तमेव सच्चं	६२।८५
मन्नइ य ताणसमाणं	१८।१०७
महरिहभवणरयणचामीयर-	११५।२१
मंसं पुण पयडं चिय	१३३।१९९
मंसंठ्ठिरुहिरमज्जावस-	७३।१९४
मंसस्स वज्जणगुणा	१३१।१९९
मंसासिणो नरस्स हु	१२६।१९९
माणुसत्ताओ पब्भट्ठो	२७३।२११
माणुस्स-खेत्त-जाई-	२८३।२१२
मासाई सत्तंता	२४१।६९
मिच्छादंसणमहणी	६८२।२४६
मुत्तपुरीसाईयं सेफा	३१२।२१५
मोहणवेळ्ळि व्व इमं	६०।११६

र

रत्तंतधवलपमहल-	३१७।२१५
रमयंति विरूवं पि हु	३०।१४४
रमसु जहिच्छं सुपुरिस !	१०२।३८
रयणायरं पि पत्तो	२८७।२१३
रयणारे व्व नदुं(टुं)	१०६।१९७
रसरुहिरमंसमेओ	३०८।२१४
रागाओ दोसओ	२६८।२११
रूवेण किं गुणपरक्कमवज्जिएण	२१८।२०७
रे जीव ! संपयं चिय	११५।३९
रोयाविति रुयंति य	११।१८७
रोविति रुयावंति य	१९।१४२

ल

लहिऊण दुल्ल्हं चिय ११३।३९

व

वच्चइ जत्थ अउन्नो ७६।३५

वडवीय-सुरगिरीणं	३४६।२१७
वयणं वाहाजुयलं	३२२।२१५
वयसमणधम्म-	१७६।६४
वसणाविओओ इयरो वि	२९३।७६
वसणावडिओ वि नरो	६६।११८
वसहिकहनिसेजिं(जिंज)दिय-	३२।१३
वंचिज्जइ एस जणो	१२०।१५६
वंदणरिहंताणं	६९३।२४७
वंसि चडंति धुणंति कर	६७।३३
वाही इट्ठविओगं	११२।३९
विज्जुलया इव चवला	५९।११६
विमलगुरुभत्तिनिब्बर-	६८९।२४७
विसमसहावो मयणो	१८।१४२
विसयविसं हालहलं	२००।१००
वेसं पि सिणेहेण व	२९।१४४

स

सइ सासयंमि थामे	२४।८२
सक्का सीहस्सवणे	४४।१४७
सच्चं हरंति हिययं	१०६।३८
सच्चं हीरइ हिययं	१०४।३८
सच्चं हो हरइ मणं	१०५।३८
सज्झायझाणविणया	६९१।२४७
सत्तमिं च दसं पत्तो	३३२।२१६
समभावो सामइयं	६९७।२४८
सम्मत्तंमि उ लद्धे	९०।८७
सम्मत्तदायगाणं	३६।६
सम्मत्तम्मि उ लद्धे	३७।६
सयणेण धणेण व	४८।११५
सयलम्मि वि जीवल्लोएँ	३९।६
सयलावायविमुक्कत्तणओ	६८७।२४७
सव्वजलमज्जणाइं	१२९।१९९
सव्वनरामरसोक्खं	३४४।२१७
संकुइयबलीचम्मो	३३३।२१६

संकोडियंगमंगो	२११८९	सुयणो न रूसइ च्चिय	१९१४
संपइ बालत्तणए	२२१८९	सुयणो सुद्धसहावो	३४१०९
संमत्तं उवसममाइएहिं	५६८५	सुगणसुहं समत्तं	३४९१२९८
संसारम्मि असारे	१०९१३९	सुनरनिरयतिरिक्खेसु	११४१५६
सा सामग्गी कत्थ व	२५७१७३	सुरयं च रागजणणं	१३४१२००
सिद्धस्स सुहो रासी	३५०१२१८	सो अत्थो जो अ(ह)त्थे	२६१९८१
सिंभो लाला वयणे	३१११२१५	सो अत्थो जो हत्थे	४६१९८२
सीले खाइयभावो	५८४१२३८	सो च्चिय कीरइ मित्तो	४५१९८२
सुणणं दंसणं चेव	६८३१२४६	सो य तवो कायव्वो	७२८१२५०
सुनिबद्धबंधणाइं	६५१९९४	ह	
सुयणस्स विहलियस्स वि	४४१९८२	हा हा जीव ! अलज्जिर !	४३१४५
सुयणस्स विहलियस्स वि	२९४१७६	हीणभिन्नस्सरो दीणो	३३५१२१६
सुयणो न याणइ च्चिय	३७१९६९	होइ बले वि य जीयं	५८३१२३८



[२]
द्वितीयं परिशिष्टम्
जंबुचरिये

विशेषनाम्नामकाराद्यनुक्रमः ॥

विशेषनाम	पत्राङ्कः	विशेषनाम	पत्राङ्कः
अ		उसहदत्त [[सेट्टि]	७४, ७५, ७९,
अज्जवरट्टुड [कुलपुत्त]	२४, २८	उसभदत्त	८०, १०७
अणाढिअ [[जक्ख]	७४, ८०, १०५,	ए	
अणाढिय	२२६, २२७	एखय [खेत्त]	९५
अभयसागर [आयरिअ]	४८	क	
अरिजयपुर [[नयर]	१७८, १७९	कणगमाला [इब्भपत्ती]	१०२
अरिजयपुर		कणयकेउ [राया]	५३, ६०, ६१
अवंती [विसय]	२०६	कणयवई [[इब्भपत्ती	५३, ५७, ५८,
अवराइअ [राया]	१८५	कणगवई [-रायधूया]	५९, ६०, १०२
असणिघोस [विज्जाहरनरिद]	१५२	कणयसिरी [[इब्भधुया	१०२, १७२
असोग [वणिया]	१४०, १४१	कणगसिरी [-जंबुपत्ती]	
अहया [चक्कयरधूया]	१८६	कन्नकुमारी [रायधूया]	१८५
अंगा [जणवअ]	१३७	कमलप्पहा [देवी]	२०६
अंबाडय [गाम]	१३३	कमलवई [[इब्भधुया	१०२, १७८
आ		कमलावई [-जंबुपत्ती]	
आवया [जन्नपत्ती]	३३	कंचणपुर [नयर]	९२
उ		कामपडाया [गणिया]	१७४
उज्जेणी [पुरवरी]	२०६	कलिंग [[विसय]	१३३, १५८, १७३
उसह [नाह]	२५६	कलिंगा	

कुबेरदत्त [इब्भ- सहोयर]	१०२, ११७, ११८, ११९, १२०, १२२
कुबेरदत्ता [भइणि]	११६, ११७, ११८, ११९, १२०
कुबेरसेण [इब्भ]	१०२
कुबेरसेणा [गणिया]	११७, ११९, १२०, १२२
कुंथु [जिण]	९२
कोणिय [नरिंद]	२२२, २३२, २३३, २३५, २३९
ख	
खिइपइडिय [नयर]	१७४, १८०
ग	
गयणवल्लह [विज्जाहरनयर]	१५२
गंगिला [सत्थाहवहू]	१२३, १२४
गुणपाल [गंथकर्ता]	७, २२, ४०, ७७, १०१, ११०, १२७, १३१, १३६, १५७, १६३, १७१, १७७, १८४, २५७, २५८, २६०
गुणसिलअ [चेइअ]	८१, ८९
गुत्तमई [इब्भ]	७५
गेवेज्ज [देवलोग]	७७
गोयम [गणहर]	२४०
च	
चेल्लणा [देवी]	१२
चंदकिरण [अज्जाण]	५३
ज	
जउणा [नई]	११७, १२०
जमुणा	
जयसेणा [इब्भपत्ती]	१०२
जसमित्त [सावग]	७९, ८०
जसोहरा [रण्णी]	४१, ४२

जंबू [दीव]	१०, ४१, ७०, ७४, ७६, ७९, ८०, १०५, १८९, २२७
जंबू [दुम]	७९
जंबू [सेट्टिपुत्त- मुणि- चरमकेवली]	५, ७, २२, ४०, ७७ ७९, ८०, ८१, ८२, ८८, १०१, १०२, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११०, १११, ११५, ११७, १२२, १२३, १२७, १२८, १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३६, १३७, १४६, १५१, १५८, १५९, १६३, १६४, १६६, १७१, १७२, १७३, १७७, १७८, १८०, १८४, १८५, १८८, २०२, २०५, २०६, २१७, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७, २२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३९, २४०, २४३, २५५, २५६, २५७, २५८, २६०
जंबुद्दीवन्नत्ती [गंथ]	७९
जंबू [देवया]	७९
जिणयत्त [इब्भसुय]	७५
जिणयास [सावग]	१४७, १४८, १४९, १६६, १६७, १६९, १७०
जियसत्तु [नरनाह]	१६६, १६७
त	
तामलित्ती [नयरी]	१२३, १२४, १६९
द	
दढधम्म [सावग]	७१
दत्तसिरी [इब्भधुया-जंबुपत्ती]	१०२, १३२, १३६
दमघोस [गुरु]	१२२
दाहिणभरह [खेत्त]	१५२

दुमुह [पुरिस]	१७	पास [जिण]	११७
देवदिन्न [माहण]	१७९	पियंगुसामा [महादेवी]	५३, ६०
	ध	पुक्खलावई [विजय]	४१, ५१
धण [सत्थाह]	२०६, २०७	पुंडरिगिणी [नयरी]	४१, ४८
धणसिरी [इब्भपत्ती]	१०२		ब
धारणी [सेट्टिपत्ती]	७४, ७९, १०२,	बहुला [सत्थाहभज्जा]	१२३, १२४
धारिणी	२३९	बंगा [जणवअ]	१७२
	न	बंभलोय [देवलोय]	७३
नम्मया [नई]	३२	बारवई [पुरवरी]	२१८, २१९
नंदणय [गाम]	१२८		भ
नाइला [धूया-पत्ती]	२५, २८, २९, ३०,	भह्वालंद [गाम]	१७२
	३२, ४०	भरह [खेत-	१०, ३२, ७०, ७४,
नागदत्त [कुलउत्त]	२५, २९	भारह वास]	९५, १३७, १५८, १६४,
नागसम्म [चक्कयर]	१८६		१७२, १७३, १७८, १८०,
नागसेणा [इब्भधुया-जंबुपत्ती]	१०२, १६४		१८५, १८९, २२९, २५३, २५५
नेमि [जिणंद]	१०३	भरुयच्छ [पुर]	३२
	प	भवदत्त [पुत्त]	२४, २५, २६, २७, ४१
पउमरह [नरनाह]	५२, ६१, ७१,	भवदेव [पुत्त]	२४, २५, २६, २७, २९,
	२०६		३०, ३२, ३८, ५१
पउमसिरी [इब्भधुया-	१०२, १३७,	भागीरही [सरिया]	१३२
पहसिरी [जंबुपत्ती]	१५०, १५७		म
पउमसेणा [इब्भधुया-जंबुपत्ती]	१०२, १५८	मगह [जणवअ]	१०, २४, २५, ७०,
पउमावई [इब्भपत्ती]	१०२	मगहा	८१, १२८, २२९
पज्जुन्न [सूरी]	२५७, २५८	मणोरह [खड्डोलअ]	२०८
पसन्नचंद [रायरिसि]	१५, १६, १७,	मयणमंजूसा [वयंसिया]	५७, ५८, ५९, ६०
	१८, ७६	मयणा [चेडी]	१९०, १९१, १९२,
पहव [रायकुमार]	१०६, १०७, १०८,	मयणिया	१९३
	१०९, ११०, ११४, ११५, ११७,	मरुदेवी [सामिणी]	२५६
	१२२, १२३, १२६, २०२, २०५,	महावीर [जिण]	३, ७९, २५६
	२०६, २१९, २२१, २३३, २३५,	महुरा [नयरी]	११७, ११९, १२०
	२३९	महेसरदत्त [सत्थाहसुय]	१२३, १२४, १२५
पहाकर [वयंस]	५६, ५७, ५८, ६९, ६०	मायंदी [पुरवरी]	१६४
पहु [रायकुमार]	१०६		

मेहरह [विज्जाहरपुत्त]	१५२, १५३, १५४, १५५
य	
युगादि [पढमजिण]	३
र	
रयणदीव [दीव]	२०६, २०७
रायगिह [पुर]	१०, ७८, ८१, २२९
रेवइ [भारिया]	२४
रेवा [नई]	१३१
रेवाइच्च [माहण]	३३, ३४
ल	
लच्छिन्नंदण [उज्जाण]	६१
लच्छिम्मई [भारिया]	२५
ललियंग [सत्थवाहपुत्त]	१९१, १९२, १९६
ललिया [वरदेवी]	१९०, १९३
लाड [देस]	३२
लायन्नवई [गणिया]	९०
व	
वइरदत्त [चक्कर]	४१, ४२, ४९, ५०, ७१
वडवद्द [गाम]	१५८
वणमाला [अग्गमहिंसी]	५२
वद्धमाण [जिण]	२४, ७५, ७९, २२३, २५६
वलाहग [सेल]	२५५
वसंतउर [नयर]	९०, १५२, १६६,
वसंतपुर []	१६८, १८९
वसुपाल [इब्भसुय]	१३८
वसुपालग [इब्भ]	१०२
वसुसेण [इब्भ]	१०२
वाणारसी [नयरी]	१८५, १८६
विजय [खेत्त]	९५
विजयउर [पुर]	१०६

विजयसिरी [इब्भधुया-जंबुपत्ती]	१०२, १८५
विजयसेण [इब्भपत्ती]	१०२
विज्जुमाली [देव- विज्जाहरपुत्त]	२३, ७३, ७६, १५२, १५३, १५४, १५५
विणयसिरी [इब्भपत्ती]	१०२
विमला [नई]	१३८
विलासवइ [इब्भसुयभज्जा]	१३८, १३९, १४०
विंझ [गिरि]	१०७, १५९, २१८, २१९
वीयसोया [नयरी]	५१
वीर [जिण]	१२, १५, २२७
वीरभद्द [आयरिअ]	२५८
वीससेण [र्नो]	१०६, १०८
वेभारगिरि [गिरि]	७९
वेयड्ड [पव्वय]	१०, १५१, १५३, १५४
वेसमणदत्त [इब्भ]	१०२
स	
समुद्द [सत्थाह]	१२३, १२४, १९१
समुद्ददत्त [इब्भ]	१०२
समुद्दपिअ [इब्भ]	१०२
सयाउह [नरनाह]	१८९
सायरदत्त [रायपुत्त- आयरिअ-इब्भ]	४२, ४३, ४४, ४७, ४८, ४९, ५०
	६१, ६२, ७१, ७३, १०२, १३८
सिरिमई [इब्भपत्ती]	१०२
सिरिसेणा [इब्भभज्जा]	१३८
सिवउरी [नयरी]	२०७
सिवकुमारो [रायकुमार]	५२, ५३, ५६, ५७, ५८, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ७१

सिंधुमई [इब्भधुया- जंबुपत्ती] १०२, १२८, १३१, २१७	सेणिअ [राया] १२, १४, ७४, ७५, सेणिय ७६, ७८, २२७
सीया [नई] ४२	सोमदत्त [माहण]
सीहनिवास [गाम] १७३	सोमसिरी [चक्रयरभज्जा -भट्टिणी] १७४, १८६
सुगाम [गाम] २४, २५, २८, ७०	सोरिय [नयर] ११७, ११८, १२०
सुद्धिअ [आयरिय] २४	सोरियअ
सुबुद्धि [मंती] १८०	सोलग [पुरिस] १७३, १७४
सुमुह [पुरिस] १७	सोहम्म [कप्प] ४०, १४८
सुहंम [सामी] ७९, ८१, ८९,	सोहम्म [कप्प] ५१
सुहम्म २२९, २३३	



[३]

तृतीयं परिशिष्टम्

जंबुचरिये

अपभ्रंशश्लोकानामकाराद्यनुक्रमः ॥

पद्यांशः	श्लोक-पत्राङ्कः
कद्दल्लु जइ पउमनालु	६ / ७८
गइयह मुइयह दड्डियह	१२ / १८७
जइ जाणउं रइसुहं माणउं	८१ / ३५
डहणसीलु जइ तत्थ पर जलणु	७ / ७८
ता खलइ वलइ झूरइ	२५ / २७
ता हसइ रुयइ झिज्झइ	२६ / २७
धणिय कुलीणी धरि सरइ	१५ / १८०
निन्नेहो जइ खलो जि तर्हिं	५ / ७८
सा मुद्धा तार्हिं देसडइ	२७ / २७
वंसि चडंति धुणंतिकिर	६७ / ३३



[४]
चतुर्थं परिशिष्टम्
जंबुचरिये
सुक्तीनामकाराद्यनुक्रमः ॥

सुक्तिः

अर्गिं कीडपयंगा पडन्ति अन्नाणदोसेणं ।
 अन्नाणंधो जीवो न मुणइ कज्जं अकज्जं वा ।
 असहायस्स न सिद्धी पुन्नब्भहियस्स सुद्धु वि पियस्स ।
 आसाबंधो च्चिय माणुसस्स परिक्खए जीयं ।
 कयविप्पिए पियं जे करेति ते दुल्लहा हुंति ।
 किं किलि(ल) तस्स न सिद्धं सुसहायं जस्स माणुस्सं ? ।
 कुमईसु मोहियमणो विवरीओ सव्वहा लोओ ।
 को रमइ जाणमाणो इत्थीदेहंमि दुहमूले ।
 चंदस्स अमयसरिसे किरणे नलिणी न इच्छेइ ।
 जइ डसिओ सप्पेणं किं दिज्जइ तस्स विसपाणं ।
 जं अप्पणा विरइयं तं भुंजसु संपयं जीव ! ।
 जं जं चिय जेण फलं तं तं चिय विबुहपरिहरियं ।
 जायंमि पलीवणाए तणपूलं खिवसि तं मुद्ध ।
 जलिए हुयासणंमी, कह पक्खित्तं घियं एयं ।
 जो उण सहायसहिओ किं तस्स न एत्थ भण सिद्धं ।
 तं तं कुणंति बाला जं जं चिय धम्मपडिकूलं ।
 तं रूवं जत्थ गुणा, तं विन्नाणं जहिं धम्मा ।
 ताव पिओ होइ जणो जाव न वसणं समेइ मज्झेण ।
 तुरिया धम्मस्स होइ गई ।

श्लोक-पत्राङ्कः

६८।११९

६९।११९

४१।११९

२८।२८

३३।१०९

४१।११९

११४।१२६

७२।११४

४६।७

८२।१२१

६९।११४

१०१।१२३

७९।१२१

३४।१६९

५८।११२

१२१।११९

४५।१८२

६४।११४

६३।४७

दुद्रुकलत्तं व खलं विवज्जणीयं सयाकालं ।	१०१४
न हु च्चिंतिण्णं फिड्डं तं दुक्खं जं पुरा रइयं ।	३८२१२२०
नाणेण किं बहुजणाणुवगारणं, मित्तेण किं वसणकज्जपरंमुहेण ।	२१८१२०७
निययनिडाले दुक्खं, सुहं व तं को समुप्फुसइ ।	७७१३५
पज्झरइ राहुमुहसंठिओ वि अमयं चिय मयंको ।	३५११०९
पंकपु(प)डियं गइंदं, को कड्डइ वरगयं मोत्तुं ।	२९४१७६
पाविज्जइ अच्चंतं पुन्नेहिं विणा न माणुस्सं ।	३८११९०
पियसंगो जेण कओ, दुक्खाण समप्पिओ अप्पा ।	६६११९४
पुव्वकयाओ न चुक्कसि अप्पाणं खायसे जइ वि ।	३८३१२२०
बालो वि सुइसयन्नो आएओ होइ बुद्धिमंताण ।	५११८६
भावियमई वि जीवो विसएसु विरज्जए दुक्खं ।	७०१११९
मरणस्स वि गरुययरं जं जस्स पियं पराहीणं ।	४०११९१
मम्मानेसणपउणं दुग्गेज्जं चेव खलहिययं ।	१११४
मित्तं पि हवइ सत्तू आसन्ने वसणकालंमि ।	९४१८८
रविसंगेण पजायइ कसिणं पि हु निम्मलं गयणं ।	४५१७
रुहिरविलित्तं वत्थं किं सुज्जइ सोणिण्णेव ।	८१११२१
रूवेण किं गुणपरक्कमवज्जिण्णं, अत्थेण किं किविणहत्थगएण लोए ।	२१८१२०७
वसणंमि समावडिण्णं सच्चं विहडंति पेमाइं ।	६५११९४
वसणंमि समावडिण्णं किं कीरइ सुट्टु वि पिण्णं ।	६४११९४
विद्धो वि होइ हेओ सत्थत्थविवज्जिओ पुरिसो ।	५११८६
विहिविलसियस्स व खलस्स पुणो किल को न बीहेइ ।	९१४
वेसायणो व पिसुणो न सव्वहा जाइ सब्भावं ।	१३१४
सप्पुरिसपत्थणा जे, करिन्ति ते दुल्लहा हुंति ।	४९११८३
सीहं मोत्तूण पइं किं सीही जंबुए रमइ ।	८११०४
सुयणा सहावउ च्चिय परदोसपरम्महा जेण ।	१८१४
सुयणो सरलसहावो, अप्पाणं पिव परं पि मन्नेइ ।	३६११६९
सुयणो न याणइ च्चिय, खलस्स हिययाइं हुंति विसमाइं ।	३७११६९
सूरंसूणं पुरओ खज्जोओ कुणउ किं वरओ ।	४४१७
सो अत्थो जो हत्थे, तं मित्तं जं निरंतरं वसणे ।	४५११८२



[५]

पञ्चमं परिशिष्टम्

जंबुचरिये

प्रशस्तीनामकाराद्यनुक्रमः ॥

पद्यांशः

अन्ने वि जस्स बहवे सीसा जइयणगुणेहिं परिकलिया ।
गुणपालणेक्कनिउणेण साहुणा पवयणत्थभत्तेण ।
जस्स य सीसो पयडो पयडियमू(गू)ढत्थसत्थपरमत्थो ।
जो दंसणनाणचरित्तसीलतवसंजमेसु कुसलमई ।
तस्स य पयंमि जाओ आयरिओ वीरभद्द नामो त्ति ।
भव्वकुमुओहपडिबोहपच्चलो पावतिमिरनिट्टवणो ।
संदंसणे य जस्स य परिमुइओ होइ जो अभव्वो वि ।
सेसेण व भुवणभरं धरियं लीलाए नियगणं जेण ।

श्लोक-पत्राङ्कः

८०२-२५८
८०३-२५८
८०१-२५८
७९७-२५८
७९८-२५८
७९६-२५८
८००-२५८
७९९-२५८



[६]

षष्ठं परिशिष्टम्

जंबुचरिये

कथानामकाराद्यनुक्रमः ॥

कथा	विषयः	पत्राङ्कः
इङ्गालदाहकदृष्टान्तः ।	दत्तश्रियं प्रति जम्बूकुमारेण समुपदिष्टः ।	१३३-१३६
कञ्चनपुरवास्तव्यपञ्चसुहृदुदाहरणम् ।	सर्वविरत्यनुमतिददतोर्मातापित्रोः पुरो जम्बूकुमारेणाख्यातम् ।	१२-१८
कर्षककौटुम्बिकोदाहरणम् ।	अविद्यमानवस्तुप्राप्त्यर्थं विद्यमान- विजहितुकामविषये सिन्धुमतीप्रतिपादितम् ।	१२२-१२९
कुबेरदत्तादृष्टान्तः ।	प्रभवं प्रति जम्बूकुमारेणाख्यातः संसारसारताविषये ।	११६-१२२
ग्रामीणतरुणोदाहरणम् ।	खरपुच्छग्राहकगामबोद्रविषये कनकश्रीप्रतिपादितम् ।	१७२-१७३
जात्यश्वदृष्टान्तः ।	नागसेनां प्रति जम्बूकुमारेणोक्तः ।	१६६-१७१
त्रिपुरुषदृष्टान्तः ।	प्रभवं प्रति जम्बूकुमारेण कथितः ।	२०३-२०४
त्रिमित्रमन्त्र्युदाहरणम् ।	कमलवतीं प्रति जम्बूकुमारेणोदाहृतम् ।	१८०-१८४
द्विजकन्यादृष्टान्तः ।	कल्पितकथाप्रतिपादनविषये विजयश्रीप्रतिपादितः ।	१८५-१८८
नूपुरपण्डितादृष्टान्तः ।	इभ्यस्त्रुषाविलासवतीवर्णनयुक्ताऽप्राप्तेच्छु- प्राप्तपरिहारकविषये पद्मश्रीप्रतिपादितः ।	१३७-१५१
प्रसन्नचन्द्रकथा ।	श्रेणिकराजकृता प्रसन्नचन्द्रराजर्षिसम्बन्धिनी पृच्छा तस्या उत्तरञ्च ।	१५-२२
मधुबिन्दुदृष्टान्तः ।	सांसारिकसुखभोगोपदेष्टारं प्रति जम्बूकुमारेणोदाहृतः ।	१११-११६

'मासाहस'पक्षिदृष्टान्तः ।	प्रसुप्तसिंहवक्त्रान्तर्गतमांसास्वादनविषये कमलवतीकथितः ।	१७८-१८०
मेघरथविद्याधरदृष्टान्तः ।	पद्मश्रियं प्रति जम्बूकुमारेणोक्तः ।	१५१-१५६
रेवादित्यविप्र-तत्पुत्रोदाहरणम् ।	नागिलयोदाहृतं श्रामाण्यपरित्यागफलविषये ।	३२-३६
ललिताङ्गदृष्टान्तः ।	विजयश्रियं प्रति जम्बूकुमारेणोक्तः ।	१८९-१९६
लावण्यवतीगणिकानुरागि- पुरुषदृष्टान्तः ।	तत्त्वग्रहणे विलम्बे न कर्तव्य इति विषये ।	९०-९२
वडवापालकसोलकदृष्टान्तः ।	कनकश्रियं प्रति जम्बूकुमारेणोदाहृतः ।	१७३-१७७
वानरदृष्टान्तः ।	भागीरथीजलपतनजातमानुष्य- देवत्वप्राप्तुकामविषये दत्तश्रीप्रतिपादितः ।	१३२-१३३
वारण-वायसदृष्टान्तः ।	सिन्धुमतीं प्रति जम्बूकुमारेणोक्तः ।	१३०-१३१
वृद्धाद्विकदृष्टान्तः ।	माकन्दीनगरीवास्तव्यातिवैभव- प्रार्थनालुब्धताविषये नागसेनोक्तः ।	१६४-१६६
शङ्खधमकदृष्टान्तः ।	शङ्खस्वनाकर्णनभीतचौरत्यक्तद्रव्यग्रहणलाभात् पुनस्तथैवाकर्णितशङ्खस्वरचौरहतविषये पद्मसेनाकथितः ।	१५८-१५९
शिलाजतुक्षुप्तवानरदृष्टान्तः ।	पद्मसेनां प्रति जम्बूकुमारेण समुपदिष्टः ।	१५९-१६३
समुद्रसार्थवाहपुत्रमहेश्वरदृष्टान्तः ।	प्रभवप्रतिपादिता पितृतर्पणकर्मनिराकुर्वता जम्बूकुमारेणाख्यातः ।	११६-१२२



[७]

सप्तमं परिशिष्टम्

जंबुचरिये

देशनादिविषयानामकाराद्यनुक्रमः ॥

विषयः

श्लोक - पत्राङ्कः

अगारिधर्मस्वरूपम् ।

६७७-७६१ / २४६-२५३

अतिथिसंविभागस्वरूपम् ।

७४८-७५८ / २५२-२५३

अनगारिधर्मस्वरूपम् ।

६५१-६७५ / २४४-२४६

अनादिपक्षस्वरूपम् ।

११५-१३२ / १२६-१२७

अनादृतदेवरचितजिणहर-जिणप्रतिमापूजा ।

५२७-५३० / २३४

अन्यासक्तनारीस्वरूपम् ।

२०-२४ / १४३

अभयसागराचार्यधर्मदेशना ।

७८-९२ / ४९-५०

इन्द्रियासक्तजीवविपाकदर्शनम् ।

३७-४५ / १६१

उत्सर्पिणी-अवसर्पिणीकालषडारस्यस्वरूपम् ।

१६९-१९२ / ९५-९८

क्रोधादिकषायकटुता ।

८५-९० / १८-१९

गणधरेन्द्रेण अनुशास्तिः ।

५४३-५९२ / २३५-२३९

गर्भावासदुःखानि ।

२०-२५ / १८९

चतुर्गतिदुःखवर्णनम् ।

१०९-११६ / १९८

चतुर्गतिदुःखस्वरूपम् ।

६-११ / ९

चतुर्विधकथास्वरूपम् ।

२२-२३ / ५

परिशिष्टम्-७ जंबुचरिये देशनादिविषयानामकाराद्यनुक्रमः ॥

२८१

चत्वार्यङ्गानि दुर्लभानि ।

५४३-५७९ / २३५-२३८

चरणसित्तरि-करणसित्तरिस्वरूपम् ।

१७६-२४७ / ६४-७०

जम्बुचरितपठन-श्रवण-कथनेन मोक्षसुखप्राप्तिः ।

७९२-७९३ / २५७

जम्बुचरितप्रशस्तिः ।

७९६-८०३ / २५८

जम्बुजायादेवलोकगमनम् ।

७८८ / २५७

जम्बुमोक्षगमनस्वरूपम् ।

७८५-७८६ / २५५-२५६

जम्बुस्वामिकेवलज्ञानप्राप्तिस्वरूपम् ।

६१५-६२८ / २४०-२४१

जम्बुकथितइङ्गालदाहकदृष्टान्तोपनयः ।

४५-५५ / १३५-१३६

जम्बुकथितत्रिपुरुषदृष्टान्तोपनयः ।

१९२-२०६ / २०४-२०५

जम्बुकथितमन्त्रीदृष्टान्तोपनयः ।

५३-६८ / १८३-१८४

जम्बुकथितललिताङ्गदृष्टान्तोपनयः ।

८०-८५ / १९५-१९६

जम्बुकथितविद्याधरदृष्टान्तोपनयः ।

१०४-१२३ / १५५-१५६

जम्बुकुमारकृतजिनमन्दिरे नेमिजिनस्तुतिः ।

१-२ / १०३

जम्बुकुमारभावना ।

५१-५७ / १६२

जम्बुकुमारमातृपितृकथितलावण्यवतीदृष्टान्तोपनयः ।

१२६-१३१ / ९२

जम्बुकुमारविवाहावसरे जिनभवने जिनस्तुतिः ।

१५-१७ / १०६

जम्बुकुमारेण सुधर्मस्वामिनं विज्ञप्तिः ।

५१९-५२० / २३३

जम्बुकृत-जिनचन्द्रस्तवना ।

४०७-४०८ / २२३

जम्बुदीक्षाप्रयाणावसरे वनितोद्गारः ।

४७२-४८९ / २२९-२३०

जम्बुदीक्षा-'करेमि भन्ते'प्रतिज्ञाउच्चारितम् ।

५३२-५३८ / २३४

जम्बुदीक्षाप्रयाणावसरे नगरजनवर्णनम् ।

४६५-४७१ / २२८-२२९

जम्बुदीक्षाप्रयाणावसरे युवतिजनचेष्टा ।

५००-५०१ / २३१

जम्बुदीक्षाप्रयाणावसरे युवतिजनोद्गारः ।

४९०-४९८ / २३०-२३१

जम्बुदीक्षावसरे कोणिकनृपवचांसि ।

५०४-५१३ / २३२

जम्बुवधूकृतजिनस्तवना ।

४०९-४१० / २२३-२२४

जम्बूस्वामिकेवलिना परमधर्मस्य प्रधानोपदेशः ।
 जिनपूजास्वरूपम् ।
 जिनपूजास्वरूपम् ।
 जिनप्रतिमास्वरूपम् ।
 जिनभवनस्वरूपम् ।
 जिनवचनकुशलस्य न खलु कोऽपि अन्यः विनिपातः ।
 जिनवचनदुर्लभता ।
 जिनसमवसरणवर्णनम् ।
 त्रिविधपर्षदास्वरूपम् ।
 दसविधयतिधर्मस्वरूपम् ।
 दानप्रभावः ।
 दानस्वरूपम् ।
 देव-देवेन्द्रकृतकेवलज्ञानमहिमा ।
 देव-देवेन्द्रकृतजम्बुकेवलिस्तवना ।
 देव-धर्मस्वरूपम् ।
 देवस्य प्रकारः ।
 देशावगासिकस्वरूपम् ।
 देहस्योत्पत्तिवर्णनम् ।
 देहस्य दशदशावर्णम् ।
 द्रव्याटवीस्वरूपम् ।
 धर्मध्यानस्वरूपम् ।
 धर्माधर्मफलम् ।
 नवतत्त्वस्वरूपम् ।
 नागिलादत्तभवदेवमुन्युपदेशः ।
 पचदशाङ्गः मोक्षसाधनोपायः ।

६४२-७६१ / २४३-२५३
 ४०५-४०६ / २२३
 ६८४-६९४ / २४६-२४७
 ३९७-३९९ / २२२
 ४००-४०३ / २२३
 ३७-४२ / १७०-१७१
 २९१-३०० / २१३-२१४
 १३८-१४७ / ९३
 २५-२६ / १०
 २५-३१ / १३
 १५४-१५५ / ६२
 १३७-१६० / २००-२०२
 ६२९-६३६ / २४२
 ६३७-६४१ / २४२-२४३
 १६३-१७३ / २०२-२०३
 ५१-५३ / १३६
 ७१९-७२३ / २४९-२५०
 ३०८-३२२ / २१४-२१५
 ३२५-३३५ / २१६
 २२४-२४८ / २०७-२०८
 ६४५-६८१ / २४३-२४६
 ८८-९४ / १९६
 ७७२-७८२ / २५४-२५५
 ३३-१०७ / २९-३८
 ५८१-५८४ / २३८

परिशिष्टम्-७ जंबुचरिये देशनादिविषयानामकाराद्यनुक्रमः ॥

२८३

पुण्य-पापफलम् ।

९६-१०२ / १९७

पौषधस्वरूपम् ।

७२४-७४४ / २५०-२५१

प्रत्याख्यानागाराः ।

७३०-७३५ / २५०-२५१

प्रभवदेवलोकगमनम् ।

७८९ / २५७

प्रसन्नचन्द्रमहर्षिचिन्तनम् ।

१०१-११६ / २०

भवदेवसाधुचिन्तनम् ।

१०९-१२० / ३९-४०

भावाटवीस्वरूपम् ।

२४९-२७० / २०९-२७१

मधुबिन्दुदृष्टान्तः ।

१-२० / १११-११३

मधुबिन्दुदृष्टान्तोपसंहारः ।

२२-३५ / ११३-११४

मांसादिभक्षणविपाकम् ।

१२४-१३४ / १९९-२००

मोक्षप्रसाधनमार्ग-मोक्षसुखस्वरूपम् ।

२११-३७० / २०६-२१९

मोक्षसुखवर्णनं श्रुत्वा प्रभवचिन्तनम् ।

३७१-३८९ / २१९-२२१

मोक्षसुखस्वरूपम् ।

३४८-३५० / २१८

वन्द्यवन्दना ।

८०४-८१३ / २५८-२५९

विद्युन्मालिकृतजगगुरुस्तुतिः ।

४ / २३

विषयस्वरूपम् ।

५९-६२ / १२५

वीरप्रभुधर्मदेशना ।

१७-३३ / १२-१४

शाश्वतस्थाननिर्देशतत्प्राप्त्युपायस्वरूपम् ।

२५-९२ / ८२-८७

श्रेणिकराजकृता प्रसन्नचन्द्रमहर्षिस्तवना ।

४५ / १५

श्रेणिकराजकृता वीरप्रभुस्तवना ।

५४-५७ / १६

षड्विधजीवस्वरूपम् ।

२६-३२ / ५-६

संसारसुख-निर्वाणसुखस्यान्तरः ।

३४४-३४६ / २२७

संसारस्वरूपम् ।

४६-५६ / ११५-११६

सम्यक्त्वस्वरूपम् ।

७६९-७७१ / २५४

सागरचन्द्रनृपचिन्तनम् ।

२८-५९ / ४४-४६

२८४

जंबुचरियम्

सागरदत्तगुरुधर्मदेशना ।

१५९-१७१ / ६२-६३

सागरदत्ततत्पत्नीकृतवैराग्यविषयकसंवादः ।

६०-७७ / ४७-४८

सामायिकस्वरूपम् ।

६९६-७१८ / २४७-२४९

सुधर्मस्वामीवर्णनम् ।

१६-१८ / ८१

सुधर्मस्वामिमोक्षगमनम् ।

६०७-६११ / २४०

सुस्थिताचार्यधर्मोपदेशः ।

१२-२० / २४





Tejas Printers
AHMEDABAD M. 98253 47620

